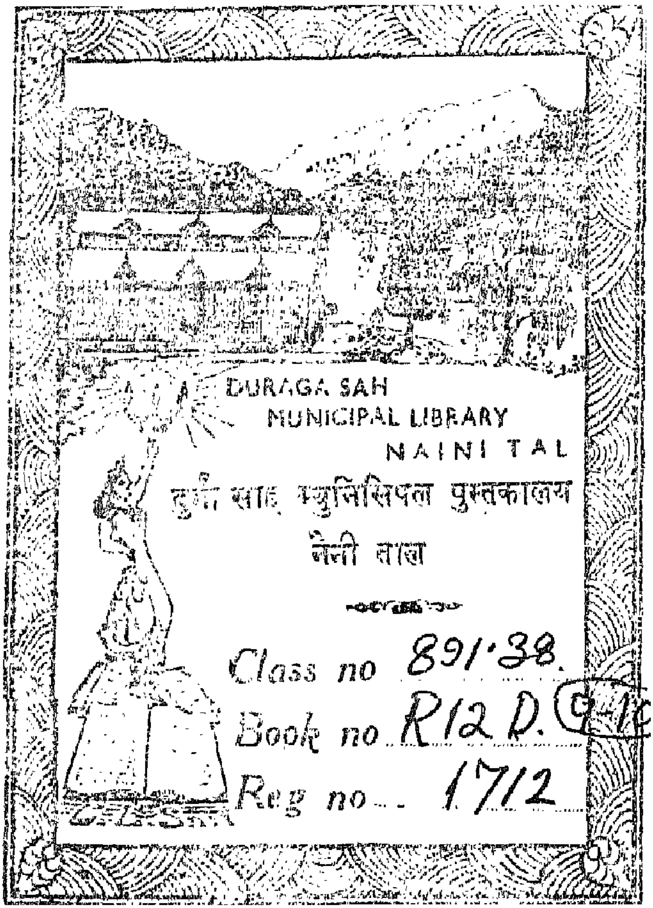


रवीन्द्र-साहित्य

भाग ९-१०

अनुवादक

धन्यकुमार जैन

हिन्दी-ग्रन्थागार
पी-१५, कलाकार स्ट्रीट
कलकत्ता-७

रवीन्द्र-साहित्य

भाग ९-१०

उलझन

'नौकाडूबी'

उपन्यास

धन्यकुमार जैन

प्रकाशक
धन्यकुमार जैन
हिन्दी-ग्रन्थागार
पी-१५, कलाकार स्ट्रीट
बड़ाबाजार
कलकत्ता

मूल्य : संयुक्त भागोंका ४॥) साढ़े चार रुपया

उलझन

'नौकाडूबी'

१

रमेश अबकी बार कानूनकी परीक्षामें पास हो जायगा, इसमें किसीको भी [illegible] न था। विश्वविद्यालयकी सरस्वती शुरूसे ही अपने स्वर्ण-कमलकी [illegible] शको मेडल देती आई हैं; और स्कालरशिपसे भी वह [illegible] था।

[illegible] बाद अब उसके घर जानेकी बात है। लेकिन अभी तक [illegible] करनेका उसमें कोई उत्साह ही देखनेमें नहीं आता। उसके [illegible] जल्दी घर आनेके लिए उसे चिट्ठी दी है। रमेशने जवाबमें लिख [illegible] है कि परीक्षा-फल निकलते ही वह घरके लिए रवाना हो जायगा।

[illegible] बाबूका लड़का योगेन्द्र उसका सहपाठी है। उसके बगलवाले [illegible] ही [illegible] रहता है। अन्नदा बाबू ब्राह्मसमाजी हैं। उनकी लड़की [illegible] अबकी बार एफ०ए०की परीक्षा दी है। रमेश अन्नदा बाबूके [illegible] पीने, और न पीनेके लिए भी, जाया करता है।

[illegible] नहानेके बाद छतपर जाकर बाल सुखाती हुई अपना सबक याद किया करती थी। रमेश भी उसी समय अपने मकानकी छतपर निरालेमें [illegible] किताबके पन्ने उलटा करता था। पढ़नेके लिए ऐसी निराली जगह [illegible] मुआफिक पड़ती होगी, इसमें शक नहीं; लेकिन जरा गहराईके [illegible] देखा जाय तो समझनेमें देर न लगेगी कि इसमें अड़चनें भी [illegible] थीं।

[illegible] ब्याहके बारेमें किसी भी तरफसे कोई बात नहीं उठी। अन्नदा [illegible] बात न छिड़नेका एक सबब था। एक लड़का विलायत गया [illegible] होनेके लिए, उसकी तरफ अन्नदा बाबूका भीतर-ही-भीतर जरा

उस दिन चायकी टेबिलपर जोरकी एक बहस ।
कुछ पास नहीं कर सका है, मगर सिर्फ इसीलिए उस
और दूसरी तरहकी प्यास बुझानेका शौक कुछ कम हो
लिहाजा हेमनलिनीकी चायकी टेबिलपर वह भी कभी-कभी शरीक हो जाया करता था। उसने बहस छेड़ी थी कि मर्दकी अक्ल तलवारके माफिक है, बगैर सान दिये भी वह अपने वजनसे बहुत काम निकाल सकती है; औ औरतोंकी अक्ल कलमतराश छुरी जैसी होती है, चाहे जितनी भी सान क्यों न दी जाय, उससे कोई बड़ा काम नहीं हो सकता, वगैरह-वगैरह। हेमनलिनी अक्षयको इस बकवासको सुनी-अनसुनी करनेको तैयार थी। मगर औरतोंकी अक्लको छोटी साबित करनेके लिए उसका भाई योगेन्द्र भी जब सबूत पेश करने लगा, तो रमेशसे फिर रहा न गया। वह गरम हो उठा; और जोरोंसे उसने औरतोंकी तारीफके पुल बाँधना शुरू कर दिया।

इस तरह रमेश औरतोंकी भक्तिमें गरक होकर जोश-ही-जोशमें और-और दिनोंसे दो प्याले ज्यादा चाय पी गया; इतनेमें नौकरने आकर उसके हाथ एक छोटी-सी चिट्ठी थमा दी। लिफाफेपर उसके पिताके दस्तखतों
नाम लिखा हुआ था। चिट्ठी पढ़कर बहसके बीच ही में वह
हुआ। सबोंने पूछा—"बात क्या है?" रमेशने कहा—" वह चले आये हैं।" हेमनलिनीने योगेन्द्रसे कहा—"भाई साहब, रमेश बाबूके बापूजीको यहीं क्यों न बुला लाओ, यहाँ चाय-नाश्ता सब तैयार है।"

रमेशने कहा—"नहीं, आज रहने दीजिये, मैं जाता हूँ।"

अक्षयने खुश होकर मन-ही-मन कह लिया—'यहाँ खाने-पीनेमें शायद ऐतराज हो सकता है।'

रमेशके पिता ब्रजमोहन बाबूने रमेशसे कहा—"कल सुबहकी गाड़ीसे ही तुम्हें देश चलना है।"

रमेशने सिर खुजाते हुए पूछा—"कोई खास काम है क्या?"

ब्रजमोहनने कहा—"ऐसा कोई खास काम नहीं।"

तो फिर इतनी तागीद क्यों, इतना सुननेके लिए रमेश अपने

मुँहकी ओर देखता रहा, पर पिताने उसके इस चुप्पी-शुदा सवालका कोई जवाब देना जरूरी नहीं समझा।

व्रजमोहन बाबू शामके वक्त जब अपने कलकत्तेके इष्ट-मित्रोंसे मिलनेके लिए बाहर चले गये, तब रमेश उनके लिए एक चिट्ठी लिखने बैठ गया। 'पूज्य बापूजीकी सेवामें' तक लिखा, फिर आगे उसकी कलम ही न चली। फिर भी, मन-ही-मन वह कह उठा, 'मैं हेमनलिनीके बारेमें जिस बिन-कहे सत्यमें बँध चुका हूँ, बापूजीसे उसका छिपाना किसी भी हालतमें ठीक न होगा।' उसने बहुत-सी चिट्ठियाँ बहुत तरहसे लिखीं और फाड़-फाड़ डालीं।

व्रजमोहन बाबू खा-पीकर आरामसे सो गये। रमेश छतपर जाकर पड़ोसके मकानकी ओर देखता हुआ निशाचरकी तरह इधरसे उधर घूमने लगा।

रातके नौ बजे अक्षय अन्नदा बाबूके घरसे चला गया, करीब साढ़े-नौ बजे उनके मकानका बाहरवाला दरवाजा बन्द हो गया, दस बजेके करीब उनकी बैठक की बत्ती बुझ गई और लगभग साढ़े-दस बजे उस घरके सब-कोई सो-सा गये।

दूसरे दिन सवेरेकी गाड़ीसे रमेशको रवाना हो जाना पड़ा। व्रजमोहन बाबूकी सावधानीकी वजहसे गाड़ी फेल करानेका कोई भी मौका रमेशके हाथ न लगा।

२

देश जाकर रमेशको पता चला कि उसके ब्याहके लिए लड़की और दिन दोनों ही तय हो चुके हैं। उसके पिता व्रजमोहनके बचपनके मित्र ईशानचन्द्र जब वकालत करते थे तब व्रजमोहनकी हालत अच्छी नहीं थी; उन्हींकी मददसे उनकी तरक्की हुई थी। वही ईशानचन्द्र जब असमयमें मर गये, तब देखा गया कि उनके पास-पल्ले कुछ नहीं था, उलटा कर्ज छोड़ गये हैं। उनकी विधवा स्त्री एक नन्हीं-सी बच्चीके साथ गरीबीमें डूबी हुई हैं। वही लड़की आज ब्याह-लायक हो गई है; व्रजमोहनने उसीके साथ रमेशका ब्याह करना तय किया है। रमेशके हितुओंमेंसे किसी-किसीने उज्र उठाते हुए कहा—"सुना है कि लड़की उतनी अच्छी नहीं?" व्रजमोहनने कहा—"ये सब बातें मैं अच्छी नहीं समझता। आदमी कोई फूल या तितली नहीं कि अच्छा दीखनेका

ब्रजमोहन बाबूको रास्तेमें ज्यादा देर लगाना पसन्द न था। उन्होंने कहा—"यहाँ लगानेसे काम न चलेगा। आज रातको शुरू-शुरूमें चाँदनी रहेगी, बालू घाट पहुँचकर वहीं नाव लगाना ठीक रहेगा। तुमलोगोंको इनाम मिलेगा, चले चलो।"

नाव गाँव छोड़कर आगे बढ़ने लगी। नदीके एक किनारे बालू चमक रही है और दूसरे किनारे ऊँचे कगारे मौका पाते ही धसकनेको तयार हैं। कुहरेके बीचमेंसे चाँद तो दिखाई दिया, पर मतवालेकी आँखोंकी तरह बहुत ही धुँधला।

इतनेमें, आसमानमें बादल नहीं, कुछ नहीं, और अचानक न-जाने कहाँसे बादलोंकी-सी गरजन सुनाई दी। पीछेकी ओर मुड़कर जो देखा तो बड़ा-भारी बवण्डर पेड़ोंकी डालियाँ-पत्ते, घास-फूस और धूल उड़ाये लिये चला जा रहा है! "रोको-रोको, सम्हालो सम्हालो, हाय हाय" करते-करते लहमे-भरमें क्याका क्या हो गया, किसीको कुछ होश ही न रहा। उस बवंडरने यकायक सब नावोंको किधरसे किधर उठाकर फेंक दिया, कुछ पता ही न लगा।

३

तूफान थम गया; और कुहरा भी जाता रहा। बहुत दूर तक फैली हुई बालूपर साफ-सुथरी चाँदनी ऐसी चमक रही है जैसे किसी विधवाने सफेद-फक चादर ओढ़ रखी हो। नदीमें कोई नाव नहीं थी, और न लहरें ही थीं। सख्त बीमारीकी तकलीफके बाद मौत जैसे बीमारपर एक तरहकी अजीब शान्ति फैला देती है, ठीक उसी तरह, क्या पानी और क्या जमीन जब जगह शान्ति ही शान्ति दीख पड़ती है।

होश आनेपर रमेशने देखा कि वह बालूपर पड़ा हुआ है। क्या हुआ था, उसकी याद करनेमें उसे जरा कुछ वक्त लगा। उसके बाद बुरे सपनेकी तरह सारी घटना उसके मनमें जाग उठी। उसके पिता और बाकीके सब लोगोंको क्या हालत हुई, इसकी खोज करनेके लिए वह उठ खड़ा हुआ। चारों तरफ निगाह फैलाकर उसने जो देखा तो कहीं किसीका नामो-निशान तक नहीं! आखिरकार, उनलोगोंका पता लगाने लिए वह बालूपर आगे बढ़ने लगा।

पद्मा नदीके बीचमें लम्बा टापू-सा है, जिसपर वह चल रहा है। दोनों

तरफ पानी है, उसके बीचमें यह सफेद टापू ऐसा लग रहा है जैसे कोई गोश बच्चा नंग-धड़ंग सोया पड़ा हो। रमेश एक छोरसे दूसरे छोरपर पहुँचा तो देखा कि कुछ दूरीपर एक लाल कपड़ा-सा पड़ा है। वह जल्दी-जल्दी लपकता हुआ उसके पास पहुँचा, देखा तो ब्याहकी लाल पोशाक पहने दुलहिन पड़ी है मुरदा-सी !

पानीमें डूबे हुए मुरदा-से शरीरमें कैसे साँस वापस लाई जाती है, रमेशको यह बात मालूम थी। बहुत देर तक रमेश उस दुलहिनकी बाहें पकड़कर सिरके ऊपर तक तानता और फिर उन्हें उसके पेटपर दबाता रहा। बहुत देर बाद कहीं जाकर उसने साँस ली और आँखें खोलीं।

रमेश तब बहुत थक चुका था। कुछ देर तक वह चुपचाप बैठा रहा। उस लड़कीसे कुछ पूछे, इतना भी उसमें दम न था।

लड़की भी तब तक पूरे होशमें न आई थी। एक बार आँखें खुलनेके बाद फिर उसके पलक बन्द हो गये। रमेशने गौर करके देखा तो उसकी साँस चलती ही पाई। और तब वह उस सुन-सान जल-थलकी सीमामें जिन्दगी और मौतके बीच बैठा हुआ, चाँदनीके उस धुँधले उजालेमें बहुत देर तक उसके मुखड़ेकी तरफ देखता रहा।

किसने कहा था कि सुशीला देखनेमें अच्छी नहीं है ! उसकी आँखोंके सामने आँखें मूँदे हुए यह जो मुखड़ा पड़ा है वह छोटा जरूर है, फिर भी इतने बड़े आसमानके बीच, दूर तक फैली हुई चाँदनीमें सिर्फ यही एक खूबसूरत कोमल मुखड़ा देखने लायक गौरवकी चीज बना हुआ है, इसमें उसे जरा भी सन्देह न रहा।

रमेश और सब बातें भूलकर सोचने लगा, 'इसे मैंने ब्याहके मण्डपमें, भीड़-भम्भड़ और शोरगुलके बीच नहीं देखा, सो अच्छा ही किया। इसे इस तरह और-कहीं भी न देख सकता था। इसके अन्दर साँस चलाकर मैंने इसे ब्याहके मन्त्रोंसे कहीं ज्यादा अपना बना लिया है। मन्त्र पढ़कर इसे मैं जरूर मिलनेवाली चीजकी तरह पाता, पर यहाँ इसे मैंने विधाताकी एक खास देनकी तरह पाया है।'

पूरा होश आनेपर बहू उठके बैठ गई और अपने कपड़ोंको सम्हालकर घूँघटसे उसने अपना मुँह ढक लिया।

रमेशने पूछा—"तुम्हारी नावके और सब लोग कहाँ गये, तुम्हें कुछ मालूम है ?"

उसने सिर्फ सिर हिला दिया, कुछ बोली नहीं। रमेशने फिर पूछा—"तुम यहाँ जरा बैठी रहोगी, मैं एक बार चारों तरफ घूम-फिरकर पता लगा आऊँ ?"

बहूने कोई जवाब नहीं दिया। पर उसकी सारी देह ऐसी सकुचा-सी गई कि जिसके मानी होते हैं, 'यहाँ मुझे अकेली छोड़कर मत जाओ।'

रमेश इस बातको समझ गया। उसने खड़े होकर एक बार चारों तरफ गौरसे देखा। सफेद बालूपर कहीं कोई भी नजर न आया। अपने पिता और रिश्तेदारोंका नाम ले-लेकर वह खूब चिल्लाता रहा, पर कहींसे कुछ जवाब न आया।

रमेश फजूल कोशिश करनेसे बाज आया, और बैठ गया। बैठते ही उसने देखा कि बहू दोनों हाथोंसे मुँह छिपाकर अपनी रुलाई रोकनेकी कोशिश कर रही है, उसकी छातीमें रह-रहकर उफान-सा उठ रहा है। रमेश तसल्लीकी कोई बात न करके उसके पास जाकर सटके बैठ गया ; और आहिस्ते-आहिस्ते उसकी पीठ और माथेपर हाथ फेरने लगा। अब तो उसका रोना दबाये दब न सका, वह सिसक-सिसककर रोने लगी। रमेशकी आँखोंसे भी आँसू बहने लगे।

थके हुए हृदयने जब रोना बन्द किया तब चाँद छिप चुका था। अँधेरेमें वह सुनसान जमीनका टुकड़ा एक अजीब सपने-सा मालूम देने लगा। रेतीकी वह सफेदी अब धुँधली होकर प्रेतलोककी-सी पीली-पीली दिखाई देने लगी। तारोंकी टिमटिमाती हुई रोशनीमें नदी अजगर-साँपकी चिकनी काली चमड़ीकी तरह जगह-जगहसे चमक रही है।

तब रमेशने दुलहिनके, डरसे ठंडे-पड़े, छोटे-छोटे दोनों कोमल हाथोंको अपने दोनों हाथोंसे पकड़कर आहिस्तेसे अपनी ओर खींच लिया। डरी हुई दुलहिनने इसमें कोई रुकावट नहीं डाली। आदमीको अपने नजदीक महसूस करनेके लिए तब वह तरस रही थी। ऐसे अडिग सन्नाटेमें साँससे काँपती हुई रमेशकी छातीपर आश्रय पाकर उसे बड़ा आराम मालूम होने लगा ; उसके लिए यह शरमानेका वक्त नहीं। रमेशकी दोनों बाहोंके बीच उसने खुद ही अपनी अन्दरूनी दिलचस्पीसे अपने लिए जगह कर ली।

पौ फटी। शुक-तारा छिपनेकी कोशिशमें है। पूरबकी तरफ नदीके नीले पानीके ऊपर आसमान जब पहले पीला-सा और फिर गुलाबी हो उठा, तब देखा गया कि नींदका मारा रमेश बालूपर पड़ा सो रहा है; और उसकी छातीके पास उसकी बाँहपर सिर रखे नई दुलहिन गहरी नींदमें बेहोश पड़ी है। अन्तमें, सुबहकी कोमल धूप जब दोनोंकी आँखोंपर आ पड़ी तब दोनोंके दोनों भड़भड़ा कर उठ बैठे। बड़े ताज्जुबके साथ 'दोनोंके दोनों कुछ देर तक चारों तरफ देखते रहे; उसके बाद अचानक उन्हें याद आया कि वे अपने घरमें नहीं हैं; याद आया कि नावमें थे और तूफानमें यहाँ बह आये हैं।

४

जरा दिन चढ़ते ही मल्लाहोंकी मछलीमार डोंगियोंसे नदी भर गई; सबमें छोटे-छोटे सफेद पाल चढ़े हुए थे। रमेशने उन्हींमेंसे एकको पुकारकर अपने पास बुलाया, उसकी मददसे एक बड़ी नाव किरायेपर ली, अपने लापता कुटुम्बी जनोंकी खोजके लिए थानेमें खबर देकर सिपाही तैनात कराये; और फिर दुलहिनको लेकर अपने गाँवकी ओर रवाना हुआ।

गाँवके घाटपर नाव लगते ही रमेशको खबर मिली कि उसके पिता, सासु और कई रिश्तेदारोंकी लाशें पुलिसने नदीसे निकाली हैं। कुछ मल्लाहोंके सिवा और-कोई बचा होगा, इसकी किसीको भी उम्मीद न रही।

घरमें रमेशकी बूढ़ी दादी थीं, वे रमेशको दुलहिनके साथ वापस आते देख जोर-जोरसे फूट-फूटकर रोने लगीं। मुहल्लेसे और जिन-जिनके यहाँसे बारात गई थी उनके घर भी रोना-पीटना शुरू हो गया। रमेश आ गया; पर घरमें न तो शंख बजा, न खुशियाली मनाई गई और न किसीने बहूको मंगलाचारके साथ घरमें लिया, यहाँ तक कि किसीने उसकी तरफ आँख उठाकर देखा तक नहीं।

कारज हो जानेके बाद ही रमेश बहूको लेकर कहीं बाहर चला जायगा, यह तय कर चुका था; पर पिताकी जायदाद वगैरहका ठीक-ठीक इन्तजाम बगैर किये उसका यहाँसे हिलना मुश्किल हो गया। उसपर इस गमींकी वजह से घरकी औरतें इतनी उदास हो रही थीं कि उन्होंने तीर्थमें रहनेका विचार कर लिया; उसका भी उसे इन्तजाम करना है।

इन सब कामोंके होते हुए भी, मौका मिलनेपर रमेश बहूसे प्यार करनेसे बाज आता हो सो बात नहीं। हालाँ कि पहलेसे यही सुननेमें आया था कि बहू बिलकुल बच्ची नहीं है, यहाँ तक कि गाँवकी औरतोंने उसे ज्यादा उमरकी बताकर धिक्कारा भी था, फिर भी, उसके साथ कैसे प्रेम किया जाय, इस बारेमें इस बी०ए०पास नौजवानको आज तक अपनी किसी भी किताबमें कोई बात नहीं मिली, इसीसे हमेशासे उसकी यही धारणा चली आ रही थी कि उसके लिए ये सब बातें नामुमकिन हैं और बेढब भी। फिर भी, किताबी तजुर्बेके साथ बिलकुल न मिलनेपर भी, ताज्जुब है कि उसका ऊँची-तालीम पाया-हुआ मन भीतर-ही-भीतर एक अजीब किस्मके रससे भर उठा और उस छोटी-सी लड़कीकी तरफ अपने-आप झुक चला। वह उस लड़कीके अन्दर अपनी कल्पनासे अपनी गृहलक्ष्मीका रूप देखने लगा। और इस तरह एक ही समयमें उसकी स्त्री ब्याहली-बहू, तरुणी प्रेयसी, घरकी लक्ष्मी और बच्चोंकी धीर-चतुर माके रूपमें, उसकी ध्यानमें गरक आँखोंके सामने, नाच उठी। चित्रकार जैसे अपने बननेवाले चित्रको और कवि जैसे अपने भावी काव्यको बहुत ही सुन्दर रूपमें देखता हुआ अपने हृदयके अन्दर बहुत ही लाड़-प्यारसे पालता रहता है, ठीक उसी तरह रमेश अपनी इस छोटी-सी बहूको भावी प्रेयसीके रूपमें अपने हृदयमें रखकर मारे खुशीके फूला न समाया।

५

इस तरह लगभग तीन महीने बीत गये। जमीन-जायदाद सम्बन्धी सारा इन्तजाम करीब-करीब ठीक हो चुका है। बड़ी-बूढ़ी सब तीर्थवासके लिए तैयारियाँ कर चुकीं। पड़ौसकी दो-एक साथिनें नई बहूके साथ मेल बढ़ानेके लिए आने-जाने लगीं। रमेशके साथ उसकी नई नवेलीकी प्रीतकी पहली गाँठ आहिस्ते-अहिस्ते मजबूत हो चली।

अब, शामके वक्त निराली छतपर खुले आकाशके तले दोनोंने चटाई बिछा कर बैठना शुरू कर दिया है। रमेश पीछेसे आकर अचानक बहूकी आँखें धर दबाता है, उसका सिर अपनी छातीसे चिपका लेता है; और बहू जब ज्यादा

रात होनेके पहले ही बगैर खाये-पीये सो जाती है तो रमेश उसे तरह-तरहसे छेड़कर जगाता और झुंझलाहट-भरी बातें सुनाता है।

एक दिन शामके बाद रमेशने बहूका जूड़ा पकड़के हिला दिया; और बोला—"सुशीला, आज तुम्हारा जूड़ा अच्छा नहीं बँधा।"

बहू अचानक कह बैठी—"अच्छा, तुम लोग सभी मुझे सुशीला क्यों कहा करते हो?"

रमेश इस सवालका मतलब कुछ भी न समझ सका और दंग होकर उसके मुँहकी ओर देखता रहा।

बहू कहने लगी—"मेरा नाम बदल देनेसे ही क्या मेरा भाग फिर जायगा? मैं तो बचपनसे ही अभागिन हूं, बगैर मरे मेरा अभागापन नहीं मिटनेका।"

यकायक रमेशकी छाती धड़क उठी, उसका चेहरा फक पड़ गया, तुरत उसके मनमें शक पैदा हो गया कि जरूर कहीं कोई गलतफहमी हुई है। उसने पूछा—"बचपनसे ही तुम अभागिन कैसे हुईं?"

बहूने कहा—"मेरे जनमनेसे पहले ही मेरे पिता मर गये, और मुझे जनम देनेके छै महीने बाद मेरी मा मर गई। फिर ननसाल रही, सो भी बड़ी मुसिबतोंसे दिन काटे। अचानक तुम न-जाने कहांसे चले आये और मुझे पसन्द कर बैठे। दो दिनके अन्दर ही ब्याह हो गया; उसके बाद देख लो, सब मुसीबतें ही मुसीबतें पड़ रही हैं।

रमेश खामोश होकर तकियेके ऊपर सिर रखके लेट गया। आसमानमें चाँद अपनी चाँदनी छिटका रहा था, पर, उसके लिए सारी चाँदनी स्याह हो गई। रमेशको दूसरा सवाल करते हुए डर लगने लगा। जितना उसे मालूम हुआ है उसको वह बकवास या सपना समझकर अपनेसे दूर ढकेल देना चाहता है। बेहोशीसे होशमें आया-हुआ सख्स जिस तरह लम्बी साँस छोड़ता है उसी तरह गरमीके मौसमकी दखिनी हवा चलने लगी। ऐसी सुहावनी चाँदनी रात, उसमें कोयल बोल रही है। पास ही नदीका घाट है, और नावकी छतोंपर बैठे हुए माझी-मल्लाह गीत गा-गाकर आसमानको गुंजाये दे रहे हैं।

बहुत देर तक कुछ जवाब न पाकर बहूने बहुत ही आहिस्तेसे रमेशको छूकर पूछा—"सो गये क्या ?"

रमेशने कहा—"नहीं तो।"

इसके बाद भी रमेश बहुत देर तक कुछ न बोला। बहूको न-जाने कब नींद आ गई और सो गई। रमेश उठ बैठा और उसके सोये-हुए चेहरेकी तरफ देखने लगा। विधिने इसकी तकदीरमें और चाहे जो भी लेख लिख रखा हो, पर इसके चेहरेपर वह एक शिकन तक नहीं ला सकी। ऐसी खूबसूरती, ऐसा रूप, इसके भीतर ऐसा खतरनाक नतीजा कैसे छिपा रह सकता है!

६

रमेश इस बातको समझ गया कि यह बहू उसकी ब्याहती बहू नहीं है। पर वह किसकी स्त्री है, यह भेद उससे निकाल लेना आसान काम नहीं। रमेशने उससे तरकीबके साथ पूछा—"ब्याहके वक्त जब तुमने मुझे पहले-पहल देखा तो तुम्हें मैं कैसा लगा ?"

उस लड़कीने कहा—"मैंने तो तुम्हें देखा नहीं, मैं तो नीची निगाह किये बैठी थी।"

रमेश—"तुमने मेरा नाम भी कभी नहीं सुना ?"

लड़की—"जिस दिन मैंने सुना कि मेरा ब्याह होगा, उसके दूसरे ही दिन तो ब्याह हो गया। तुम्हारा नाम मुझे मालूम ही न हो सका। मामी तो झटपट मुझे पार करके छुटकारा पा गईं।"

रमेश—"अच्छा, तुम तो पढ़ी-लिखी हो, जरा अपना नाम तो लिखो, देखूँ ?"

रमेशने उसे एक कागज और पेन्सिल दे दी।

लड़कीने कहा—"इतना भी नहीं जानती क्या मैं ? लाओ लिखती हूँ।" कहकर बड़े-बड़े हरूफोंमें उसने लिखा 'श्रीमती कमला देवी।'

रमेश—"अच्छा, मामाका नाम लिखना भला ?"

उसने लिखा, 'श्रीयुत तारिणीचरण चट्टोपाध्याय।' और पूछा—"कहीं गलती हुई है ?"

रमेशने कहा—"नहीं। अच्छा, अपने गाँवका नाम लिखो तो देखूँ?"

उसने लिख दिया, 'धोबीपोखर।'

इस तरह कई तरकीबोंसे बड़ी होशियारीके साथ रमेशने उसकी सारी जिन्दगीका हाल जान लिया; और उसमें ऐसी कोई खास अड़चन भी नहीं आई।

इसके बाद रमेश अपने कर्तव्यके बारेमें सोचने बैठ गया। इसका पति पानीमें डूबकर मर गया मालूम होता है। इसके मायकेवालोंका पता तो लग गया; पर वहाँ भेजनेपर वे लोग इसे लेंगे, इनमें शक है। और ननसाल भेजना इसके साथ अन्याय करना है। इतने दिनों तक बहूके तौरपर दूसरेके घर रह आनेके बाद आज अगर असलियत सारी कह दी जाय, तो समाजमें इसको क्या हालत होगी, कहाँ इसे जगह मिलेगी? और पति अगर जिन्दा भी हो, तो भी, क्या वह इसे अपने घरमें रखनेकी हिम्मत करेगा? अब तो इस लड़कीको जहाँ कहीं भी डाला जायगा वहीं यह गहरे पानीमें डूब ही जायगी, बचनेका कोई रास्ता ही नहीं।

और, अपने पास अगर वह रखता है तो सिवा स्त्रीके और किसी रूपमें नहीं रख सकता। दूसरी जगह भी कहीं भेज नहीं सकता। सब-कुछ माना, पर स्त्रीके रूपमें भी तो वह इसे नहीं अपना सकता। रमेश इसके पहले इस लड़कीको लेकर अपनी गृहलक्ष्मीकी तसवीर खींच चुका था और उसपर तरह-तरह के रंग चढ़ा रहा था, अब उसे झटपट उस तसवीरको पोंछकर मिटा देना पड़ा।

रमेशसे अब गाँवमें न रहा गया। यह सोचकर कि कलकत्तेके भीड़-भभ्भड़में छिपकर कोई-न-कोई रास्ता वह निकाल लेगा, कमलाको लेकर वह कलकत्ता चल दिया। और, पहले जहाँ रहता था वहाँसे कुछ दूर नया मकान किरायेपर लेकर रहने लगा।

कलकत्ता देखनेके लिए कमला बहुत जिद करने लगी। पहले दिन नये मकानमें पहुँचते ही वह खिड़कीके पास जाकर बैठ गई, और, बड़ी दिलचस्पीके साथ लोगोंका आना-जाना और सवारियोंकी भीड़-भाड़का तमाशा देखने लगी। देखते-देखते उसका मन नई-नई उमंगोंसे भर उठा। घरमें एक नौकरानी थी, कलकत्ता उसके लिए पुराना हो चुका था। वह इस लड़कीकी ताज्जुब-भरी

दिलचस्पीको फजूल समझकर झुँझलाके कहने लगी—"क्यों जी, मुँह बाये तुम देख क्या रहो हो ? कितनो अबेर हो गई है, नहाओगो नहीं ?"

रातको खाना-पोना हो चुकनेपर नौकरानी अपने घर चली गई। रमेशने कमलाको बिस्तरकी तरफ इशारा करते हुए कहा—"तुम सोओ, मैं किताब पढ़ रहा हूँ, इसे खतम करके पीछे सोऊँगा।"

इतना कहकर रमेश एक किताब खोलकर पढ़नेका ढोंग करने लगा। कमला थकी हुई थी, उसे नींद आनेमें देर न लगी।

रात यों ही कट गई। दूसरे दिन भी रमेशने कोई बहाना निकालकर कमल को अकेले ही सुला दिया। उस दिन गरम ज्यादा थी। सोनेके कमरेके सामने जरा-सी खुली हुई छत थी, वहाँ एक दरी बिछाकर रमेश लेट गया; और, बहुत-सी बातें सोचता और पंखेसे हवा खाता हुआ बहुत रात बीते सो गया।

रातको दो-तीन बजेके करीब अध-नींदी हालतमें रमेशको ऐसा महसूस होने लगा कि वह अकेला नहीं सो रहा है, उसके पास लेटी हुई कोई उसे पंखेसे आहिस्ते-आहिस्ते बयार कर रही है। रमेशने नींदकी खुमारीमें उसे अपनी तरफ खींच लिया और अलसाये-हुए कण्ठसे बोला—"सुशीला, तुम सो जाओ, मुझे हवा करनेकी जरूरत नहीं।" अँधेरेसे डरनेवाली कमला रमेशकी बाँहोंमें लिपटी हुई छातीसे चुपटकर आरामसे सो गई।

सवेरे जगते ही रमेश चौंक पड़ा। देखा, सोई-हुई कमलाका दाहना हाथ उसके गलेसे लिपटा हुआ है और वह बिना किसी संकोचके रमेशपर अपने भरोसेका पूरा हक फैलाये हुए उसकी छातीसे लगी खूब आरामसे सो रही है। सोई-हुई लड़कीके मुँहकी ओर देखकर रमेशकी आँखोंमें आँसू भर आये। इतने इतमीनानके साथ जो उसके गलेमें बाँहें डालकर सो रही है, उसकी बाहोंको वह कैसे अलग करे ? रातको किसी वक्त चुपकेसे आकर वह उसे बयार करती रही है उसकी भी उसे याद आ गई। अन्तमें, एक लम्बी साँस लेकर आहिस्ते से कमलाकी बाँहें अलग करके वह बिछौनेसे उठकर चल दिया।

बहुत सोचने-विचारनेके बाद रमेशने कमलाको बलिका-विद्यालयके बोर्डिंगमें

रखना तय किया। इससे फिलहाल कुछ दिनोंके लिए तो उसे चिन्ता-फिकरसे छुटकारा मिल ही जायगा।

रमेशने कमलासे पूछा—"कमला, तुम और पढ़ोगी ?"

कमला रमेशके मुँहकी ओर देखती रही, जिसके मानी थे, 'तुम्हारी क्या राय है ?'

रमेशने पढ़ने-लिखनेके फायदे और सहूलियतोंके बारेमें बहुत-सी बातें कहीं, हालाँ कि उसकी कोई जरूरत नहीं थी। कमलाने कहा—"मुझे तुम पढ़ा दो।"

रमेशने कहा—"तो फिर तुम्हें स्कूल जाना पड़ेगा।"

कमला अचंभेमें पड़ गई, बोली—"इस्कूलमें ! इतनी बड़ी लड़की होकर मैं इस्कूल जाऊँगी ?"

कमलाको अपनी उमरके बारेमें इतना खयाल है देखकर रमेशको जरा हँसी आ गई ; बोला—"तुमसे भी बहुत बड़ी-बड़ी लड़कियाँ वहाँ पढ़ने जाया करती हैं।"

कमलाने इसके बाद फिर कुछ नहीं कहा। गाड़ीमें बैठकर रमेशके साथ एक दिन वह स्कूल गई। बड़ा-भारी मकान है ; और, उससे भी बहुत बड़ी और छोटी इतनी लड़कियाँ वहाँ हैं कि जिनकी शुमार नहीं। स्कूलकी हेड मिस्ट्रेसके हाथ कमलाको सौंपकर रमेश जब वापस आने लगा, तो कमला भी उसके साथ-साथ आने लगी। रमेशने कहा—"तुम कहाँ जा रही हो ? तुम्हें तो यहीं रहना है न !"

कमला डरे हुए स्वरमें बोली—"तुम यहाँ नहीं रहोगे ?"

रमेश—"मैं तो यहाँ रह नहीं सकता।"

कमलाने रमेशका हाथ थाम लिया, बोली—"तब मैं यहाँ नहीं रह सकूँगी, मुझे ले चलो।"

रमेशने उसका हाथ छुड़ाते हुए कहा—"छिः कमला !"

इस धिक्कारसे कमला सन्न होकर वहाँकी वहीं खड़ी रह गई, उसका मुँह इतना-सा हो गया। रमेश बहुत ही दुःखित होकर झटपट चल तो दिया वहाँसे, पर कमलाके उस डरे-हुए असहाय मुखड़ेको वह न भूल सका, उसकी तसवीर उसके मनमें जमकर बैठ गई।

७

रमेश तय कर चुका था कि अब वह अलीपुर कोर्टमें वकालत करना शुरू कर देगा। पर उसका दिल टूट गया है। मनको थिर करके काममें हाथ डालने और नये-नये काममें आनेवाली अड़चनोंको दूर करने लायक उसमें फुर्ती नहीं रही। अब वह कुछ दिनोंसे हवड़ाके पुलपर और गोलदिग्घीके किनारे किनारे बेमतलब चक्कर लगाया करता है। एक बार उसने सोचा कि कुछ दिन पछाँहको तरफ कहीं घूम आये; इतनेमें अन्नदा बाबूके यहाँसे एक चिट्ठी मिली उसे। अन्नदा बाबूने लिखा है, "गजटमें देखा कि तुम पास हो गये हो, पर इसकी खबर तुम्हारे पाससे न पाकर मुझे बहुत रंज हुआ। बहुत दिनोंसे तुम्हारी कोई खबर ही नहीं मिली। तुम कैसे हो और कलकत्ता कब तक आ रहे हो, सो लिखकर मुझे निश्चिन्त करना।"

यहाँ इतना कह देना बेजा न होगा कि अन्नदा बाबूने जिस विलायत गये हुए लड़केपर नजर डाल रखी थी वह बारिष्टर होकर वापस आ गया है; और किसी अमीरकी लड़कीसे शादी होनेकी उसकी तैयारियाँ भी चल रही हैं।

इस बीचमें जो-जो वारदातें हुई हैं उसके बाद भी हेमनलिनीके साथ पहलेकी तरह उसका मिलना-जुलना ठीक है या नहीं, इस बातको रमेश किसी कदर भी तय नहीं कर सका। हालमें कमलाके साथ उसका जो रिश्ता खड़ा हो गया है, उस बातको वह किसीसे कहना ठीक नहीं समझता। बेकसूर कमलाको वह दुनियाकी निगाहोंमें गिरा नहीं सकता। साथ ही, सारी बातें साफ-साफ बताये बगैर हेमनलिनीके पाससे भी वह पहले जैसा अपना हक कैसे पा सकता है?

मगर, अन्नदा बाबूके खतका जवाब उसे जल्दी देना चाहिए। उसने लिख दिया, 'बहुत जरूरी कामकी वजहसे आप लोगोंसे मुलाकात नहीं कर सका हूँ, इसके लिए मुझे माफ कीजियेगा।' चिट्ठीमें उसने अपना नया पता-ठिकाना नहीं दिया।

चिट्ठी डाकमें छोड़ दी। और, उसके दूसरे ही दिन रमेश काला चोगा पहनकर अलीपुरकी अदालतमें हाज़िरी देने चल दिया।

एक दिन वह अलीपुरसे वापस आते समय, कुछ दूर पैदल चलनेके बाद,

घोड़ागाड़ीके कोचवानसे किराया तय कर रहा था कि इतनेमें पीछेसे पहचाने हुए कण्ठकी आवाज आई—"बापूजी, ये रहे रमेश बाबू !" ये शब्द उसने इस ढंगसे कहे कि जैसे वे उस ही को ढूँढ़ने निकले हों और वह बिना भरोसेका अचानक मिल गया हो।

"ए कोचवान, रोको रोको !"

गाड़ी रमेशके पास आकर खड़ी हो गई। उस दिन अलीपुरके चिड़िया-खानेमें पिकनिक करके अन्नदा बाबू अपनी लड़कीके साथ घर लौट रहे थे। रास्तेमें अचानक रमेश मिल गया।

घोड़ागाड़ीमें हेमनलिनीका वह चिकना-मुलायम सुन्दर चेहरा, खास ढंगसे पहनी-हुई साड़ी, जूड़ा बाँधनेका निराला फैशन, हाथोंमें एक-एक प्लेन काँचकी चूड़ी और उसके दोनों तरफ सोनेकी डामिस-कटी चूड़ियाँ देखते ही रमेशकी छातीके अन्दर एक तरहकी लहर-सी उठने लगी।

अन्नदा बाबूने कहा—"तुम खूब मिले रमेश, इत्तिफाकसे दोनोंका इधरसे गुजरना हुआ, वरना,—तुमने तो चिट्ठी तक लिखना छोड़ दिया है, अगर लिखते भी हो तो उसमें अपना पता तक नहीं देते। अब जा कहाँ रहे हो, सो बताओ ? कोई खास काम है ?"

रमेशने कहा—"नहीं तो, अदालतसे लौट रहा हूँ।"

अन्नदा बाबू—"तो चलो, हमारे यहाँ चाय पीना, चलो।"

रमेशका हृदय भर आया था। वहाँ अब दुविधा करनेकी गुंजाइश नहीं रह गई थी। वह गाड़ीमें बैठ गया। और बड़ी कोशिशसे झिझक दूरके उसने हेमनलिनीसे पूछा—"आप अच्छी तरह हैं ?"

हेमनलिनीने अपनी राजीखुशीके बारेमें कुछ न कहकर सीधा सवाल किया—"आपने पास करके एक बार हमलोगोंको खबर तक नहीं दी ?"

रमेशको और कुछ जवाब न सूझा तो बोल उठा—"आप भी पास हुई हैं, देखा था मैंने।"

हेमनलिनीने हँसकर कहा—"खैर गनीमत है कि आपने हमारी खबर-सुध रक्खी तो सही !"

अन्नदा बाबूने कहा—"तुम अब रहते कहाँ हो ?"

रमेशने कहा—"दरजीपाड़ेमें ।"

अन्नदा बाबूने कहा—"क्यों, कोल्हूटोला-वाला तुम्हारा पुराना मकान तो बुरा नहीं था ?"

जवाबकी इन्तजारीमें हेमनलिनी खास दिलचस्पीके साथ रमेशके मुँहकी ओर देखती रही। उस निगाहने रमेशपर काफी चोट की ; उसी वक्त उसने कह दिया—"हाँ, अब उसी मकानमें वापस आ जाना चाहता हूँ ।"

रमेश समझ गया कि इस तरह मकान बदलनेको हेमनलिनीने उसकी तरफसे कसूरके रूपमें लिया है ; और अब उसकी कोई सफाई न सूझनेकी वजहसे मन-ही-मन उसे बड़ा रंज हुआ। दूसरी तरफसे फिर कोई सवाल नहीं उठा। हेमनलिनी गाड़ीके बाहर सड़ककी तरफ देखती रही। रमेशसे रहा न गया तो वह बेमतलब अपने-आप बोल उठा—"मेरी एक रिश्तेदारिन हदुआके पास रहती हैं, उनके नजदीक रहनेके लिए दरजीपाड़ेमें कामचलाऊ दो कमरे ले लिये थे ।"

रमेशने बिलकुल झूठ नहीं कहा, पर बात कैसी-तो जरा अटपटी सी सुन पड़ी। बीच-बीचमें रिश्तेदारिनकी खबर-सुध लेनेके लिए हदुआसे कोल्हूटोला ऐसा कौनसा दूर था ? हेमनलिनीकी दोनों आँखें गाड़ीके बाहर ही देखती रहीं। अभागा रमेश इसके बाद क्या कहे, उसकी कुछ समझमें न आया। थोड़ी देर बाद उसने पूछा—"योगेन्द्रको क्या खबर है ?" अन्नदा बाबूने कहा—"वह कानूनी परीक्षामें फेल होकर पछाँहकी तरफ हवा खाने गया है ।"

गाड़ी अपनी जगह पहुँचनेके बाद, जाने-हुए घर और उसकी सजावट वगैरहने रमेशपर जादूकी लकड़ी-सी फेर दी। रमेशकी छातीमें से एक लम्बी साँस निकल आई।

रमेश बगैर कुछ बोले चुपचाप बैठा चाय पीने लगा। अन्नदा बाबू अचानक पूछ बैठे—"अबकी बार तुम घर बहुत दिन रहे, कोई काम था क्या ?"

रमेशने कहा—"बापूजीका देहान्त हो गया ।"

अन्नदा बाबू—"ऐं, कहते क्या हो ? अचानक क्या हो गया ! कैसे, क्या हुआ था ?"

रमेश—"पद्मा नदीसे नावपर घर वापस आ रहे थे, रास्तेमें अचानक नाव डूब गई।"

यकायक बड़े जोरकी हवा चलनेसे जैसे घने बादल चटसे इधर-उधर फट जाते हैं और आसमान साफ हो जाता है, ठीक जैसे ही इस गमीकी खबरने रमेश और हेमनलिनीके दरमियान पड़े हुए मनके फरकको लहमे-भरमें साफ कर दिया, दोनोंके बीचकी सारी ग्लानि जाती रही। हेम पछतावेके साथ मन-ही-मन बोली, 'रमेश बाबूको मैंने गलत समझ लिया था, पिताका वियोग हो जानेसे इनका जो ठिकाने नहीं रहा। अभी भी तो अनमने-से बने हुए हैं। इनके घरमें कैसा संकट आ पड़ा, इनके मनको कितना जबरदस्त धक्का लगा, यह सब बगैर समझे ही हमलोग इन्हें दोष दे रहे थे।'

हेमनलिनी इस पितृहीन रमेशको और-भी ज्यादा खातिर-तवज्जह करने लगी। रमेशको खानेकी रुचि नहीं थी ; हेमने उसे खास तौरसे जिद करके खिलाया-पिलाया। और बोली—"आप बहुत दुबले हो गये हैं, तन्दुरुस्तीकी तरफसे इतने लापरवाह न होइये।" अन्नदा बाबूसे कहा—"बापूजी, रमेश बाबू आज रातको भी यहीं क्यों न खाना खायँ।"

अन्नदा बाबूने कहा—"हाँ हाँ, ठीक तो है।"

इतनेमें अक्षय आ पहुँचा। अन्नदा बाबूकी चायकी टेबिलपर कुछ दिनोंसे अकेला अक्षय ही हक जमाता आ रहा है। अचानक आज रमेशको देखकर वह बड़े असमंजसमें पड़ गया। अपनेको काबूमें रखता हुआ वह हँसकर बोला—"यह क्या? आज तो रमेश बाबू तशरीफ लाये हैं। मैंने तो देखा कि आप हमलोगोंको बिलकुल भूल ही गये।"

रमेश कुछ जवाब न देकर जरा हँस दिया। अक्षय बोल उठा—"आपके पिताजी आपको जिस तरह गिरफ्तार करके ले गये थे, मैंने सोचा कि अबकी बार वे आपका ब्याह किये बगैर हर्गिज न छोड़ेंगे, अरिष्ट कटाके आये हैं तो?"

हेमनलिनीने अक्षयको अपनी नाराजगीकी निगाहसे बींध दिया।

अन्नदा बाबूने कहा—"अक्षय, रमेशके पिताजीका देहान्त हो गया।"

रमेश अपना उदास मुँह नीचे झुकाये बैठा रहा। रमेशके इतने बड़े

घावपर नमक छोड़ा, इसलिए हेमनलिनी मन-ही-मन अक्षयपर बहुत नाराज हुई। रमेशसे तुरत उसने कहा—"रमेश बाबू, आपको अभी तक अपना अलबम तो दिखाया ही नहीं!" कहकर वह अलबम उठा लाई, और रमेशकी टेबिलके एक किनारेसे खड़ी होकर तसवीरोंके बाबत बात करने लगी। बातों-ही-बातोंमें उसने धीरेसे पूछा—"नये मकानमें आप शायद अकेले ही रहते होंगे?"

रमेशने कहा—"हाँ।"

हेमनलिनीने कहा—"हमारे बगलवाले मकानमें आनेमें आप ज्यादा देर न लगाइयेगा।"

रमेशने कहा—"नहीं, मैं इसी सोमवारको ही, जरूर आ जाऊँगा।"

हेमनलिनी बोली—"मैं सोच रही हूँ, बी०ए०की फिलासाफी कभी-कभी आपसे ही समझ लिया करूँगी।"

रमेश उसकी बात सुनकर चुप रह गया, खास कोई दिलचस्पी नहीं जाहिर की।

८

रमेशने पहलेवाले मकानमें आनेमें देर नहीं लगाई।

इसके पहले हेमनलिनी और रमेशके दरमियान जो दूरी बढ़ गई थी, अब वह कतई नहीं रही। रमेश मानो बिलकुल घरका-सा हो गया। हँसी-मजाक और दावत वगैरह खूब जम-जमकर होने लगी।

बहुत दिनोंसे बहुत सबक याद करते-करते इसके पहले हेमका चेहरा लगभग क्षणभंगुर सरीखा हो गया था। मालूम होता था कि जरा जोरकी हवा लगते ही उसकी देह कमरसे टूट ही जायगी। तब वह बोलती भी कम थी और उससे बात करनेमें डर भी लगता था; जरा-सेमें कहीं कुछका कुछ न समझ जाय!

इधर थोड़े ही दिनोंमें वह इतनी बदल गई है कि देखकर ताज्जुब होता है। उसके पीले गालोंपर लौन-छबिकी चिकनाहट आ गई, उसकी आँखें अब बात-बातपर हँसीके मारे नाच उठती हैं। पहले वह साज-पोशाकमें दिलचस्पी लेनेको ज्यादती, यहाँ तक कि अन्याय समझती थी। अब किसीके साथ

कोई बहस बगैर किये ही कैसे उसकी राय बदल गई, सो अन्तरजामीके सिवा और कोई नहीं बता सकता।

कर्तव्यके बोझसे रमेश भी कुछ कम गम्भीर नहीं था। सोचने विचारनेमें वह इतना मशगूल था कि उसका मन और तन दोनों सुस्त पड़ गये थे। आकाशके ग्रह-तारा वगैरह घूमते-फिरते रहते हैं, पर 'मानमन्दिर' अपने साज-औजार लिये बहुत ही सावधानीके साथ एक जगह बैठा रहता है, ठीक उसी तरह रमेश इस चलती हुई दुनियाके बीचो-बीच अपनी पोथी-पत्रा और बहस-मुबाहिसा लिये सन्न हुआ बैठा था; उसे भी न-जाने किस चीजने आज इतना हलका कर दिया। वह भी आजकल किसीके मजाकका कुछ जवाब देते नहीं बनता तो ठहाका मारकर हँस देता है। हालाँ कि उसके बालोंपर अभी तक कंघा नहीं फिरा है, फिर भी दुपट्टा उसका पहले जैसा मैला नहीं रहता। उसके तन और मनमें ऐसी ही एक तरहकी फुर्ती जाग उठी है।

९

प्रेमियोंके लिए काव्योंमें जिन-जिन चीजोंका इन्तजाम रहता है वे चीजें कलकत्ता जैसे शहरमें कहाँ धरी हैं! यहाँ कहाँ वे माधवी-लतासे घिरे हुए कुंजवन हैं जिनमें घड़ी-भर इतमीनानसे बैठकर प्रेमी अपने दिलकी आगको जरा-कुछ ठण्डा कर सकें, कहाँ वे कुंज-गलियाँ हैं जिनके दोनों तरफ फूलोंसे लदे अशोक और मौलसिरीके पेड़ोंकी कतार खड़ी हो, और कहाँ वे कोयलें पड़ी हैं जो अपनी मीठी सुरीली आवाजसे 'कुहू-कुहू' करके प्रेमियोंको पागल होनेके लिए मजबूर कर दें? कुछ भी नहीं है, फिर भी, ताज्जुब है कि आजकलके ऐसे रूखे-सूखे और बेहूदा शहरमें प्रेमका जादू आता है और टकराकर वापस नहीं जाता! इतनी जबरदस्त भीड़में, गाड़ी-घोड़ा और मोटर-ट्रामकी अन्धाधुन्ध दौड़-धूप और शोर-गुलके अन्दर एक चिर-किशोर पुराना देवता, जिसको कि कामदेव कहते हैं, अपना तीर-कमान लिये लाल-पगड़ीवाले सिपाहियोंकी आँखोंके सामनेसे दिन-रात न-जाने कहाँ-कहाँ जाता है और क्या-क्या गजब ढाता रहता है, कोई नहीं कह सकता।

रमेश और हेमनलिनी एक चमड़ेकी दूकानके सामने और दाल-चावलकी दूकानके बगलमें कोलूटोला-वाले किरायेके मकानोंमें रहते थे, फिर भी, प्रेमके विकासमें वे किसी कुंज-कुटियामें रमनेवाले काव्यके प्रेमोसे पीछे रह गये हों, ऐसा कोई नहीं कह सकता। अन्नदा बाबूकी चायके निशानोंसे दगैल मैली-कुचैली छोटी-सी टेबिल पद्मसरोवर न हो तो न सही, उसके लिए रमेशको जरा भी कमी महसूस नहीं होती। हेमनलिनीकी पालतू बिल्ली हिरनका छोटा-सा खूबसूरत बच्चा न होनेपर भी, रमेश पूरे प्रेमसे उसकी गरदन सहला दिया करता है ; और जब वह आलस तोड़के धनुषकी तरह पीठ फुलाकर देह चाट-चाटकर अपना बनाव-सिंगार करने लगती है, तब रमेश उसकी तरफ ऐसी मुग्धदृष्टिसे देखता रहता है कि जैसे उसकी निगाहमें इससे बढ़कर कोई चौपाया ही न हो!

हेमनलिनी परीक्षा पास करनेकी जल्दबाजीमें सिलाई-सुईके काममें कोई खास होशियार नहीं हो सकी। कुछ दिनोंसे सुईके काममें खूब होशियार अपनी एक सहेलीसे वह खूब मन लगाकर सीने-काढ़नेका काम सीख रही है। सीने-काढ़नेके कामको रमेश बिलकुल फालतू और तुच्छ समझता है। साहित्य और दर्शनमें हेमनलिनीसे उसका काफी लेन-देन चला करता है, पर सिलाईके बारेमें रमेशको उससे बहुत दूर पड़ा रहना पड़ता है। इसलिए, अकसर वह बेचैन होकर कह बैठता—"आजकल सिलाईका काम आपको क्यों इतना अच्छा लगने लगा! जिनके पास वक्त काटनेका और-कोई जरिया ही नहीं, उन्हींके लिए यह काम अच्छा है।" हेमनलिनी कुछ जवाब न देकर मुसकुराती हुई सुईमें रेशमी डोरा पिरोती रहती। अक्षय जोरदार लफ्जोंमें कह उठता—"जो काम घर-गृहस्थीकी किसी जरूरतको पूरा करते हैं, रमेश बाबूकी नजरोंमें वे काम बिलकुल गैरजरूरी और तुच्छ हैं। महाशयजी चाहे जितने बड़े तत्त्वज्ञानी और कवि क्यों न हों, तुच्छ और नाचीजके बगैर एक दिन भी काम नहीं चल सकता।" रमेश गरम होकर इसके खिलाफ बहस करनेके लिए कमर बाँधके तैयार हो जाता ; पर हेमनलिनी बीचमें विघन डालकर कहती—"रमेश बाबू, आप सभी बातोंका जवाब देनेके लिए इतने उतावले क्यों हो उठते हैं? इससे दुनियामें फालतू बातें इतनी बढ़ जाती हैं कि जिनका ठीक

नहीं।" इतना कहकर वह निगाह नीची कर लेती और बुनाईके घर गिनकर सावधानीसे आगे बुनने लगती।

एक दिन सबेरे रमेशने अपने पढ़ने-लिखनेके कमरेमें जाकर देखा कि उसकी टेबिलपर काली मखमलका-बना एक नया ब्लाटिंगपैड रखा हुआ है, जिसके एक कोनेपर रेशमी डोरोंसे फूल-पत्तीका काम किया हुआ है, दूसरे कोनेपर 'र' अक्षर बना-हुआ है, तीसरे कोनेपर सुनहरी जरीसे एक कमल बनाया गया है और चौथा कोना यों ही छोड़ दिया गया है। इसका इतिहास और मतलब समझनेमें रमेशको पल-भरकी भी देर न लगी। उसका मन नाच उठा। सिलाईका काम तुच्छ नहीं है, यह बात बिना किसी बहसके उसने मान ली। उस ब्लाटिंगपैडको छातीसे लगाकर वह अक्षयके आगे भी अपनी हार मान लेनेको तैयार हो गया। उस ब्लाटिंगपैडपर उसी वक्त एक चिट्ठीका कागज रखकर उसने लिखा—"मैं अगर कवि होता तो कविता करके इसी वक्त इसका बदला चुकाता; पर कुदरतकी उस देनसे मैं वंचित हूँ। भगवानने मुझे देनेकी ताकत नहीं दी; पर लेनेकी ताकत भी एक ताकत है। बिना उम्मीदके इस तोहफेको मैंने किस तरह अपनाया है, अन्तरजामीके सिवा इस बातको और कोई नहीं जान सकता। देन आँखोंसे दिखाई देती है, पर लेना दिलके भीतर छिपा रहता है। —तुम्हारा चिरऋणी।"

यह लिखावट हेमनलिनीके हाथ पड़ गई; मगर इस बारेमें दोनोंमें फिर कोई बात नहीं हुई।

इतनेमें बरसातके दिन आ गये। बरसातका मौसम मामूली तौरसे शहरमें रहनेवालोंके लिए उतना आरामदे नहीं जितना कि गाँव या जंगलके लिए वह सुहावना होता है। शहरके मकान अपनी बन्द खिड़कियों और छतोंसे, राहगीर अपनी तनी हुई छतरियोंसे, ट्राम और मोटरगाड़ियाँ अपने परदोंसे बरसातको रोकनेमें ही अपनी सारी ताकत लगा देती हैं। नदी-नाले, पहाड़ और जंगल बरसातको बड़े आदरके साथ अपना हितू मित्र समझकर बुलाते हैं। और वहीं वर्षाकी सच्ची धूमधाम होती है, वहीं सावनमें जमीन और आसमानका सच्चा खुश-मेल होता है।

पर नया प्रेम इस मामलेमें आदमीको पहाड़-जंगलके बराबर बना देता है। लगातार मेह बरसनेसे अन्नदा बाबूका हाजमा बिगड़ गया, पर रमेश और हेमनलिनीकी खुशहाली और फुरतीमें कोई फरक नहीं आया। बादलोंकी छाँह, उनका गरजना, वर्षाकी आवाज इन सबने मिलकर दोनोंके मनको बहुत ही नजदीक ला दिया है। वर्षाकी वजहसे रमेश अकसर अदालत जानेसे रह जाता है। किसी-किसी दिन सवेरे इतनी जोरकी वर्षा होने लगती है कि हेमनलिनी घबराकर कहने लगती—"रमेश बाबू, ऐसे मेहमें आप घर कैसे जायेंगे?" रमेश महज एक शर्मकी खातिर जवाब देता—"जरा-सा तो है ही, किसी तरह पहुँच ही जाऊँगा।" हेमनलिनी कहती—"क्यों भीगकर सरदी लगायेंगे? यहीं खा लीजिये न?" सरदीकी फिकर रमेशको जरा भी न थी; और, जरा-सेमें उसे सरदी लग जाती हो, ऐसी बात भी आज तक किसीके देखनेमें नहीं आई। फिर भी जिस रोज मेह बरसता उस रोज रमेशको हेमनलिनीकी तीमारदारीमें ही रहना पड़ता। दो कदम चलकर घर जाना उसके लिए 'अन्याय' और 'परहेज'की बात समझी जाती। किसी दिन जरा-से बादल दिखाई दिये कि चटसे हेमनलिनीके यहाँसे सवेरे खिचड़ीका और शामको पकौड़ी वगैरहका न्योता आ जाता। साफ देखनेमें आता कि अचानक सरदी लगनेके बारेमें इनलोगोंको जितनी ज्यादा दहशत लगी रहती है, उतनी हाजमाके बारेमें कतई नहीं।

इसी तरह दिन कटने लगे। अपनेको भुला देनेवाले हृदयके इस आवेगका नतीजा क्या होगा, इस बारेमें रमेशने साफ-साफ कभी नहीं सोचा। मगर अन्नदा बाबू सोचते थे; और, उनके समाजके और भी बहुतसे लोग इसकी चर्चा करते रहते थे। एक तो, रमेशमें जितना पाण्डित्य है, उतनी साधारण बुद्धि नहीं; उसपर उसकी मौजूदा हालत ऐसी मुग्ध-सी हो रही है कि उसके मारे उसकी दुनियादारीकी समझ बिलकुल धुँधली हो गई है। अन्नदा बाबू रोज ही एक खास उम्मीद लिये उसके मुँहकी ओर देखा करते हैं, पर उसकी तरफसे उन्हें कोई जवाब ही नहीं मिलता।

१०

अक्षयका गला ऐसा कुछ अच्छा नहीं था ; पर जब वह बेहला उठाकर गाना शुरू करता तब बहुत बड़े समझदारके सिवा मामूली सुननेवाले लोग कोई आपत्ति नहीं करते, बल्कि और भी गानेके लिए अनुरोध करते। अन्नदा बाबूको गाने-बजानेसे खास कोई दिलचस्पी नहीं थी, पर इस बातको वे मंजूर नहीं करते थे ; फिर भी वे अपना बचाव करते हुए कहते—"यही तुमलोगोंमें दोष है। बेचारा गा सकता है, इसके मानी यह थोड़े ही हैं कि उसपर जुल्म किया ही जाय!"

अक्षय विनयके साथ कहता—"नहीं नहीं, अन्नदा बाबू, इसकी आप फिकर न कीजिये, – जुल्म किसपर होता है, यही विचारनेकी बात है।"

अनुरोधकी तरफसे जवाब आता—"तो परीक्षा हो जाय!"

उस दिन शामको घटाटोप बादल हो आये। रात पड़ चुकी, पर वर्षा नहीं थमी। अक्षयको भी रुक जाना पड़ा। हेमनलिनीने कहा—"अक्षय बाबू, एक गीत तो गा दीजिये।"

इतना कहकर हेमनलिनीने हारमोनियमसे सुर निकालना शुरू कर दिया। अक्षयने बेहलेका सुर मिलाकर गाना शुरू किया—

"पवन बहे पुरवइया, पीया बिनु नींद न आये।"

गानेके मानी अकसर साफ-साफ समझमें नहीं आते ; और न इसकी कोई जरूरत ही है कि हर लफ्जके मानी समझमें आने ही चाहिए। मनमें जब कि विरह-मिलनकी वेदना इकट्ठी हो रही हो तब जरा-सा इशारा ही उसके लिए काफी है। इतना समझमें आया कि बादल झर रहे हैं, मोर बोल रहे हैं, एकको दूसरेके बिना नींद नहीं आती, वगैरह वगैरह।

अक्षय सुर-ही-सुरमें छिपा-हुआ दिलका दर्द जाहिर करनेकी कोशिश कर रहा था ; पर वह सुर काम आ रहा था किसी और ही दो जनोंके। रमेश और हेमनलिनीके हृदय उस स्वरलहरीके सहारे आपसमें एक दूसरेपर चोटपर चोट करते जा रहे थे। उनके लिए दुनियामें कोई भी चीज तुच्छ न रहा ; संसारका सबकुछ हरा-भरा और खुशनुमा हो उठा। दुनियामें आज तक जितने आदमियोंने

जितना प्रेम किया है, सारा-का-सारा मानो दो हृदयोंमें बँटकर एक अजीब तरहके सुख-दुःखसे, एक विचित्र ढंगकी घबराहट और चाहनासे काँपने लगा।

उस दिन बादलोंमें जैसे बीचमें सँध नहीं थी, गानेका भी वही हाल हो गया। हेमनलिनी बार-बार आजिजीके साथ कहती गई—"अक्षय बाबू, रुकिये मत, एक और गाइये, एक और गाइये।"

उत्साह और उमंगमें आकर अक्षय बराबर गाता ही चला गया। गानेके स्वर एकके ऊपर एक इस कदर जमके बैठे कि जरा भी कहींसे बाहरका उजाला उसमें न घुस सकता था, अँधेरा-गुप हो गया; और ऐसा लगने लगा जैसे रह-रहकर उसमें बिजली चमक उठती हो। वेदनातुर दो हृदय उसमें घिरे-हुए बन्द पड़े रहे, बाहरकी दुनियाका उन्हें जरा भी होश-हवास न रहा।

बहुत रात बीते अक्षय घर चला गया। रमेशने विदा लेते वक्त गानेके स्वरके भीतरसे चुपचाप हेमनलिनीके मुँहकी ओर एक बार देखा। हेमनलिनीने भी पल-भरके लिए उसकी ओर देखा, उसकी निगाहोंमें भी गानोंकी छाया मौजूद थी।

रमेश घर चला गया। मेह थोड़ी देरके लिए थम गया था; फिर जोरोंसे बरसने लगा। रमेशको उस दिन रात-भर नींद नहीं आई। हेमनलिनी भी बहुत देर तक चुपचाप बैठी-बैठी गहरे अँधेरेमें वर्षाकी झमझम आवाज सुनती रही। उसके कानोंमें वही एक ही धुन सुनाई दे रही थी—

"पवन बहे पुरबइया, पीया बिनु नींद न आये।"

दूसरे दिन सुबह रमेशने एक गहरी साँस ली; और सोचने लगा, 'मुझे अगर सिर्फ गाना गाना आ जाये तो उसके बदले मैं अपनी सारी विद्या दे डालूँ।'

मगर, उसे इस बातका कतई भरोसा न था कि वह कभी भी गाना गा सकेगा। उसने तय किया कि वह बजाना सीखेगा। इसके पहले एक दिन अन्नदा बाबूके घरमें अकेलेमें उसने बेहला उठाकर उसपर छड़ी फेरी थी। उस छड़ीकी सिर्फ एक ही चोट खाकर सरस्वती ऐसी चीख उठीं कि उस दिनसे उसने बेहला बजानेका खयाल ही छोड़ दिया। आज वह छोटा-सा एक हारमोनियम खरीद लाया है। कमरेके अन्दर दरवाजा बन्द करके वह उसपर बड़ी होशियारीसे

उंगलियाँ चला रहा है ; और इतना समझ रहा है कि इस बाजेमें और चाहे जो भी हो, बरदाश्त करनेकी ताकत बेहलासे कहीं ज्यादा है।

दूसरे दिन अन्नदा बाबूके घर पहुँचते ही हेमनलिनीने रमेशसे पूछा—"कल आपके कमरेमेंसे हारमोनियमकी आवाज कैसे सुनाई दे रही थी ?"

रमेशने सोचा था कि दरवाजा बन्द रहनेसे पकड़े जानेका कोई अन्देशा ही नहीं रह जाता ; पर यह उसे नहीं मालूम कि ऐसे भी कान हैं जो बन्द कमरेमेंसे भी अपने कामकी खबर सुन लिया करते हैं। रमेशको जरा-कुछ शर्मिन्दा होकर कबूल करना पड़ा कि उसने एक हारमोनियम खरीदा है और बजाना सीख रहा है।

हेमनलिनीने कहा—"चारों तरफसे कमरा बन्द करके अपने-आप सीखनेकी फजूल कोशिश क्यों कर रहे हैं! इससे अच्छा तो यही होगा कि आप हमारे यहाँ कोशिश कीजिये ; मुझसे जहाँ तक बनेगा, मैं आपको मदद करूँगी।"

रमेशने कहा—"लेकिन मैं तो बिलकुल ही रंगरूट हूँ, मुझे सिखानेमें आपको बड़ी परेशानी उठानी पड़ेगी।"

हेमनलिनीने कहा—"मैं जितना जानती हूँ, उससे रंगरूटोंको ही किसी कदर सिखाया जा सकता है।"

क्रमशः यही साबित होने लगा कि रमेशने जो अपनेको रंगरूट कहा था, सो सिर्फ अदबके खयालसे ही नहीं, उसमें काफी सचाई थी। ऐसा उस्ताद और उसको इतनी गरजके साथ मदद पाकर भी रमेशके मगजमें सुरका ज्ञान कतई न घुस सका। तैरना नहीं जाननेवाला जैसे पानीमें पड़कर पागलकी तरह हाथ-पैर पीटता रहता है, ठीक उसी तरह रमेश संगीतके घुटनों पानीमें उँगलियाँ पीटता रहा। उसकी कौन-सी उँगली किस जगह जाकर पड़ती, कोई ठीक नहीं ; कदम-कदमपर गलत सुर बज उठता, पर रमेशके कानोंपर उसका कोई असर नहीं। सुर और बेसुरके बीच किसी तरहका पक्षपात बगैर किये वह मौजके साथ राग-रागिनियोंको लाँघता चला जाता है। हेमनलिनी ज्यों ही कहती, 'यह क्या कर रहे हैं, गलत बजाया आपने।' त्यों ही वह चटसे दूसरी भूल करके पहली भूलको मिटाकर साफ कर देता। गम्भीर-प्रकृति

और परम उद्योगी रमेश हिम्मत हारनेवाला सख्स नहीं। सड़क कूटनेवाला स्टीम-रोलर जैसे धोमी चालसे चलता ही रहता है, उसके नीचे क्या-क्या दबता पिसता रहता है इसकी उसे जरा भी परवाह नहीं रहती, ठीक उसी तरह रमेश अभागी स्वरलिपि और हारमोनियमकी रीडोंपर बराबर इधरसे उधर उँगलियाँ चलता रहा, रुका नहीं।

रमेशकी बेवकूफोपर हेमनलिनी हँसतो रहती। रमेश भी हँसनेमें उसका साथ देता। रमेशमें गलती करनेकी ऐसी जबरदस्त ताकत देखकर हेमनलिनीको बहुत ही मजा आने लगा। किसीकी गलतीसे, बेसुरसे, और नाकाबिलीयतसे मजे लेनेकी ताकत प्यारमें ही पाई जाती है। बच्चा चलना शुरू करता है तो बार-बार उसका गलत कदम उठता है, फिर भी उसीसे मा-बापका प्यार उमड़-उमड़ उठता है। बाजा बजानेके बारेमें रमेश जो बार-बार अपनी बेवकूफी जाहिर करता है, हेमनलिनोको उसीमें पूरा मजा आता है।

रमेश बीच-बीचमें कहता—"अच्छा, आप जो इतना हँस रही हैं, जब आप खुद सीखा करती थीं तब आपसे गलती नहीं होती थी?"

हेमनलिनी कहती—"गलती तो जरूर होती थी, पर सच कहती हूँ रमेश बाबू, आपके साथ उसकी मिसाल नहीं दी जा सकती।"

रमेश इससे जरा भी नहीं दबता, हँसकर फिर वह शुरूसे बजाना शुरू कर देता। अन्नदा बाबू संगीतकी बुराई-भलाई कुछ भी न समझते थे, वे बीच बीचमें गम्भीर होकर कान लगाके सुनते और कहते—"हूँ-हूँ, रमेशका हाथ तो आहिस्ते-आहिस्ते खूब जमता जा रहा है।"

हेमनलिनी कहती—"हाथ बेसुरे रागमें जम रहा है।"

अन्नदा बाबू कहते—"नहीं नहीं, पहले जैसा सुनता था, अब उससे कहीं अच्छा सुन रहा हूँ। मुझे तो लगता है कि रमेश अगर इसके पीछे लगा रहे, तो जरूर सीख लेगा। गाने-बजानेमें और-कुछ नहीं, खूब रियाज करनेकी जरूरत है। एक बार सरगमकी जानकारी हो गई कि फिर सब आसान है।"

इन सब बातोंके खिलाफ कुछ कहा नहीं जा सकता, इसलिए चुपचाप सुन लेना ही अच्छा है।

११

लगभग हर साल शरद्‌ऋतुमें, दुर्गापूजाकी छुट्टियोंमें जब वापसी-टिकट चलता तब, अन्नदा बाबू हेमनलिनीको लेकर अपने बहनोईके यहाँ जबलपुर घूमने जाया करते हैं। अपने हाजमेकी तरक्कीके लिए उनकी यह सालाना कोशिश थी।

भादोंका महीना आधा बीत चुका, अब पूजाकी छुट्टियोंमें ज्यादा देर नहीं। अन्नदा बाबू अभीसे ही अपने सफरकी तैयारियोंमें मशगूल हैं।

जल्द ही बिछोह होनेकी सम्भावनामें रमेशने आजकल हारमोनियम सीखनेमें बहुत ज्यादा वक्त देना शुरू कर दिया है। एक दिन बात-चीतके सिलसिलेमें हेमनलिनी कह उठी—"रमेश बाबू, मेरे खयालसे कुछ दिनोंके लिए आप आब-हवा बदलने बाहर चले चलें तो अच्छा। – क्यों बापूजी?"

अन्नदा बाबूने सोचा, बात तो ठीक है, क्योंकि इन दिनों रमेशपर जो दुःख पड़े हैं उनको भूलनेके लिए यह अच्छा मौका है। उन्होंने कहा—"कमसे कम कुछ दिनोंके लिए बाहर कहीं घूम आना अच्छा है। समझे रमेश, पछाँहकी तरफ जाओ या देश, कहीं भी जाओ, कुछ दिनोंके लिए थोड़ा-बहुत सुधार तो हो ही जाता है। शुरू-शुरूमें कुछ दिन भूख भी खूब बढ़ जाती है, खाना-पीना भी अच्छा होता है, उसके बाद फिर जैसाका तैसा! फिर वही, कभी पेट भारी है तो कभी छाती जलती है, जो खाओ वही—"

हेमनलिनी बीच ही में बोल उठी—"रमेश बाबू, आपने नर्मदाका झरना देखा है?"

रमेशने कहा—"नहीं, मैंने नहीं देखा।"

हेमनलिनी—"यह तो आपको देखना ही चाहिए। – क्यों बापूजी?"

अन्नदा बाबू—"जरूर जरूर, तो फिर रमेश हमारे साथ ही क्यों नहीं चले चलते? आब-हवा भी बदल आना और झरना-पहाड़ वगैरह भी देख आना।"

आब-हवा बदलना और झरना-पहाड़ देखना ये दोनों ही काम फिलहाल रमेशको जरूरी मालूम दिये; लिहाजा उसके राजी होनेमें देर न लगी।

उस दिन रमेशका तन और मन दोनों ही मानो हवामें उड़ने लगे। अपने

अशान्त हृदयके आवेगको बाहर निकलनेके लिए कोई-एक रास्ता छोड़ देनेकी गरजसे वह अपने कमरेको चारों तरफसे बन्द करके हारमोनियम लेकर बैठ गया। आज उसे, सरगमका जो थोड़ा-बहुत होश रहता भी था वह भी न रहा ; बाजेके ऊपर वह इस कदर बेरहमीके साथ उँगलियाँ दे मारने लगा कि ताल-बेताल दोनों ही एकसाथ नाच उठे। हेमनलिनी दूर चली जायगी इस सोचमें कई दिनसे उसका मन भारी-सा हो रहा था ; आज मारे खुशीके संगीत-विद्याके बारेमें उसका जा-बेजा सब तरहका होश-हवास बिलकुल ही जाता रहा।

इतनेमें बाहरसे किसीने दरवाजेपर धक्का देते हुए कहा—"ओफ्-हो, जरा ठहरिये भी तो, आज आप कर क्या रहे हैं, रमेश बाबू !"

रमेश बहुत ही शर्मिन्दा हुआ ; और उठके दरवाजा खोल दिया। अक्षय कमरेके अन्दर दाखिल होकर बोला—"रमेश बाबू, कमरेको चारों तरफसे बन्द करके इस तरह छिपे-छिपे जो आप जुल्म कर रहे हैं, इसके लिए आपके 'फौजदारी कानून'में क्या कोई सजा नहीं लिखी ?"

रमेश हँसने लगा, बोला—"कसूर मंजूर करता हूँ।"

अक्षयने कहा—"रमेश बाबू, आप अगर कुछ खयाल न करें, तो मुझे आपसे एक बात करना है ?"

रमेश उत्कण्ठित होकर अक्षयकी बात सुननेके लिए चुपचाप उसके मुँहकी तरफ देखता रहा।

अक्षय कहने लगा—"आप इतने दिनोंमें यह समझ गये होंगे कि हेमनलिनीकी भलाई-बुराईके बारेमें मैं पूरी दिलचस्पी रखता हूँ।"

रमेश 'हाँ' या 'ना' कुछ भी न कहकर चुपचाप सुनता रहा।

अक्षय कहता गया—"उनके बारेमें आपकी मनसा क्या है, यह पूछनेका मैं हक रखता हूँ, – अन्नदा बाबूके इष्ट-मित्रोंमेंसे मैं भी एक हूँ।"

बात और बात करनेका ढंग रमेशको बहुत ही बेहूदा मालूम हुआ ; मगर कड़ा जवाब देना रमेशको आदतके खिलाफ है, और न उसमें इतनी हिम्मत ही है। उसने मुलायमियतके साथ कहा—"उनके बारेमें मेरा कोई बुरा इरादा है, आपके दिलमें ऐसा शक बैठनेका सबब क्या हुआ, मैं पूछ सकता हूं क्या ?"

अक्षय—"देखिये, आप हिन्दू-परिवारके हैं, आपके पिता हिन्दू थे, मुझे मालूम है ; कहीं आप किसी ब्राह्मसमाजीके यहाँ शादी न कर बैठें इसी डरसे वे आपको देश ले गये थे, आपकी शादी कर देनेके लिए।"

अक्षयको इसकी पूरी खबर थी, और इसकी एक खास वजह भी थी ; वह यह कि अक्षयने ही उनके मनमें इस तरहका शक पैदा कर दिया था। रमेश कुछ देर तक आँख उठाकर अक्षयके मुँहकी ओर देख न सका।

अक्षय कहने लगा—"अचानक आपके पिताका देहान्त हो जानेसे आपने अपनेको क्या बिलकुल ही आजाद समझ लिया ? उनकी मनसा क्या—"

रमेशसे अब सहा नहीं गया, उसने तुरत जवाब दिया—"देखिये, अक्षय बाबू, दूसरोंके बारेमें आपको अगर उपदेश या नसीहत देनेका हक हो तो आप दिये जाइये, मैं सुनता जाऊँगा ; पर मेरे पिताके साथ मेरा जो ताल्लुक है उसके बारेमें आपकी कोई बात मुझे नहीं सुनना है।"

अक्षय बोला—"अच्छा तो ठीक है, खैर, उस बातको छोड़िये। मगर हेमनलिनीके साथ शादी करनेका इरादा और हैसियत आपकी है या नहीं, यह आपको बताना ही पड़ेगा।"

रमेश चोटपर चोट खाकर बराबर उत्तेजित होता जा रहा था, अब वह बोला—"देखिये, अक्षय बाबू, आप अन्नदा बाबूके इष्ट-मित्र हो सकते हैं, पर मेरे साथ आपकी कोई घनिष्ठता नहीं। बराय मेहरबानी, आप इन सब बातोंको बन्द कीजिये।"

अक्षय—"मेरे बन्द कर देनेसे ही अगर सब बातें बन्द हो जायँ और आप अभी जैसे नतीजेका कोई खयाल न करके बड़े आरामसे दिन काट रहे हैं वैसे ही बराबर काट सकें, तो कोई बात ही नहीं थी। मगर समाज आप जैसे अलमस्तोंके लिए आरामकी जगह नहीं है। माना कि आपलोग बहुत ऊँचे दरजेके आदमी हैं, दुनियादारोंकी बातोंपर इतना खयाल नहीं रखते, फिर भी कोशिश करें तो शायद इतनी-सी बात आपकी समझमें आ सकती है कि एक शरीफकी लड़कीके साथ आप जैसा सलूक कर रहे हैं, उस तरह आप बाहरवालोंकी जवाबदेहीसे अपनेको बचा नहीं सकते ; और जिन लोगोंकी आप इज्जत या

श्रद्धा करते हैं उन्हें समाजकी नजरोंमें बेइज्जत करनेका यही तरीका है जो आपने अख्तियार कर रखा है।"

रमेश—"आपकी इन नसीहत-भरी बातोंके लिए मैं एहसान मानता हूँ। आपकी बात मैं समझ गया। अब मेरा जो फर्ज है उसे मैं जल्दी तय करके अदा करनेकी कोशिश करूँगा। इस मामलेमें अब आप कतई फिकर न करें; इस बारेमें अब कोई बात कहनेकी जरूरत नहीं।"

अक्षय—"मुझे आपने जान बख्शी, रमेश बाबू! इतने लम्बे अरसेके बाद भी जो आपने अपने कर्तव्यके बारेमें सोचने और पालन करनेकी बात कही, इससे मैं निश्चिन्त हो गया। आपके साथ बहस करनेका मुझे शौक नहीं। आपकी संगीत-चर्चामें मैंने जो विघ्न डाला है उसके लिए मैं कसूरमन्द हूँ, माफ कीजियेगा। आप फिर शुरू कीजिये, मैं जाता हूँ।"

इतना कहकर अक्षय तेजीके साथ बाहर चला गया।

इसके बाद तो फिर बेसुरा संगीत भी आगे नहीं बढ़ सकता था। रमेश अपने दोनों हाथोंपर सिर रखके विस्तरपर चित्त पड़ रहा। इस तरह पड़े-पड़े काफी देर हो गई। अचानक घड़ीमें जब टन-टन करके पाँच बज गये तब वह भड़भड़ाकर उठ बैठा। क्या कर्तव्य तय किया सो भगवान ही जानें; पर फिलहाल पड़ोसमें जाकर कई प्याले चाय पी आना चाहिए, अपने इस कर्तव्यमें उसे जरा भी दुविधा न रही।

हेमनलिनी चौंककर बोली—"रमेश बाबू, आज क्या आपकी तबीयत कुछ खराब है क्या?"

रमेशने कहा—"नहीं तो, ऐसी तो कोई बात नहीं।"

अन्नदा बाबूने कहा—"और कोई बात नहीं, हाजमेकी जरूर कुछ-न-कुछ शिकायत होगी, पित्त बढ़ गया होगा। मैं जो गोली लिया करता हूँ उसमेंसे एक खा देखो—"

हेमनलिनी हँस दी, बोली—"बापूजी, शायद ही कोई बचा हो जिसे तुमने अपनी गोली न खिलाई हो, पर इससे किसीको फायदा भी हुआ है?"

अन्नदा बाबू—"नुकसान तो नहीं हुआ। मैंने खुद आजमाकर देखा है।

आज तक जितनी भी तरहकी गोलियाँ मैंने ली हैं उन सबसे यही ज्यादा फायदेमन्द है।"

हेमनलिनी—"बापूजी, जब तुम कोई नई दवा खाना शुरू करते हो तो कुछ दिनों तक उसकी तारीफ करते नहीं थकते, फिर—"

अन्नदा बाबू—"तुम लोगोंका तो किसी चीजपर विश्वास ही नहीं रहा। अच्छा, अक्षयसे पूछ देखो, मेरे इलाजसे उसे कुछ फायदा हुआ है या नहीं।"

इस प्रामाणिक गवाहीको पेशीके डरसे हेमको चुप रह जाना पड़ा। पर गवाह खुद बखुद आ धमका, और आते ही बोल उठा—"बाबू साहब, आप अपनी वह गोली जरा निकाल दीजिये; उससे मुझे बहुत फायदा है। आज तबीयत कुछ हलकी-सी मालूम होती है।

अन्नदा बाबूने गर्वके साथ एक बार अपनी लड़कीके चेहरेकी तरफ देखा; और गोली लाने भीतर चले गये।

१२

गोली खिलानेके बाद अन्नदा बाबूने अक्षयको जल्दी छोड़ना नहीं चाहा। अक्षय भी जानेके लिए कोई खास जल्दी न जाहिर करके बीच-बीचमें रमेशके चेहरेकी तरफ कनखियोंसे देखने लगा। ऐसी-ऐसी बातोंपर रमेशका कभी खयाल नहीं जाता और न उसकी नजर ही पड़ती है, पर आज उसकी नजर पड़ी और अक्षयका इस तरह उसकी तरफ देखना उसे खल गया। इससे उसके मिजाजमें कुछ गरमाहट-सी आ गई; मगर वह खामोश रहा।

हेमनलिनीका मिजाज आज यों खुश था कि बाहर जानेके दिन करीब आते जा रहे हैं; और मन-ही-मन उसकी कल्पना कर-करके वह आज फूली नहीं समा रही। उसने तय कर रखा था कि आज रमेश बाबू आयेंगे तो छुट्टियाँ कैसे बिताई जायँ इस विषयमें उनसे तरह-तरहकी सलाहें होंगी। वहाँ एकान्तमें कौन-कौनसी किताबें पढ़के खतम करनी हैं, दोनों मिलकर उसकी एक फेहरिस्त बनाना चाहते थे। इसके लिए पहलेसे यह तय हो चुका था कि रमेश आज जरा जल्दी आ जायगा; क्योंकि चायके वक्तपर अक्षय या और कोई-न-कोई आ ही जाता है, तब फिर उन्हें बात करनेका मौका नहीं मिलता।

मगर आज रमेश और-और दिनोंसे भी ज्यादा देर करके आया। उसके चेहरेका भाव भी काफी चिन्ताग्रस्त-सा मालूम दिया। इससे हेमनलिनीकी उमंगोंपर बड़ी-भारी चोट-सी पहुँची। किसी एक मौकेसे उसने धीरेसे रमेशसे पूछा—"आज आप बड़ी देरसे आये?" रमेश कुछ देर चुप रहकर अकमना-सा बोला—"हाँ, आज जरा देर हो गई।"

हेमनलिनीने आज कितनी जल्दी-जल्दी जूड़ा बाँधा; और, जूड़ा बाँधने और कपड़े पहननेके बाद कितनी बार घड़ीकी ओर देखा, कुछ शुमार नहीं। बहुत देर तक तो वह यही सोचती रही कि उसकी घड़ी तेज चल रही है, अभी इतने थोड़े ही बजे होंगे। जब अपनी इस धारणाको कायम रखना उसके लिए मुश्किल हो गया तब हाथमें सिलाईका काम लिये वह खिड़कीके पास बैठी इन्तजार करती रही; और तब उसने किसी भी तरह धीरज नहीं खोया और अपनेको शान्त बनाये रखा; किन्तु अब, रमेशका गम्भीर चेहरा और बोलीमें उदासी देखकर, इतनी देर करके आनेपर भी उसकी कोई जवाबदेही महसूस न करनेसे उसका धीरज टूट गया। जैसे जल्दी आनेकी कोई बात ही नहीं थी!

किसी तरह उसने चाय पीके खतम की; और कमरेके एक कोनेमें तिपाईपर जो किताबें पड़ी थीं उनमेंसे कुछ किताबें इस ढंगसे उठाकर कि रमेशका ध्यान खामखा उधर जाय, वह बाहर जाना ही चाहती थी कि अचानक रमेशको होश आया; जल्दीसे उठकर वह उसके पास पहुँचा और बोला—"ये किताबें कहाँ लिये जा रही हैं? आज एक दफे किताबें छाँट नहीं लेंगी?"

हेमनलिनीके ओठ काँप रहे थे। उसने अपने उमड़ते-हुए आँसुओंको बड़ी मुश्किलसे रोककर काँपते हुए कण्ठसे कहा—"रहने दीजिये, किताबें छाँटकर क्या करना है।"

इतना कहकर वह बड़ी तेजीसे कदम रखती हुई वहाँसे चली गई। और, ऊपर अपने सोनेके कमरेमें जाकर सारी किताबें जमीनपर पटक दीं।

रमेशका मन और भी ज्यादा विकल हो उठा। अक्षय मन-ही-मन हँसता हुआ बोला—"रमेश बाबू, आज शायद आपकी तबीयत ठीक नहीं मालूम होती?"

रमेशने इसके जवाबमें बड़बड़ाते हुए कुछ कहा जरूर, पर साफ सुनाई नहीं दिया। तबीयतकी बातपर अन्नदा बाबू उत्साहित होकर बोले—"सो तो रमेशको देखते ही मैंने कह दिया था।"

अक्षय ओठों-ही-ओठोंमें मुसकुराकर बोला—"तनदुरुस्तीकी तरफ ध्यान देना रमेश बाबू जैसे खास आदमियोंके लिए बहुत ही तुच्छ बात है ; ये लोग भाव-राज्यके आदमी ठहरे, खाना हजम न होनेपर उसके लिए कोशिश करनेको ये लोग गँवारूपन समझते हैं।"

अन्नदा बाबूने इस बातको गम्भीर रूपमें लिया, और विस्तारके साथ साबित करने बैठ गये कि भावुकोंके लिए भी खाना हजम होना बहुत जरूरी है।

रमेश चुपचाप बैठा हुआ भीतर-ही-भीतर जल-भुनकर खाक होने लगा।

अक्षयने कहा—"रमेश बाबू, मेरी सलाह मानिये, अन्नदा बाबूकी एक गोली खाकर जल्दीसे जाकर सो जाइये।"

रमेशने कहा—"आन्नदा बाबूके साथ मुझे कुछ जरूरी बात करना है, इसलिए मैं बैठा हूँ।"

अक्षय कुरसी छोड़कर उठ खड़ा हुआ, बोला—"यह देखिये, पहले ही से कह देते अच्छा होता न! रमेश बाबू सब बातें पेटमें रखे रहते हैं, आखिरमें जब वक्त निकल जाता है तब उतावले हो उठते हैं।"

अक्षयके चले जानेपर रमेश अपने जूतोंपर नजर गड़ाये कहने लगा—"बाबू साहब, आपने मुझे अपना घरका-सा समझकर यहाँ आनेका हक दे रखा है, इसे मैं अपना कितना बड़ा सौभाग्य समझता हूँ सो नहीं कह सकता।"

अन्नदा बाबू बोले—"इसमें क्या बात है! तुम हमारे योगेन्द्रके मित्र हो, एकसाथ कालेजमें पढ़े हो ; तुम्हें मैं घरका-सा लड़का समझूँ तो इसमें बड़ी बात कौनसी है?"

भूमिका तो हो चुकी, इसके बाद क्या कहना चाहिए, सो रमेशकी कुछ समझमें न आया। अन्नदा बाबू रमेशका रास्ता साफ कर देनेकी गरजसे बोले—"रमेश, तुम जैसे लड़केको हम अगर घरका लड़का बना सकें तो हमारे लिए क्या वह कम सौभाग्यकी बात होगी?"

इसके बाद भी रमेशसे कुछ कहते नहीं बना।

अन्नदा बाबू कहते गये—"देखो न, तुम लोगोंके बारेमें बाहरके लोग कितनी तरहकी बातें किया करते हैं। कहते हैं, हेमकी ब्याह-लायक उमर हो चुकी है, अब उसके साथी चुननेके विषयमें काफी सावधानीसे काम लेना चाहिए। मैं उनसे कह देता हूँ, रमेशपर मेरा पूरा भरोसा है, वह हमें हरगिज धोखा नहीं दे सकता।"

रमेश—"बाबू साहब, मेरे बारेमें तो आप सब-कुछ जानते ही हैं; आप अगर मुझे इस लायक समझते हैं, तो—"

आनन्दा बाबू—"इसमें क्या कहना! हमने तो एक तरहसे तय ही कर लिया है; सिर्फ तुम्हारे पिताजीका देहान्त हो जानेसे दिन नहीं सुधवा सका हूँ; वरना,—खैर, अब देर करना ठीक नहीं। समाजमें इस विषयकी तरह-तरहकी चर्चा चल पड़ी है, उसे जितना जल्दी हो सके, बन्द कर देना ही अच्छा है। तुम्हारी क्या राय है?"

रमेश—"आप जैसी आज्ञा देंगे वैसा ही होगा। हालाँकि सबसे पहले आपकी लड़कीकी राय मालूम होना जरूरी है।"

अन्नदा बाबू—"सो ठीक बात है। पर उसकी राय तो करीब-करीब मालूम ही है। फिर भी कल सवेरे उससे पक्की राय पूछ लूँगा।"

रमेश—"आपका सोनेका वक्त हो गया; अब मुझे इजाजत दीजिये।"

अन्नदा बाबू—"जरा ठहरो। मेरा तो कहना है कि जबलपुर जानेके पहले ही अगर तुम लोगोंका ब्याह हो जाता तो अच्छा रहता।"

रमेश—"दिन तो बहुत थोड़े रह गये हैं।"

अन्नदा बाबू—"नहीं, अभी दस-बारह दिन हैं। अगले रविवार तक भी अगर ब्याह हो जाता है, तो उसके बाद भी सफरकी तैयारीके लिए दो-तीन दिनका वक्त मिल जाता है। समझे रमेश, इतनी जल्दी मैं नहीं करता, पर क्या करूँ, अपने शरीरकी हालत देखते हुए जरा चिन्ता होती है?"

रमेश राजी हो गया; और एक गोली खाकर घर चला गया।

१२

कमलाके स्कूलकी भी छुट्टियाँ करीब आ गईं। रमेशने हेड-मिस्ट्रेससे कहकर पहलेसे ही इस बातका इन्तजाम करा लिया था कि छुट्टियोंमें कमला बोर्डिंगमें ही रहेगी।

रमेश खूब तड़के उठकर किलेके मैदानमें घूमने चला गया, और घूमते हुए उसने तय कर लिया कि ब्याहके बाद कमलाके बारेमें हेमनलिनीसे वह सब बातें कह देगा। उसके बाद कमलासे भी सब बातें कहनेका मौका आयेगा। इस तरह सब तरफसे झंझट निबट जानेपर कमला भी खुले मनसे हेमनलिनीके साथ रह सकेगी। देशमें इस बातको लेकर तरह-तरहकी चर्चा उठ सकती है ऐसा समझकर उसने हजारीबाग जाकर वहीं प्रैक्टिस करनेका निश्चय किया।

मैदानसे वापस आकर रमेश सीधा अन्नदा बाबूके घर पहुंचा। सीढ़ीमें अचानक हेमनलिनीसे उसकी भेंट हो गई। और-और दिन इस तरह भेंट होने पर दोनोंमें कुछ-न-कुछ बातचीत जरूर होती। पर आज हेमनलिनीका चेहरा सुर्ख हो उठा; उस सुर्खीके भीतरसे हँसीकी एक आभा अरुणोदयकी ललाईकी तरह चमक उठी। हेमनलिनी मुंह फेरकर आंखें नीची करके तेजीसे चल दी।

रमेशने जिस गतको हेमनलिनीसे सीखा था, घर जाकर उसीको वह हारमोनियमपर खूब जोरोंसे बजाने लगा। पर सिर्फ एक ही गत दिन भर कैसे बजाया जा सकता है। एक कविताकी किताब निकाली और उसे पढ़नेकी कोशिश करने लगा। उसे ऐसा मालूम होने लगा जैसे प्रेमका स्वर बहुत ही ऊंचा चढ़ गया है, और कोई भी कविता वहाँ तक पहुंच नहीं पाती।

और, हेमनलिनी अथक आनन्दके साथ अपने घरका काम-काज पूरा करके निराली दोपहरीमें अपने कमरेमें जाकर दरवाजा बंद करके अपनी सिलाई लेकर बैठ गई। उसके चेहरेपर एक भरी-पूरी खुशी और शान्ति छा रही है; एक तरहकी सर्वाङ्गीण सार्थकता उसे घेरे हुए है।

चायके वक्तसे पहले ही कविताकी किताब और हारमोनियम छोड़कर रमेश अन्नदा बाबूके घर पहुंच गया। और-और दिन हेमनलिनीके साथ भेंट होनेमें ज्यादा देर न होती थी। पर आज चायवाले कमरेमें जाकर उसने देखा कि

वहाँ कोई नहीं है, सन्नाटा है ; हेमनलिनी अभी तक अपने कमरेसे निकल कर नीचे नहीं आई ।

अन्नदा बाबू ठीक वक्तपर आकर अपनी कुरसीपर बैठ गये । रमेश रह-रह कर बार-बार दरवाजेकी तरफ देखने लगा ।

पैरोंकी आहट सुनाई दी, पर कमरेमें घुसा अक्षय । वह काफी मुलामियत दिखाता हुआ रमेशसे बोला—"अच्छा, आप यहाँ हैं, मैं आपके घर गया था ।"

सुनते ही रमेशके चेहरेपर उद्वेगकी छाप पड़ गई ।

अक्षयने हँसते हुए कहा—"डरनेकी क्या बात है रमेश बाबू ? आपपर हमला करने नहीं गया था । खुशखबरीपर बधाई देना इष्ट-मित्रोंका फर्ज है, वही अदा करने गया था ।"

इस बातपर अन्नदा बाबूको खयाल आ गया कि हेमनलिनी अभी तक नहीं आई । हेमनलिनीको उन्होंने आवाज दी ; किन्तु कोई जवाब नहीं मिला तो वे खुद ही ऊपर पहुंचे । उसके कमरेमें जाकर बोले—"हेम, यह क्या, अभी तक सिलाई लिये ही बैठी हो ! चाय तैयार हो गई । रमेश और अक्षय नीचे बैठे हैं ।"

हेमनलिनीके चेहरेपर जरा सुर्खी आ गई, उसने कहा—"बापूजी, मेरी चाय ऊपर भिजवा दो । आज मैं इस सिलाईको खतम कर देना चाहती हूं ।"

अन्नदा बाबूने कहा—"यही तो तुममें ऐब है हेम ! किसी कामके पीछे पड़ गई तो पड़ ही गई, दूसरी बातोंका कुछ खयाल ही नहीं । जब पढ़ती हो तो किताब हाथसे नहीं छूटती ; अब सिलाई लेकर बैठी हो तो और सब काम बन्द कर दिया । ऐसा नहीं करना चाहिए ; चलो, नीचे चलकर चाय पीना ।"

इतना कहकर अन्नदा बाबू लगभग जबरदस्ती ही उसे नीचे ले चले । नीचे पहुँचकर उसने किसीकी तरफ बिना देखे जल्दी-जल्दी चाय ढालना शुरू कर दिया।

अन्नदा बाबू अधीर होकर बोले—"हेम यह क्या कर रही हो ! मेरे प्यालेमें चीनी क्यों दे रही हो ? मैं तो कभी चीनी लेता नहीं ।"

अक्षय ओठों-ही-ओठोंमें मुसकराकर कहने लगा—"आज इनसे अपनी उदारता रोके नहीं रुक रही है ; एक तरफसे सभीको मीठा बाँट रही हैं ।"

हेमनलिनीके साथ किया गया यह गूढ़ मजाक रमेशसे सहा न गया। उसने उसी वक्त तय कर लिया कि और चाहे कुछ भी हो, ब्याहके बाद अक्षयसे वह किसी तरहका ताल्लुक न रखेगा।

इसके तीन-चार दिन बाद, एक दिन शामको चाय पीते हुए अक्षयने कहा—"रमेश बाबू, आप अपना नाम बदल डालिये।"

रमेश इस मजाकसे और भी ज्यादा नाखुश होकर बोला—"क्यों?"

अक्षयने अखबार खोलते हुए कहा—"यह देखिये, आपका ही कोई नामराशी अपनी तरफसे किसी दूसरेको परीक्षामें बिठाकर पास हो गया था जो पकड़ा गया है।"

हेमनलिनी जानती है कि रमेशसे मुँहपर जवाब देते नहीं बनता, यही वजह है कि अक्षयने आज तक रमेशको जितनी बार बातोंसे चोट पहुंचाई है, उसीने बराबर उसका जवाब दिया है। आज भी उससे न रहा गया। अपने छिपे हुए गुस्सेको दबाकर वह मुसकराती हुई बोली—"अक्षय नामके बहुतसे लोग शायद कैदमें पड़े सड़ रहे होंगे।"

अक्षयने कहा—"यह लीजिये, मित्रताके नाते अच्छी सलाह देता हूं तो आपलोग नाराज हो जाते हैं। तो फिर सारा इतिहास ही सुनाना पड़ेगा। आप तो जानती हैं, मेरी छोटी बहन शारदा कन्या-पाठशालामें पढ़ने जाती है। वह कल शामको मुझसे आकर बोली, 'भाई साहब, आपके रमेश बाबूकी बहू हमारे स्कूलमें पढ़ती है।' मैंने कहा, 'चल हट पगली, हमारे रमेश बाबूके सिवा क्या दूसरा कोई रमेश दुनियामें नहीं है?' उसने कहा, 'भले ही हों, पर वे अपनी बहूके साथ बड़ी भारी ज्यादती कर रहे हैं। छुट्टियोंमें सभी लड़कियाँ बाहर जा रही हैं, और उन्होंने अपनी बहूको बोर्डिंगमें ही रखना तय किया है। वह बेचारी रो-रोकर घर भरे दे रही है।' मैंने उसी वक्त मन-ही-मन कहा, यह तो बड़े मजेकी बात है, शारदाने जैसी भूल की है वैसी भूल और भी तो कोई कर सकता है।"

अन्नदा बाबू ठहाका मारकर हँस पड़े, बोले—"अक्षय, तुम क्या पागलोंकी तरह बकवास कर रहे हो? किस रमेशकी बहू कहाँ किस बोर्डिंगमें बैठी रो रही है, उसके लिए रमेश क्यों नाम बदलने चला?"

इतनेमें अचानक रमेश अपना सफेद-फक मुँह लिये-हुए उठकर चल दिया। अक्षय कहने लगा—"यह क्या रमेश बाबू, आप नराज होकर चले जा रहे हैं ? देखिये भला, आप क्या यह खयाल कर रहे हैं कि आपपर मैं शक करता हूँ ?" यह कहता हुआ वह रमेशके पीछे-पीछे चल दिया।

अन्नदा बाबू बोले—"बात क्या है ?"

हेमनलिनी रो दी। अन्नदा बाबू घबराहटके साथ बोले—"यह क्या बेटी, रोती क्यों हो ?"

वह सिसक-सिसककर रोने लगी ; और रोते-रोते रुँधे-हुए गलेसे बोली—"बापूजी, अक्षय बाबूको यह बड़ी-भारी ज्यादती है। क्यों वे हमारे घर आकर किसी शरीफ आदमीका इस तरह अपमान करते हैं ?"

अन्नदा बाबूने कहा—"अक्षयने मजाकमें एक बात कह दी है जो उसे नहीं कहनी चाहिए थी, लेकिन इसमें इतने घबराने और नाराज होनेकी क्या बात है ?"

"ऐसा मजाक बरदाश्तके बाहर है।"—कहकर तेजीके साथ हेम ऊपर चली गई।

अबकी बार कलकत्ता आनेके बाद रमेश बराबर कमलाके पतिका पता लगानेकी कोशिश कर रहा था। बड़ी मुश्किलोंसे उसने पता लगाया कि धोबीपोखर कहाँ है, उसका डाकखाना और जिला क्या है ; और फिर कमलाके मामा तारिणीचरणको उसने चिट्ठी लिखी है।

ऊपर कही हुई वारदातके दूसरे दिन रमेशको उस चिट्ठीका जवाब मिला। तारिणीचरणने लिखा है कि उस नाव-दुर्घटनाके बाद उनके दामाद नलिनाक्षकी कोई भी खबर नहीं मिली। रंगपुरमें वे डाक्टरी करते थे ; वहाँ उन्होंने चिट्ठी लिखी थी, उसके जवाबमें यही लिखा आया है कि वहाँ भी आज तक किसीको उनका पता नहीं चला। उनका खास देश कहाँ है सो उन्हें नहीं मालूम।

कमलाके पति नलिनाक्ष जिन्दा होंगे, यह उम्मीद आजकी चिट्ठीसे रमेशके मनसे धुल-पुछकर साफ हो गई।

इसके बाद और भी कई चिट्ठियाँ उसे मिलीं। ब्याहकी खबर सुनकर उसके मिलनेवालोंमें से बहुतोंने उसे शुभकामनाएँ भेजी हैं। किसीने मीठा मुँह

करानेकी माँग पेश की है तो कोई डटके दावत चाहता है ; और इतने दिनोंसे रमेशने उनसे जो बात छिपा रखी थी उसके लिए उलाहने भी काफी आये हैं।

रमेश चिट्ठियाँ देख रहा था ; इतनेमें अन्नदा बाबूके घरसे नौकर आया और उसके हाथमें एक बन्द लिफाफा दे गया। लिफाफेके ऊपरके दस्तखत देखते ही रमेशकी छाती धड़क उठी।

हेमनलिनीकी चिट्ठी है। रमेशने समझा कि अक्षयकी बातें सुनकर हेमनलिनीके मनमें शक पैदा हो गया है, और उसे रफा करनेके लिए उसने चिट्ठी लिखी है।

चिट्ठी खोलकर देखी तो उसमें सिर्फ इतना ही लिखा था—

"अक्षय बाबूने कल आपके साथ बहुत ही बुरा सलूक किया है। मैं समझती थी कि आज सवेरे ही आप आयेंगे, सो क्यों नहीं आये ? अक्षय बाबूकी बातको आपने इतना मान क्यों दे दिया, उनकी बातका इतना खयाल कोई नहीं करता। आप तो जानते हैं कि उनकी बातको मैं जरा भी परवाह नहीं करती। आज आप जरा जल्दी आइयेगा। सब काम छोड़कर मैं आपका इन्तजार करती रहूँगी।"

इन थोड़ेसे शब्दोंमें हेमनलिनीके सान्त्वना-सुधापूर्ण कोमल हृदयकी वेदना महसूस करके रमेशकी आँखोंमें आँसू भर आये। रमेश समझ गया कि कलसे ही हेमनलिनी उसकी वेदनाको शान्त करनेके लिए बड़ी बेचैनीसे उसकी बाट देख रही है। इसी तरह उसकी रात बीती है और इसी तरह सुबह। अन्तमें जब उससे रहा नहीं गया तब यह चिट्ठी लिखकर भेजी है।

रमेश कलसे सोच रहा था कि अब देर न करके हेमनलिनीसे सब बात साफ-साफ कह देना ठीक है। मगर कलकी वारदातके बाद उसके लिए ये सब बातें कहना जरा मुश्किल-सा हो गया। अब ऐसा मालूम होगा जैसे कसूर पकड़ा जानेके बाद सफाईकी कोशिश की जा रही हो। सिर्फ इतना ही नहीं, अक्षयकी भी बहुत-कुछ जीत हो जायगी, यह भी उसे बरदाश्त नहीं।

रमेश सोचने लगा, अक्षयके मनमें जरूर ही ऐसी धारणा होगी कि कमलाका पति रमेश कोई दूसरा ही है। नहीं तो वह सिर्फ इशारा करके ही

खामोश न रह जाता, मुहल्ले-भरमें शोर मचा देता। लिहाजा, अभीसे जो भी कुछ बने, उपाय निकाल लेना ठीक होगा।

रमेश ये सब बातें सोच ही रहा था कि डाकसे एक और चिट्ठी आ पहुँची। रमेशने खोलकर देखी, कन्या-पाठशालाकी हेड-मिस्ट्रेसकी चिट्ठी है। उन्होंने लिखा है, 'कमला बहुत ही घबरा रही है; इस हालतमें छुट्टियोंमें उसे बोर्डिंगमें रखना उन्हें ठीक नहीं जचता। अगले शनिवारको आधे दिन खुलनेके बाद स्कूलकी छुट्टी हो जायगी, उस समय स्कूलसे उसे घर ले जानेका इन्तजाम करना बहुत जरूरी है।"

अगले शनिवारको स्कूलसे कमलाको ले आना पड़ेगा; और उसके दूसरे ही दिन रविवारको रमेशका ब्याह है!

इतनेमें "रमेश बाबू, मुझे माफ कीजियेगा।"—कहता हुआ अक्षय कमरेके भीतर दाखिल हुआ; और बोला—"जरासे मजाकपर आप इतने नाराज हो जायँगे, ऐसा मालूम होता तो मैं हरगिज उस बातको न छेड़ता। मजाकमें थोड़ी बहुत सचाई होनेपर ही लोग नाराज हुआ करते हैं; पर जो बात बिलकुल ही बेबुनियाद है उसपर आप सबके सामने इतने नाराज क्यों हुए? अन्नदा बाबू तो कलसे मुझे डाट-फटकार रहे हैं; हेमनलिनीने मुझसे बोलना ही बन्द कर दिया है। आज सवेरे उनके यहाँ जाकर बैठा तो वे कमरा छोड़कर ही चल दीं। मैंने ऐसा क्या कसूर किया है, बताइये भला?"

रमेशने कहा—"इन सब बातोंका फैसला पीछे होता रहेगा। इस वक्त मुझे माफ कीजिये, मुझे बहुत जरूरी काम करना है।"

अक्षय बोला—"रोशनचौकीवालोंको बयाना देने जा रहे हैं क्या? ठीक है, वक्त बहुत थोड़ा रह गया है। मैं आपके शुभ काममें विघ्न नहीं डालना चाहता, जा रहा हूं।"

अक्षयके चले जानेके बाद रमेश अन्नदा बाबूके घर पहुंचा। घरमें घुसते ही हेमनलिनीसे उसकी मुलाकात हो गई। यह जानकर कि आज रमेश जरूर आयेगा और जल्दी आयेगा, हेमनलिनी तैयार हुई बैठी थी। अपनी सिलाईका सामान उसने तह करके टेबिलपर रख दिया था। उसके पास ही हारमोनियम

पड़ा था ; क्योंकि उसे उम्मीद थी कि शायद आज गाना-बजाना भी हो सकता है। इसके सिवा, हृदयके तारोंका संगीत तो चलता ही रहता है।

रमेश ज्यों ही कमरेमें घुसा कि हेमनलिनीके चेहरेपर एक चमकदार कोमल आभा-सी दौड़ गई। पर वह आभा पल-भरमें न-जाने कहांकी कहाँ बिला गई जब कि रमेश पहुंचनेके साथ ही और कोई बात न करके पहले ही यह पूछ बैठा—"अन्नदा बाबू कहाँ हैं ?"

हेमनलिनीने जवाब दिया—"बापूजी अपनी बैठकमें हैं। क्यों ? उनसे क्या इसी वक्त काम है ? वे तो ठीक चायके समय नीचे उतरेंगे।"

रमेशने कहा—"नहीं, मुझे बहुत जरूरी काम है। अब देर करनेसे काम न चलेगा।"

हेमनलिनी बोली—"तो जाइये, वे ऊपर बैठकमें बैठे होंगे।"

रमेश ऊपर चला गया। जरूरी काम है। दुनियामें जरूरतको ही सिर्फ देर बरदाश्त नहीं होती। और प्रेमको, दरवाजेके बाहर खड़े-खड़े बाट देखनी पड़ती है।

शरद्‌ऋतुके ऐसे सुन्दर साफ-सुथरे दिनने मानो लम्बी साँस छोड़कर अपने आनन्द-भण्डारके सोनेके बने सिंहद्वारको झटसे बन्द कर लिया। हेमनलिनीने हारमोनियमके पाससे कुरसी हटा ली और टेबिलके पास बैठकर तन्मयताके साथ अपना सिलाईका काम शुरू कर दिया। सुई सिर्फ बाहर रही चल रही हो सो बात नहीं, भीतर भी खूब चुभने लगी। रमेशका जरूरी काम भी जल्दी पूरा नहीं हुआ। जरूरत राजाकी तरह अपना पूरा वक्त लेती है ; और प्यार, प्यार तो कंगाल है।

१४

रमेश अन्नदा बाबूकी बेठकमें पहुँचा। अन्नदा बाबू उस वक्त मुंहपर अखबार रखे आरामकुरसीमें पड़े सो रहे थे। रमेशने जाकर जरा खटका किया कि वे चौंककर उठ बैठे ; और अखबार उठाकर बोले—"देखा रमेश, अबकी बार शहरमें कितने आदमी मर रहे हैं ?"

रमेशने कहा—"ब्याह अभी कुछ दिन बन्द रखना होगा ; मुझे कई खास काम करने हैं ?"

अन्नदा बाबूके दिमागसे शहरकी मौत-शुमारीकी फेहरिस्त बिलकुल गायब हो गई। पल-भर उन्होंने रमेशके चेहरेकी ओर देखा, फिर बोले—"यह कैसी बात रमेश! न्योता वगैरह दिया जा चुका है जो?"

रमेशने कहा—"इस रविवारकी जगह अगला रविवार कर दीजिये; और आज ही चिट्ठी बटवा दीजिये।"

अन्नदा बाबू—"भई, तुमने तो दंग कर दिया। यह क्या मामला-मुकदमा है जो अपनी सहूलियतके माफिक आगे-पीछे कोई भी तारीख डलवा ली और छुट्टी हुई? तुम्हें काम क्या है, सो बताओ?"

रमेश—"बहुत ज्यादा जरूरी है, उसमें देर करनेसे काम नहीं चलेगा।"

अन्नदा बाबू, आँधीमें पड़े केलेके पेड़की तरह, आरामकुरसीकी पीठपर पड़ रहे, बोले—"देर करनेसे काम नहीं चलेगा! अच्छी बात है, बहुत ठीक है! अब जो तुम्हारी तबीयतमें आवे, करो। न्योता वापस ले आनेकी कार्रवाई जैसी तुम्हारी बुद्धिमें जचे, सो होने दो। लोग जब पूछेंगे तो कह दूँगा, मुझे कुछ नहीं मालूम। रमेशको क्या जरूरी काम है सो वे ही जानें; और कब उन्हें फुरसत मिलेगी सो भी वही बता सकते हैं।"

रमेश कुछ जवाब न देकर नीची निगाह किये बैठा रहा।

अन्नदा बाबूने कहा—"हेमको सब बातें कह दी हैं?"

रमेश—"नहीं, अभी उनसे कुछ नहीं कहा।"

अन्नदा बाबू—"उसके लिए इसका जानना जरूरी है। तुम्हारा तो अकेलेका ब्याह नहीं हो रहा।"

रमेश—"आपसे पहले कहकर पीछे उनसे कहनेका निश्चय किया था।"

अन्नदा बाबू पुकार उठे—"हेम, हेम!"

हेमनलिनी ऊपर आ गई; बोली—"क्या है बापूजी?"

अन्नदा बाबूने कहा—"रमेश कह रहे हैं, उन्हें कोई खास जरूरी काम है, इस वक्त उन्हें ब्याह करनेकी फुरसत न मिलेगी।" हेमनलिनीका चेहरा फक पड़ गया, उसी हालतमें उसने एक बार रमेशके मुंहकी तरफ देखा। रमेश अपराधीकी तरह चुपचाप बैठा रहा।

हेमनलिनीको यह खबर इस तरह दी जायगी, रमेशको ऐसी आशा हरगिज न थी। हेमसे ऐसी अप्रिय बात अचानक इस तरह बेरहमीसे कह दी गई, इससे उसे कितनी गहरी भीतरी चोट पहुंची होगी इस बातको वह खुद अपने व्यथित हृदयमें पूरी तरह अनुभव करने लगा। पर जो तीर एक बार छूट चुका है वह अब वापस नहीं आ सकता। रमेश मानो स्पष्ट देखने लगा, वह निर्दय तीक्ष्ण तीर तेजीसे जाकर हेमनलिनीके हृदयके ठीक बीचो-बीच घुस गया, और वहीं लटक रहा है।

अब बातको किसी भी तरह नरम कर लेनेका कोई चारा नहीं। बात झूठी नहीं; ब्याह तो स्थगित रखना ही पड़ेगा। रमेशको बहुत जरूरी काम है; क्या काम है सो वह नहीं कहना चाहता। इसपर और नई व्याख्या क्या हो सकती है?

अन्नदा बाबू हेमनलिनीकी तरफ देखकर कहने लगे—"तुम्हीं लोगोंका काम है, अब तुम्हीं दोनों मिलकर जो-कुछ तय करना चाहो सो कर लो।"

हेमनलिनी नीची निगाह किये हुए बोली—"बापूजी, मैं इस बारेमें कुछ भी नहीं जानती।" और, आँधीके बादलोंके पीछे सूर्यास्तकी म्लान आभा जैसे बिला जाती है, ठीक उसी तरह वह वहाँसे गायब हो गई।

अन्नदा बाबूने अखबार उठाकर उसे इस तरह अपने मुँहके आगे रख लिया, जैसे उसे वे ध्यानसे पढ़ रहे हों। रमेश सन्न होकर बैठा रहा।

अचानक रमेशको होश आया और वह उठके चल दिया। उसने नीचेके बड़े कमरेमें जाकर देखा कि हेमनलिनी खिड़कीके पास चुपचाप खड़ी-खड़ी बाहरकी ओर देख रही है। उसकी नजरोंके सामने पूजाकी छुट्टियोंका कलकत्ता ज्वार शुदा नदीकी तरह अपनी सारी गली-कूचियोंमें लोगोंकी बाढ़-सी लिये बहने लगा।

रमेश यकायक उसके पास जानेमें सकुचाने लगा। पीछेसे कुछ देर तक टकटकी लगाये उसे देखता रहा। शरद्ऋतुके शामके उजालेमें खिड़कीके पास खड़ी हुई उस थिर मूर्तिने रमेशके मनमें एक तसवीर-सी खींच दी। उसके कोमल गुलाबी गालोंके एक हिस्सेने, उसके जतनसे बाँधे हुए जूड़ेके सौन्दर्यने, उसकी गरदनके ऊपर पड़े हुए बिखरे बालोंकी बहार और उन बालोंके भीतरसे

चमकते हुए सोनेके हारने, बाँये कन्धेपर पड़े हुए तिरछे आँचलने, सबोंने एकसाथ मिलकर उसके पीड़ित चित्तमें ऐसी गहरी लकीरें खींच दीं कि वह सहसा तिलमिला उठा।

रमेश आहिस्ते-आहिस्ते हेमनलिनीके पास आकर खड़ा हो गया। हेम रमेशके बजाय राह-चलते लोगोंकी तरफ ज्यादा दिलचस्पी लेने लगी। रमेश रुँधे हुए कण्ठसे बोला—"आपसे मैं एक भीख चाहता हूं।"

रमेशकी आवाजमें घुमड़ती हुई वेदनाकी चोट महसूस करते ही तुरत हेमनलिनीका मुँह रमेशकी तरफ घूम गया। रमेश कहने लगा—"तुम मुझपर किसी तरहका सन्देह न करो।"—रमेशने आज यह पहले-पहल हेमसे 'तुम' कहा है।—"यह बात तुम एक बार अपने मुंहसे कह दो कि कभी भी तुम मुझपर सन्देह नहीं करोगी। मैं भी भगवानको मनमें साक्षी रखकर कहता हूं, तुम्हारे साथ मैं कभी भी विश्वासघात नहीं करूँगा।"

रमेशके मुंहसे आ.. और कोई बात ही नहीं निकली, उसकी आँखोंमें आँसू भर आये। और तब हेमनलिनी अपनी प्यार-भरी आँखें उठाकर रमेशके मुँहकी ओर एकटक देखने लगी। उसके बाद अचानक उसके दोनों गालोंसे आँसुओंकी धारा बह चली। देखते-देखते उस खिड़कीके पास, उस निराले करेनेमें, दोनोंके बीच एक तरहकी मौन शान्ति और सान्त्वनाका स्वर्ग-सा तैयार हो गया।

कुछ देर तक रमेशका हृदय-मन आँसुओंकी बाढ़में डूबकर उस गहरे मौनके अन्दर गोता खाता रहा, और फिर आरामकी एक लम्बी साँस लेकर वह बोला—"क्यों मैं एक हफ्तेके लिए शादी रुकवाना चाहता हूं, इसकी वजह तुम जानना चाहती हो क्या?"

हेमनलिनीने गरदन हिला दी, वह नहीं जानना चाहती।

रमेशने कहा—"ब्याहके बाद मैं सब बातें खुलासा कह दूँगा।"

इस बातको सुनकर हेमनलिनीके गालोंके पास जरा कुछ सुर्खी-सी आ गई।

आज खाने-पीनेके बाद हेमनलिनी जब रमेशसे मिलनेको आशासे बड़ी उमंगके साथ अपना साज-सिंगार कर रही थी, तब वह रमेशसे बहुतसे मजाक

करनेकी बहुत-सी बातें और अपने भावी जीवनकी बहुत-सी छोटी-बड़ी सुखकी तसवीरें खींच-खींचकर अपने-आप खुश हो रही थी। पर इधर कुछ क्षण पहले दोनों हृदयोंके बीच आपसमें जो विश्वासकी माला बदली गई, जिसमें आँसुओं की धारा बही, बातचीत कुछ भी नहीं हुई, सिर्फ कुछ देर तक दोनों आस-पास खड़े रहे, उसके भरपूर आनन्दकी, उसकी गहरी शान्ति और चरम सान्त्वनाकी हेमनलिनी तब कल्पना भी न कर सकी थी।

हेमनलिनीने कहा—"तुम एक बार बापूजीके पास हो आओ, वे नाराज-से मालूम होते हैं।"

रमेश खुशी-खुशी दुनियाकी सब छोटी-बड़ी चोटें छाती खोलके सहनेके लिए चल दिया।

१५

अन्नदा बाबू रमेशको फिर अपने कमरेमें घुसते देख बड़ी बेचैनीके साथ उसके मुँहकी ओर देखने लगे।

रमेशने कहा—"न्योतेकी फेहरिस्त अगर आप मुझे दे दें तो मैं दिन बदले जानेकी चिट्ठियाँ आज ही सबको रवाना कर दूँ?"

अन्नदा बाबूने कहा—"तो फिर दिन बदला जाना ही तय रहा?"

रमेशने कहा—"जी हाँ, और कोई चारा ही नहीं दीखता।"

अन्नदा बाबू कहने लगे—"देखो भई, अगर यही करना है तो मैं इस काममें शरीक नहीं हूँ। जो कुछ इन्तजाम करना हो तुम्हीं लोग कर-करा लेना। मैं लोग-हँसाईका काम नहीं कर सकता। ब्याह सरीखी चीजको अगर अपनी मरजीके मुताबिक बच्चोंका खेल ही बनाना हो, तो मुझ जैसे बुजुर्ग आदमीका उसमें शरीक न रहना ही अच्छा है। यह लो न्योतेकी लिस्ट। इस बीचमें मैं कुछ रुपया भी खर्च कर चुका हूँ, उसमेंसे बहुत-सा बरबाद ही हुआ समझो। इस तरह बार-बार रुपया बरबाद कर सकूँ, इतनी हैसियत मेरी नहीं।"

रमेश सारा खर्च और तमाम इन्तजाम अपने ऊपर लेनेको पहलेसे ही राजी था। वह उठना ही चाहता था कि अन्नदा बाबू पूछ बैठे—"रमेश, ब्याहके बाद तुम कहाँ रहकर प्रैक्टिस करोगे, कुछ तय किया है? कलकत्तेमें तो नहीं न?"

रमेशने कहा—"नहीं। पछाँहकी तरफ कोई अच्छी-सी जगह तलाश कर रहा हूँ।"

अन्नदा बाबू—"यही ठीक है, उधरकी आब-हवा भी अच्छी है। इटावा भी कोई बुरी जगह नहीं है। वहाँका पानी हाजमेके लिए तो बहुत ही उमदा है। मैं वहाँ एक महीनेके करीब रह आया हूँ, महीने-भरमें मेरी खुराक दूनी हो गई थी। देखो भई, बात असलमें यह है, दुनियामें मेरा जो कुछ है सो यही एक लड़की है। मैं उसके पास न रहूँ तो वह भी सुखी नहीं रह सकती और मैं भी निश्चिन्त नहीं रह सकूँगा। इसीसे मेरी इच्छा है कि तुम कोई एक स्वास्थ्यकर जगह चुन लो तो अच्छा हो।"

अन्नदा बाबूने रमेशकी तरफसे एक कसूरको गुंजइश पाकर इस मौकेसे अपनी बड़ी-बड़ी माँगें पेश करना शुरू कर दिया। इस समय रमेशको अगर वे इटावा न बताकर गारो या चेरापुञ्जीकी बात कहते तो भी वह उसी वक्त राजी हो जाता। उसने कहा—"जैसी आपकी इच्छा, मैं इटावामें ही प्रैक्टिस करूँगा।"—इतना कहकर रमेश अपने जुम्मे लिया हुआ काम पूरा करने चल दिया।

थोड़ी देर बाद अक्षय आ गया। अन्नदा बाबूने कहा—"रमेशने अपने ब्याहका दिन हफ्ते-भर आगे बढ़ा दिया है।"

अक्षय—"नहीं नहीं, यह आप क्या कह रहे हैं? ऐसा भी कहीं होता है? परसों ही तो ब्याह है।"

अन्नदा बाबू—"ऐसा होना तो नहीं चाहिए था, मामूली गृहस्थोंके यहाँ तो ऐसा होता भी नहीं; पर आजकल तुमलोगोंका जो रंग-ढंग देख रहा हूँ, उसमें जो न हो सो ही थोड़ा है।"

अक्षय अपने चेहरेको बहुत ही गम्भीर बनाकर बड़े आडम्बरके साथ विचार करने लगा। कुछ देर बाद कहने लगा—"आप लोग जिसे एक बार अच्छा समझ लेते हैं, फिर उसके बारेमें बिलकुल आँख ही मीच लिया करते हैं। अपनी इकलौती लड़कीको हमेशाके लिए जिसके हाथ सौंपना चाहते हैं, उसके बारेमें कमसे कम अच्छी तरह जानकारी तो कर ही लेनी चाहिए। भले ही

वह स्वर्गका देवता ही क्यों न हो, फिर भी सावधानीसे काम लेनेमें सिवा फायदाके कोई नुकसान नहीं।"

अन्नदा बाबू—"रमेश जैसे लड़केपर भी अगर शक किया जाय, तब तो फिर दुनियामें सगाई-ब्याह होना ही मुश्किल हो जाय।"

अक्षय—"अच्छा, उन्होंने जो ब्याहका दिन आगे बढ़ा दिया है, उसका कोई सबब भी बताया है?"

अन्नदा बाबूने अपने माथेपर हाथ फेरते हुए कहा—"नहीं, सबब तो कुछ नहीं बताया। पूछनेपर इतना ही कहा था कि कोई खास जरूरी काम आ पड़ा है।"

अक्षय मुँह फेरकर जरा मुसकुराकर रह गया। फिर बोला—"शायद आपकी लड़कीसे उन्होंने कोई-न-कोई सबब जरूर कहा होगा।"

अन्नदा बाबू—"हो सकता है।"

अक्षय—"उन्हें एक बार बुलाकर पूछ देखें तो अच्छा हो न?"

"ठीक कहते हो!"—कहकर अन्नदा बाबूने हेमनलिनीको आवाज दी। कमरेमें घुसते ही हेमने जो अक्षयको वहाँ बैठा देखा तो वह पिताके सामने इस ढंगसे जा खड़ी हुई कि अक्षयको उसका चेहरा न दीखे।

अन्नदा बाबूने पूछा—"अचानक ब्याहका दिन जो आगे बढ़ा दिया गया, रमेशने इसका कोई सबब भी तुम्हें बताया?"

हेमनलिनी—"नहीं।"

अन्नदा बाबू—"तुमने उनसे इसकी वजह पूछी नहीं?"

हेमनलिनी—"नहीं।"

अन्नदा बाबू—"बड़े ताज्जुबकी बात है। जैसा रमेश, वैसी ही तुम। उन्होंने आकर कहा, 'अभी मुझे ब्याह करनेकी फुरसत नहीं' और तुमने भी कह दिया, 'अच्छी बात है, और किसी दिन सही!' बस, और कोई बात ही नहीं!"

अक्षयने हेमनलिनीकी तरफदारी लेते हुए कहा—"एक आदमी जब कि साफ तौरसे सबबको छिपा रहा है, तो उस बातको लेकर ज्यादा पूछ-ताछ

करना क्या अच्छा मालूम देता ? अगर कहने लायक कोई बात होती तो रमेश बाबू खुद ही न कह देते।"

हेमनलिनीका चेहरा सुर्ख हो उठा, उसने कहा--"इस विषयमें बाहरके किसी आदमीसे मैं कुछ भी नहीं सुनना चाहती। जो-कुछ हुआ है, उससे मेरे मनमें कोई भी खेद नहीं है।"

इतना कहकर हेमनलिनी तेजीसे बाहर निकल गई। अक्षय अपना-सा मुँह लिये रह गया ; और बड़ी मुश्किलसे चेहरेपर जबरन हँसी लाकर कहने लगा--"दुनियामें जो मित्रताका कर्तव्य पालन करता है उसे बड़ी-बड़ी मुसीबतोंका सामना करना पड़ता है, बड़ी बेइज्जती सहनी पड़ती है। यही वजह है कि मैं मित्रताकी बड़े गौरवकी चीज समझता हूँ। आप लोग चाहे मुझसे नफरत कीजिये या पीठ-पीछे गालियाँ देते रहिये, इस वक्त रमेशपर सन्देह करना ही मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ। आप लोगोंके लिए जहाँ-कहीं भी मुझे थोड़ी-बहुत मुसीबत-सी दिखाई देगी, वहाँ मैं निश्चिन्त बेखटके नहीं रह सकता। इतनी कमजोरी मेरे अन्दर है, मुझे मानना ही पड़ेगा। खैर, कुछ भी हो, योगेन्द्र तो कल आ ही रहा है, वह भी अगर सब देख-भालकर अपनी बहनके विषयमें बिलकुल निश्चिन्त हो जाय, तो फिर मैं इस बारेमें आगे कोई बात ही नहीं छेड़ूँगा।"

रमेशके व्यवहारके बारेमें अब पूछ-ताछ करनेका समय आ गया है, यह बात अन्नदा बाबू बिलकुल ही न समझते हों सो बात नहीं ; पर जिस बातको कोई जानता नहीं उसे जबरदस्ती उखाड़कर उसमेंसे यकायक तूफान खड़ा कर देनेमें उन्हें कोई मजा नहीं मालूम देता, इसीलिए इस विषयमें वे कोई दिलचस्पी नहीं ले रहे हैं।

अक्षयपर उन्हें गुस्सा आ गया। बोले—"अक्षय, तुम बहुत ही वहमी आदमी हो। बिना किसी सबूतपर तुम—"

अक्षय जानता है कि कब किस मौकेपर उसे अपनेको दबा रखना चाहिए ; मगर लगातार चोटपर चोट खाते-खाते आखिर आज उसका धीरज टूट ही गया। वह उत्तेजित होकर बोल उठा—"देखिये अन्नदा

बाबू, मेरे अन्दर बहुतसे ऐब हैं ; मैं अच्छे लड़कोंसे जलता हूँ, शरीफ घरानेकी लड़कियोंको फिलॉसॉफी पढ़ानेके लायक काबिलियत भी मुझमें नहीं है, और न उनके साथ काव्य-अलंकार और रसोंकी चर्चा करनेकी हिमाकत ही रखता हूँ ; मैं मामूली लोगोंमेंसे ही एक हूँ ; मगर फिर भी मैं आप लोगोंका अपना आदमी हूँ, आप लोगोंकी भलाई चाहता हूँ। रमेश बाबूके साथ और किसी भी विषयमें मेरा मुकाबिला नहीं हो सकता ; पर सिर्फ एक बातका गरूर मुझे जरूर है ; वह यह कि आज तक कोई भी बात मैंने आप लोगोंसे छिपाई नहीं, और न कभी छिपाऊँगा। आपलोगोंके सामने मैं अपना सारा भेद खोलकर दीन-हीन बनकर भीख माँग सकता हूँ ; पर सेंध काटकर चोरी करना मेरी आदतके खिलाफ है। इस बातके मानी आपलोग कल ही समझ जायँगे।"

१६

चिट्ठियाँ पहुँचाते-करते रात हो गई। रमेश बिस्तरपर जाकर पड़ रहा, नींद नहीं आई। उसके मनके अन्दर गंगा-जमुनाकी तरह सफेद-स्याह दोनों तरहकी विचार-धारा बह रही थी। दोनोंकी लहरोंने एकसाथ मिलकर उसके आरामके वक्तको अशान्त बना दिया, उसकी नींद छुड़ा दी। दो-चार बार इधर-उधर करवट बदलनेके बाद वह उठके बैठ गया। जंगलेके पास जाकर खड़ा हुआ, तो देखा कि उसके मकानके सामनेवाली सुनसान गलीके एक तरफ मकानोंकी छाँह है और दूसरी तरफ चाँदकी सफेद चाँदनी।

रमेश चुपचाप खड़ा-खड़ा देखता रहा। उसका सारा अन्तःकरण और सम्पूर्ण अन्तःप्रकृति विगलित होकर जो नित्य और अविनाशी है, जो शान्त है, जो विश्वव्यापी है, जिसमें किसी तरहका द्वन्द्व विरोध या दुविधा नहीं है, उसीमें व्याप्त हो गई। जिस सीमाहीन शब्दहीन महालोकके नेपथ्यसे जन्म और मृत्यु, काम और आराम, आरम्भ और अवसान शुरूसे ही किसी अनसुने संगीतके अपूर्व ताल-सुरमें नाचते-गाते दुनियाकी रंगभूमिमें आ-जा रहे हैं, जहाँ न उजाला है न अँधेरा, ऐसे देशके नर-नारीके युगल प्रेमको रमेशने इस चाँद तारा और दीपालोकसे आलोकित संसारमें उतरते हुए देखा। तब धीरे-धीरे

वह छतपर चला गया। उसने अन्नदा बाबूके मकानकी तरफ देखा। बिलकुल सन्नाटा है। मकानकी दीवारोंपर, कार्निसके नीचे, खिड़की और दरवाजोंकी सँधोंमें, टूट-फूटकी जगह निकली हुई ईंटोंपर सब जगह चाँदनी और छायाका अजीब ढंगका संगम हो रहा है, दोनोंका अक्स अलग-अलग और साफ दिखाई देता है।

कैसा आश्चर्य है! इतने बड़े शहरमें जहाँ लाखों आदमियोंका वास है, उस मामूलीसे कमरेके अन्दर एक मानवीके वेशमें यह कैसा आश्चर्य है! इस राजधानीमें कितने विद्यार्थी, कितने वकील, कितने परदेशी और कितने यहींके बाशिन्दा रहते हैं, उनमें रमेश जैसे एक मामूली आदमीने न-जाने कहाँसे आकर शरद्ऋतुकी सफेद-पीली धूपमें उस खिड़की पास खड़ी एक लड़कीको चुपचाप खड़ी देखकर अपने जीवन और संसारको एक असीम आनन्दमय रहस्यके बीच बहता हुआ देखा, यह कैसा आश्चर्य है! हृदयके अन्दर आज यह कैसा आश्चर्य है, हृदयके बाहर आज यह कैसा आश्चर्य है!

बहुत रात तक रमेश छतपर ही टहलता रहा। चुपकेसे कब किस वक्त चाँदका वह टुकड़ा सामनेके मकानके पीछे छिप गया, उसे पता ही नहीं। ज़मीनपर रातकी कालिमा और भी घनी हो उठी, और आकाश तब विदा होते हुए उजालेके आलिंगनसे पीला पड़ गया। रमेशका थका हुआ शरीर जाड़ेसे सिहर उठा। यकायक एक आशंका उठी और रह-रहकर वह उसके हृदयको मसोसने लगी। उसे खयाल हो आया, जीवनके युद्ध-क्षेत्रमें फिर कल उसे लड़ाईके लिए निकलना है। अभीके इस आकाशमें फिकर-चिन्ताका चिह्न तक नहीं, इस चाँदनीमें कोशिशकी कोई उथल-पुथल नहीं, रात भी बिलकुल शान्त और खामोश है, और विश्वप्रकृति आकाशके इन असंख्य तारोंकी दुनियामें अपने काम-काजके बीच बड़े आरामसे सो रही है; फिर भी आदमियोंका आना-जाना और जूझना-उलझना बन्द नहीं है और न कहीं इसका अन्त ही दीख पड़ता है। सुख-दुःख और बाधा-विघ्नोंसे सारा जन-समाज तरंगित हो उठा है। नाना दुश्चिन्ताओंके बीच भी रमेशके मनमें रह-रहकर एक ही सवाल उठ खड़ा होता कि एक तरफ अनादि-अनन्तकी

हमेशा कायम रहनेवाली शान्ति है और दूसरी तरफ दुनियाका यह रोजमर्राका जूझना, दोनों एक ही समयमें एकसाथ कैसे रह सकते हैं ? कुछ देर पहले रमेश विश्वलोकके अन्तःपुरमें प्रेमकी एक शाश्वत और अम्पूर्ण शान्त-मूर्ति देख रहा था, कुछ ही देर बाद उसी प्रेमको वह संसारके संघर्षसे, दुनियाके द्वन्द्वसे, जीवनकी जटिलताओंसे, जिन्दगीकी उलझनोंसे कदम-कदमपर खण्डित क्षुब्ध और खेद-खिन्न होते देखने लगा ! इनमेंसे कौनसा सत्य-रूप है और कौनसी माया, कौन कह सकता है ।

१७

दूसरे दिन सुबहकी गाड़ीसे योगेन्द्र कलकत्ता आ पहुँचा । आज शनिवार है । कल रविवारको हेमनलिनीका ब्याह होनेवाला है । पर, योगेन्द्रने आकर देखा कि उनके मकानके आगे ऐसा कोई भी चिह्न नहीं जिससे समझा जाय कि उसके घरमें ब्याह है । योगेन्द्र मन-ही-मन सोचता आ रहा था कि उसके मकानके आगे देवदारु या आमके पत्तोंकी बन्दनवार लटक रही होगी । पर पास आकर देखा तो आसपासके मकानोंके मुकाबिले उसमें कोई फरक नहीं ; न तो पुताई हुई है और न कोई सजावट ही है ।

उसे सन्देह हुआ कि कहीं कोई बीमार तो नहीं पड़ गया, जिससे ब्याह रुक गया हो । भीतर जाकर देखा कि चायकी टेबिलपर उसके लिए खाना वगैरह तैयार रखा है, और उसके बापूजी अध-पीया चायका प्याला सामने रखके अखबार पढ़ रहे हैं ।

योगेन्द्रने घरमें घुसते ही सवाल किया—"हेम अच्छी तरह है ?"

आन्नदा बाबूने कहा—"हाँ ।"

योगेन्द्र—"ब्याहका क्या हुआ ?"

आन्नदा बाबू—"अगले रविवारको होगा ।"

योगेन्द्र—"क्यों ?"

आनन्दा बाबू—"क्यों, सो अपने मित्रसे पूछो । रमेशने हमसे तो सिर्फ इतना ही कहा है कि उसे बहुत जरूरी काम है, सो ब्याह इस इतवारको न होकर अगले इतवारको होगा ।"

योगेन्द्र अपने असमर्थ पितापर मन-ही-मन नाखुश होकर बोला—"बापूजी, मैं नहीं रहता हूँ तो तुम हर काममें गलतियाँ कर ही बैठते हो। रमेशको ऐसा कौनसा जरूरी काम हो सकता है? वह आजाद है। खानदान या रिश्तेदारोंमें नामको कोई होगा तो होगा, नहीं तो आप अकेले ही हैं। अगर कोई जायदादका झगड़ा खड़ा हो गया हो, तो खुलासा कहनेमें कोई हर्ज नहीं था। रमेशकी बातपर तुम इतनी जल्दी राजी कैसे हो गये?"

अन्नदा बाबू—"अच्छा तो ठीक है, अभी तो वह कहीं भाग नहीं गया है। तुम्हीं उससे पूछ देखना।"

योगेन्द्र उसी वक्त गरमागरम चायका एक प्याला जल्दीसे खतम करके बाहर चल दिया।

अन्नदा बाबू कह उठे—"अरे तुम जा कहाँ रहे हो, इतनी जल्दी क्या है? पहले खा-पी तो लो।"

पिताके शब्द उसके कानों तक पहुँच भी न पाये कि वह चलता बना। रमेशके घर जाकर जोरकी आवाज करता हुआ वह सीढ़ी चढ़ने लगा; और वहींसे शोर मचाना शुरू कर दिया—"रमेश, रमेश!"

पर रमेश वहाँ हो तो बोले। सब कमरे देख डाले; नीचे देखा, ऊपर देखा, छत देखी, बरण्डा देखा; कहीं भी रमेशका पता नहीं। काफी आवाजें देनेके बाद नौकरके दर्शन हुए; उससे पूछा—"बाबू कहाँ हैं?"

उसने कहा—"बाबू तो खूब तड़के उठके बाहर चले गये हैं।"

योगेन्द्र—"कब आयेंगे?"

बेहराने समझानेकी कोशिशकी कि बाबू अपने कुछ कपड़े-लत्ते भी साथ लेते गये हैं, और कह गये हैं कि लौटनेमें चार-पाँच दिन लग सकते हैं कहाँ गये हैं, सो उसे नहीं मालूम।

योगेन्द्र अपने घर लौट आया; और बहुत ही गम्भीर होकर चायकी टेबिलके सामने बैठ गया।

अन्नदा बाबूने पूछा—"क्या हुआ?"

योगेन्द्र झुँझलाकर बोला—"होगा क्या, जिसके साथ आजके बाद कल

लड़कीकी शादी होनेवाली है, उसे क्या जरूरी काम आ पड़ा, वह कब कहाँ रहता है, उसकी खोज-खबर तो कुछ रखते नहीं ! कोई दूर नहीं, बगलके मकानमें वह रहता है।"

अन्नदा बाबूने कहा—"क्यों, कल रातको रमेश घर ही पर था ?"

योगेन्द्र उत्तेजित हो उठा, बोला—"तुम लोगोंको इतना भी मालूम नहीं कि वह कहाँ जानेवाला है, उसके नौकरको भी नहीं मालूम कि बाबू कहाँ गये हैं। यह कैसा प्राइवेट मामला है, कुछ समझमें नहीं आता ! मुझे तो इसमें कुछ भलाई नहीं मालूम होती। बाबूजी, तुम ऐसे निश्चिन्त कैसे हो, कुछ समझमें नहीं आता ?"

अन्नदा बाबू लड़केकी इस फटकारसे अपनेको जरा-कुछ गम्भीर और चिन्ताग्रस्त बनानेकी कोशिश करते हुए बोले—"बताओ भला, यह सब क्या हो रहा है !"

खब्त-मिजाज और दुनियादारीसे नावाकिफ रमेश कल रातको अन्नदा बाबूसे आसानीसे इजाजत लेकर जा सकता था ; पर इसका उसे खयाल तक न आया। रमेशको शायद यही धारणा होगी कि 'खास जरूरी कम है' कहकर ही उसने अपने मनकी सारी बात जाहिर कर दी है। बस, वही एक बात कहकर मानो वह सब तरहसे छुट्टी पा गया हो ; और इस तरह अपने होनेवाले रिश्तेदारोंके प्रति अपना कर्तव्य पालन करके अपने काममें जुट गया हो।

योगेन्द्रने कहा—"हेमनलिनी कहाँ है ?"

अन्नादा बाबू—"वह आज सुबह चाय पीने नीचे आई थी, सवेरेसे ऊपर ही बैठी है।"

योगेन्द्र—"रमेशके इस तरहके बरतावसे शायद वह शरमिन्दा हो रही होगी, इसलिए वह मुझसे सामना हो जानेके डरसे छिपी-छिपी फिरती है।"

शरमाई हुई और व्यथित हेमनलिनीको धीरज बँधानेके लिए योगेन्द्र ऊपर पहुँचा। हेमनलिनी ऊपरके बड़े कमरेमें चुपचाप अकेली बैठी थी। योगेन्द्रके पैरोंकी आहट सुनते ही वह जल्दीसे एक किताब उठाकर पढ़ने बैठ

गई। और, योगेन्द्रके कमरेमें कदम रखते ही किताब रखके उठ खड़ी हुई ; और हँसती हुई बोली—"अच्छा, भाई साहब आ गये, कब आये ? तबीयत तो तुम्हारी अच्छी नहीं मालूम होती, भाई साहब !"

योगेन्द्र चौकीपर बैठ गया ; बोला—"अच्छी मालूम होगी कहाँसे ! मैं सब बातें सुन चुका हूँ हेम ! पर इस मामलेमें तुम कोई चिन्ता मत करो। मैं नहीं था इसीसे इस तरहकी गड़बड़ी हुई है। मैं सब ठीक करे देता हूँ। अच्छा हेम, रमेशने तुम्हें कोई कारण बताया है ब्याहका दिन आगे बढ़ानेका ?"

हेम उलझनमें पड़ गई। रमेशके सम्बन्धमें इस तरहकी शक-शुदा बातचीत उसे नागवार मालूम होने लगी। रमेशने उसे ब्याहका दिन आगे बढ़ानेका कोई कारण नहीं बताया, यह बात योगेन्द्रसे वह कहना नहीं चाहती, लेकिन झूठ बोलना भी उसके लिए सम्भव नहीं। उसने कहा—"मुझे वे कारण बतानेको तैयार थे, पर मैंने सुनना जरूरी नहीं समझा।"

योगेन्द्रने समझा कि यह बहुत ज्यादा स्वाभिमानकी बात है ; और ऐसा होना स्वाभाविक है। वह बोला—"अच्छा, तुम डरो मत, मैं आज ही कारण मालूम किये लेता हूँ।"

हेमनलिनी किताब उठाकर बेमतलब उसके पन्ने उलटती हुई बोली—"भाई साहब, मुझे किसी बातका डर नहीं। कारण जाननेके लिए तुम उन्हें परेशान करो, यह भी मैं नहीं चाहती।"

योगेन्द्रने सोचा, यह भी अभिमानकी बात है। उसने कहा—"अच्छा, इसकी तुम फिकर मत करो।" कहकर उसी वक्त जानेके लिए तैयार हो गया।

हेमनलिनी उसी वक्त उठ खड़ी हुई ; और बोली—"नहीं, भाई साहब, इस बातको लेकर तुम उनसे बहस करने नहीं जा सकोगे। तुमलोग उन्हें जैसा भी समझो, मैं उनपर जरा भी सन्देह नहीं करती।"

तब योगेन्द्रको एकाएक खयाल आया कि यह तो अभिमानकी-सी बात नहीं मालूम होती। फिर वह स्नेह-मिले रहमसे मन-ही-मन हँसने लगा। सोचने लगा, इन लोगोंमें दुनियादारीकी समझ बिलकुल है ही नहीं।

इतनी शिक्षा भी पाई और दुनियाकी बातोंसे भी काफी वाकिफियत है ; पर इतना ज्ञान किसीको नहीं कि कहाँ कब शक करना चाहिए ।

हेमनलिनीके इस तरह निःशंक होकर पूरा भरोसा करनेके साथ रमेशके छिपानेकी भावनाका मिलान करके योगेन्द्र मन-ही-मन रमेशपर नाराज हो उठा । और, कारण मालूम करनेकी जिद उसकी और बढ़ गई । योगेन्द्र फिर जानेको तैयार हुआ तो हेमने पास जाकर उसके हाथ पकड़ लिये ; और बोली—"भाई साहब, तुम सौगंद खा जाओ कि उनके सामने इन सब बातोंका जिकर तक न करोगे ।"

योगेन्द्रने कहा—"खैर, देखा जायगा ।"

हेमनलिनी—"नहीं भाई साहब, देखा नहीं जायगा । मुझे बचन दे जाओ । तुमलोगोंसे मैं ठीक कहती हूँ, तुमलोगोंको इस मामलेमें कुछ भी चिन्ता नहीं करनी चाहिए । मेरी बात मान जाओ, उन्हें मत छेड़ो ।"

हेमनलिनीकी इस दृढ़ताको देखकर योगेन्द्रने सोचा, तब तो रमेशने जरूर इससे सब बातें कही हैं । पर हेमको तो फालतू बात कहकर झाँसा देना कोई मुश्किल काम नहीं । उसने कहा—"देखो हेम, शक करनेकी बात मैं नहीं कह रहा । लड़कीवालोंका जो फर्ज है उसे तो हमें अदा करना ही पड़ेगा । तुम्हारे साथ जो समझौता हुआ हो तो उसकी तुम जानो । पर उतना ही हमारे लिए काफी नहीं ; हमारे साथ भी उन्हें बातचीत करके तय करना चाहिए था । सच तो यह है हेम, कि इस वक्त तुम्हारी बनिस्वत हमलोगोंसे उनकी बातचीत होना ज्यादा जरूरी है । ब्याहके बाद फिर हमारे लिए उनसे ज्यादा कहने-सुननेकी जरूरत ही नहीं रहेगी ।" इतना कहकर योगेन्द्र जल्दीसे चला गया ।

प्यार जिस ओटको ढूँढ़ता है, वह अब नहीं रही । हेमनलिनी और रमेशका आपसका जो ताल्लुक आहिस्ते-आहिस्ते बहुत ज्यादा गहरा होकर दोनोंको सिर्फ उन्हीं दोनोंका बना देगा, आज उसीपर बाहरके लोगोंका सन्देह बड़ी बेरहमीके साथ चोट करने लगा । चारों तरफकी इन-सब चर्चाओंसे हेमनलिनीको बड़ी चोट पहुँची है । उसके हृदयमें उसकी काफी वेदना है ।

और यही वजह है कि अपने घरवालों या किसी रिश्तेदारसे मिलनेको उसका जी नहीं चाह रहा। योगेन्द्रके चले जानेपर हेमनलिनी चुपचाप चौकीपर बैठी रही।

योगेन्द्र नीचे उतरा ही था कि अक्षय आ पहुँचा; बोला—"अच्छा, आ गये योगेन्द्र! सब बात सुन लीं? अब तुम्हें क्या जचता है?"

योगेन्द्र—"जचता तो बहुत-कुछ है, पर झूठे अन्दाजोंपर बहस करनेसे फायदा क्या? अब चायकी टेबिलपर बैठकर बारीकीके साथ मनोविज्ञानकी चर्चा करनेका वक्त नहीं रहा, समझे!"

अक्षय—"तुम तो जानते ही हो कि बारीकीके साथ बालकी खाल निकालना मेरी आदतमें शुमार नहीं; फिर वह मनोविज्ञान हो चाहे काव्य, या फिलॉसॉफी कुछ भी हो। मैं कामकी बात जानता हूँ, और वही तुमसे करनी है।"

अधीर होकर योगेन्द्र बोल उठा—"हाँ हाँ, कहो, कामकी बात ही कहो। अच्छा, तुम बता सकते हो, रमेश कहाँ गया है?"

अक्षय—"हाँ, बता सकता हूँ।"

योगेन्द्र—"कहाँ गया है?"

अक्षय—"अभी मैं तुम्हें यह नहीं बताऊँगा; आज तीन बजे मैं उससे तुम्हारी मुलाकात करा दूँगा।"

योगेन्द्र—"बात क्या है, बताओगे भी कुछ? तुमलोग सभी एक तरहकी पहेली-से बन गये हो मालूम होता है। मुझे बाहर गये कुछ ही दिन हुए हैं, इस बीचमें यहाँकी दुनिया ही बदल-सी गई! रहस्य कुछ समझमें नहीं आ रहा। नहीं-नहीं, अक्षय, इस तरह दाबा-दूबी ठीक नहीं मालूम होती।"

अक्षय—"कमसे कम इतना सुनकर मैं खुश हुआ। दाबा-दूबी मैं नहीं कर सका, जिसका नतीजा यह हुआ कि मुझसे सभी-कोई नाखुश हो गये। तुम्हारी बहनने तो मेरा मुँह देखना ही छोड़ दिया है। तुम्हारे बापूजी मुझे शक्की बताते हैं; और रमेश बाबू भी हमसे मिलते हैं तो कतई खुश नहीं होते। अब सिर्फ तुम ही बाकी हो। तुमसे मैं डरता हूँ। तुम्हें बारीकीके

साथ किसी बातपर ऊहापोह करना पसन्द नहीं ; और मैं ठहरा जरा कमजोर स्वभावका, तुम्हारी चोट मुझसे सही नहीं जायगी।"

योगेन्द्र—"देखो अक्षय, तुम्हारी ये-सब पेचीली बातें मुझे अच्छी नहीं लगतीं। मैं अच्छी तरह समझ रहा हूँ कि तुम कोई खास बात कहना चाहते हो, इस तरह भूमिका बाँधकर उसकी कीमत बढ़ानेकी कोशिश तुम क्यों कर रहे हो ? साफ-साफ कह डालो जो-कुछ कहना हो, आफत चुके।"

अक्षय—"अच्छी बात है, तो शुरूसे ही कहता हूँ ; तुम्हें बहुतसी बातें मालूम नहीं।"

१८

रमेश दरजीपाड़ाके जिस मकानमें था, उसके किरायेकी मियाद खतम नहीं हुई ; उसे और किसीको किरायेपर उठानेके बारेमें रमेशको इधर फुरसत नहीं मिली। असलमें, वह इधर कई महीनोंसे दुनियादारीकी चहारदीवारीके बाहर रह रहा था, अपने नफा-नुकसानकी बात उसके ध्यानमें ही नहीं आई।

आज सवेरे ही वह उस मकानमें गया ; और घर-द्वार सफा कराकर एक तख्तपर अपने बिस्तर जमा दिये। खाने-पीनेका इन्तजाम भी वहीं कर लिया था। आजसे स्कूलकी छुट्टियाँ शुरू होंगी ; और आज ही कमलाको घर लाना है।

स्कूल जानेमें अभी देर है। रमेश बिस्तरपर चित्त पड़ा-हुआ आगेकी सोचने लगा। इटावा उसने कभी नहीं देखा ; पर उधरके दृश्य और आब-हवाकी कल्पना करना उसके लिए मुश्किल नहीं। वह सोचने लगा, शहरके एक किनारे उसका मकान है, पेड़ोंकी छायासे ठंडी सड़क उसके मकान और बगीचेके सामनेसे निकल गई है, सड़कके उस पार खुला-हुआ मैदान है, हरे-भरे खेत हैं, बीच-बीचमें कच्चे कुए हैं और खेत रखानेके मचान हैं, जिनमें बैठकर खेतिहर चिड़िया उड़ाया करते हैं। खेतोंमें पानी पहुँचानेके लिए कुओंपर पुर चल रहे हैं, दोपहर-भर उनकी आवाज सुनाई देती रहती है। बीच-बीचमें सड़ककी धूल आसमानमें उड़ाते हुए और अपनी खरखरी आवाजसे जमीन-आसमानको चेताते हुए दो-एक इक्के निकल जाते हैं। ऐसे

दूर परदेसमें गरमियोंकी कड़ी धूपसे तपी हुई दोपहरी, बदनको जलानेवाली लू और चारों तरफसे बन्द बंगलेमें दिन-भर उसके इन्तजारमें फड़फड़ाती हुई अकेली हेमनलिनीकी कल्पना करके भीतर-ही-भीतर उसका जी दुःख पा रहा था ; पर, उसके पास जब उसने सहेलीके रूपमें कमलाको देखा तब उसे कुछ-कुछ आराम-सा मालूम होने लगा ।

रमेशने तय किया था कि अभी वह कमलासे कुछ भी न कहेगा । ब्याहके बाद हेमनलिनी ही उसे छातीसे लगाकर ठीक मौकेसे दया और प्रेमके साथ आहिस्ते-आहिस्ते उसका पूरा किस्सा उसे कह सुनायेगी ; और तब वह कमसे कम वेदना और कमसे कम बेचैनी महसूस करती हुई अपने भेदको समझेगी, और उस दूर-परदेसमें अपने परिचित समाजके बाहर किसी तरहकी मानसिक चोट न पहुँचनेसे बड़ी आसानीसे उन लोगोंके साथ मिलकर तसल्लीसे अपनी जिन्दगी बिता देगी ।

ये बातें सोचते-सोचते दोपहर हो गया । उसकी गलीमें सन्नाटा है, जो आफिस जानेवाले थे वे चले गये, जो घरमें रहनेवाले थे वे खा-पीकर जरा आराम करनेकी तैयारीमें हैं । क्वारकी कम-गरम दोपहरी मधुर हो उठी ; आनेवाली छुट्टियोंकी खुशीने मानो अभीसे आसमानको खुशियालीकी चादर उढ़ा रखी है । रमेश अपने एकान्त कमरेमें पड़ा सुनसान दुपहरियामें अपने सुखके चित्रोंपर तरह-तरहके रंग चढ़ाने लगा ।

इतनेमें एक भारी गाड़ीकी आवाज सुनाई दी । और वह रमेशके मकानके आगे आ खड़ी हुई । रमेशने समझा, स्कूलकी गाड़ी कमलाको पहुँचाने आई है । उसकी छाती धड़क उठी । कमलाको वह किस निगाहसे देखेगा, उसके साथ किस ढंगकी बातचीत करेगा, और कमला उसके साथ कैसा सलूक करेगी, अचानक इन चिन्ताओंने उसे चंचल कर दिया ।

नीचे उसके दोनों नौकर मौजूद थे । उन दोनोंने मिलकर कमलाका सामान उतारा और ऊपर बरण्डेमें लाकर रख दिया ; पीछे-पीछे कमला ऊपर आई और कमरेके दरवाजेके सामने तक आकर ठिठकके खड़ी हो गई, भीतर नहीं घुसी ।

रमेशने कहा—"आओ कमला, भीतर आओ।"

कमलाने पहले जरा संकोचका हमला सहा, फिर भीतर घुसी। छुट्टियोंमें रमेशने उसे बोर्डिंगमें छोड़ रखना चाहा था, वह रो-पीटकर चली आई है, इस घटनासे और कई महीनेके विछोहसे रमेशके साथ जैसे उसकी कुछ अनबन सी हो गई हो। इसीलिए कमला कमरेमें घुसकर, रमेशके मुँहकी ओर न देखके, जरा-कुछ गरदन टेढ़ी करके खुले-हुए दरवाजेसे बाहरकी ओर देखती रही।

रमेश कमलाको देखते ही अचंभेमें पड़ गया। मानो उसने उसे और एकबार नये रूपमें देखा हो। इन कई महीनोंमें उसमें अजीब तरहका हेरफेर हो गया है। कम पत्तोंवाली बेलकी तरह वह पहलेसे बहुत-कुछ बढ़ गई है। गँवई-गाँवकी इस लड़कीके अधखिले सारे अंगोंमें अच्छीसे अच्छी तनदुरुस्तीकी जो परिपुष्टता थी, वह कहाँ गई? उसका गोलमटोल सुन्दर चेहरा सूखकर लम्बा हो गया है, यह एक विशेषता जरूर है; पर उसके साँवले और चिकने गालोंपर आज जो यह नाजुक पीलापन छा गया है, यह तो अच्छी बात नहीं है। अब उसकी चाल-ढाल और हाव-भावमें किसी तरहकी सुस्ती ही नहीं रही। अभी-अभी, कमरेमें घुसते ही जब कि वह जरा तिरछा मुँह करके खिड़कीके सामनें सीधी खड़ी हुई थी, उसके मुँहपर क्वारकी दोपहरीकी धूप आ पड़ी थी, माथेपर साड़ीका पल्ला नहीं था, लाल फीतेसे बँधी-हुई चोटी पीठके पीछे लटक रही थी, कपूरी रंगकी मेरिनोकी साड़ी उसके खिलनेको तैयार बदनको घेरे हुए थी, तब रमेश उसकी तरफ कुछ देर तक चुपचाप देखता रह गया था।

कमलाकी सुन्दरता इधर कई महीनोंमें रमेशके मनमें धुँधली-सी हो आई थी, आज उस सुन्दरताने नयेसे नया विकास पाकर अचानक उसे चौंका दिया। मानो वह इसके लिए तैयार न था।

रमेशने कहा—"बैठो, कमला।"

कमला सामनेकी चौकीपर बैठ गई।

रमेशने कहा—"स्कूलमें तुम्हारी पढ़ाई-लिखाई कैसी चल रही है?"

कमलाने बहुत ही संक्षेपमें जवाब दिया—"अच्छी।"

रमेश सोचने लगा, अब क्या बात करनी चाहिए। अचानक उसे एक बात याद आ गई, बोला—"शायद अभी तुमने अभी तक खाना नहीं खाया। खाना तैयार है; यहीं मँगवा लें?"

कमलाने कहा—"खाऊँगी नहीं, मैं खाके आई हूँ।"

रमेशने कहा—"कुछ भी नहीं खाओगी? थोड़ा-सा खालो, मिठाई न खाओ तो फल हैं; शरीफा, सेब, बेदाना—"

कमलाने मुँहसे कुछ न कहकर गरदन हिला दी।

रमेशने और एक बार कमलाके मुँहकी ओर अच्छी तरह देख लिया। कमला तब जरा-सा मुँह झुकाये अपनी पढ़नेकी अंग्रेजी किताब खोलकर तसवीर देख रही थी। उसके सुन्दर चेहरेने अपने चारों तरफ मानो रूपकथाकी सोनेकी लकड़ी-सी फेरकर सम्पूर्ण सौन्दर्यको जगा दिया है। शरद्‌ऋतुके उजालेको मानो अचानक खोये हुए प्राण मिल गये, क्वारके सुहावने दिनने मानो रूप धारण करके उसे और भी खिला दिया है। केन्द्र जैसे अपनी परिधिको एक पाबन्दीमें रखता है उसी तरह यह लड़की आकाश हवा और उजालेको अपने चारों तरफ मानो खास तौरसे खींचकर एक पाबन्दीमें ले आई, हालाँ कि वह खुद इसका कुछ भी न जानती थी और बैठी-बैठी अपनी पाठ्य पुस्तककी तसवीर देख रही थी।

रमेश जल्दीसे उठकर एक थालीमें कुछ सेब नाशपाती और बेदाना ले आया। बोला—"कमला, तुम तो खाओगी नहीं मालूम होता है, पर मुझे भूख लगी है, मैं अब सबर नहीं कर सकता।"

सुनकर कमला जरा हँस दी। इस अचानक-हँसनेके उजालेसे दोनोंके भीतरका कुहरा बहुत-कुछ कट-सा गया।

रमेश चाकू लेकर सेव बनाने लगा। पर उसका हाथ अनाड़ी-जैसा चल रहा था। एक तरफ उसकी भूखकी जल्दी और दूसरी तरफ ऊटपटाँग तरीकेसे सेव बनाना देखकर कमलाको बड़ी हँसी आई; वह खिलखिलाकर हँस पड़ी।

रमेश उसकी इस जोरकी हँसी और उससे भी ज्यादा दिलकी खुशीसे

खुश होकर बोला—"मैं ठीकसे बनारना नहीं जानता, इसीसे हँस रही होगी! अच्छा, तुम्हीं बनार दो देखूँ, तुममें कितनी होशियारी है।"

कमलाने कहा—"हँसिया होता तो मैं बनार देती, चाकूसे मुझसे न बनारा जायगा।"

रमेशने कहा—"तुम समझती होगी कि हँसिया यहाँ नहीं है?" नौकरको बुलाकर उसने पूछा—"हँसिया है क्या?"

उसने कहा—"है। रातकी रसोईके लिए सब सामान आ गया है।"

रमेशने कहा—"अच्छी तरह धो-पोंछकर एक हँसिया ले आओ।"

नौकर हँसिया ले आया। कमला जूते खोलकर नीचे बैठ गई और हँसती हुई चारों तरफसे घुमा-घुमाकर बड़ी होशियारीके साथ हँसियेसे सेव बनारने लगी। रमेश भी उसके सामने जमीनपर बैठ गया और उसके बनारे हुए सेवकी फाँकोंको उठा-उठाकर थालीमें सजाने लगा।

रमेश बोला—"तुम्हें भी खाना पड़ेगा।"

कमलाने कहा—"नहीं।"

रमेश बोला—"तो मैं भी नहीं खाऊँगा।"

कमलाने रमेशकी आँखोंसे आँख मिलाते हुए कहा—"अच्छा, पहले तुम खाओ, बादमें मैं खा लूंगी।"

रमेशने कहा—"देखना, पीछे धोखा मत देना!"

कमलाने गम्भीरताके साथ गरदन हिलाकर कहा—"नहीं, सच कहती हूँ, धोखा नहीं दूँगी।"

बालिका कमलाकी इस सत्य-प्रतिज्ञासे सन्तुष्ट होकर रमेशने थालीमेंसे एक फाँक उठाकर मुँहमें डाल ली। पर, अकस्मात् उसका चबाना बन्द हो गया। अचानक उसने देखा कि दरवाजेके बाहर योगेन्द्र और अक्षय आ खड़े हुए हैं।

अक्षय बोल उठा—"रमेश बाबू, माफ कीजियेगा; मैंने सोचा था कि आप शायद यहाँ अकेले ही होंगे। योगेन, सूचना बगैर दिये अचानक इस तरह चला आना ठीक नहीं हुआ। चलो, हम नीचे चलकर बैठें।"

कमला हँसिया छोड़कर जल्दीसे उठ खड़ी हुई। कमरेसे बाहर भगानेके रास्तेमें ही ये दोनों खड़े थे। योगेन्द्रने जरा हटकर रास्ता छोड़ दिया; पर कमलाके चेहरेपरसे अपनी निगाह नहीं हटाई, उसे वह खूब गौरसे देखने लगा। कमला मारे शरमके सिकुड़-सी गई और तेजीसे बगलवाले कमरेमें चली गई।

१९

योगेन्द्रने कहा—"रमेश, यह लड़की कौन है ?"

रमेशने जवाब दिया—"मेरी एक रिश्तेदारिन है।"

योगेन्द्र—"कैसी रिश्तेदारिन ? मेरे खयालसे बुजुर्गोंमेंसे कोई नहीं होगी, और स्हनेका सम्बन्ध भी नहीं मालूम होता। तुमने अपने सभी कुटुम्बियों और रिश्तेदारोंका मुझसे जिक्र किया है, पर इनका जिक्र तो कभी नहीं सुना ?"

अक्षय—"योगेन, यह तुम्हारी ज्यादती है। तुम्हारा क्या यह खयाल है कि किसीकी ऐसी कोई बात ही नहीं हो सकती जो अपने मित्रसे भी गुप्त रखी जाय ?"

योगेन्द्र—"क्यों रमेश, यह बहुत ही गुप्त बात है क्या ?"

रमेशका चेहरा सुर्ख हो उठा; बोला—"हाँ, गुप्त बात है। इस लड़कीके बारेमें तुम्हारे साथ मैं किसी भी तरहकी चर्चा नहीं करना चाहता।"

योगेन्द्र—"मगर खेद है कि मैं तुम्हारे साथ इस बारेमें खास तौरसे चर्चा करना चाहता हूँ। हेमके साथ अगर तुम्हारा ब्याह तय न हुआ होता, तो किसके साथ तुम्हारा कितना और कहाँ तक रिश्ता बढ़ा है, उस बारेमें विचार करनेकी मुझे कतई जरूर नहीं थी; तुम्हारा जो-कुछ गुप्त है वह गुप्त ही रह जाता।"

रमेश—"इतना-भर मैं तुमसे कह सकता हूँ कि संसारमें और-किसीके साथ मेरा ऐसा कोई रिश्ता नहीं कि जिससे हेमनलिनीके साथ होनेवाले पवित्र सम्बन्धमें मेरे लिए कोई बाधा आ सके।"

योगेन्द्र—"हो सकता है कि तुम्हारे लिए कोई बाधा न हो, पर हेमके कुनबेवालोंको तो हो सकती है। एक बात मैं तुमसे पूछना चाहता हूँ, किसीके साथ तुम्हारा कैसा भी रिश्ता क्यों न हो, आखिर उसे छिपानेका

कारण क्या है ?"—कहकर वह उत्सुक दृष्टिसे रमेशके मुँहकी तरफ देखने लगा।

रमेशने कहा—"उस कारणको ही अगर कह दूँ, तो फिर बात गुप्त कहाँ रह जाती है ? तुम मुझे बचपनसे ही जानते हो ; तुमलोगोंको इसका कारण बिना जाने ही मेरी बातपर विश्वास रखना चाहिए।"

योगेन्द्र—"इस लड़कीका नाम क्या है, कमला ?"

रमेश—"हाँ।"

योगेन्द्र—"इसे तुमने कहीं अपनी स्त्री बताया है ?"

रमेश—"हाँ, बताया है।"

योगेन्द्र—"फिर भी तुमपर विश्वास करना होगा ? तुम हमलोगोंको यह जताना चाहते हो कि यह तुम्हारी स्त्री नहीं है, और, दूसरोंको जताया है कि यह तुम्हारी स्त्री है ! यह कोई सचाईका दृष्टान्त नहीं।"

अक्षय—"यानी पाठशालाके 'नीतिबोध'में इस दृष्टान्तका इस्तेमाल नहीं किया जा सकता ; मगर भाई योगेन्द्र, दुनियामें दो फरीकोंके आगे दो तरहकी बात कहना शायद किसी खास वजहसे जरूरी हो जाता है। उनमें से कमसे कम एक बातका सच होना कोई गैरमुमकिन नहीं। हो सकता है कि तुम लोगोंसे जो बात कह रहे हो वही सच हो।"

रमेश—"मैं तुम लोगोंसे कोई भी बात नहीं कहता। मैं सिर्फ इतना ही कह रहा हूँ कि हेमनलिनीके साथ मेरा ब्याह करना धर्म या कर्त्तव्यके खिलाफ नहीं है। कमलाके बारेमें तुमलोगोंसे सब बातें कहनेमें बड़ी-भारी अड़चन है। तुमलोग मुझपर भले ही शक करो, या मुझे बुरा-भला कुछ भी समझ लो, फिर भी, मैं ऐसा अन्याय हरगिज नहीं कर सकता कि अपने लिए दूसरेको जिन्दगी बरबाद कर दूँ। मेरा अपना सुख-दुःख या मान-अपमानका विषय होता तो मैं तुमलोगोंसे कोई भी बात नहीं छिपाता ; पर किसी दूसरेपर जुल्म मैं नहीं कर सकता।"

योगेन्द्र—"हेमसे सब बातें कह दी हैं ?"

रमेश—"नहीं। ब्याहके बाद उनसे कहूँगा, इतनी बात उनसे हो चुकी है। और, वे अगर अभी पूछना चाहें तो अभी भी बता सकता हूँ।"

योगेन्द्र—"अच्छा, मैं कमलासे इस विषयमें दो-एक बात पूछ सकता हूँ ?"

रमेश—"नहीं, हरगिज नहीं। मुझे अगर तुम कसूरवार समझते हो, तो मेरे सम्बन्धमें जैसा चाहो रुख अख्तियार कर सकते हो ; लेकिन तुमलोगोंके सामने सवाल-जवाब करनेके लिए निर्दोष कमलाको मैं हरगिज नहीं खड़ी कर सकता।"

योगेन्द्र—"किसीसे भी सवाल-जवाब करनेकी कोई जरूरत नहीं। जो जानना था सो जान लिया। सबूत काफी मिल चुका। अब मैं तुमसे साफ साफ ही कह देता हूँ, अब अगर हमारे घर पैर रखनेकी कोशिश करोगे तो तुम्हें बेइज्जत होना पड़ेगा।"

रमेशका चेहरा सफेद-फक पड़ गया। वह जैसे बैठा था वैसे ही बैठा रह गया।

योगेन्द्र कहता गया—"और एक बात कहनी है। हेमको तुम चिट्ठी नहीं लिख सकोगे। उसके साथ तुम्हारा, खुले या छिपे तौरपर, नजदीक या दूरका, किसी भी तरहका कोई भी ताल्लुक नहीं रहेगा। अगर तुमने उसे चिट्ठी लिखी, तो जो बात तुम गुप्त रखना चाहते हो वही बात तमाम सबूतोंके साथ सबके सामने पेश कर दी जायगी। अब अगर हमलोगोंसे कोई पूछेगा कि तुम्हारे साथ हेमका सम्बन्ध क्यों छूट गया, तो, मैं कहूँगा कि इस ब्याहमें मेरी राय नहीं थी, इसलिए छोड़ दिया। भीतरी बात मैं नहीं कहूँगा। मगर तुम अगर होशियार न रहो तो सब बातें चौड़े आ जायेंगी। तुमने हमलोगोंके साथ बहुत ही बुरा सलूक किया है ; फिर भी मैंने जो अपनेको दमन कर रखा है वह तुमपर दया करके नहीं, बल्कि इसलिए कि इसके साथ मेरी बहनका ताल्लुक है। नहीं तो, तुम इतनी आसानीसे छुटकारा न पाते। अब तुमसे मेरा यह आखिरी कहना है कि किसी भी वक्त हेमके साथ तुम्हारा किसी भी तरहका परिचय था यह बात तुम्हारी बातचीत या व्यवहारमें कभी भी कहीं जाहिर न होने पावे। इस विषयमें मैं तुमसे प्रतिज्ञा नहीं करा सका ; क्योंकि इतना झूठके बाद प्रतिज्ञा तुम्हारी जबानसे निकलेगी नहीं। मगर हाँ, अब भी

अगर तुम्हारे अन्दर हया-शरम कुछ बाकी हो, इज्जतका जरा भी खयाल हो, तो मेरी इन बातोंकी भूलकर भी लापरवाही न करना।"

अक्षय—"ओ हो, योगेन, अब ज्यादा क्यों कह रहे हो ? रमेश बाबू चुप हैं, फिर भी तुम्हें जरा रहम नहीं आता! अब चलो। रमेश बाबू, कुछ खयाल न कीजियेगा, अब हम जाते हैं।"

योगेन्द्र और अक्षय दोनों चले गये। रमेश काठकी मूर्तिकी तरह कठोर होकर बैठा रहा। जब उसका हक्काबक्कापन जाता रहा तब उसके ऐसा जीमें आने लगा कि घरसे निकलकर तेजीसे टहलता हुआ सारी बातोंको एक बार गौरसे सोच देखे। पर दूसरे ही क्षण उसे याद आ गया कि कमला यहीं है, उसे घरमें अकेली छोड़कर जाया नहीं जा सकता।

रमेशने बगलवाले कमरेमें जाकर देखा कि कमला गलीके तरफकी खिड़कीकी एक झिलमिली खोलकर चुपचाप बैठी है। रमेशके पैरोंकी आहट सुनते ही उसने झिलमिली बन्द करके इधर मुँह फेरकर देखा। रमेश जमीनपर बैठ गया।

कमलाने पूछा—"ये दोनों-जने कौन थे ? आज सवेरे हमारे इस्कूलमें भी गये थे।"

रमेशने कहा—"स्कूल गये थे ?"

कमला—"हाँ। ये लोग तुमसे क्या कह रहे थे ?"

रमेश—"मुझसे पूछ रहे थे कि तुम मेरी कौन लगती हो ?"

ससुरालमें अनुशासनकी कमी होनेकी वजहसे यद्यपि कमलाने अभी तक शरमाना नहीं सीखा है, फिर भी बचपनसे चले आये संस्कारके कारण रमेशकी इस बातपर उसका मुँह सुर्ख हो उठा।

रमेशने कहा—"मैंने उन लोगोंको जवाब दे दिया है कि तुम मेरी कोई नहीं लगती।"

कमलाने सोचा, रमेश उसे छेड़कर तंग करनेके लिए ऐसा कह रहा है। उसने मुँह फेरकर डाटनेके स्वरमें कहा—"हटो जाओ।" और रमेश सोचने लगा, कमलासे सारा किस्सा कैसे खोलके कहा जाय ?

कमला अचानक उठ खड़ी हुई, बोली—"ये लो, तुम्हारे फल तो कौए लिये जा रहे हैं!"— कहती हुई वह जल्दीसे बगलवाले कमरेमें गई और कौओंको उड़ाकर थाली उठा लाई ; और रमेशके आगे थाली रखके बोली—"खाओगे नहीं ?"

रमेशको खानेसे अब कोई दिलचस्पी नहीं रह गई थी ; पर कमलाके इस प्यार-भरे अनुरोध और जतनने उसके हृदयको पिघला दिया । उसने कहा—"तुम नहीं खाओगी ?"

कमलाने कहा—"पहले तुम खा लो ।"

इतनी-सी बात थी, ज्यादा कुछ नहीं, पर रमेशकी मौजूदा हालतमें नारी-हृदयके इस कोमल आभासने मानो उसकी छातीके भीतरके आँसुओंके सोतपर जाकर चोट की । रमेश मुँहसे कोई बात न कहके जबरदस्ती फल खाने लगा ।

खाना-पीना खतम हो जानेके बाद रमेशने कहा—"कमला, आज रातको हमलोग देश जायेंगे ।"

कमला आँखें नीची और मुँह उदास करके बोली—"वहाँ मुझे अच्छा नहीं लगता ।"

रमेश—"स्कूलमें रहना तुम्हें अच्छा लगता है ?"

कमला—"नहीं, मुझे स्कूल मत भेजना । मुझे शरम लगती है । वहाँकी लड़कियाँ सब बार-बार तुम्हारी बातें पूछा करती हैं ।"

रमेश—"तुम क्या कहती हो ?"

कमला—"मुझसे कुछ कहते ही नहीं बनता । वे पूछती थीं, तुम क्यों मुझे छुट्टियोंमें बोर्डिंगमें रखना चाहते हो । मैं—"

कमला बात खतम न कर पाई, उसके हृदयके घावमें फिर एक टीस-सी उठ खड़ी हुई ।

रमेशने कहा—"तुमने कह क्यों नहीं दिया कि वे मेरे कोई नहीं होते ।"

कमलाने नाराज होकर और एक खास तरीकेसे गरदन मटकाकर रमेशके चेहरेकी ओर कनखी मारते हुए कहा—"चलो हटो !"

रमेश फिर मन-ही-मन सोचने लगा, क्या करना चाहिए ? इधर उसको

छातीके भीतर बार-बार एक दबा-हुआ दर्द कीड़ेकी तरह कुतर-कुतरकर बाहर निकलनेकी कोशिश कर रहा था। अब तक योगेन्द्रने जाकर हेमसे क्या-क्या कहा होगा, क्या-क्या समझाया होगा; हेमनलिनीके साथ अगर उसका जिन्दगी-भरके लिए बिछोह हो ही गया, तो फिर वह अपनी जिन्दगीकी नाव खेयेगा कैसे, इस तरहके ज्वालामय प्रश्न भीतर-ही-भीतर उसके मनमें जमा होने लगे; और उसपर मुसीबत यह कि अच्छी तरह उनपर विचार करनेकी फुरसत नहीं मिल रही है। रमेश इतना समझ गया था कि कमलाके साथ उसके सम्बन्धके विषयमें कलकत्तामें उसके शत्रु-मित्रोंमें काफी चर्चा हो रही है। यह बात काफी तौरपर फैल गई होगी कि वह कमलाका पति है। और अब, उसके लिए बचावका यही एक रास्ता रह गया है कि अब वह एक दिनके लिए भी कलकत्ता न रहे।

अनमना रमेश इसी उधेड़-बुनमें था कि अचानक कमला उसके मुँहकी ओर देखकर बोल उठी—"तुम क्या सोच रहे हो? तुम अगर देश रहना चाहते हो तो मैं भी वहीं रहूँगी।"

बालिका कमलाके मुँहसे ऐसी आत्मसंयमकी बात सुनकर रमेशके हृदयको फिर चोट लगी। फिर वह सोचने लगा, क्या किया जाय? और फिर अनमन-सा न-जाने क्या-क्या सोचता हुआ चुपचाप कमलाके मुँहकी तरफ देखता रहा।

कमलाने मुँह गम्भीर बनाकर पूछा—"अच्छा, छुट्टियोंमें मैं बोर्डिंगमें रहनेको राजी नहीं हुई इसलिए नाराज हो गये हो मुझसे? सच्ची बताओ न?"

रमेशने कहा—"सच कह रहा हूँ, तुमसे नाराज नहीं हुआ, मैं तो अपने ऊपर नाराज हूँ।"

रमेश चिन्ताके जालसे जबरन अपनेको छुड़ाकर कमलासे बात करने लगा। उसने कहा—"अच्छा, कमला, स्कूलमें तुमने इतने दिनोंमें क्या सीखा?"

कमला बहुत ही उत्साहके साथ अपनी पढ़ाई-लिखाईका हिसाब देने लगी। दुनियाकी गोलाईसे अब वह अपरिचित नहीं यह जताकर जब रमेशको उसने चौंका देनेकी कोशिश की, तो रमेशने गम्भीर मुँह बनाकर दुनियाकी गोलाईपर शक जाहिर किया। बोला—"ऐसा भी कभी हो सकता है?"

कमलाने ताज्जुबसे अपनी आँखें फाड़ते हुए कहा—"वाह, हमारी किताबमें लिखा है, मैंने पढ़ा है।"

रमेशने आश्चर्यके साथ कहा—"अच्छा! किताबमें लिखा है? कितनी बड़ी किताब है?

इस सवालसे कमला जरा पसोपेशमें पड़ गई; बोली—"ज्यादा बड़ी तो नहीं है; पर छपी हुई किताब है। उसमें तसवीरें भी हैं।"

इतने बड़े सबूतके आगे रमेशको हार माननी पड़ी। इसके बाद कमला पढ़ने-लिखनेका ब्योरा खतम करके स्कूलकी लड़कियों और मास्टरनियोंकी बात, वहाँकी दिनचर्या आदिके बारेमें बकवास करती रही। रमेश अनमना-सा होकर बीच-बीचमें उसकी बातपर हूँकारा देता गया। कभी-कभी किसी बातके सिलसिलेमें एकआध सवाल भी करता रहा। कुछ देर बाद सहसा कमला कह उठी—"तुम मेरी बात तो कुछ सुन नहीं रहे हो।" और तुरत रूठके चल दी।

रमेश उतावला होकर बोला—"नहीं नहीं, कमला, नाराज न होओ, मेरी आज तबीयत ठीक नहीं है।"

तबीयत ठीक नहीं सुनते ही कमला लौट पड़ी, बोली—"तबीयत ठीक नहीं, क्या हुआ?"

रमेशने कहा—"कोई खास तकलीफ नहीं, मामूली जरा, – बीच-बीचमें मुझे ऐसा हो जाया करता है। अभी तुरत ठीक हो जायगा।"

कमलाने रमेशकी तबीयत खुश करनेकी गरजसे अपनी पढ़ाईको नजीर देते हुए कहा—"मेरी 'भूगोल-शिक्षा' में समूची दुनियाकी तसवीर है, देखोगे?

रमेशने अपनी दिलचस्पी जाहिर करते हुए कहा—"दिखाओ।"

कमला झटपट अपनी किताब उठा लाई और रमेशके आगे खोलके रख दी। बोली—"देखो, ये दो गोल-गोल तसवीरें अलग-अलग दीख रही हैं न, असलमें ये दोनों एक ही हैं। गोल चीजके दो पहलू कहीं एकसाथ दिखाये जा सकते हैं?"

रमेशने जरा-कुछ सोच देखनेका भान करते हुए कहा—"एकसाथ दोनों पहलू तो चपटी चीजके भी नहीं देखे जा सकते।"

कमलाने कहा—"इसीलिए इस तसवीरमें धरतीके दो पहलू अलग-अलग दिखाये गये हैं।"

इसी तरह उस दिनकी शाम बीत गई।

२०

अन्नदा बाबू खूब दिलजमईके साथ यह उम्मीद कर रहे थे कि योगेन्द्र अच्छी खबर लायेगा; और सारा फसाद बड़ी आसानीसे निबट जायगा। योगेन्द्र और अक्षय जब उनके कमरेमें घुसे तो वे डरते हुए-से उनके मुँहकी ओर देखने लगे।

योगेन्द्रने कहा—"बापूजी, तुम रमेशको इतनी ज्यादा आजादी दे दोगे, यह किसे मालूम था। ऐसा जानता तो मैं उसके साथ घरमें किसीका परिचय ही न कराता।"

अन्नदा बाबू भौचक्के-से होकर बोले—"वाह, रमेशके साथ हेमकी शादी करनेकी मनसा तो तुम्हारी ही थी शुरूसे, और इस बातको तुम कई बार दुहरा भी चुके हो। अगर तुम्हारा रोकनेका ही इरादा था तो तुम मुझे—"

योगेन्द्र—"हालाँ कि बिलकुल रोकनेकी बात मैंने कभी नहीं सोची, लेकिन इसके मानी—"

अन्नदा बाबू—"यह देखो, नहीं सोची तो फिर उसमें 'इसके मानी' कहाँसे आ गया? या तो आगे बढ़ने देना या रोक देना, दो ही रास्ते थे।"

योगेन्द्र—"इसके मानी ये नहीं कि उसे इतनी ज्यादा आजादी दे दी जाय कि वह ज्यादती करता ही चला जाय।"

अक्षय हँस दिया, बोला—"कुछ ऐसी बातें भी होती हैं जो अपनी धुनमें ही आगे बढ़ती रहती हैं, उन्हें शह नहीं देना पड़ती; बढ़ते-बढ़ते अपने-आप ही ज्यादती तक पहुँच जाती हैं। मगर जो-कुछ हो गया, उसपर बहस करनेसे फायदा? अब तो जो कुछ करना है उसकी चर्चा करना चाहिए।"

अन्नदा बाबूने डरते हुए पूछा—"रमेशसे तुमलोगोंकी मुलाकात हुई थी?"

योगेन्द्र—"खूब मुलाकात हुई है, जिसकी कि उम्मीद भी नहीं की थी। और तो क्या, उसकी बहूको भी देख आये।"

आन्नदा बाबू दंग होकर देखते ही रह गये। थोड़ी देर बाद पूछ उठे—"किसकी बहूको देख आये ?"

योगेन्द्र—"रमेशकी बहूको।"

अन्नदा बाबू—"तुम कह क्या रहे हो, मेरी कुछ समझमें नहीं आ रहा ? किस रमेशकी बहूको ?"

योगेन्द्र—"हमारे यहाँ आने-जानेवाले रमेशकी बहूको। पाँच-छै महीने पहले जब वह देश गया था ;तब ब्याह करने तो गया ही था।"

आन्नदा बाबू—"पर उसके पिताकी मृत्यु हो जानेसे उसका ब्याह तो हो नहीं पाया था ?"

योगेन्द्र—"मरनेसे पहले ही पिताने उसकी शादी कर दी थी।"

अन्नदा बाबू सन्न रह गये ; और जल्दी कुछ समझमें न आनेसे माथेपर हाथ फेरने लगे। कुछ देर तक सोचते रहे, फिर बोले—"तब तो उसके साथ हेमका ब्याह हो ही नहीं सकता।"

योगेन्द्र—"हम लोगोंका तो यही कहना है—"

अन्नदा बाबू—"तुमलोग तो यही कहोगे ; पर इधर जो ब्याहकी पूरी तैयारियाँ हो चुकी हैं। इस इतवारको न होकर अगले इतवारको होगा, इसकी चिट्ठियाँ भी चली गई हैं। अब फिर उसे बदलकर मनाहीकी तीसरी चिट्ठी देनी पड़ेगी ?"

योगेन्द्रने कहा—"बिलकुल मनाही लिखनेकी जरूरत नहीं, थोड़ा-सा रद्दो-बदल कर देनेसे काम चल जायगा।"

अन्नदा बाबूने आश्चर्यके साथ कहा—"उसमें रद्दो-बदल और क्या करोगे ?"

योगेन्द्र—"जो किया जा सकता है वही किया जायगा। रमेशकी जगह और-किसीको देख-भालकर सम्बन्ध पक्का करके अगले रविवारको ही ब्याह कर देना पड़ेगा ; नहीं तो समाजमें मुँह दिखाना दुशवार हो जायगा।" इतना कहकर योगेन्द्रने एक बार अक्षयके मुँहकी ओर देखा। अक्षयने विनयसे सिर झुका लिया।

अन्नदा बाबूने कहा—"लड़का इतनी जल्दी कैसे मिल सकता है ?"

योगेन्द्र—"इसके लिए तुम निश्चिन्त रहो।"

अन्नदा बाबू—"मगर हेमको तो राजी करना पड़ेगा।"

योगेन्द्र—"रमेशकी सारी बातें सुनकर वह जरूर राजी हो जायगी।"

अन्नदा बाबू—"तो फिर तुम जैसा ठीक समझो वैसा करो। पर रमेशकी घरकी हैसियत भी ठीक थी, और पैसा पैदा करनेकी विद्या-बुद्धिकी भी कमी नहीं थी। परसों ही तो मुझसे तय कर गया था कि इटावा जाकर प्रेक्टिस करेगा; इस बीचमें देखो भला, क्याका क्या हो गया!"

योगेन्द्र—"इसके लिए क्यों चिन्ता कर रहे हो बापूजी। इटावेमें वह अब भी प्रेक्टिस कर सकता है। एक बार मैं हेमको बुला लाऊँ। अब ज्यादा दिन भी तो नहीं हैं।"

कुछ देर बाद योगेन्द्र हेमनलिनीको लेकर वापस आ गया। अक्षय कमरेके एक कोनेमें किताबोंकी आलमारीकी ओटमें बैठा रहा।

योगेन्द्रने कहा—"हेम, बैठो, तुमसे कुछ बात करनी है।"

हेमनलिनी सन्नाटा खींचकर चौकीपर बैठ गई। वह समझ रही थी कि उसकी परीक्षा होनेवाली है।

योगेन्द्रने भूमिकाके तौरपर पूछा—"रमेशके बरतावमें तुम्हें सन्देहकी कोई बात नहीं मालूम हुई?"

हेमनलिनीने मुँहसे कुछ न कहकर सिर्फ गरदन हिला दी।

योगेन्द्र कहता गया—"उसने जो ब्याहका दिन एक हफ्ते आगे बढ़वा दिया उसका ऐसा क्या कारण हो सकता है जो हममेंसे किसीको भी नहीं बताया जा सकता!"

हेमने निगाह नीची किये हुए कहा—"कारण जरूर कुछ-न-कुछ होगा ही।"

योगेन्द्र—"सो तो ठीक है, कारण तो है ही; पर वह क्या सन्देहजनक नहीं है?"

हेमनलिनीने फिर चुपकेसे गरदन हिलाकर जताया—'नहीं।'

योगेन्द्रने जब देखा कि बाप-बेटी दोनोंको एक रमेशपर ही पूरा भरोसा है तो उसे गुस्सा आ गया। अब सावधानीसे भूमिका बनाकर बात करना उसने

जरूरी नहीं समझा। वह कड़ाईके साथ कहने लगा—"तुम्हें तो याद होगा कि रमेश सात-आठ महीने पहले अपने पिताके साथ देश गया था। उसके बाद बहुत दिनों तक उसकी कोई चिट्ठी-पत्री न आनेसे हमलोगोंको आश्चर्य हो रहा था। यह भी तुम्हें मालूम है कि रमेश दोनों वक्त हमारे यहाँ आया करता था; और जो बराबर हमारे बगलके मकानमें रहता था वह दुबारा कलकत्ता आकर हमलोगोंसे बिलकुल मिला ही नहीं; और दूसरी जगह मकान लेकर छिपकर रहने लगा। इतना सब-कुछ होनेपर भी तुमलोग उसे पहलेकी तरह ही पूरे विश्वासके साथ अपने घर बुला लाये! मैं होता तो क्या ऐसा कभी हो सकता था?"

हेमननिली चुप बनी रही।

योगेन्द्र कहता गया—"रमेशके इस तरहके बरतावके कुछ भी मानी तुम लोगोंको समझमें नहीं आये? इस बारेमें कोई सवाल ही तुमलोगोंके मनमें नहीं पैदा हुआ! रमेशपर इतना गहरा विश्वास है, क्यों?"

हेमनलिनीने कुछ जवाब नहीं दिया।

योगेन्द्र कहने लगा—"खैर, अच्छी बात है; तुमलोग सरल-स्वभावी ठहरे, किसीपर शक नहीं करते; पर इतनी उम्मीद मैं कर सकता हूँ कि मुझपर भी तुम्हारा थोड़ा-बहुत विश्वास होगा। मैं खुद स्कूल जाकर दरियाफ्त कर आया हूं कि रमेश अपनी स्त्रीको बोर्डिंगमें रखकर पढ़ा रहा था, उसका नाम है कमला। पूजाकी छुट्टियोंमें भी उसे वह बोर्डिंगमें ही रखना चाहता था। दो-तीन दिन हुए, अचानक रमेशको हेड-मिस्ट्रेसकी चिट्ठी मिली कि छुट्टियोंमें कमलाको बोर्डिंगमें नहीं रखा जायगा। आजसे स्कूलकी छुट्टियाँ शुरू हो गईं और कमलाको उन लोगोंने स्कूलकी गाड़ीमें बिठाकर रमेशके दरजीपाड़ा-वाले मकानमें पहुँचा दिया है। उस मकानमें मैं खुद गया था। जाकर देखा कि कमला हँसियासे सेव बना रही है और रमेश उसके सामने जमीनपर बैठा हुआ सेवकी फाँकें उठा-उठाकर मुँहमें डाल रहा है! रमेशसे मैंने पूछा कि यह क्या बात है? उसने जवाब दिया कि हम लोगोंको अभी वह कुछ भी नहीं बता सकता। अगर रमेश एक बात भी बता देता कि कमला उसकी स्त्री नहीं है,

तो भी उसकी बातपर विश्वास करके किसी कदर हम अपने सन्देहको दबा रखनेकी कोशिश करते। मगर उसने 'हाँ' या 'ना' कुछ भी कहनेसे इन्कार कर दिया। अब, इसके बाद भी क्या तुम रमेशपर पहले-जैसा विश्वास रखना चाहोगी ?"

जवाबके इन्तजारमें योगेन्द्र हेमनलिनीके मुँहकी ओर गौरसे देखता रहा। हेमका चेहरा सफेद-फक पड़ गया था; उसमें जितनी भी ताकत थी उतनी ताकत लगाकर वह दोनों हाथोंसे कुरसीकी मूठें दबानेकी कोशिश कर रही थी। और, इसके क्षण-भर बाद ही वह सामनेकी तरफ झुक पड़ी और बेहोश होकर कुरसीसे नीचे आ पड़ी।

अन्नदा बाबू व्याकुल हो उठे। उन्होंने जमीनपर पड़ी-हुई हेमनलिनीके माथेको दोनों हाथोंसे अपनी छातीके पास रखकर कहा—"बिटिया, बिटिया, क्या हुआ बिटिया ? इन लोगोंकी बातपर तुम विश्वास मत करो। सब झूठी बात है।"

योगेन्द्रने अपने पिताको एक तरफ हटाकर जल्दीसे हेमनलिनीको एक सोफेपर लिटा दिया। पास ही पानीकी सुराही थी, उसमेंसे पानी लेकर उसके मुँहपर बार-बार छींटे देने लगा; और अक्षय पंखा लेकर जोर-जोरसे हवा करने लगा।

हेमनलिनीने थोड़ी देर बाद आँखें खोलीं तो वह चौंक पड़ी; और अपने पिताकी ओर देखती हुई चीख मारकर कह उठी—"बापूजी, बापूजी, अक्षय बाबूको यहाँसे हट जानेके लिए कह दो।"

अक्षय पंखा रखकर कमरेके बाहर चला गया और दरवाजेकी ओटमें जा खड़ा हुआ। अन्नदा बाबू सोफेपर हेमके पास जा बैठे, और उसके माथेपर हाथ फेरने लगे। और फिर, एक गहरी साँस लेकर बोल उठे—"बिटिया, बिटिया! हेमू!"

देखते-देखते हेमनलिनीकी दोनों आँखोंसे आँसुओंकी धारा बह चली, उसकी छातीमें उफान-सा आ गया। वह पिताकी गोदमें मुँह छिपाकर उनसे चुपट गई, और सिसक-सिसककर अपने रोनेके उभारको रोकनेकी भरपूर कोशिश

करने लगी। अन्नदा बाबूने आँसू-भरे कण्ठसे कहा—"बेटी, तुम निश्चिन्त रहो, बेटी। रमेशको मैं अच्छी तरह जानता हूँ, वह कभी भी धोखा नहीं दे सकता। योगेनने जरूर गलती की है।"

योगेन्द्रसे अब न रहा गया, बोला—"बापूजी, क्यों झूठी तसल्ली दे रहे हो! अभीके दुःखसे बचानेके लिए उसे दूने दुःखमें डालना अच्छा नहीं। बल्कि इससे तो तुम उसे सोचनेके लिए थोड़ा वक्त दो तो अच्छा है।"

हेमनलिनी उसी वक्त पिताकी गोद छोड़कर उठके बैठ गई; और योगेन्द्रके मुँहकी तरफ देखकर बोली—"मुझे जो-कुछ सोचना था, मैं सोच चुकी हूँ। जब तक उनके अपने मुँहसे कुछ नहीं सुन लेती, तब तक मैं और किसीकी बातपर हरगिज विश्वास नहीं करूँगी, यह तुम निश्चय समझ लेना!" इतना कहकर वह उठके खड़ी हो गई। अन्नदा बाबूने घबराकर उसे थाम लिया, बोले—"गिर जाओगी।"

हेमनलिनी पिताका हाथ पकड़के अपने सोनेके कमरेमें चली गई। बिस्तर पर लेटकर बोली—"बापूजी, मुझे जरा अकेली छोड़ दो, मैं सोऊँगी।"

अन्नदा बाबूने कहा—"हरियाकी माको भेज दूँ, हवा कर देगी?"

हेमने कहा—"हवाकी जरूरत नहीं बापूजी।"

अन्नदा बाबू बगलके कमरेमें जा बैठे। हेमकी मा अपनी इस लड़कीको छै महीनेकी नन्ही-सी छोड़कर मरी थीं। बैठे-बैठे वे हेमकी उस माकी बात ही सोचने लगे। उनकी वह सेवा, उनका धीरज, उनका सदा-प्रसन्न चेहरा, एक-एक करके सब बातें उन्हें याद आने लगीं। उसी गृहलक्ष्मीकी प्रतिमूर्तिकी भाँति जो लड़की इतने दिनोंसे उनकी गोदमें पली-पनपी है और इतनी बड़ी हुई है, उसके अनिष्टकी आशंकासे उनका हृदय व्याकुल हो उठा। बगलके कमरेमें बैठे हुए वे मन-ही-मन उसे सम्बोधित करके कहने लगे, 'बेटी, तुम्हारे तमाम बाधा-विघ्न दूर हो जायँ, हमेशा तुम सुखी रहो। तुम्हें सुखी देखकर, भली-चंगी देखकर, जिसे तुम प्यार करती हो उसके घर तुम्हें लक्ष्मीकी तरह प्रतिष्ठित देखकर ही मैं तुम्हारी माके पास जा सकूँ, परमात्मासे यही मेरी प्रार्थना है।' मन-ही-मन इतना कहकर उन्होंने कुड़तेकी आस्तीनसे अपनी आँखें पोंछ लीं।

औरतोंकी बुद्धिपर योगेन्द्रको शुरूसे ही अवज्ञा थी ; और आज वह और भी ज्यादा दृढ़ हो गई। ये आँखों-देखे सबूतपर भी विश्वास नहीं करतीं, इन्हें लेकर क्या किया जाय ? दो और दो चार होंगे ही, फिर चाहे उससे आदमीको सुख हो या दुःख। पर ये औरतें कहीं-कहीं उसे भी इनकार कर जाती हैं। युक्ति भले ही कालेको काला ही बताये, पर इनके प्रेमको अगर वह न जचा तो ये फौरन ही उसे सफेद कहने लग जायेंगी ; और युक्तिपर खफा हो उठेंगी। इन्हें लेकर कैसे दुनियाका काम चल सकता है, योगेन्द्रकी कुछ समझ ही में नहीं आता।

योगेन्द्रने पुकारा—"अक्षय।"

अक्षय धीरेसे कमरेके भीतर दाखिल हुआ।

योगेन्द्र बोला—"सब तो सुन लिया तुमने, अब इसका क्या इलाज हो सकता है ?"

अक्षयने कहा—"मुझे इन सब बातोंके बीच क्यों घसीट रहे हो भाई ? मैं इतने दिनोंसे कुछ भी नहीं कह रहा था ; तुमने आते ही मुझे झमेलेमें डाल दिया।"

योगेन्द्रने कहा—"अच्छा अच्छा, ये नालिश-फरियादें पीछे करते रहना। अब तो, हेमनलिनीके सामने जब तक रमेश खुद सब बातें कबूल नहीं कर लेता तब तक कुछ होना-हवाना मुश्किल ही दीखता है ?"

अक्षय—"तुम्हारा दिमाग खब्त हो गया है ! आदमी अपने मुँहसे—"

योगेन्द्र बीच ही में बोल उठा—"या फिर, वह एक चिट्ठी लिखके भेज दे तो और भी अच्छा रहे। तुम्हें इसका जिम्मा लेना पड़ेगा। मगर अब ज्यादा देर करनेसे काम न चलेगा।"

अक्षयने कहा—"देखूं, कहाँ तक क्या किया जा सकता है !"

२१

रातके नौ बजे रमेश कमलाको लेकर स्यालदह स्टेशनके लिए रवाना हुआ। जाते वक्त जरा घूमकर गया। गाड़ीवानको बेमतलब इधर-उधर गलियोंमें घुमाता

फिरा। कोल्हूटोलाके एक मकानके पास आकर आग्रहके साथ मुँह निकालकर देखा, पर उस परिचित मकानमें किसी तरहका परिवर्तन नहीं दिखाई दिया। रमेशने ऐसी एक लम्बी साँस छोड़ी कि ऊँघती हुई कमला चौंक पड़ी। उसने पूछा—"तुम्हें क्या हो गया है?"

रमेशने जवाब दिया—"कुछ भी नहीं।" और कुछ न कहके गाड़ीके भीतर अँधेरेमें चुपचाप बैठा रहा। देखते-देखते गाड़ीके एक कोनेमें सिर टेकके कमला फिर सो गई। क्षण-भरके लिए कमलाका अस्तित्व रमेशके लिए मानो असह्य-सा हो उठा।

गाड़ी ठीक वक्तपर स्टेशन पहुँची। सेकेण्ड क्लासका डब्बा पहलेसे ही रिजर्व किया हुआ था। रमेश और कमला दोनों उसमें बैठ गये। एक तरफकी सीटपर कमलाका बिस्तर बिछा दिया; और बत्तीके नीचे परदा लगाकर जरा अँधेरा करके रमेशने कमलासे कहा—"बहुत देरसे तुम्हें नींद आ रही है, तुम्हारा सोनेका वक्त हो गया, अब तुम सो जाओ।"

कमलाने कहा—"गाड़ी छूटनेपर मैं सोऊँगी, तब तक इस खिड़कीके पास बैठकर स्टेशन देखूँगी।"

रमेश राजी हो गया। कमला माथेका पल्ला खींचकर प्लाटफार्मकी तरफकी खिड़कीके पास बैठकर तमाशा देखने लगी। रमेश दूसरी सीटपर अनमना-सा बैठा दूसरी ओर देखता रहा। गाड़ी छूटी ही थी कि रमेश चौंक उठा, अचानक उसे ऐसा लगा कि उसका कोई जान-पहचानका आदमी गाड़ीकी तरफ दौड़ा आ रहा है।

दूसरे ही क्षण कमला खिलखिलाकर हँस पड़ी। रमेशने खिड़कीसे मुँह निकालकर देखा कि एक आदमी रेल्वे-कर्मचारीके रोकनेपर भी उससे बचकर चलती गाड़ीपर सवार हो गया है और उसका दुपट्टा उस कर्मचारीके हाथमें ही रह गया। अपना दुपट्टा लेनेके लिए उस आदमीने खिड़कीसे झुककर जब हाथ बढ़ाया तब रमेशने साफ-साफ देख लिया कि वह और-कोई नहीं, अक्षय है।

दुपट्टेकी छीनाझपटीके उस दृश्यको देखकर बहुत देर तक कमलाको हँसी आती रही।

रमेशने कहा—"साढ़े-दस बज चुके हैं, गाड़ी छूट चुकी, अब तुम सो जाओ।"

कमला बिस्तरपर पड़ रही; और जब तक नींद न आई, तब तक वह बीच बीचमें खिलखिलाकर हँसती रही। पर इस मामलेमें रमेशको कोई खास कुतूहल नहीं पैदा हुआ।

रमेश जानता था कि गाँवसे अक्षयका कोई ताल्लुक न था। वह कई पीढ़ियोंसे कलकत्ता ही रहता आया है। आज रातको वह ऐसा बेतहाशा दौड़ा हुआ कलकत्ता छोड़कर कहाँ जा रहा है? रमेश समझ गया कि वह उसीका पीछा कर रहा है। अक्षय अगर उसके गाँवमें जाकर पता लगाना शुरू करे और वहाँ रमेशके अनुकूल और खिलाफ दोनों तरहके लोगोंमें इस बातकी चर्चा छेड़कर उसे परेशान करे, तो सारा मामला कैसा भद्दा हो उठेगा, इसकी कल्पना करके रमेशका मन बहुत ही बेचैन हो उठा। उसके मुहल्लेवालोंमें से कौन क्या कहेगा, कैसी-कैसी वाहियात चर्चा उठेगी, सो सब उसे अभीसे साफ-साफ दिखाई देने लगा। कलकत्ता-जैसे शहरमें हर हालतमें आड़ ढूँढ़े मिल जाती है; पर छोटेसे गाँवमें शायद गहराई कम होनेसे जरा-सा धक्का लगते ही वहाँके आन्दोलनकी लहरें जोरदार हो उठती हैं। इस बातपर वह ज्यों-ज्यों विचार करने लगा त्यों-त्यों उसका मन संकुचित होने लगा।

जब गाड़ी बारकपुर जाकर खड़ी हुई तो रमेश बाहर मुँह निकालकर देखने लगा, अक्षय नहीं उतरा। नईहट्टीमें बहुतसे लोग चढ़े-उतरे, पर अक्षय नहीं दिखाई दिया। फिर जब बगुला स्टेशनपर गाड़ी खड़ी हुई, तो फजूलकी उम्मीद लिये हुए रमेश खिड़कीसे मुँह निकालकर बड़ी बेचैनीके साथ गौरसे देखता रहा; पर अक्षयका नामो-निशान तक नहीं दिखाई दिया। उसके बाद और किसी स्टेशनपर अक्षयके उतरनेकी वह कल्पना भी न सका।

बहुत रात बीते रमेश सो गया।

दूसरे दिन सवेरे गाड़ी ग्वालन्द पहुँची। वहाँ रमेशने देखा कि अक्षय माथे और मुँहपर चादर लपेटे हाथमें एक हैण्डबैग लिये स्टीमरकी तरफ दौड़ा जा रहा है।

जिस स्टीमरमें रमेशको जाना था उसके छूटनेमें अभी काफी देर थी। पर दूसरी जटीपर और-एक स्टीमर खड़ा था जो बार-बार सीटी बजा रहा था। रमेशने पूछा, "वह स्टीमर कहाँ जायगा?" जवाब मिला, "पच्छिम जायगा।"

"कहाँ तक?"

"पानी न घटा तो काशी तक जायगा।"

यह सुनते ही रमेश उसी वक्त उस स्टीमरमें सवार हो गया; और कमलाको एक कमरेमें बिठाकर जल्दीसे कुछ दूध, चावल-दाल और थोड़ेसे केले खरीद लाया।

उधर अक्षय दूसरे स्टीमरमें सबसे पहले जाकर ओढ़-आढ़कर ऐसी एक जगह जा खड़ा हुआ कि जहाँसे और-और मुसाफिरोंका जाना-आना सब दिखाई दे सके। मुसाफिरोंको कोई खास जल्दी नहीं थी; क्योंकि जहाज छुटनेमें अभी काफी देर थी। इसलिए लोग मुँह-हाथ धोकर और कोई-कोई नहा-धोकर खाने-पीनेका इन्तजाम करने लगे। अक्षय पहले कभी ग्वालन्द नहीं आया था, इसलिए उसे यहाँके बारेमें कुछ भी जानकारी नहीं थी। उसने सोचा कि पास ही कहीं होटल या दुकान होगी, वहीं रमेश कमलाको खिलाने-पिलाने ले गया होगा।

अन्तमें स्टीमर सीटी देने लगा। अब भी रमेशका कहीं पता नहीं। काँपते हुए तख्तेके ऊपरसे लोग जहाजपर चढ़ने लगे। ज्यों-ज्यों जल्दी-जल्दी सीटी बजने लगी त्यों-त्यों मुसाफिरोंकी घबराहट और जल्दबाजी बढ़ने लगी। पर चढ़नेवालोंमें रमेशकी कहीं चोटी तक नहीं दिखाई दी। जब मुसाफिरोंका चढ़ना बिलकुल बन्द हो गया, जहाजका तख्ता खींच लिया गया और सारेनने लंगर उठानेका हुक्म दे दिया, तब अक्षय चिल्ला उठा—"मुझे उतरना है, मैं उतरूँगा।" पर वहाँ कौन सुनता है? खलासियोंने उसकी बातपर जरा भी ध्यान न देकर लंगर उठा लिया। इतनेमें देखा गया कि अक्षय स्टीमरसे कूद पड़ा।

किनारे आकर उसने इधर-उधर बहुत तलाश किया, पर कहीं भी रमेशका पता न चला। थोड़ी देर पहले कलकत्ता जानेवाली गाड़ी छूट चुकी थी। अक्षयने मन-ही-मन सोचा कि कल रातको दुपट्टेकी छीना-झपटीमें रमेशने

उसे जरूर देख लिया होगा ; और यह समझकर कि उसके खिलाफ कुछ करनेके लिए वह उसका पीछा कर रहा है, डरके मारे वह देश न जाकर उसी गाड़ीसे कलकत्ता वापस चला गया है । और, कलकत्तामें अगर कोई छिपनेकी कोशिश करे, तो उसे खोज निकालना बड़ी टेढ़ी खीर है ।

२२

अक्षय दिन-भर ग्वालन्द-स्टेशनमें फड़फड़ाता रहा ; और शामकी डाक गाड़ीसे कलकत्ताके लिए रवाना हो गया । दूसरे दिन सवेरे कलकत्ता पहुँचते ही सीधा रमेशके दरजीपाड़ा-वाले मकानकी तरफ चल दिया । वहाँ जाकर देखा तो दरवाजा बन्द ! पूछताछ करनेपर मालूम हुआ कि वहाँ कोई नहीं आया ।

कोल्हूटोला जाकर देखा तो वहाँ भी वही हाल । रमेशका मकान सूना पड़ा है । अन्तमें अन्नदा बाबूके घर जाकर योगेन्द्रसे बोला—"भाग गया, नहीं पकड़ सका ।"

योगेन्द्रने कहा—"क्या हुआ ?"

अक्षयने सारा हाल कह सुनाया ।

अक्षयको देखते ही रमेश कमलाको साथ लेकर भाग गया, यह सुनकर रमेशके खिलाफ योगेन्द्रका सन्देह निश्चित विश्वासमें परिणत हो गया । उसने कहा—"मगर अक्षय, ये सब दलीलें किसी काम हो न आयेंगी वहाँ । सिर्फ हेम ही क्यों, बापूजी तक यही बोली बोल रहे हैं कि खुद रमेशके मुँहसे आखिरी बात सुने बिना उसपर अविश्वास नहीं किया जा सकता । और तो क्या, रमेश आज भी आकर अगर कहे कि 'मैं कुछ नहीं बताऊँगा, तो भी बापूजी उसीके साथ हेमका ब्याह करनेमें न सकुचायेंगे । इन लोगोंको लेकर मैं तो बड़ी मुसीबतमें पड़ गया हूँ । हेमके चेहरेपर जरा-सी उदासी आई नहीं कि बापूजी बेचैन हो जाते हैं, उसका जरा-सा भी कष्ट उनसे नहीं सहा जाता । हेम अगर आज जिद कर बैठे कि 'रमेशके एक स्त्री है तो रहने दो, मैं तो उन्हींके साथ ब्याह करूँगी', तो शायद बापूजी उसपर भी राजी हो जायेंगे । जैसे भी हो, और जितनी जल्दी हो सके, रमेशसे कबूल कराना ही है कि कमलासे उसका

ब्याह हो चुका है। मैं ही इस काममें लग जाता, पर कोई अटकल मेरे दिमागमें नहीं आ रही है; और ताज्जुब नहीं कि मैं उससे मारपीट भी कर बैठूँ। अभी तक शायद तुमने मुँह भी नहीं धोया मालूम होता है, चाय भी नहीं पी?"

अक्षय मुँह-हाथ धोकर चाय पीने बैठ गया; और पीते-पीते सोचने लगा। इतनेमें अन्नदा बाबू हेमनलिनीका हाथ थामे हुए वहाँ आ पहुँचे। अक्षयको देखते ही हेमनलिनी उलटे-पाँव लौट गई।

योगेन्द्रको गुस्सा आ गया; बोल उठा—"हेमकी यह बड़ी-भारी ज्यादती है! बापूजी, तुम उसकी इस बेहूदगीको शह मत दो। उसे जबरदस्ती यहाँ ले आना चाहिए। हेम, हेम!"

हेमनलिनी तब ऊपर पहुँच चुकी थी। अक्षयने कहा—"योगेन्द्र, तुम मेरा 'केस' और भी खराब कर दोगे मालूम होता है। उनके सामने मेरे बारेमें एक शब्द भी मत कहो। वक्त आनेपर खुद-बखुद इसका फैसला हो जायगा, जबरदस्ती करनेसे सब मिट्टी हो जायगा।"

इतना कहके अक्षय चाय पीकर चला गया। धीरजकी तो उसके कोई कमी ही नहीं थी। जब कि सारेके सारे आसार उसके खिलाफ नजर आ रहे हों, उस वक्त भी वह अपने मतलबमें चौकस रहना जानता है; उसकी विचार-धारा या हाव-भाव तकमें कोई खराबी या विकार नहीं दिखाई देता। मिजाजमें आकर मुँह भारी करके वह दूर नहीं चला जाता। अनादर और बेइज्जतीमें भी वह जहाँका तहाँ कायम रहता है। मतलब यह कि आदमी टिकाऊ है; उसके साथ किसीका कैसा भी सलूक क्यों न हो, वह टिका ही रहता है।

अक्षयके चले जानेपर अन्नदा बाबूने फिर हेमनलिनीको चायकी टेबिलपर ला हाजिर किया। आज उसके गाल पीले-जर्द पड़ गये हैं, आँखोंके नीचे स्याही-सी पुत गई है। कमरेमें घुसते ही उसने आँखें नीची कर लीं; योगेन्द्रके मुँहकी ओर उससे ताका न गया। वह जानती थी कि योगेन्द्र उसपर और रमेशपर नाराज है, उनके खिलाफ ही वह फैसला देनेवाला है। इसीसे योगेन्द्रका सामना करना या उसकी आँखसे आँख मिलाना उसके लिए मुश्किल-सा हो रहा है।

प्रेमने यद्यपि हेमके विश्वासको रोक रखा था, फिर भी मौजूदा दलीलोंको बिलकुल ही उड़ा देना उसके लिए जरा मुश्किल-सा हो रहा था। परसोंकी बात है, हेम योगेन्द्रके सामने अपने विश्वासको काफी मजबूती दिखा गई। किन्तु रातके अँधेरेमें जब वह अकेली अपने बिस्तरपर सोई, तो उसका वह जोर पूरा कायम न रहा। हकीकत यह है कि शुरूसे ही रमेशके बरतावके कोई मानी ही ढूँढ़े नहीं मिलते। सन्देहके कारणोंको हेम, जी-जानसे कोशिश करके, जितना ही अपने विश्वासके किलेमें नहीं घुसने देना चाहती, बाहर खड़े-खड़े वे उतने ही जोर-जोरसे चोटपर चोट करते रहते हैं। जबरदस्त खतरेसे बचानेके लिए मा जैसे बच्चेको अपनी छातीसे चुपटा लेती है, रमेशपर कायम अपने विश्वासको वह उसी तरह सबूतोंके खिलाफ जबरन अपने हृदयसे चुपटाये रही। मगर इससे क्या, जोर क्या हरवक्त एकसा रहता है?

रातको अन्नदा बाबू हेमनलिनीके बगलवाले कमरेमें ही सोये थे। वे समझ रहे थे कि हेमको आज नींद नहीं आ रही; वह करवटें बदल रही है। बीच बीचमें उठ-उठकर वे हेमके कमरेमें जाते और कह आते, "बेटी, नींद नहीं आ रही क्या?" हेम जवाब देती, "बापूजी, तुम क्यों जाग रहे हो? मुझे नींद आ रही है, मैं अभी सो जाऊँगी।"

दूसरे दिन तड़के ही उठके हेम छतपर टहलने लगी। रमेशके घरका एक भी दरवाजा, एक भी जंगला खुला नहीं है।

सूरज धीरे-धीरे चढ़ता हुआ पूरबके मकानोंके ऊपर दिखाई देने लगा। हेमनलिनीको आजका यह नया सवेरा ऐसा रूखा-सूखा, ऐसा रीता, इतना आशाहीन आनन्दहीन मालूम हुआ कि वह छतके एक कोनेमें बैठकर दोनों हाथोंसे मुँह ढकके रो उठी। आज दिन-भर कोई भी नहीं आयेगा, चायके वक्तपर किसीके आनेकी राह नहीं देखना है; बगलके मकानमें कोई रहता है इस कल्पनाका आनन्द तक उसका मिट गया।

"हेम, हेम!"

हेमनलिनीने जल्दीसे उठकर आँखें पोंछ डालीं; और जवाब दिया—"क्या बापूजी?" अन्नदा बाबूने छतपर आकर हेमकी पीठपर हाथ फेरते हुए कहा—"आज मुझे उठनेमें देर हो गई।"

उत्कण्ठाके मारे रातको उन्हें नींद नहीं आई ; पिछली रातको आँख लग जानेसे देर तक सोते रहे। ज्यों ही आँखोंमें उजाला लगा त्यों ही उठ बैठे ; और झटपट मुँह-हाथ धोकर हेमकी खबर लेने उसके कमरेमें पहुँचे। देखा कि वहाँ कोई नहीं। सवेरे उसे अकेली छतपर देखकर उनके हृदयको चोट पहुँची। बोले—"चलो बेटी, चाय पीयें।"

चायकी टेबिलपर योगेन्द्रके सामने बैठकर चाय पीनेकी उसकी इच्छा नहीं थी। किन्तु वह जानती है कि नियममें किसी तरहका फरक पड़नेसे उसके पिता दुःखित होंगे ; इसके सिवा, रोज वह अपने हाथसे पिताको चाय पिलाती है, उस सेवासे उसने अपनेको वंचित नहीं रखना चाहा। नीचे जाकर, कमरेमें पहुँचनेके पहले जब उसने सुना कि योगेन्द्र किसीसे बात कर रहा है, तो उसकी छाती काँप उठी। सहसा ऐसा मालूम हुआ कि रमेश आया है। इतने सवेरे और कौन आयेगा? काँपते हुए पैरोंसे कमरेमें दाखिल होते ही देखा कि अक्षय है, और तब वह अपनेको सम्हाल न सकी, उसी वक्त तेजीसे बाहर निकल आई।

दूसरी बार, अन्नदा बाबू अपने साथ जब उसे कमरेमें लाये तब वह पिताकी कुरसीके पास सटकर, सिर नीचा किये चाय तैयार करके देने लगी।

योगेन्द्र हेमनलिनीके बरतावसे भीतर-ही-भीतर सख्त नाराज था। हेम रमेशके लिए इस तरह शोक करे, यह बात उसे बरदाश्त नहीं हो रही थी। इसपर, जब देखा कि उसके पिता भी हेमके इस शोकमें साथ दे रहे हैं और हेम भी मानो घरके और-सबोंसे पिताकी स्नेहकी छायामें अपने बचावकी कोशिश कर रही है, तब उसका अधैर्य और-भी बढ़ उठा। योगेन्द्र भीतर-ही-भीतर घुमड़ने लगा, 'तो हम सभी अन्यायी हैं, दोषी हैं। हम जो स्नेहकी खातिर कर्तव्य पालनकी जी-जानसे कोशिश कर रहे हैं, कठोर होनेपर भी हितके लिए सब-कुछ करनेको तैयार हैं, उसके लिए कृतज्ञता तो दूर रही, उलटे मन-ही-मन दोषी ठहराये जा रहे हैं! पिताजीको तो दुनियाका कुछ होश नहीं कि कहाँ क्या हो रहा है। वे नहीं जानते कि यह सान्त्वना देनेका समय नहीं, बल्कि चोट पहुँचानेका समय है। सो न करके, वे लगातार अप्रिय सत्यको उससे

दूर-ही-दूर रख रहे हैं।' आखिर उसने अपने पिताको सम्बोधित करके कहा—"मालूम है बापूजी, क्या हुआ है ?"

अन्नदा बाबू त्रस्त हो उठे, बोले—"नहीं तो, क्या हुआ ?"

योगेन्द्र—"रमेश कल अपनी स्त्रीको लेकर ग्वालन्द-मेलसे देश जा रहा था ; अक्षयको उस गाड़ीमें जाते देख वह देश न जाकर कलकत्ता भाग आया है !"

हेमनलिनीका हाथ काँप उठा, चाय ढालतेमें चायका पानी नीचे गिर गया। वह कुरसीपर बैठ गई। और, योगेन्द्र उसके मुँहकी तरफ एक बार कड़ी निगाहसे देखकर कहने लगा—"भागनेकी क्या जरूरत थी, मेरी तो कुछ समझ ही में नहीं आता ! अक्षयको पहलेसे ही सब-कुछ मालूम हो गया था। एक तो उसका पहलेका व्यवहार ही काफी बुरा है, उसपर यह कायरता ! इस तरह चोरकी तरह बराबर भागते फिरना मुझे इतना गर्हित मालूम होता है कि जिसका ठीक नहीं। मालूम नहीं, हेम क्या समझ रही है ; पर इस तरह भागना ही उसके अपराधका सबसे बड़ा सबूत है, इसमें मुझे जरा भी सन्देह नहीं।"

हेमनलिनी काँपती हुई कुरसीसे उठ खड़ी हुई ; बोली—"भाई साहब, मेरी दृष्टिमें सबूतकी कोई भी कदर नहीं। तुमलोग उनका इन्साफ करना चाहो, करो ; पर मैं उनकी विचारक नहीं बन सकती।"

योगेन्द्र—"तुम्हारे साथ जिसका ब्याह हो रहा है, उससे क्या हमारा कोई भी सम्बन्ध नहीं ?"

हेमनलिनी—"ब्याहकी बात कौन कह रहा है ? तुमलोग सम्बन्ध तोड़ना चाहो, तोड़ दो ; तुमलोगोंकी इच्छा। पर मेरा मन पलटनेकी व्यर्थ कोशिश करते हो !"—कहते-कहते उसका गला रूँध आया, वह रोने लगी। अन्नदा बाबूने जल्दीसे उठकर उसे छातीसे लगा लिया ; बोले—"चलो, हेम, हमलोग ऊपर चलें।"

२३

जहाज छूट गया। पहले और दूसरे दरजेके कमरोंमें कोई भी नहीं था। रमेशने एक कमरा पसन्द करके उसमें अपना बिस्तर जमा दिया। कमला दूध पीकर उस कमरेकी खिड़की खोलकर नदी और नदीका किनारा देखने लगी।

रमेशने कहा—"तुम्हें मालूम है कमला, हमलोग कहाँ जा रहे हैं ?"

कमलाने कहा—"देश जा रहे हैं।"

रमेश—"देश तो तुम्हें अच्छा नहीं लगता, इसलिए देश नहीं जायँगे।"

कमला—"मेरे लिए तुम देश नहीं जा रहे हो ?"

रमेश—"हाँ, तुम्हारे ही लिए।"

कमलाका चेहरा उदास हो गया, बोली—क्यों, तुमने ऐसा किया ? मैंने किसी दिन बातों-हो-बातोंमें क्या कह दिया, उसका तुम इतना खयाल करते हो ? तुम जरा-सेमें नाराज क्यों हो जाते हो ?"

रमेश हँसता हुआ बोला—"मैं जरा भी नाराज नहीं हुआ। देश जानेको मेरी भी इच्छा नहीं थी।"

कमलाने उत्सुक होकर पूछा—"तो, हमलोग अब कहाँ जा रहे हैं ?"

रमेश—"पश्चिमकी तरफ।"

'पश्चिमकी तरफ' सुनकर कमलाकी आँखें चमक उठीं। जिसने जिन्दगी भर घरमें रहकर दिन काटे हैं, उसके लिए 'पश्चिम' कितना व्यापक है! पश्चिममें तीर्थ हैं, स्वास्थ्य है, नये-नये शहर हैं, नये-नये दृश्य हैं; कितने राजा महाराओंके प्राचीन निदर्शन हैं; कितने मन्दिर हैं, महल हैं, किले हैं, कोई ठीक है! कमलाने पुलकित होकर पूछा—"पश्चिममें कहाँ जा रहे हैं ?"

रमेशने कहा—"कोई ठीक नहीं। पटना, काशी, मुँगेर, गाजीपुर, दानापुर, कहीं भी जा सकते हैं।"

इन-सब कुछ जाने और कुछ बिन-जाने शहरोंके नाम सुनकर कमलाकी कल्पना और भी उत्तेजित हो उठी। वह तालियाँ बजाकर कह उठी—"तब तो बड़ा अच्छा लगेगा!"

रमेशने कहा—"अच्छा तो पीछे लगेगा, पहले यह तो तय करो कि खाने-पीनेका क्या इन्तजाम होगा ? तुम खलासियोंके हाथकी रसोई खा सकोगी ?"

कमलाने घृणासे मुँह बिगाड़कर कहा—"मइया री, सो मुझसे नहीं होगा।"

रमेश—"तो कैसे क्या होगा ?"

कमला—"क्यों, मैं खुद बना लूँगी।"

रमेश—"तुम्हें बनाना आता है ?"

कमल हँस उठी, बोली—"तुम मुझे क्या समझते हो मालूम नहीं ! रसोई बनाना नहीं आता तो क्या यों हो ! मैं क्या बच्ची हूँ ? ननसालमें मैं हो तो बराबर बनाती थी ।"

रमेश उसी वक्त अफसोस जाहिर करके कहने लगा—"ओ-हो, ठीक तो है, तुमसे मुझे इस बारेमें पूछना ही नहीं था । तो फिर अब रसोईका सामान जुटाना चाहिए, क्यों ?" इतना कहकर रमेश चला गया ; और तलाश करके लोहेकी सिगड़ी और कोयला वगैरह जरूरी चीजें ले आया । इतना ही नहीं, साथ-साथ काशी पहुंचानेका खर्च और तनखाका लालच देकर नौकरके रूपमें उमेश नामके एक कायस्थ लड़केको भी साथ लेता आया ।

रमेशने कहा—"कमला, आज क्या-क्या बनाओगी ? "

कमलाने कहा—"तुम्हारे पास है क्या जो क्या-क्या बनाऊँगी ! एक दाल है और चावल है, आज खिचड़ी बनेगी ।"

रमेश कमलाके कहे मुताबिक खलासियोंसे नमक-मिर्च-हल्दी वगैरह ले आया । रमेशकी अनभिज्ञतापर कमला हँस दी, बोली—"इन्हें लेकर क्या करूँगी ? सिल-लोढ़ाके बिना बटूँगी कैसे ? तुम भी खूब हो !"

बालिकाकी इस अवज्ञाका बोझ लिये रमेश सिल-लोढ़ाकी खोजमें दौड़ा । सिल-लोढ़ा न पाकर बेचारा खलासियोंसे लोहेका हमामदस्ता माँग लाया । हमामदस्तेमें मसाला कूटनेकी कमलाको आदत नहीं थी, फिर भी उसीसे काम चलनेको तैयार हो गई । रमेशने कहा—"मसाले और-किसीसे कुटवाये लाता हूँ, तुम रहने दो ।" कमलाको यह बात पसन्द नहीं आई । उसने खुद ही उत्साहके साथ काम करना शुरू कर दिया । इस अनभ्यस्त प्रणालीकी असुविधासे उसे हँसी आने लगी । मसाला उछल-उछलकर इधर-उधर पड़ने लगा तो उसकी हँसीका फव्वारा छूट निकला । देख-देखकर रमेश भी हँसने लगा । इस तरह मसाला कूटनेका अध्याय समाप्त करके कमलाने कमरसे आँचल लपेटकर एक कोनेमें सिगड़ी सुलगाकर खिचड़ी चढ़ा दी । रमेश कलकत्तासे एक मिट्टीकी हँड़ियामें 'सन्देश' लाया था, उसी हँड़ियासे काम चल गया । खिचड़ी चढ़ाकर

कमलाने रमेशसे कहा—"तुम जाओ, जल्दीसे नहा-धो आओ, तब तक खिचड़ी तैयार हो जायगी।"

रसोई तैयार हो गई ; और रमेश भी नहा-धो आया। अब सवाल उठा, थाली कहाँ है, खायेंगे किसमें ?

रमेशने डरते हुए कहा—"खलासियोंसे कोई बरतन ले आऊँ ?"

कमलाने कहा—"छिः।"

रमेशने मुलायम स्वरमें जताया कि ऐसा अनाचार उससे पहले भी हो चुका है। कमलाने कहा—"पहले जो हो चुका सो चुका, अब आगे नहीं कर पाओगे ; मुझसे नहीं सहा जायगा।" इतना कहकर उसने 'सन्देश'की हँड़ियापर जो मिट्टीका ढकना ढका था उसे अच्छी तरह धोकर साफ कर लिया ; और कहा—"आज-भर तुम इसीमें खा लो, पीछे देखा जायगा।"

रमेश चुपचाप खाने बैठ गया ; और पहला कौर मुँहमें देते ही बोल उठा—"वाह, खिचड़ी तो कमालकी बनी है !"

कमलाने लज्जित होकर कहा—"चलो रहने दो, मजाक न उड़ाओ।"

रमेशने कहा—"मजाक नहीं, इसका सबूत तुम्हें अभी मिला जाता है।" कहते हुए उसने तुरत सरवा साफ कर दिया। अबकी बार कमलाने बहुत ज्यादा खिचड़ी परोस दी। रमेशने हाथ हिलाते हुए कहा—"क्या कर रही हो ! अपने लिए भी कुछ रखोगी या नहीं ?"

"बहुत है, उसका सोच तुम मत करो।"

रमेशने जो खूब तबीयतके साथ खा-पी लिया, इससे कमलाको बहुत खुशी हुई।

रमेशने कहा—"तुम काहेमें खाओगी ?"

कमलाने कहा—"क्यों, सरवा है तो सही।"

रमेश अस्थिर हो उठा। बोला—"नहीं, सो नहीं हो सकता।"

कमला आश्चर्यके साथ बोली—"क्यों, क्या बात है ?"

रमेशने कहा—"नहीं-नहीं, ऐसा भी कहीं होता है !"

कमलाने कहा—"ऐसा ही होता है ; मैं अभी सब ठीक किये लेती हूँ।"

और उमेशसे बोली—"उमेश, तू काहेमें खायेगा ?" उमेशने कहा—"नीचे एक हलवाईकी दूकान है, उससे मैं एक पत्तल माँगे लाता हूँ।"

रमेशने कहा—"तुम्हें अगर इस सरवेमें ही खाना है, तो लाओ, मैं इसे अच्छी तरह धोये लाता हूं।"

कमलाने संक्षेपमें जवाब दिया—"दिमाग तो नहीं फिर गया !" और, दूसरे ही क्षण कह उठी—"पर पान तो नहीं लगा सकी, तुमने मँगाकर दिये ही नहीं।" रमेशने कहा—"नीचे पानवाला है।"

इस तरह बड़ी आसानीसे घर-गृहस्थी शुरू हो गई। रमेश मन-ही-मन उद्विग्न हो उठा ; सोचने लगा, 'दाम्पत्यके भावका कैसे बचाव किया जाय ?'

गृहिणीका पद लेनेके लिए कमलाको बाहरकी किसी सहायता या शिक्षाकी जरूरत ही नहीं पड़ी। जब तक वह अपनी ननसालमें थी, बराबर वह रसोई बनाती रही है, बाल-बच्चोंकी देख-भाल और घरका सारा काम करती रही है। उसकी निपुणता, तत्परता और काममें आनन्द देखकर रमेशको बड़ी-भारी खुशी हुई ; किन्तु साथ ही यह बात भी उसके काँटेकी तरह चुभने लगी कि भविष्य में इसके साथ कैसे निभाया जाय ? सोचने लगा, कैसे इसे पास रखते हुए भी दूर बनाये रखूँ ? दोनोंके बीच सीमाकी रेखा कहाँ खींची जाय ? दोनोंके बीच अगर हेमनलिनी मौजूद होती तो सब-कुछ सुन्दर हो उठता। किन्तु, उसकी आशा अगर बिलकुल छोड़ ही देनी पड़े, तो अकेली कमलाको लेकर सारी समस्याओंका कैसे हल हो सकता है, तय करना बड़ा मुश्किल काम है। अन्तमें, रमेशने तय किया कि असल बात कमलासे कह ही देना चाहिए, अब छिपाया नहीं जा सकता।

२४

सवेरेके वक्त, ज्यादा दिन नहीं चढ़ा था कि इतनेमें जहाज रेतीमें फँस गया। उस दिन काफी कोशिश करनेपर भी जहाज नहीं निकल सका। ऊँचे कगारेके नीचेसे जलचर पक्षियोंके पदचिह्नोंसे अंकित बालूका एक स्तर कुछ दूर तक फैलकर नदीमें आ मिला है। शामको वहाँ ग्राम-वधुएँ घड़े ले-लेकर पानी भरने आई थीं। उनमेंसे कोई-कोई प्रगल्भा बिना घूँघटके और कोई-कोई भयभीता घूँघटकी

ओटमेंसे जहाजको तरफ देख-देखकर अपना कुतूहल मिटा रही थीं। और गाँवके लड़के ऊँची नाकवाले घमण्डी जहाजकी इस दयनीय हालतपर किनारे खड़े-खड़े तरह-तरहकी व्यंगोक्ति करते हुए शोर मचा रहे थे।

उस पारके जनशून्य चरमें सूर्य अस्त हो गया। रमेश जहाजकी रेलिंगके सहारे चुपचाप खड़ा हुआ संध्याकी आभासे चमकते हुए पश्चिम-दिगन्तकी ओर देख रहा था। कमला दरमासे घिरी-हुई रसोईकी जगहसे निकलकर कमरेके दरवाजेके पास खड़ी हो गई। रमेश जल्दी पीछेको मुड़कर देखेगा ऐसी कोई सम्भावना न देखकर उसने धीरेसे जरा खखारा ; पर उससे भी कोई फल नहीं हुआ। अन्तमें चाभीके गुच्छेसे वह दरवाजा खटखटाने लगी। जब जोरकी आवाज होने लगी तब रमेशने पीछेकी ओर मुड़कर देखा। कमलाको देखकर उसके पास आकर बोला—"यह तुम्हारा बुलानेका क्या ढंग है ?"

कमलाने कहा—"तो, कैसे बुलाया करूँ ?"

रमेशने कहा—"क्यों, मा-बापने मेरा नामकरण किस लिए किया था अगर वह काममें ही न आये ? जरूरत पड़नेपर मुझे रमेश-बाबू कहके बुलानेमें हर्ज क्या है ?"

फिर वही मजाक ! कमलाके कपोल और कानकी लोलकियोंपर संध्याकी आभाके साथ-साथ और भी थोड़ी रक्तिम आभा आ मिली ; उसने गरदन टेढ़ी करके कहा—"तुम कैसी बातें करते हो जिसका ठीक नहीं ! सुनो, रसोई बन गई ; जरा जल्दी खा लो तो अच्छा है। सवेरे तुम्हारा पेट नहीं भरा था।"

नदीकी हवामें रमेशको भूख मालूम हो रही थी। पर, सामानकी कमीसे कमला कहीं चंचल न हो उठे इसलिए उसने कुछ भी कहा नहीं था। इतनेमें बिन-माँगे भोजन मिलनेकी खबरसे उसका मन एक तरहकी सुखानुभूतिसे नाच उठा ; और उसमें एक विचित्रता थी। उसका यह सुख सिर्फ भूख मिटानेकी आसन्न सम्भावनाका सुख हो सो बात नहीं, किन्तु उसे जब कि कुछ मालूम ही नहीं तब भी उसके लिए जो किसीमें चिन्ता जाग रही है और कोशिश चालू है, उसके आराम और सुख-सुविधाके लिए स्वतः ही जो किसीकी तरफसे आयोजन चल रहा है, अपने हृदयमें उसके गौरवकी अनुभूति किये बिना उससे नहीं रहा

गया। और यह सच है कि इस आराम और सुख-सुविधाका वह अधिकारी नहीं, इतनी बड़ी सेवा केवल भ्रमपर ही प्रतिष्ठित है ; इस चिन्ताके निष्ठुर आघातकी भी वह उपेक्षा न कर सका। आखिर एक गहरी साँस लेकर सिर झुकाये हुए वह कमरेके भीतर चला गया।

कमला उसके चेहरेका भाव देखकर आश्चर्यमें पड़ गई, बोली—"तुम्हारी खानेको तबीयत नहीं है क्या? भूख नहीं लगी? मैंने तुम्हें जबरदस्ती खानेको थोड़े ही कहा है?"

रमेशने तुरत प्रसन्नताका भाव दिखाते हुए कहा—"तुम्हें जबरदस्ती करने की क्या जरूरत है, मेरे पेटमें ही काफी जबरदस्ती चल रही है। चाभीका गुच्छा खटखटाकर बुला तो लिया, अब लाकर कुछ दोगी भी?" और फिर चारों तरफ देखकर बोला—"कहाँ है, कुछ भी तो नहीं देख रहा? भूख खूब जोरकी लगी है, पर ये चीज-वस्त तो मुझसे हजम नहीं होंगी!" कहते हुए उसने बिस्तर आदिकी तरफ उंगलीसे इशारा किया।

कमला खिलखिलाकर हँस पड़ी। हँसीका वेग रुकनेपर बोली—"अब सबर नहीं हो रहा है क्यों? जब आकाशकी तरफ देख रहे थे तब भूख-प्यास कहाँ थी? ज्यों ही मैंने बुलाया, तुरत याद उठ आई जोरकी भूख लगी है! अच्छा, तुम एक मिनट बैठो, मैं अभी लिये आती हूं।"

रमेशने कहा—"लेकिन देर मत लगाना, नहीं तो यहाँ बिछौना-इछौना सब-कुछ हड़प कर जाऊँगा, फिर मेरा दोष न देना!"

मजाककी इस पुनरुक्तिसे कमलाको कम आनन्द नहीं हुआ। उसे फिर जोरकी हँसी आ गई। सरल हास्योच्छ्वाससे कमरेको मधुमय करती हुई वह जल्दीसे भोजन लाने चल दी। रमेशकी सूखी प्रसन्नताकी बनवटी दीप्ति क्षणमें कालिमामें परिणत हो गई।

थोड़ी देर बाद पत्तलसे ढकी हुई एक टोकनी लेकर कमला आ पहुँची, और उसे बिस्तरपर रखकर रमेशको बिठानेके लिए आँचलसे जमीन साफ करने लगी। रमेशने कहा—"यह क्या कर रही हो?" कमलाने कहा—"अभी तुरत कपड़े बदलूँगी।" यह कहते हुए उसने पत्तलमें उसे पूड़ी और साग-

तरकारी परोस दो। रमेशने कहा—"बड़े ताज्जुबकी बात है। पूड़ी-साग बनाया कैसे ?"

कमलाने भेद न खोलकर गम्भीर मुँह बनाकर कहा—"अच्छा तुम बताओ तो समझूं ?" रमेश ऐसा भाव दिखाकर कि वह खूब गहराईके साथ सोच रहा है, बोला—"जरूर तुमने खलासिओंके यहाँसे—"

कमला यकायक उत्तेजित हो उठी, बोली—"हरगिज नहीं।"

रमेश खाते-खाते पूड़ी-सागके प्राप्ति-स्थानके विषयमें तरह-तरहकी असम्भव कल्पनाओंका जिक्र कर-करके कमलाको परेशान करने लगा। अन्तमें जब उसने कहा कि 'अलिफ-लैला'के किस्सेमें जैसे अलादीनने बलूचिस्तानसे गरम-गरम खाना बनाकर अपने जादू-जाननेवाले एलचीके हाथ सौगात भेजी थी, उसी तरहकी कोई बात होगी, तो कमला रूठ गई; बोली—"तो जाओ, मैं नहीं बताऊँगी।" रमेशने बहुत ही फुरती दिखाते हुए कहा—"नहीं नहीं, मैं हार माने लेता हूं। बीच-नदीमें पूड़ी-तरकारी कैसे बनकर तैयार हो गई, मेरे तो समझ ही में नहीं आता; पर खानेमें बड़ी अच्छी लग रही है।" इतना कहकर रमेश तथ्य-निर्णयकी अपेक्षा भूख मिटानेके महत्त्वको जोरोंसे प्रमाणित करने लगा।

जहाज चरमें फँस जानेके बाद कमलाने उमेशको गाँवमें भेज दिया था। कमला जब स्कूलमें थी तब रमेशने उसे हाथ-खर्चके लिए कुछ रुपये दिये थे, उसमेंसे कमलाने कुछ बचा रखे थे; उसीसे आज उसने घी-आटा साग-तरकारी वगैरह मँगा लिया था। उमेश सामान लेकर आया तो कमलाने उससे पूछा—"उमेश, तू क्या खायेगा ?" उमेशने कहा—"बहूजी, एक बात कहूं, गाँवमें एक अहीरके घर बड़ा अच्छा दही देख आया हूं, केले हैं ही, दो-चार पैसेके चिउड़ा और चीनी ले आऊं तो आज खूब पेट-भरकर फलाहार कर डालूं ?" लालची बालकके इस उत्साहको देखकर कमला भी उत्साहित हो उठी; बोली—"पैसे कुछ बचे हैं क्या ?" उमेशने कहा—"नहीं तो।" कमला कुछ परेशानीमें पड़ गई। रमेशसे वह कैसे रुपये मांगे, सोचने लगी। थोड़ी देर बाद उमेशसे बोली—"तेरे भाग्यमें आज फलाहार न जुटा तो न सही, पूड़ी तो है ही, तू फिकर क्यों करता है ? चल, आटा मांड़।" उमेशने कहा—"लेकिन जीजी-बाई,

ऐसा बढ़िया दही था कि क्या कहूं !" कमलाने कहा—"देख उमेश, बाबू जब खाने बैठें न, तब तू दही-चीनीके लिए पैसे ले जाना । अभी जा !"

अब, जब रमेश थोड़ा-बहुत खाचुका तब उमेश आ खड़ा हुआ ; और सिर खुजाता हुआ संकोचके साथ बोला—"जोजो-बाई, दहीके लिए पैसे—"

रमेशने आँख उठाकर उसकी ओर देखा ; और तुरत उसे खयाल आया कि रसोई बनानेके लिए पैसोंको जरूरत पड़ती है, अलादीनके चिरागके भरोसे काम नहीं चलता । उसने कहा—"कमला, तुम्हारे पास रुपये तो कुछ हैं ही नहीं । मुझे याद क्यों नहीं दिलाई ?"

कमलाने चुपचाप कसूर मंजूर कर लिया । खा चुकनेके बाद रमेशने कमलाके हाथमें एक छोटा-सा केश-बक्स देते हुए कहा—"तुम्हारा धन-रत्न जो-कुछ है सो इसोमें है, सम्हालकर रख दो ।"

इस तरह गृहणीका सारा भार स्वतः ही कमलाके ऊपर जा पड़ा, रमेश इस बातको समझ गया ; और फिर वह एक बार जहाजकी रेलिंगके सहारे खड़ा होकर पश्चिम-आकाशकी ओर देखने लगा ।

उमेशने आज 'खूब पेट भरकर' चिउड़ा-दही-केले आदिका फलाहार किया । कमलाने उसके सामने खड़े होकर उसका सारा जोवन-वृतान्त विस्तारके साथ जान लिया । सौतेली माके द्वारा शासित घरमें उपेक्षित उमेश काशोमें अपनो नानीके पास भागा जा रहा है । उसने कहा—"जोजो-बाई, आप अगर मुझे अपने पास रखें तो मैं और कहीं नहीं जाऊंगा ।" मातृहोन बालककी करुण प्रार्थना सुनकर कमलाका हृदय भर आया । उसने बड़े स्नेहसे कहा—"हाँ हाँ, तू हमारे साथ चल ।"

२५

नदी-तटकी वृक्षश्रेणीने स्याहीको मोटी-लम्बी लकीर-सी खींचकर संध्या-वधूके सुनहले आँचलपर मानो काली पाड़-सी खींच दी है । दूर ग्रामन्तरमें दिन-भर चरकर जंगली बतखोंका झुण्ड आकाशमें म्लान होती-हुई सूर्यास्तकी दीप्तिमेंसे उस पारको रेतीके सुनसान जलाशयोंमें रात बितानेके लिए चला जा रहा है । कौओंका अपने घोंसलोंमें आनेका कलरव थम चुका है । नदीमें

तब कोई नाव नहीं थी ; केवल एकमात्र बड़ी डोंगी गाढ़े हरे-सुनहले रंगके निस्तरंग पानीपरसे अपनी कालिमा लिये-हुए चुपचाप बही जा रही थी।

रमेश जहाजकी छतपर आगेकी तरफ नवोदित शुक्लपक्षके तरुण चन्द्रमाकी चाँदनीमें बेंतकी आराम-कुरसीपर बैठा था। पश्चिम-आकाशसे संध्याकी शेष स्वर्णच्छाया बिला गई। चाँदनीके इन्द्रजालमें कठोर जगत मानो विगलित हो आया। रमेश अपने-आपमें ही मृदुस्वरमें कहने लगा, "हेम, हेम !" नामका यह शब्द अपने मधुर स्पर्शसे उसके सम्पूर्ण हृदयको बार-बार वेष्टित करता हुआ मानो उसके चारों तरफ प्रदक्षिणा करने लगा ; मानो वह शब्द असीम करुणा-रसमें भीगे हुए दो छायामय नेत्रके रूपमें उसके चेहरेपर अपनी वेदना फैलाता हुआ उसीकी तरफ देखने लगा। रमेशका सारा शरीर पुलकित हो उठा और दोनों आँखें आँसुओंसे भर आईं।

उसके पिछले दो सालोंके जीवनका सारा इतिहास उसके मनके सामने फैल गया। हेमनलिनीके साथ प्रथम परिचयका दिन उसे याद आ गया। उस दिनको रमेश तब अपने जीवनका एक खास दिन नहीं समझ सका था। योगेन्द्र जब उसे पहले-पहल अपने घर चायकी टेबिलपर ले गया था तब वहाँ हेमको बैठी देखकर संकोचशील रमेशने अपनेको बड़ी आफतमें फँसा समझा था। धीरे-धीरे लज्जा जाती रही, हेमनलिनीका साथ उसके लिए अभ्यस्त-सा हो गया ; और क्रमशः उस अभ्यासके बन्धनने रमेशको बन्दी कर लिया। काव्य-साहित्यमें रमेशने जो-जो प्रेमकी बातें पढ़ी थीं, सबका उसने हेमनलिनीपर प्रयोग करना शुरू कर दिया, अपने मनमें वह इस बातका अहङ्कार अनुभव करने लगा कि वह प्रेम करता है। उसके सहपाठी सब परीक्षामें उत्तीर्ण होनेके लिए प्रेमकी कविताके मानी याद करते-करते मर मिटते हैं, और वह सचमुचका प्रेम करता है, यह सोचकर अन्य छात्रोंको उसने तब कृपापात्र समझा था। किन्तु आज रमेशने उन बातोंकी याद करके देखा कि उस दिन भी वह प्रेमके बाहरी दरवाजेपर ही था। और अब, जब कि कमलाने आकर उसकी जीवन-समस्याको जटिल बना दिया, तब, नना विरुद्ध घात-प्रतिघातोंमें देखते-देखते हेमनलिनीके प्रति उसका प्रेम आकार धारण करके, जीवन ग्रहण करके जाग्रत हो उठा।

रमेश अपनी दोनों हथेलियोंपर सिर रखकर सोचने लगा, 'सामने सारा जीवन ही तो पड़ा हुआ है, उसका भूखा-प्यासा जीवन, दुश्छेद्य सङ्कट-जालमें जकड़ा हुआ जीवन। इस जालको क्या वह दोनों हाथोंसे जोरसे तोड़-ताड़कर अलग नहीं कर सकता ?' सोचते-सोचते अपने दृढ़ संकल्पके आवेगमें उसने सहसा मुँह उठाकर देखा, पास ही एक दूसरी बेंतकी कुरसीपर हाथ रखे कमला खड़ी है। वह चौंककर बोल उठी—"तुम सो गये थे, मैंने तुम्हें जगा दिया ?"

अनुतप्त कमलाको चली जाते देख रमेश चटसे कह उठा—"नहीं-नहीं, मैं सोया नहीं था ; तुम बैठो, कमला, तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ, सुनो।"

कहानीकी बात सुनकर कमला पुलकित हो उठी ; और कुरसी नजदीक खींचकर बैठ गई। रमेशने तय किया था कि कमलासे सब बातें खुलासा कह देना आवश्यक है। किन्तु इतनी बड़ी जबरदस्त चोट उसे वह नहीं पहुँचा सका ; इसीलिए बोला कि 'बैठो, तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ।' रमेश कहने लगा—"उस जमानेमें एक तरहके क्षत्रिय थे, उन लोगोंमें—"

कमलाने पूछा—"किस जमानेमें ? बहुत पुराने जमानेमें ?"

रमेश बोला—"हाँ, बहुत पुरानेमें। तब तुम्हारा जन्म भी नहीं हुआ था।"

कमला बोली—"तब तुम्हारा जन्म हो चुका था ! तुम क्या उस पुराने जमानेमें मौजूद थे ? हाँ, फिर ?"

रमेश कहने लगा—"उन क्षत्रियोंमें नियम था कि खुद ब्याह करने नहीं जाते थे, तलवार भेज दिया करते थे। उस तलवारके साथ कन्याका ब्याह कर दिया जाता था, और फिर, जब वह घर आ जाती थी तो फिर उससे ब्याह होता था।"

कमला—"नहीं-नहीं, ऐसा भी कहीं होता है !"

रमेश—"मैं भी ऐसे ब्याहको अच्छा नहीं समझता। लेकिन क्या किया जाय, जिन क्षत्रियोंकी बात कह रहा हूँ, वे खुद ससुराल जाकर ब्याह करनेमें अपना अपमान समझते थे। मैं जिस राजाकी बात कह रहा हूँ, वह ऐसा ही क्षत्रिय था। एक दिन उसने—"

कमला—"तुमने यह तो बताया ही नहीं कि वह कहाँका राजा था ?"

रमेशने कहा--"मद्रदेशका राजा था। एक दिन उस राजाने—"

कमला—"राजाका नाम क्या था?"

कमला सब बातें साफ-साफ जान लेना चाहती है, वह कुछ भी अस्पष्ट नहीं रखना चाहती। रमेशको पहलेसे मालूम होता तो वह और-भी ज्यादा तैयारी कर रखता; किन्तु अब जब देखा कि कमलाको कहानी सुननेका आग्रह तो काफी है, पर वह कहीं भी कुछ अस्पष्ट नहीं रहने देना चाहती, तो वह जरा-कुछ सोचमें पड़ गया; और बोला—"राजाका नाम था रणजीतसिंह।"

कमलाने दुहराया—"रणजीतसिंह, मद्रदेशका राजा। अच्छा, फिर?"

रमेश—"फिर, एक दिन राजाने भाटके मुँहसे सुना कि उसकी जातिका और-एक राजा है जिसकी कन्या बहुत ही सुन्दरी है।"

कमला—"कहाँका राजा था वो?"

रमेश—"समझ लो, काञ्चीका राजा था।"

कमला--"समझ क्यों लूँ! तो क्या वो काञ्चीका राजा नहीं था?"

रमेश--"काञ्चीका ही राजा था। तुम उसका नाम जानना चाहती हो? उसका नाम था अमरसिंह।"

कमला—"उस लड़कीका नाम तो बताया ही नहीं?"

रमेश--"हाँ हाँ, भूल गया। लड़कीका नाम, लड़कीका नाम, हाँ, उसका नाम था चन्द्रा।"

कमला--"बड़े ताज्जुबकी बात है, तुम ऐसे भूल जाते हो! तुम तो मेरा ही नाम भूल गये थे।"

रमेश--"कोशलके राजाने भाटके मुँहसे सुना कि--,'

कमला—"अब कोशलका राजा कहाँसे आ गया? तुमने तो कहा था मद्रदेशका राजा?"

रमेश—"वह क्या एक ही जगहका राजा था? कोशलका भी था और मद्रदेशका भी।"

कमला--"दोनों राज्य पास-ही-पास होंगे?"

रमेश--"दोनों राज्य बिलकुल सटे हुए थे।"

इस तरह बार-बार गलती करते हुए और सावधान कमलाके प्रश्नोंको सहायतासे उन गलतियोंका सुधार करते हुए रमेशने किसी तरह किस्सा जमा लिया :—"मद्रके राजा रणजीतसिंहने काञ्चीके राजाके पास दूतके मारफत प्रस्ताव भेजा कि वे उनकी कन्याके साथ ब्याह करना चाहते हैं। काञ्चीके राजा अमर सिंहने बड़ी खुशीसे उनके प्रस्तावको मान लिया। तब फिर रणजीतसिंहके छोटे भाई इन्द्रजीतसिंह सेना लेकर झण्डा फहराते हुए गाजे-बाजेके साथ काञ्चीकी राजधानीमें पहुँचे; और वहाँ तम्बू गाड़ दिये। काञ्चीनगरमें उत्सवकी धूम मच गई। राजाके ज्योतिषियोंने शुभ-मुहूरत निकालकर ब्याहका दिन तय कर दिया। कृष्णा द्वादशीकी रातको ढाई बजे लग्नका समय था। रातको नगरके घर-घरमें फूलोंकी मालाएँ लटकाई गईं और रोशनी की गई। रातको राजकुमारी चन्द्रका ब्याह होगा।

"किन्तु चन्द्राको यह नहीं मालूम हुआ कि किसके साथ उसका ब्याह होगा। उसके जन्मके समय परमहंस परमानन्द स्वामीने राजासे कहा था कि 'तुम्हारी कन्यापर अशुभ ग्रहकी दृष्टि है, विवाहके समय इस कन्याको वरका नाम नहीं मालूम होना चाहिए।' इसके बाद, यथासमय तलवारके साथ राजकुमारीका ब्याह हो गया। इन्द्रजीतसिंहने बहुमूल्य भेंट नजर करते हुए अपनी भौजाईको प्रणाम किया। मद्रराज्यमें रणजीत और इन्द्रजीत दोनों भाई ऐसे थे जैसे राम और लक्ष्मण। इन्द्रजीतने आर्या चन्द्राके घूंघटसे ढके सलज्ज चेहरेकी तरफ नहीं देखा; सिर्फ उनके नूपुर-वेष्टित सुकुमार चरणोंकी मेहदीकी रेखामात्र देखी थी। हाँ तो, फिर ब्याहके दूसरे ही दिन मोतियोंकी झालरसे सुशोभित पलंगपर बिठाकर बहूको लेकर इन्द्रजीत अपने देशकी तरफ रवाना हुए। अशुभ ग्रहकी बात याद करके काञ्चीके राजाने शंकित हृदयसे अपनी कन्याके मस्तकपर दाहना हाथ रखकर आशीर्वाद दिया; और माताने कन्याका मुँह चूमकर आँसू बहाये। देव-मन्दिरोंमें हजारों ब्राह्मणोंने स्वस्त्ययन करना शुरू कर दिया।

"काञ्चीसे मद्र बहुत दूर था, करीब एक महीनेका रास्ता समझो। दूसरी रातको वेतसा नदीके किनारे पड़ाव पड़ा। इन्द्रजीत अपनी सारी सेनाके साथ जब कि आराम करनेकी तैयारी कर रहे थे तब अचानक देखा गया कि जंगलमें

मशालें जल रही हैं ! इन्द्रजीतने पता लगानेके लिए तुरत सेना भेज दी। सैनिकोंने आकर कहा कि 'वह भी एक बारात है ; और वे भी अन्नदाताकी जातिके क्षत्रिय हैं। रास्तेमें तरह-तरहके विघ्नोंकी सम्भावना है, इसलिए अन्नदातासे यह प्रार्थना है कि कुछ दूर तक उन्हें अपनी शरणमें रखें।' कुमार इन्द्रजीतने कहा कि 'शरणार्थीको शरण देना हमारा धर्म है। जतनके साथ उन्हें यहाँ ले आओ।' इस तरह दोनों बारातें एक जगह हो गईं।

"तीसरी रातको अमावस थी। सामने छोटे-छोटे पहाड़ थे ; और पीछे घोर जंगल। थकी हुई सेना झींगुरोंकी झनकार और पासके झरनेकी आवाज सुनते-सुनते गहरी नींदमें सो गई।

"इतनेमें अचानक शोर मचा ; और सब जग गये। देखा कि मद्र-राजके घोड़े उन्मत्त होकर इधरसे उधर दौड़ रहे हैं। मालूम नहीं किसने उनकी रस्सियाँ काट दी हैं ; और, तम्बुओंमें आग लगा दी है, जिसके उजालेसे अमावसकी रात लाल हो उठी है। सब समझ गये कि डाकुओंका काम है। तुरत लड़ाई छिड़ गई, चारों तरफ मार-काट शुरू हो गई। अँधेरेमें शत्रु-मित्र पहचानना मुश्किल हो गया। डाकुओंने खूब लूटा-लाटा ; और थोड़ी देरमें सब पहाड़-जंगलमें छिप गये।

"लड़ाई खतम होनेके बाद देखा गया कि राजकुमारी गायब हैं ! डरके मारे वे तम्बूमेंसे निकल पड़ी थीं, और भागते-हुए कुछ लोगोंको अपने पक्षका समझकर उन्हींके साथ हो ली थीं। असलमें वे थे दूसरी बारातके लोग। उनकी बहूको डाकू लोग उठा ले गये थे। पर उन्होंने राजकुमारीको ही अपनी बहू समझा ; और उन्हें वे अपने साथ ले गये। वे गरीब क्षत्रिय थे। कलिङ्गमें समुद्रके किनारे रहते थे। वहाँ दूसरे वरसे राजकुमारीका मिलन हुआ। वरका नाम था चेतसिंह।

"चेतसिंहकी माने आकर बहूका वरण किया। आत्मीय-स्वजनोंने आकर कहा, 'अहा, बहू तो बहुत ही सुन्दर है !' मुग्ध चेतसिंह नववधूको कल्याणलक्ष्मी समझकर मन-ही-मन उसकी पूजा करने लगा। राजकन्या भी सती-धर्मकी मर्यादा समझती थी, उसने चेतसिंहको अपना पति जानकर उन्हींके चरणोंमें

अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया। राजकुमारीकी लज्जा दूर होनेमें कुछ समय लगा। जब लज्जा दूर हुई तब चेतसिंहको पता चला कि जिसे वह अपनी बहू समझकर घर लाया है वह राजकुमारी चन्द्रा है।"

२६

कमलाने अत्यन्त आग्रहके साथ पूछा—"फिर ?"

रमेशने कहा—"बस इतना ही मुझे मालूम है, फिर क्या हुआ सो नहीं मालूम। अच्छा तुम ही बताओ, फिर क्या हुआ होगा ?"

कमला—"नहीं-नहीं, सो नहीं होनेका, फिर क्या हुआ सो बताओ ?"

रमेश—"सच कहता हूं, जिस किताबमें मैंने यह कहानी पढ़ी थी, वह अभी तक पूरी नहीं छपी है ; आखिरके अध्याय कब निकलेंगे, पता नहीं।"

कमला बहुत ही नाराज हुई, बोली—"जाओ, तुम बड़े वैसे हो ! अधूरी कहानी सुनाकर अब कहते हो कि मालूम नहीं। सब तुम्हारी चालाकी है !"

रमेश—"अरे तो मुझसे नाराज क्यों होती हो; जिसने किताब लिखी है उसपर नाराज होओ। तुमसे मैं सिर्फ एक बात पूछता हूं, चन्द्राको लेकर चेतसिंह अब क्या करेगा ?"

सुनकर कमला नदीके किनारेकी ओर देखती हुई न-जाने क्या क्या सोचने लगी। बहुत देर बाद बोली—"मुझे नहीं मालूम वह क्या करेगा। मेरी कुछ समझमें ही नहीं आता !"

रमेश कुछ देर चुप रहकर बोला—"चेतसिंह क्या चन्द्रासे सब बात कह देगा ?"

कमलाने कहा—"तुम भी खूब हो ! कहेगा नहीं तो क्या सब गड़बड़ीमें डाल देगा ? ऐसा करना तो बहुत बुरी बात है। सब बातोंका खुलासा तो होना ही चाहिए।"

रमेश यन्त्रकी तरह बोल उठा—"हां, खुलासा तो होना ही चाहिए।" और फिर कुछ देर चुप रहकर बोला—"अच्छा कमल, अगर—"

कमला—"अगर क्या ?"

रमेश —"मान लो, मैं अगर चेतसिंह होऊं, और तुम चन्द्रा होओ—"

कमला कह उठी—"तुम ऐसी बात मुझसे न कहो। सच कहती हूं, मुझे अच्छा नहीं लगता।"

रमेश—"नहीं, तुम्हें बताना ही होगा। ऐसा होता तो मुझे क्या करना चाहिए था, और तुम क्या करतीं?"

कमला इस बातका कुछ जवाब न देकर जल्दीसे कुरसी छोड़कर चली गई। देखा कि उमेश उसके कमरेके बाहर चुपचाप बैठा हुआ नदीकी तरफ देख रहा है। कमलाने पूछा—"उमेश, तूने कभी भूत देखा है?"

उमेशने कहा—"देखा है जीजी-बाई!"

सुनकर कमला एक मोढ़ा खींचकर उसके पास बैठ गई। बोली—"कैसा भूत देखा है बता?"

कमला नाराज होकर उठके चली गई तो रमेशने उसे फिर नहीं बुलाया। चन्द्रमा उसकी आँखोंके सामने घने जंगलके पीछे छिप गया। डेककी बत्तियाँ बुताकर सारेन और खलासी लोग तब नीचे चले गये थे, और खा-पीकर सोनेकी तैयारी कर रहे थे। पहले-दूसरे दरजेमें और-कोई यात्री नहीं था। तीसरे दरजेके अधिकांश यात्री रसोईकी व्यवस्था करने जहाजसे उतरकर किनारे चले गये थे। नदीके किनारे अन्धकाराच्छन्न पेड़ोंकी सँधमेंसे पासके बाजारकी बत्तियाँ चमक रही थीं। भरी-हुई नदीकी तेज धारा लंगरकी सांकलोंको हिला रही थीं; और नदीकी फूली हुई नाड़ीके कम्पनसे जहाज रह-रहकर काँप रहा था। इस अस्पष्ट विपुलता, अन्धकारकी निविड़ता और अपरिचित दृश्यकी विशाल अपूर्वतामें गरक होकर रमेश अपने कर्तव्यकी समस्याको हल करनेकी कोशिश कर रहा था। रमेश समझ गया कि हेमनलिनी या कमला दोनोंमेंसे एकको उसे छोड़ना ही पड़ेगा। दोनोंकी रक्षा करते-हुए किसी मध्य-मार्गसे चलना अब सम्भव नहीं। एक हिसाबसे देखा जाय तो हेमनलिनीके लिए फिर भी आश्रय है; हालां कि अभी तक हेमनलिनी उसे भूल नहीं सकी है, फिर भी वह और-किसीसे ब्याह कर सकती है; लेकिन कमलाको छोड़ देनेसे इस जीवनमें उसके लिए और कोई भी आश्रय नहीं।

मनुष्यकी स्वर्थपरताका कोई अन्त नहीं। हेमनलिनीके लिए रमेशको भूलनेकी सम्भावना है, उसके लिए दूसरा आश्रय है, और ऐसा भी नहीं कि वह एकमात्र रमेशपर ही निर्भर हो, यह सब सोचते हुए भी रमेशको कोई सान्त्वना नहीं मिली, बल्कि उसके आग्रहकी अधीरता दूनी बढ़ गई। उसे ऐसा मालूम हुआ मानो हेमनलिनी उसके हाथसे छूटकर हमेशाके लिए उसके अधिकारके बाहर चली जा रही हो, अब भी वह अगर हाथ बढ़ावे तो वह पकड़ाई दे सकती है। दोनों हथेलियोंपर सिर रखकर वह सोचने लगा। दूर जंगलमें सियार बोल उठे, गाँवके दो-एक असहिष्णु कुत्ते भौंक-भौंककर उनका विरोध करने लगे। रमेशने मुँह उठाया ; और देखा कि कमला सुनसान अन्धकारमें डेककी रेलिंगके सहारे चुपचाप खड़ी है। रमेश कुरसी छोड़कर उठा ; और उसके पास जाकर बोला—"कमल, तुम अभी तक सोई नहीं! काफी रात हो चुकी है।"

कमलाने कहा—"तुम सोने नहीं चलोगे?"

रमेशने कहा—"बस अब मैं भी सोता हूँ। बगलके कमरेमें मेरे बिस्तर हो चुके हैं। तुम अब देर न करो, सोओ जाकर।"

कमला और-कुछ न कहकर अपने कमरेमें चली गई। रमेशसे वह इतना भी न कह सकी कि अभी-अभी उसने भूतका किस्सा सुना है ; और सुनसान अलग कमरेमें अकेली वह कैसे सोयेगी। इच्छाके विरुद्ध कमलाको बहुत धीरे-धीरे जाते देख रमेशके हृदयको गहरी चोट पहुँची, उसने कहा—"डरनेकी कोई बात नहीं कमल, बगलके कमरेमें तो मैं हूं ही, और बीचका दरवाजा खुला रहेगा ही।"

कमलाने अभिमानसे सिर ऊँचा करते हुए कहा—"मैं डरती थोड़े ही हूँ।"

रमेश अपने कमरेमें जाकर बत्ती बुझाके सो गया। मन-ही-मन बोला, 'कमलाको छोड़नेका कोई रास्ता ही नहीं, लिहाजा हेमनलिनीसे विदा! आज यही तय हुआ, अब दुबिधा करनेसे काम नहीं चलेगा।' किन्तु 'हेमनलिनीसे विदा' उसके जीवनकी कितनी बड़ी विदा है इस बातको वह अँधेरेमें पड़ा-पड़ा खूब गहराईके साथ महसूस करने लगा। फिर उससे बिस्तरपर पड़ा नहीं रहा

गया ; उठके बाहर चल दिया। निशीथके अन्धकारमें एक बार उसने अनुभव किया कि उसीकी लज्जा, उसीकी वेदना अनन्त देश और अनन्त कालको घेरे हुए नहीं है। चिरकालका ज्योतिर्लोक भी सारे आकाशको घेरे हुए स्तब्ध है, रमेशका क्षुद्र इतिहास उसे छू भी नहीं सका है। क्वारकी यह नदी जनहीन रेतीपरसे इसी तरह अनन्तकाल तक नक्षत्रालोकित रजनीमें सोते-हुए गाँवोंके पाससे बहती ही रहेगी, जब कि रमेशके सम्पूर्ण जीवनके समस्त धिक्कार चिरधैर्यमयी धरणीपर श्मशानकी मुट्ठी-भर भस्ममें हमेशाके लिए सो जायँगे।

२७

दूसरे दिन कमलाकी जब आँख खुली तब पौ फट चुकी थी। चारों तरफ देखा तो कमरेमें कोई नहीं था। फिर खयाल आया कि वह जहाजमें है। धीरेसे उठकर उसने जरा-सा दरवाजा खोलकर बाहर देखा, नदीके निस्तब्ध पानी पर सूक्ष्म शुभ्र कुहरा छाया हुआ है, अँधेरा ललाई-लिये पीला होता जा रहा है, और सामने पूरबकी तरफ पेड़ोंकी कतारके पीछे आकाशमें सुनहली छटा खिलने लगी है। देखते-देखते नदीकी पाण्डुर-नीली धारा मछली-मार डोंगियोंके सफेद पालोंसे पट गई।

कमला बहुत सोचती है, पर यह बात किसी भी तरह उसकी समझमें नहीं आ रही कि क्यों उसके मनमें गूढ़ वेदना-सी उठ रही है, क्यों रह-रहकर भीतरसे एक हूक-सी उठती है ? शरदऋतुकी शिशिरका दुपट्टा ओढ़े जो ऊषा उसके सामने अपना रहस्य उद्घाटित कर रही है उससे उसके भीतरका आनन्द क्यों नहीं उद्घाटित हो रहा ? आँसुओंका आवेग बालिकाकी छातीके भीतरसे निकलकर आँखोंमें आनेके लिए इस तरह व्याकुल क्यों हो रहा है ? उसके ससुर नहीं, सासु नहीं, कोई साथिन नहीं, स्वजन-परिजन कोई भी नहीं ; और ये बातें कल तक उसके मनमें नहीं आई थीं, आज क्या हो गया जो याद आ रही हैं ? आज क्यों वह सोच रही है कि अकेला रमेश ही उसका निर्भरस्थल नहीं है ? आज क्यों उसे ऐसा लग रहा है कि यह विश्व-संसार अत्यन्त विशाल है और वह अत्यन्त क्षुद्र ?

कमला बहुत देर तक दरवाजा पकड़े चुपचाप खड़ी रही। नदीका स्रोत तरल स्वर्णस्रोतकी तरह जलने लगा। खलासी अपने काममें लग गये हैं, इञ्जनने धकधक करना शुरू कर दिया है, लंगर उठाने और जहाज हटाये जानेकी आवाज सुनकर असमयमें जगे-हुए लड़कोंका झुण्ड नदीके किनारे दौड़ा आ रहा है।

इतनेमें, शोरगुल सुनकर, रमेशकी आँख खुल गई; और वह कमलाकी खबर-सुध लेने दरवाजेके पास आ खड़ा हुआ। कमला चौंक पड़ी; और आँचल यथास्थान रहनेपर भी उसे खींचकर मानो उसने अपनेको अच्छी तरह सम्हाल लिया। रमेशने कहा—"कमला, तुम मुँह-हाथ धो चुकीं?"

चटसे कमलाको गुस्सा आ गया। उससे अगर पूछा जाता कि इस सवाल पर नाराज होनेकी कौनसी बात है, तो वह कुछ बता नहीं सकती थी; फिर भी उसने नाराज होकर मुँह फेर लिया, और सिर हिलाकर जता दिया कि 'अभी कुछ नहीं किया।' रमेशने कहा—"दिन चढ़नेपर लोगोंकी भीड़ हो जायगी, जल्दी निबट लो।"

कमला कोई जवाब न देकर अपने कपड़े लेकर रमेशके बगलसे नहान-घरमें चली गई। सवेरे ही उठकर रमेश जो कमलाकी खबर-सुध लेने आया, कमलाने उसे केवल अनावश्यक ही नहीं समझा, बल्कि इससे उसने अपना अपमान समझा। रमेशकी आत्मीयताकी सीमा कुछ ही दूर तक है, और, एक जगह आकर वह रुक जाती है, इस बातको कमला सहसा समझ गई। ससुराल में किसी बड़ी-बूढ़ीने उसे शरम करना नहीं सिखाया, इस बातकी भी उसे जानकारी नहीं कि किस समय कितना घूँघट खींचना चाहिए; किन्तु फिर भी रमेशके सामने आते ही आज क्यों वह मारे शरमके बिना-कारण इस तरह संकुचित हो उठी?

नहा-निबटकर कमला जब अपने कमरेमें आकर बैठी तो दिन-भरका काम उसके सामने आ खड़ा हुआ। आँचलमें बँधे चाभियोंका गुच्छा लेकर उसने ट्रङ्क खोला तो उसमें छोटे-से कैश-बक्सपर उसकी नजर पड़ी। कैश-बक्स पानेके बाद कमला एक तरहका गौरव अनुभव कर रही थी, जैसे

उसके हाथमें एक स्वाधीन-शक्ति आ गई हो। इसीसे उसने उसे बड़े जतनसे बकसमें सम्हालकर रख दिया था। किन्तु आज उस बकसको हाथमें लेते हुए उसे खुशी नहीं हुई। आज वह बकस उसे अपना बकस नहीं मालूम हुआ, मालूम हुआ रमेशका है। उसपर उसका पूरा अधिकार नहीं; और इसलिए वह उसके लिए एक बोझ-सा हो गया।

इतनेमें रमेश आ गया; और बोला—"बकसमें पहेलीका जवाब मिल गया क्या? गम्भीर होकर चुपचाप बैठी क्या सोच रही हो?"

कमलाने कैशबक्स उठाकर आगे बढ़ाते हुए कहा—"यह लो अपना बक्स।"

रमेशने कहा—"मैं लेकर क्या करूँगा?"

कमलाने कहा—"जब जिस चीजकी जरूरत हो, तुम्हीं मँगा दिया करना।"

रमेशने कहा—"क्यों, तुम नहीं मँगाओगी?"

कमलाने जरा-सी गरदन टेढ़ी करके कहा—"रुपयोंका मैं क्या करूँगी?"

रमेश हँस दिया, बोला—"इतनी बड़ी बात कितनोंके मुँहसे निकलती है! खैर, जिस चीजकी तुम कदर नहीं करतीं वही मुझे दोगी, क्यों? मैं क्यों लेने लगा!" कमलाने कुछ जवाब न देकर बक्स नीचे रख दिया। रमेशने कहा—अच्छा, कमला, सच बताओ, मैंने तुम्हें पूरी कहानी नहीं सुनाई इसीलिए नाराज हो गई हो मुझसे?"

कमलाने नीची निगाह किये हुए जवाब दिया—"नाराज कौन हुआ है?"

रमेश—"तो, जो नाराज नहीं हुआ उसीके पास रहेगा यह बक्स। तभी समझूँगा कि उसकी बात सच है।"

कमला—"नाराज नहीं होनेसे ही बक्स रखना पड़ेगा, इसके क्या माने? तुम अपनी चीज अपने पास क्यों नहीं रखते?"

रमेश—"अब मेरी चीज कहाँ रही? किसीको देकर कोई चीज छीन लेनेसे उसे ब्रह्मराक्षस होना पड़ता है, जानती हो!"

रमेशके ब्रह्मराक्षस होनेकी आशंकासे कमलाको हँसी आ गई। हँसती हुई बोली—"हरगिज नहीं। देकर छीन लेनेसे ब्रह्मराक्षस होना पड़ता होगा कहीं! मैंने तो कभी नहीं सुना!"

इस अकस्मात्-हँसीने सन्धिका सूत्रपात कर दिया। रमेशने कहा—"दूसरे किसीसे कैसे सुनोगी? अगर कभी किसी ब्रह्मराक्षससे तुम्हारी भेंट हो, तो उससे पूछना, मेरी बात सच है या झूठ?"

कमलाका सहसा कुतूहल जाग उठा, बोली—"अच्छा, मजाक नहीं, सच बताओ, तुमने देखा है कभी सचमुचका ब्रह्मराक्षस?"

रमेश—"सचमुचके तो नहीं, पर, ऐसे बहुत-से देखे हैं। असली राक्षस दुनियामें बहुत कम हैं न!"

कमला—"लेकिन, उमेश तो कहता है—"

रमेश—"उमेश? उमेश कौन?"

कमला—"वो लड़का है न, जो हमारे साथ जा रहा है। उसने देखा है ब्रह्मराक्षस।"

रमेश—"इस मामलेमें मैं उसकी बराबरी नहीं कर सकता, इतना तो मुझे मानना ही पड़ेगा।"

इस बीचमें, खलासियोंने बड़ी कोशिशोंसे जहाजको रेतीमेंसे निकाल लिया था। जहाज थोड़ी ही दूर आगे बढ़ा था कि एक लड़का सिरपर टोकनी रखे किनारे-किनारे दौड़ता और चिल्लाता हुआ दिखाई दिया। वह बड़ी दीनताके साथ जहाज रोकनेकी प्रार्थना कर रहा था; किन्तु सारेनने उसको जरा भी परवाह नहीं की। तब वह रमेशकी तरफ देखता हुआ "बाबूजी, बाबूजी" कहकर चिल्लाने लगा। रमेशने समझा, उसे वह जहाजका टिकट-बाबू समझकर ऐसा कर रहा है। उसने दोनों हाथ हिलाकर जता दिया कि जहाज रोकनेका उसे कोई अधिकार नहीं। इतनेमें, अचानक कमला बोल उठी—"अरे, वो तो अपना उमेश है! नहीं नहीं, उसे मत छोड़ जाओ। किसी तरह जहाज रुकवाकर ले लो उसे।"

रमेशने कहा—"मेरे कहनेसे जहाज थोड़े ही रुक सकता है!"

कमलाने करुणस्वरमें कहा—"नहीं, रुकवाओ जाकर, जाओ जल्दी, नहीं तो रह जायगा बेचारा।"

रमेशने सारेनसे जाकर कहा; पर वह राजी नहीं हुआ; बोला—

"कम्पनीका कानून नहीं है, बाबू साहब !" इतनेमें कमला भी आ पहुँची, बोली—"उसे कैसे छोड़ दें ! जरा रोक दो । बच्चा है बेचारा ।"

तब रमेशने कानून भङ्ग करानेका आसान तरीका अख्तियार किया । इनामका भरोसा पाकर सारेनने जहाज रोककर किसी तरह उमेशको चढ़ा लिया। और उसे काफी डाटा-फटकारा । पर उमेशने उसकी जरा भी परवाह नहीं की ; वह कमलाके पाँवोंके पास टोकनी रखकर ऐसे हँसने लगा जैसे कुछ हुआ हो नहीं ! कमलाका क्षोभ अभी तक दूर नहीं हुआ था । उसने कहा—"और-फिर हँस रहा है ! जहाज अगर नहीं ठहरता, तो तेरी क्या दशा होती ?"

उमेशने उसकी बातका कुछ जवाब न देकर टोकनीका सामान दिखाना शुरू कर दिया । कच्चे केले, कई तरहके शाक, कुँहड़ा, बेंगन आदि नानाप्रकारकी सब्जी देखकर कमलाने पूछा—"इतना-सब कहाँसे ले आया रे ?"

उमेशने संग्रहका जो इतिहास सुनाया, वह कतई सन्तोषजनक नहीं । कल बाजारसे दही वगैरह लाते समय रास्तेमें उसने गृहस्थोंके घरके आगे और खेतोंमें जो भोज्य पदार्थ देखे थे, आज तड़के ही उठकर वह उन्हें संग्रह कर लाया है ; इसके लिए किसीसे पूछने-गछनेकी उसने जरूरत ही नहीं समझी । सुनकर रमेश बहुत ही नाराज हुआ ; बोला—"दूसरोंकी चीज तू बिना-कहे चुराके क्यों लाया ?"

उमेशने कहा—"चुराकर थोड़े ही लाया हूं ! खेतोंमें बहुत था, मैं थोड़ा-सा ले आया हूं, इससे कुछ उनका नुकसान थोड़े ही हुआ है ।"

रमेश—"थोड़ा-सा लानेसे चोरी नहीं होती, क्यों ? नालायक कहींका ! जा, ले जा मेरे सामनेसे, जा !"

उमेशने करुण नेत्रोंसे एक बार कमलाके मुँहकी ओर देखकर कहा—"जीजी-बाई, इसकी भुजिया बड़ी उमदा बनती है ! और इसका—"

रमेश और-भी नाराज हो उठा, बोला—"चल हट यहाँसे, ले जा सब ! नहीं तो उठाके फेंक दूँगा सब पानीमें ।"

इस सम्बन्धमें कर्तव्य-निरूपणके लिए वह कमलाके मुँहकी तरफ देखने लगा । कमलाने इशारेसे उसे चले जानेके लिए कहा । उस इशारेमें करुणा-

मिश्रित छिपी-हुई प्रसन्नता देखकर उमेशने सब उठाकर टोकनोमें रख लिया और धीरे-से वहाँसे चलता बना। रमेशने कहा—"यह बड़ी बेजा बात है। लड़केको तुम ज्यादा मुँह नहीं लगाना, शह पाकर और भी बिगड़ जायगा।"

रमेश चिट्ठी-पत्री लिखनेके लिए अपने कमरामें चला गया। कमलाने झाँककर देखा, दूसरे दरजेका डेक पार करके पीछेकी तरफ, जहाँ रसोईके लिए जगह बनाई गई थी, वहाँ जाकर उमेश चुपचाप बैठा है। दूसरे दरजेमें और कोई यात्री नहीं था। कमला चादर ओढ़कर उसके पास पहुँची; और बोली—"सब फेंक-फाँक दिया क्या रे?"

उमेशने कहा—"फेंकने क्यों लगा? सब भीतर रख दिया है।"

कमलाने ऊपरी गुस्सा दिखानेकी कोशिश करते हुए कहा—"लेकिन तूने बहुत बेजा काम किया है। अब कभी ऐसा काम नहीं करना! समझ ले, जहाज अगर चला जाता तो?"—इतना कहकर वह भीतर चली गई; और वहाँसे डाटती हुई बोली—"जा, हँसिया ले आ जल्दी।"

उमेशने हँसिया ला दिया। कमला जल्दी-जल्दी साग बघारने लगी। उमेश बीच ही में बोल उठा—"जीजी-बाई, इसमें हरी मिर्च और राई-मेथीका बघार देनेसे ऐसा स्वाद आयेगा कि खानेवाले उँगलियाँ चाटते रह जायेंगे!"

कमलाने गुस्सेके स्वरमें कहा—"अच्छा अच्छा! लाया हो तो बट दे जल्दी!" इस तरह, कमला उमेश जिससे मुँह न लगने पाये इसकी कोशिश करती रही। और गम्भीर मुँह बनाकर रसोई बनानेमें लग गई। लेकिन हाय, घरसे निकले-हुए इस अनाथ लड़केको वह कैसे मुँह न लगाये? सब्जी चुरानेका कसूर कितना बड़ा है, कमला ठीक नहीं समझती, किन्तु निराश्रय बच्चेकी आश्रय पानेकी लालसा कितनी जबरदस्त है इतना वह समझती है। बेचारा उसे खुश करनेके लिए, कल ही से इस धुनमें था कि कब मौका मिले और कब ये सब चीजें अपनी 'जीजी-बाई'को लाकर दे। और थोड़ी देर हो जाती तो बेचारा यहीं रह जाता न! फिर उसकी क्या दशा होती! सोचते सोचते कमलाका हृदय भर आया। उसने कहा—"उमेश, तेरे लिए कलका दही पड़ा है, आज तुझे ही खिलाऊंगी। लेकिन देख, अब कभी ऐसा मत

करना !" उमेशने अत्यन्त दुःखित होकर कहा--"अब कभी नहीं करूँगा। कलका दही रक्खा हुआ है, तुमने नहीं खाया ?" कमलाने कहा—"तेरी तरह मैं दहीकी लालचिन नहीं। और क्यों रे, मछलीका क्या हुआ ? बिना मछलीके बाबू खायेंगे कैसे ?" उमेशने कहा--"मछली तो बिना-पैसेके नहीं मिलेगी, जीजी-बाई !" कमलाने फिर उसपर शासन करनेकी कोशिश की; बोली-- "उमेश, तेरे जैसा मूरख तो मैंने कहीं नहीं देखा। मैंने तुझसे कब कहा था कि पैसे बिना दिये ही तू चीज लाया कर ?"

कलसे, मालूम नहीं कैसे, उमेशने समझ लिया है कि कमलाके लिए रमेशसे रुपया वसूल करना आसान नहीं। इसके सिवा एक बात और है; उसे रमेश अच्छा नहीं लगता। इसीलिए कलसे वह मन-ही-मन ऐसी तरकीबें सोच रहा था कि रमेशकी मददके बिना ही कैसे सब जरूरतोंको पूरा किया जा सकता है। साग-सब्जीके बारेमें तो एक तरहसे वह निश्चिन्त था, पर मछलीके विषयमें अब तक कोई तरकीब उसके दिमागमें नहीं आ रही है। संसारमें निःस्वार्थ भक्तिके जोरसे दही और मछली जैसी मामूली चीज भी नहीं मिल सकती, उसके लिए पैसे चाहिए।

कमलाका भक्त, बालक उमेश, समझ गया कि दुनियामें आसानी कम और परेशानी ही ज्यादा है। उसने डरते हुए कहा—"जीजी-बाई, अगर बाबूजीसे चार-पाँच आने पैसे दिलवा दो तो मैं अभी ला सकता हूँ।" कमलाने उद्विग्न होकर कहा—"नहीं नहीं, तुझे मैं अब जहाजसे नहीं उतरने दूँगी। अबकी बार अगर तू छूट गया तो फिर कोई नहीं चढ़ानेका।" उमेशने कहा—"नीचे मैं क्यों उतरने लगा ? आज सवेरे खलासियोंके जालमें बड़ी-बड़ी मछलियाँ फँसी हैं, उनमेंसे वे एकआध बेच भी सकते हैं।" सुनकर कमलाने एक रुपया निकालकर उमेशके हाथमें देते हुए कहा—"जा, जो भी लगे, जल्दीसे ले आ।"

उमेश मछली ले आया, पर पैसे कुछ भी वापस नहीं लाया, बोला—"एक रुपयासे कममें दी ही नहीं।" बात सच नहीं थी, कमला समझ गई; उसने हँसते हुए कहा—"अबकी बार जहाज ठहरनेपर एकआध रुपया भुनाकर रखना

होगा।" उमेशने गम्भीर मुँह बनाकर कहा—"हाँ। पूरा रुपया निकालकर देनेसे पैसे वापस आना मुश्किल हो जाता है।"

भोजन करते हुए रमेशने कहा—"रसोई तो आज बड़ी उमदा बनी है। पर ये सब चीजें आईं कहाँसे? और यह मछली!"—मछलीका सिर उठाकर गौरसे देखते हुए कहने लगा—"वाह, यह तो स्वप्न नहीं, माया नहीं, मतिभ्रम भी नहीं, साक्षात् रोहित-मत्स्यका मस्तक है!" इस तरह उस दिनका मध्याह्न-भोजन बड़े समारोहके साथ सम्पन्न हुआ। उसके बाद रमेश डेककी आरामकुरसीपर लेटकर निश्चिन्त मनसे पाचन-क्रिया सम्पादन करने लगा। और उधर कमला उमेशको खिलाने लगी। मछलीकी भाजी उमेशको इतनी अच्छी लगी कि भोजनका उत्साह कौतुकप्रद न होकर क्रमशः आशङ्काजनक हो उठा। उत्कण्ठित होकर कमलाने कहा—"अब रहने दे उमेश! तेरे लिए थोड़ी-सी रक्खे देती हूँ, रातको खाना।" इस तरह दिनके काम-काज और हँसी-मजाकमें कमलाका सवेरेका हृदयका भार कब उतर गया, उसे मालूम भी नहीं पड़ा।

क्रमशः दिन खतम हो चला। अस्तोन्मुख सूरजकी सुनहली धूप तिरछी और लम्बी होकर, जहाजकी छतपर फैलकर चमकने लगी। नदीके दोनों तटोंपर शरद्ऋतुके हरे-भरे खेतोंमें होकर ग्राम्य रमणियाँ काँखमें घड़े लिये जा-आ रही हैं।

कमलाने पान लगाकर रख दिये, जूड़ा बाँधा, हाथ-मुंह धोकर कपड़े बदले और रातके लिए बिस्तर किये। इतनेमें सूरज डूब गया। जहाज लंगर डालकर स्टेशन-घाटपर ठहर गया। आज कमलाको रातकी रसोईका ज्यादा काम नहीं करना। सवेरेकी तरकारियाँ इस वक्त काम आ जायेंगी।

रातके खानेके बारेमें वह सोच ही रही थी कि इतनेमें रमेशने आकर कहा—"दोपहरको आज बहुत खा गया। अब रातको कुछ नहीं खाऊँगा।" कमलाने उदास होकर कहा—"कुछ नहीं खाओगे? मछलीकी भाजीसे पूड़ियाँ खा लेना दो-चार, सेके देती हूँ?"

रमेशने संक्षेपमें जवाब दिया—"नहीं रहने दो।" और चला गया।

रातको कमलाने जो-कुछ तरकारी वगैरह बची थी, सब उमेशकी पत्तलमें

डाल दी। उमेशने कहा—"तुमने अपने लिए कुछ भी नहीं रखा?" कमलाने कहा—"मैं खा चुकी।" इस तरह कमलाको नदीमें बहती हुई छोटी सी गृहस्थीका एक दिनका सारा काम सम्पन्न हो गया।

जल और स्थल चारों तरफ चाँदनी छिटक रही है। किनारेपर कोई गाँव नहीं है; धानके खेतोंकी घनी कोमल सुविस्तृत हरी-भरी जनशून्यतापर निःशब्द शुभ्र रात्रि विरहिणीको तरह जाग रही है। सामने ही घाटपर टीनसे पटी छोटी-सी कोठरीमें जहाज-कम्पनीका दफ्तर है। उसमें बैठा हुआ एक आदमी अपना काम कर रहा है, टेबिलपर मिट्टीके तेलकी छोटी-सी बत्ती जल रही है।

खुले हुए दरवाजेमेंसे रमेश उसकी तरफ देख रहा था। एक लम्बी साँस छोड़कर रमेश मन-ही-मन कहने लगा, 'काश, इस अभागे टिकट-बाबूकी तरह मेरा भाग्य भी अगर मुझे एक सङ्कीर्ण किन्तु सुस्पष्ट जीवनयात्रामें बाँध देता! मैं भी हिसाब लिखा करता, टिकट बाँटता, काममें गफलत करनेपर अफसरकी घुड़की सहता, काम पूरा करके रातको घर जाता, तो मैं जी जाता!' कुछ देर बाद आफिसकी बत्ती बुझ गई। टिकट-बाबू ताला बन्द करके अपने घर चला गया।

कमला बहुत देरसे रेलिंगके सहारे चुपचाप खड़ी थी, रमेशको मालूम हो नहीं। कमलाने समझा था, शामको रमेश उसे बुला लेगा। इसीलिए काम-काज कर चुकनेके बाद जब देखा कि रमेशने उसकी कोई खबर ही नहीं ली, तो वह खुद ही धीरे-धीरे जहाजकी छतपर आ गई। किन्तु उसे सहसा ठिठककर ठहर जाना पड़ा। वह रमेशके पास नहीं जा सकी। रमेशके चेहरेपर चाँदनी पड़ रही थी; देखकर कमलाको ऐसा लगा मानो वह चेहरा उससे दूर, बहुत दूर है। कमलाके साथ उसका कोई भी सम्बन्ध नहीं। ध्यान-मग्न रमेश और उस सङ्गी-विहीना बालिकाके बीचमें मानो एक विराट रात्रि चाँदनीका उजला दुपट्टा ओढ़े अपने ओठोंपर उँगली रखे चुपचाप खड़ी पहरा दे रही हो।

रमेशने जब अपने दोनों हाथोंसे मुँह ढककर सामने पड़ी हुई बेंतकी टेबिलपर सिर रखा, तब कमला धीरेसे अपने कमरेकी तरफ चल दी। जरा

भी आवाज नहीं होने दी, इसलिए कि रमेशको मालूम न हो कि वह उसकी खोजमें आई थी। चल तो दी, किन्तु उसका कमरा जो सूना है! अँधेरेमें घुसनेमें उसकी छाती काँप उठी। उसे ऐसा मालूम हुआ जैसे उसे सबने छोड़ दिया है, और वह बिलकुल ही अकेली है। जहाजका लकड़ीका-बना कमरा उसे ऐसा मालूम होने लगा जैसे वह कोई अपरिचित निष्ठुर जन्तु हो, और उसे अपने अँधेरे-पेटमें लील जानेके लिए मुँह फाड़े खड़ा हो। अब वह कहाँ जाय? कहाँ किस जगह अपनी छोटी-सी देहको सुलाकर वह आँख मोचके कह सकती है कि 'यह मेरी अपनी जगह है?'

कमरेमें झाँककर तुरत फिर वह वापस लौट आई। लौटते वक्त दरवाजेपर लटकती हुई रमेशकी छतरी नीचे गिर पड़ी। आवाज सुनते ही रमेश चौंक पड़ा; और कुरसी छोड़कर उठ खड़ा हुआ। देखा कि कमला उसके कमरेके सामने खड़ी है। बोला—"कमला! मैंने सोचा था अब तक तुम सो गई होगी। तुम्हें डर लगता है क्या? अच्छा, अब मैं बाहर नहीं बैठूँगा। मैं बगलके कमरेमें हूँ, बीचका दरवाजा खुला रहेगा, डरनेकी कोई बात नहीं।"

कमलाने उद्धतस्वरमें जवाब दिया—"डर मुझे नहीं लगता!" इतना कहकर तेजीके साथ वह अँधेरे कमरेमें घुस गई; और रमेशके कमरेका बीचवाला दरवाजा, जिसे उसने खुला रखनेके लिए कहा था, बन्द कर दिया। और-फिर, बिस्तरपर जाकर, ऊपरसे नीचे तक चादर ओढ़कर, वह ऐसे पड़ रही जैसे संसारमें और-किसीका कोई सहारा न पाकर अपने-आपमें अपनेको लपेटकर सान्त्वना ढूँढ रही हो। उसका सम्पूर्ण हृदय विद्रोही हो उठा। जहाँ सहारा भी नहीं और स्वाधीनता भी नहीं, वहाँ कोई कैसे जी सकता है?

रात कटना ही नहीं चाहती। बगलके कमरेमें रमेश अब तक सो गया होगा। कमलासे बिस्तरपर पड़ा नहीं रहा गया। वह उठ बैठी; और बाहर जाकर रेलिंगके सहारे खड़ी होकर किनारेकी तरफ देखने लगी। कहीं भी कोई दिखाई नहीं देता, चारों तरफ सन्नाटा है। चाँद पश्चिम-आकाशमें डूबा जा रहा है। खेतोंके बीचमेंसे जो पतली-सी सड़क गई है, उसकी तरफ दूर तक देखती हुई वह सोचने लगी, 'इस रास्तेसे न-जाने कितनी स्त्रियाँ रोज

पानीके घड़े भर-भरके अपने-अपने घरको जाती हैं।' घर! 'घर' का खयाल आते ही उसके प्राण छातीसे बाहर निकलनेके लिए फड़फड़ा उठे। जरा-सा घर; पर वह घर है कहाँ? सुनसान नदी-तट निस्तब्ध है, विशाल आकाश दिगन्तसे दिगन्त तक निस्तब्ध है। अनावश्यक है यह आकाश, अनावश्यक है यह संसार, छोटी-सी बालिकाके लिए यह अन्तहीन विशालता बिलकुल अनावश्यक है। उसे तो सिर्फ एक छोटे-से घरकी जरूरत है, और सब उसके लिए अनावश्यक है, व्यर्थ है।

इतनेमें, सहसा वह चौंक पड़ी; मालूम हुआ कोई उसके पास आ खड़ा हुआ है।

"डरो मत जीजी-बाई, मैं उमेश हूं। इतनी रात हो गई, अभी तक सोई क्यों नहीं?"

अब तक कमलाकी आँखोंसे आँसू नहीं गिरे थे। अब यकायक उसके आँसू उमड़ पड़े। बड़ी-बड़ी बूंदें उससे रोके न रुकीं। गरदन टेढ़ी करके कमलाने उमेशकी तरफसे मुँह फेर लिया। बादल जैसे हवाका स्पर्श पाते ही पिघलकर झरने लगते हैं, उसी तरह अनाथ गरीब बालकके मुंहसे स्नेहकी एक बात सुनते ही कमलाकी छाती भर आई। कुछ कहनेकी उसने कोशिश की, पर गला रुक आया। दुःखितहृदय उमेश कैसे सान्त्वना दे, उसकी कुछ समझ ही में न आया। अन्तमें, बहुत देर तक चुप रहकर अचानक वह बोल उठा—"जीजी-बाई, तुमने जो रुपया दिया था न, उसमेंसे सात-आने पैसे बचे हैं।"

उसकी यह अप्रासंगिक बात सुनते ही कमलाकी छाती कुछ हलकी हुई; आँसुओंका आवेग भी कुछ शान्त हुआ। उसने हँसते हुए कहा—"अच्छी बात है, पैसे तू अपने पास ही रख। और, अब जा, तू सो जा।"

चाँद तब पेड़ोंकी ओटमें छिप चुका था। थोड़ी देर बाद कमला भी सोने चली गई। बिस्तरपर पड़ते ही उसकी आँख लग गई। सवेरेकी धूपने जब कमरेका दरवाजा खटखटाया तब भी वह नहीं जगी।

२८

श्रान्तिमें ही कमलाका दिन आरम्भ हुआ। उस दिन उसकी दृष्टिने सूरजको थका-हुआ देखा, नदीकी धारा भी उसे थकी हुई मालूम हुई, और नदी-तटके पेड़ भी दूर-पथके पथिकोंकी तरह थके-हुए-से दिखाई दिये।

उमेश जब कमलाके काममें मदद करने आया, तो श्रान्तकण्ठसे उसने कहा—"उमेश, तू जा यहाँसे, मुझे तंग मत कर।" उमेश भला यों क्यों मानने लगा। उसने कहा—"मैं तंग करने थोड़े ही आया हूँ, मसाला बटने आया हूँ।"

सवेरे कमलाका चेहरा देखकर रमेशने पूछा था, 'कमला, तुम्हारी तबीयत आज कुछ खराब है क्या?' इस तरहका प्रश्न कितना अनावश्यक और असङ्गत है इस बातको जाहिर करनेके लिए कमलाने सिर्फ एक बार झटकेसे गरदन हिला दी, और कुछ जवाब बिना दिये ही तुरत रसोईकी तरफ चली गई। रमेश समझ गया कि समस्या क्रमशः कठिन ही होती जा रही है। बहुत जल्दी इसका कुछ न-कुछ अन्तिम समाधान होना ही चाहिए। रमेश मन-ही-मन सोचने लगा कि हेमनलिनीके साथ एक बार साफ-साफ बात हो जानेपर ही कर्त्तव्य तय हो सकता है।

काफी सोच-विचारके बाद वह हेमको चिट्ठी लिखने बैठा। बहुत देर तक लिख-लिखकर काटता रहा। इतनेमें, "आपका शुभ नाम?" सुनकर वह चौंक पड़ा। देखा, प्रौढ़ उमरके एक सज्जन हैं, मूँछोंपर सफेदी आ चुकी है, सिरपर बाल कभी थे, अब नहींके बराबर हैं। रमेश एकान्त-चित्तसे चिट्ठी लिख रहा था, उससे चित्त हटाकर आगन्तुककी तरफ ध्यान देनेमें क्षण-भरके लिए वह विभ्रान्त-सा हो गया। आगन्तुकने कहा—"आप ब्राह्मण हैं? नमस्कार। आपका नाम रमेश बाबू है न! मैंने पहलेसे ही पता लगा लिया है। फिर भी, देखिये, हमारे देशमें नाम पूछना परिचय प्राप्त करनेकी एक पद्धति है; कुछ खलाल न कीजियेगा। यह भद्रता है। आजकल कोई-कोई इससे नाराज हो जाते हैं। आप अगर नाराज हुए हों तो बदला ले सकते हैं! मुझसे पूछिये, मैं फौरन

अपना नाम बता दूँगा, पिताका नाम बता दूँगा, बाबा तकका नाम बतानेमें मुझे कोई आपत्ति नहीं।"

रमेश हँस दिया, बोला—"मेरा गुस्सा ऐसा कुछ खतरनाक नहीं, आपका अकेलेका नाम जानकर ही मैं खुश हो जाऊँगा।"

"मेरा नाम है त्रिलोक चक्रवर्ती। पछाँहमें जहाँ मैं रहता हूँ, वहाँके लोग मुझे 'चचा' कहा करते हैं। आपने तो इतिहास पढ़ा है ? भारतवर्षके भरत थे चक्रवर्ती सम्राट, वैसे ही मैं हूँ सारे पश्चिम-भारतका 'चक्रवर्ती-चचा'। आप तो उधर ही चल रहे हैं, वहाँ जायेंगे तो मेरा परिचय आपसे छिपा न रहेगा। लेकिन, यह तो बताइये, आप जा कहाँ रहे हैं ?"

रमेशने कहा—"अभी तक तय नहीं कर पाया कि कहाँ जाऊँगा।"

त्रिलोक—"तय करनेमें आपको देर लगती है, पर जहाजमें चढ़ते वक्त तो आपने काफी फुरती दिखाई थी ?"

रमेश—"उस दिन ग्वालन्द उतरकर देखा कि जहाज सीटी दे रहा है। तब मैं समझ गया कि मेरा मन स्थिर होनेमें देर हो सकती है, पर जहाज छूटनेमें देर नहीं। लिहाजा उस कामको फुरतीसे कर डाला।"

त्रिलोक—"नमस्कार महाशय ! आपपर मेरी भक्ति बढ़ गई। आप और हममें बड़ा-भारी अन्तर है। हमलोग पहले तय करते हैं, पीछे जहाजपर चढ़ते हैं; कारण हमलोग बहुत ही डरपोक हैं। आपने जाना तो तय कर लिया, पर कहाँ जायेंगे तय नहीं किया, यह कैसी बात ! 'घरसे' आपके साथ हैं न ?"

'घरसे' का मतलब रमेश समझ गया; किन्तु जवाबमें 'हाँ' कहते हुए वह दुबिधामें पड़ गया। रमेशको चुप देखकर चक्रवर्तीने कहा—"मुझे माफ कीजियेगा। मैंने पहले ही पता लगा लिया है कि 'घरसे' आपके साथ हैं। उमरके लिहाजसे मैं उन्हें 'बहू-रानी' कहनेका हक रखता हूँ, इसमें शायद आपको कोई आपत्ति नहीं होगी। मैं भूखके मारे इधर-उधर मारा-मारा फिर रहा था कि देखा, बहू-रानीने रसोई चढ़ा दी है। मैं पहुँच गया, और बोला, 'बेटी, मुझे देखकर सङ्कोच करनेकी जरूरत नहीं; मैं पश्चिम-भारतका एकमात्र चक्रवर्ती चाचा हूँ।' अहा, बहू-रानी तो बहू-रानी ही हैं, साक्षात् अन्नपूर्णा ! मैंने कहा,

'बेटी, जब कि रसोई-घरपर दखल जमा ही चुकी हो, तो कमसे कम अन्नसे तो बञ्चित न रखना। बेटी मेरी जरा-सा मुसकरा दी ; समझ गया, काम बन गया! अन्नपूर्णा प्रसन्न हैं, अब कोई चिन्ता नहीं। वैसे तो हमेशा साइत देखकर घरसे निकलता हूँ, पर ऐसे शुभ-मुहूर्त्तसे तो पहले कभी नहीं निकला! इतना बड़ा सौभाग्य! आप कुछ लिख रहे थे, मैं आपका समय नष्ट नहीं करना चाहता। अगर आपकी अनुमति हो, तो मैं बहूरानीकी थोड़ी-बहुत मदद करूँ। हमारे रहते वे क्यों अपने कर-कमलोंमें चिमटा-चम्मच धारण करें? नहीं नहीं, आप लिखिये, आपको उठनेकी जरूरत नहीं ; मैं परिचय करना खूब जानता हूँ।"

इतना कहकर चक्रवर्ती-चचा वहाँसे सीधे रसोईकी तरफ चल दिये। और कमलासे जाकर बोले—"वाह, खुशबूसे ही मेरा मन चंचल हो उठा है, खाने बैठूँगा तो न-जाने क्या हालत होगी! तरकारी कमालकी बनेगी इसमें शक नहीं ; लेकिन एकआध चीज मेरे हाथकी भी खानी पड़ेगी बेटी! तुम सोचती होगी, यह कैसी बात! लेकिन मेरे हाथकी कढ़ी खाकर देखना। खटाई-बेसनकी तुम चिन्ता न करो, चक्रवर्ती-चाचामें 'सर्वत्र पूज्यते' के गुण कम नहीं हैं। जरा ठहरो, मैं अभी सब जुगाड़ किये लाता हूं।"

इतना कहकर वे चले गये ; और थोड़ी देरमें वापस आकर बोले—"अभी क्या है, खाओगी तब न कहोगी कि हाँ, चक्रवर्ती-चाचाने कोई चीज खिलाई! अब तुम उठो बेटी, हाथ-मुँह धोओ जाकर। काफी दिन चढ़ गया है। सङ्कोच बिलकुल मत करो। मुझे सब आता है। तुम्हारी चाचीकी तबीयत बराबर खराब ही चलती रहती है न, इसीसे मुझे रसोईके काममें सिद्धहस्त होना पड़ा है। बूढ़ेकी बात सुनकर हँस रही हो, बेटी, लेकिन हँसी मत समझना, बावन-तोले-पाव-रत्ती ठीक कह रहा हूं।"

कमलाने हँसते हुए कहा—"मैं आपसे कढ़ी बनाना सीख लूंगी।"

चक्रवर्ती—"अरे वाह रे! अपनी विद्या भी कहीं किसीको इतनी जल्दी दी जाती है! एक ही दिनमें सिखाकर विद्याका महत्त्व अगर नष्ट कर दूं, तो मा वीणापाणि मुझसे अप्रसन्न नहीं हो जायेंगी! दो-चार दिन इस बूढ़ेकी खुशामद करनी होगी। मुझे कैसे खुश किया जा सकता है इसकी तुम चिन्ता

न करो, मैं खुद ही सब बता दूंगा। पहली बात तो यह है कि मैं पान कुछ ज़्यादा खाया करता हूं, लेकिन सुपारी उसमें खूब बारीक पड़नी चाहिए। मुझे वश करना आसान काम नहीं; पर, बेटीके हँसमुख चेहरेने काम बहुत-कुछ आसान कर दिया है। अरे ओ छोकड़े, तेरा नाम क्या है?"

रमेशने कुछ जवाब नहीं दिया। भीतर-ही-भीतर वह यह सोचकर उद्विग्न हो रहा था कि कमलाके स्नेह-राज्यमें यह बूढ़ा कहाँसे आ गया उसका हिस्सा छीनने? उसे चुप देखकर कमलाने जवाब दिया—"इसका नाम उमेश है।" चक्रवर्तीने कहा—"लड़का अच्छा है। तुरत इसे वशमें नहीं लाया जा सकता, मैं समझ गया हूं; पर देख लेना, बेटी, इससे मेरी पटरी बैठ जायगी। हाँ तो, अब देर न करो। मेरे काममें देर नहीं लगेगी; मिनटोंमें सब चीज तैयार मिलेगी।"

कमला जो एक तरहकी शून्यता अनुभव कर रही थी, इस वृद्धके आ जानेसे उसके मनकी वह शून्यता जाती रही। और, रमेश भी कुछ निश्चिन्त हुआ। शुरू-शुरूमें, कई महीने तक रमेशने जब कमलाको अपनी स्त्री समझ रखा था, तबकी उसकी बाधाहीन घनिष्ठता और अबके बरतावमें इतना ज्यादा अन्तर हो गया है कि बालिका कमला भी उसे समझ गई है; और इससे उसके हृदयको काफी ठेस पहुँची है। इस बीचमें अकस्मात् चक्रवर्तीके आगमनसे कमला और रमेश दोनोंको बड़ा-भारी सहारा मिल गया।

दोपहरको कमला अपने कमरेके सामने दरवाजेके पास जा खड़ी हुई। वह चाहती है कि चक्रवर्तीके दोपहरके ठलुआ वक्तपर वह अकेली दखल जमा ले। चक्रवर्ती उसे देखते ही बोल उठे—"नहीं बेटी, यह अच्छी बात नहीं। ऐसा नहीं करना चाहिए।"

कमला समझ ही न सकी कि क्या अच्छी बात नहीं; और इससे वह आश्चर्यमें पड़कर संकुचित हो उठी। चक्रवर्तीने कहा—"ये जूते क्यों पहने है!" रमेश वहाँ पहलेसे ही मौजूद था। उससे बोले—"रमेश बाबू, यह आपका ही काम मालूम होता है। कुछ भी कहिये, यह आप अधर्म कर रहे हैं। देशकी मिट्टीको इन चरणोंके स्पर्शसे वञ्चित रखना ठीक नहीं; इससे देश

मिट्टी हो जायगा। रामचन्द्र अगर सीताको 'डासन'का बूट पहनाते, तो क्या आप समझते हैं कि लक्ष्मण चौदह साल वनमें बिता सकते थे? हरगिज नहीं। मेरी बातपर हँस रहे हैं! शायद पसन्द नहीं आई! बात कुछ ऐसी ही है। आपलोग जहाजकी सीटी सुनते ही चंचल हो उठते हैं, कहाँ जाना है बगैर सोचे ही सवार हो जाते हैं। ऐसा अनिश्चित मन ही तो आपलोगोंको गलत रास्ते ले जाता है।"

रमेशने कहा—"चचा, आप ही तय कर दीजिये न, हमें कहाँ जाना चाहिए। जहाजकी सीटीसे आपकी सलाह कहीं ज्यादा पक्की होगी।"

चक्रवर्तीने कहा—"यह देखिये, आपकी विवेकबुद्धिने कितनी जल्दी उन्नति की! ऐसी कोई लम्बी जान-पहचान नहीं, फिर भी! तो सुनिये, गाजीपुर चले चलिये। चलोगी बेटी, गाजीपुर? वहाँ गुलाबकी खेती होती है; और वहीं तुम्हारा यह वृद्ध भक्त भी रहता है।"

रमेश कमलाके मुँहकी तरफ देखने लगा। कमलाने उसी वक्त गरदन हिलाकर अपनी सम्मति दे दी।

इसके बाद उमेश और चक्रवर्ती दोनोंने मिलकर लज्जित कमलाके कमरेमें सभा जमा दी। रमेश एक लम्बी साँस छोड़कर बाहर चला गया। जहाज खूब तेजीसे चल रहा था। शरद्‌ऋतुकी धूपसे चमकते हुए दोनों तटोंका शान्तिमय वैचित्र्य स्वप्नकी तरह आँखोंके सामने परिवर्तित होता चला जा रहा था। कहीं धानके खेत हैं तो कहीं नावोंसे शोभित घाट, कहीं बाजार है तो कहीं रेती-ही-रेती चमक रही है, कहीं प्राचीन बटकी छायाके नीचे पार जानेवाले यात्री बैठे हैं तो कहीं गाँवकी चौपालमें बैठे लोग गपशप कर रहे हैं। शरद्‌ऋतुकी दोपहरीकी इस सुमधुर निस्तब्धतामें पासके कमरेके भीतरसे जब क्षण-क्षणमें कमलाका स्निग्ध कौतुकहास्य रमेशके कानोंमें आकर प्रवेश करने लगा तो उसके मनमें न-जाने कैसी एक ठेस-सी लगी। सब-कुछ कैसा सुन्दर है, किन्तु कितना दूर है! रमेशके वेदनामय जीवनमें यह कैसा परिहास है! आज वह कितना विच्छिन्न है!

२९

कमलाकी अभी बहुत कम उमर है। किसी तरहका संशय, आशङ्का या वेदना उसके मनमें स्थायी होकर नहीं बैठ पाती। रमेशके व्यवहारके सम्बन्धमें इधर कुछ दिनोंसे उसे विचार करनेका समय ही नहीं मिला। स्रोत जहाँ रुकावट पाता है वहीं कूड़ा-करकट आ जमता है। कमलाके चित्त-स्रोतका सहज प्रवाह रमेशके आचरणसे सहसा एक जगह रुक गया था; और वहीं वह, भँवर बनाकर, बहुत-सी बातोंके चक्करमें बार-बार चक्कर काट रहा था। वृद्ध चक्रवर्तीका साथ पाकर आज उसका हृदयस्रोत, रसोई बनाकर, खिला-पिलाकर, समस्त बाधाओंको पार करके फिर अपनी सहज गतिसे चलने लगा; भंवर मिट गया, जो-कुछ कूड़ा जमा था और घूम रहा था, सब बह गया। और इस तरह वह अपनी सारी चिन्ताओंसे छुट्टी पा गई।

आश्विनके ये सुन्दर दिन नदी-पथके विचित्र दृश्योंको रमणीय बनाते हुए, उनमें कमलाके इस प्रतिदिनके गृहिणी-पनको, मानो सुनहले चित्रपर अंकित एक-एक सरल कविताके पृष्ठकी तरह पलटते जा रहे हैं। काम-काजके उत्साहमें दिन शुरू होता; और हँसी-खुशीमें वह पूरा हो जाता।

उमेश अब स्टीमर फेल नहीं करता; और उसकी टोकनी भी ऊपर तक भरी आती है। छोटी-सी घर-गृहस्थीमें उमेशकी यह सवेरेकी टोकनी बड़ी कौतूहलकी चीज बन गई। टोकनी आते ही, "अरे, यह क्या! मूलीकी फली! अरे, धनिया, पालक, सोया, यह सब कहाँसे जुगाड़ कर लाया? यह देखो, चाचा, क्या-क्या उठा लाया है! इतना सब बनायेगा कौन!" इत्यादि शोर-गुल शुरू हो जाता। जिस दिन रमेश मौजूद रहता, उस दिन इस आनन्दोच्छ्वासमें जरा विघ्न पड़ जाता। उससे चोरीका सन्देह किये बिना न रहा जाता। कमला उत्तेजित होकर कहने लगती—"वाह, मैंने खुद उसे पैसे दिये हैं!"

रमेश कहता—"इससे उसकी चोरीकी सहूलियत दूनी हो जाती है। पैसे भी चुराता है, और साग-तरकारी भी।"

इसके बाद वह उमेशको पास बुलाकर उससे कहता—"अच्छा, हिसाब तो बता देखूँ ?"

हिसाब ठीक मिलता नहीं। पहली बारके हिसाबके साथ दूसरी बारके हिसाबमें फर्क पड़ जाता ; और जोड़ लगानेपर जमासे खर्चकी रकम बढ़ जाती। लेकिन, इससे उमेश जरा भी विचलित न होता। वह कहता—"अगर मैं हिसाब ही ठीक रख सकता तो मेरी ऐसी दशा ही क्यों होती ? फिर मैं भी तो मुनीम-गुमास्ता हो सकता था ! क्यों, ठीक है न, चक्रवर्ती-बाबा ?"

चक्रवर्ती—"रमेश बाबू, खानेके बाद आप इसका न्याय करियेगा। तभी ठीक न्याय न कर सकेंगे। फलहाल मैं इस छोकड़ेको उत्साह दिये बगैर नहीं रह सकता। उमेश बेटा, संग्रह करनेकी विद्या कोई आसान विद्या नहीं। बहुत कम मिलेंगे जो इस विद्यामें पारदर्शी हों। कोशिश सभी करते हैं ; पर सफल कितने होते हैं ! रमेश बाबू, 'गुणिषु प्रमोदम्', गुणियोंको पाकर खुश होना चाहिए। गुणीकी मर्यादा मैं समझता हूँ। जिन चीजोंका मौसम नहीं ऐसी चीजें गजर-दम जाकर जुगाड़ कर लाना कोई मामूली बात है ! महाशय, सन्देह करनेमें क्या है ? सभी कर सकते हैं ; लेकिन संग्रह हजारमें कोई एक ही कर सकता है।"

रमेश—"चचा, यह अच्छा नहीं हो रहा है। उत्साह देकर आप अन्याय कर रहे हैं।"

चक्रवर्ती—"छोकड़ेमें वैसे ही विद्या ज्यादा नहीं है ; थोड़ी-बहुत जितनी है, वह भी उत्साहके अभावमें अगर नष्ट हो जाय तो बड़े खेदकी बात होगी ; कमसे कम जितने दिन हमलोग जहाजमें हैं।" और उमेशसे बोले—"सुन, कल थोड़े-से नीमके पत्ते लेते आना ; और मिले तो करेले भी, समझा ! ये सब चीजें स्वास्थ्यके लिए बहुत लाभदायक हैं। उमेश, तू जा, अपने कामसे लग। फिर रसोईमें देर हो जायगी।"

इस तरह, रमेश उमेशपर जितना ही सन्देह करता और डाटता-डपटता, उमेश उतना ही मानो कमलाका अपना हो उठता। उसपर चक्रवर्ती भी उसकी तरफ हो गये तो कमलाका दल जरा-कुछ अलग-सा हो गया। रमेश एक

तरफ अपनी सूक्ष्म विचार-शक्तिके साथ अकेला है, दूसरी तरफ कमला उमेश और चक्रवर्ती तीनों अपने कर्मसूत्रमें स्नेहसूत्रमें और आमोद-प्रमोदके सूत्रमें घनिष्ठरूपसे एक हैं। चक्रवर्तीके आनेके बादसे, उनके उत्साहके संक्रामक उत्तापसे रमेश कमलाको पहलेकी अपेक्षा ज्यादा उत्सुकतासे देख रहा है, किन्तु उसके गुटमें नहीं मिल पाता। बड़ा जहाज जैसे किनारेसे लगना चाहता है किन्तु पानी कम होनेसे उसे दूर ही लंगर डालकर ताकना पड़ता है, और छोटी-छोटी नावें आसानीसे किनारे लग जाती हैं, रमेशकी भी ठीक वैसी ही दशा हुई।

पूनोंके एकआध रोज पहले, एक दिन सवेरे उठकर देखा गया कि काले काले बादलोंसे आकाश छा गया है। हवा इधर-उधर मारी-मारी फिर रही है। कभी थोड़ा-सा पानी बरस जाता है तो कभी थम जाता है और घाम निकल आती है। बीच-गंगामें आज नाव नहीं हैं; दो-एक जो दिखाई देती हैं वे जल्दी ही किनारे लगनेके लिए उत्कण्ठित हो रही हैं। पानी भरनेवाली स्त्रियाँ आज घाटमें ज्यादा देर न लगाकर जल्दी-जल्दी घर लौट रही हैं। नदीके पानीपर बादलोंसे छन-छनकर कहीं-कहीं धूप पड़ रही है; और क्षण-क्षणमें इस तटसे लेकर उस तट तक नदीका सारा शरीर काँप-काँप उठता है।

जहाज अपनी रफ्तारसे चल रहा है। आँधी-मेहकी भावी आशंकामें ही कमलाका रसोईका काम चलने लगा। चक्रवर्ती आकाशकी तरफ देखते हुए बोले—"बेटी, ऐसा करो, जिससे उस वक्त रसोई न बनानी पड़े। तुम खिचड़ी चढ़ा दो, इतनेमें मैं पूड़ी बनाये लेता हूँ।"

आज बहुत देरसे रसोई उठी। हवाका जोर क्रमशः बढ़ने लगा। नदी फूल-फूलकर ऊपरको आने लगी। सूरज डूबा या नहीं, मालूम नहीं पड़ता। जहाजने जल्दी ही लंगर डाल दिये। शाम हो चुकी। बिखरे-हुए बादलोंमें से सन्निपातके विकारकी फीकी हँसीकी तरह बीच-बीचमें चाँदनीका प्रकाश चमकने लगा। और फिर, खूब जोरोंसे हवा चलने लगी, और मूसलधार वर्षा होने लगी।

कमला एक बार पानीमें डूब चुकी है; नदीमें आँधी-मेहकी वह लापरवाही

नहीं कर सकती। रमेशने आकर उसे तसल्ली दी—"जहाजमें कोई डर नहीं, कमला। तुम निश्चिन्त होकर सो सकती हो। मैं बगलके कमरेमें जागता रहूँगा।"

दरवाजेके पास आकर चक्रवर्तीने कहा—"लक्ष्मी-बेटी, कोई डर नहीं! आँधीके बापकी मजाल क्या जो तुम्हें छू भी जाय!"

आँधीके बापकी मजाल कहाँ तक है, यह बताना जरूर कठिन है; किन्तु आँधीकी मजाल कितनी है सो कमलासे छिपी नहीं। वह जल्दीसे उठकर दरवाजेके पास जाकर बोली—"चाचाजी, तुम कमरेमें भीतर बैठ जाओ।"

चक्रवर्तीने सङ्कोचके साथ कहा—"अब तो तुमलोगोंका सोनेका वक्त हो गया, बेटी, अब मैं—"

कमरेके भीतर आकर उन्होंने देखा कि रमेश नहीं है। उन्हें आश्चर्य हुआ; बोले—"रमेश बाबू ऐसे आँधी-मेहमें कहाँ चले गये? साग-सब्जी चुरानेकी तो उनकी आदत नहीं।"

"कौन, चचा हैं क्या? यह रहा मैं, बगलके कमरेमें।"

चचाने बगलके कमरेमें झाँककर देखा कि रमेश बिस्तरपर अध-लेटा पड़ा है; और बत्तीके उजालेमें किताब पढ़ रहा है। उन्होंने कहा—"बहू-रानी यहाँ अकेली डरके मारे परेशान हैं और आप यहाँ पड़े हैं! अजी, किताबको तो तूफानसे डर नहीं लगता, उसे अभी रख भी दिया जाय तो उसका कुछ नहीं बिगड़ेगा। आइये इस कमरेमें!"

कमलाने अनिवार्य आवेगमें आकर अपनेको भूलकर जल्दीसे चक्रवर्तीका हाथ पकड़ लिया; और रुँधे हुए कण्ठसे बोली—"नहीं नहीं, चाचाजी! नहीं नहीं।" आँधीके कल्लोलमें कमलाकी यह बात रमेशके कानों तक नहीं पहुँची; किन्तु चक्रवर्ती विस्मित होकर वापस चले आये।

रमेश किताब रखकर इस कमरेमें चला आया; और बोला—"कहिये चचा साहब, क्या खबर है? कमलाने शायद आपको—"

कमला रमेशके मुँहकी तरफ न देखकर जल्दीसे बोल उठी—"नहीं नहीं, मैंने तो इन्हें सिर्फ कहानी सुननेके लिए बुलाया है।"

किस बातके प्रतिवादमें कमलाने 'नहीं नहीं' कहा, उससे अगर पूछा जाता तो वह कुछ भी नहीं बता सकती थी। इस 'नहीं' के मानी यही हैं कि मान लो, उसे डर लगता है, सो 'उसके पास किसीके रहनेकी जरूरत नहीं!' मान लो, उसे साथीकी जरूरत है, 'नहीं, कोई जरूरत नहीं!'

दूसरे ही क्षण कमला बोल उठी—"चाचाजी, रात हो रही है, आप सोने जाइये। एक बार उमेशकी खबर ले लीजियेगा, उसे शायद डर लगता होगा!"

दरवाजेके बाहरसे आवाज आई—"जीजी-बाई, मैं किसीसे नहीं डरता।"

उमेश ओढ़-मोड़कर दरवाजेके पास बैठा था। कमलाका हृदय विगलित हो उठा; वह जल्दीसे बाहर जाकर बोली—"क्यों रे, तू पानीमें भीग क्यों रहा है? अभागा कहींका, जा, चाचाजीके साथ चला जा, वहीं सो जाना ठीकसे। ठण्ड न लगाना।"

कमलाके मुँहसे 'अभागा' सम्बोधन सुनकर उमेशको बड़ी-भारी तृप्ति हुई; और वह तुरत चक्रवर्ती-चचाके साथ सोने चला गया।

रमेशने कमलासे पूछा—"जब तक तुम्हें नींद नहीं आती तब तक मैं तुम्हारे पास बैठकर कहानी सुनाऊँ क्या?"

कमलाने कहा—"नहीं, मुझे जोरकी नींद आ रही है।"

रमेशने कमलाके मनका भाव न समझा हो, सो बात नहीं; किन्तु उसने फिर कुछ कहा नहीं। कमलाके अभिमानसे रूठे-हुए चेहरेकी तरफ देखकर वह धीरे-धीरे अपने कमरेमें चला गया।

बिस्तरपर स्थिर होकर नींदकी प्रतीक्षामें पड़ी रह सके इतनी शान्ति कमलाके मनमें नहीं थी। फिर भी वह जबरदस्ती पड़ रही। आँधीके वेगके साथ पानीका कल्लोल भी क्रमशः बढ़ने लगा। खलासियोंका शोरगुल सुनाई देने लगा। बीच-बीचमें इञ्जन-घरमें सारेनकी आदेश-सूचक घण्टी बजने लगी। जोरकी हवाके खिलाफ जहाजको स्थिर रखनेके लिए, लंगरकी हालतमें भी, इञ्जन धीरे-धीरे चलता रहा।

कमला बिस्तरसे उठकर कमरेके बाहर जा खड़ी हुई। क्षण-भरके लिए वर्षा तो थम गई है, पर आँधीकी हवा तीर-लगे जानवरकी तरह चीखती-हुई

इधरसे उधर दौड़ रही है। बादलोंके रहते हुए भी शुक्ला-चतुर्दशीका आकाश क्षीण चाँदनीके उजालेमें अशान्त संहार-मूर्तिका अस्पष्ट-रूपमें दर्शन करा रहा है। किनारा स्पष्ट नहीं दिखाई देता, नदी भी धुँधली दिखाई देती है; किन्तु ऊपर और नीचे, दूर और नजदीक, दृश्य और अदृश्य सबमें एक तरहकी मूढ़ उन्मत्तता, एक तरहका अन्ध-आन्दोलन मानो अद्भुत मूर्ति धारण करके यमराजके उद्यतशृङ्ग काले भैंसेकी तरह सींग हिला-हिलाकर दुनियाको डरा रहा है। ऐसी पागल रात और ऐसे आकुल आकाशकी तरफ देखके कमलाकी छाती काँपने लगी। ऐसा भयसे हो रहा है या आनन्दसे, निश्चितरूपसे कुछ नहीं कहा जा सकता। इस प्रलयमें जो एक बाधाहीन शक्ति, एक बन्धनहीन स्वाधीनता है, उसने मानो कमलाके हृदयमें एक सोई-हुई सङ्गिनीको जगा दिया। इस विश्वव्यापी विद्रोहके वेगने कमलाके चित्तको विचलित कर दिया। किसके खिलाफ यह विद्रोह है, इसका उत्तर क्या इस आँधीके गर्जनमें मिलता है? नहीं, नहीं मिलता। वह भी कमलाके हृदयावेगकी तरह अव्यक्त है। किसी-एक अनिर्दिष्ट अमूर्त मिथ्याका, स्वप्नका, अन्धकारका जाल छिन्न-विच्छिन्न करके बाहर निकल आनेके लिए ही आकाश-पातालकी यह उन्मत्तता है, ऐसा गर्जन-क्रन्दन है! पथहीन प्रान्तरके प्रान्तसे हवा केवल 'नहीं' 'नहीं' चीखती हुई निशीथरात्रिमें दौड़ी आ रही है, यह तो केवल एक प्रबल-प्रचण्ड अस्वीकार है! काहेका अस्वीकार है यह? निश्चित कुछ नहीं कहा जा सकता। किन्तु इसकी चीखमें सिर्फ एक ही ध्वनि है—'नहीं, 'हरगिज नहीं', 'नहीं' 'नहीं' और 'नहीं'!

३०

दूसरे दिन सवेरे आँधीका जोर कुछ घट गया; पर आँधी बिलकुल थमी नहीं। जहाजका सारेन अभी तक तय नहीं कर पाया कि लंगर उठाये या नहीं; उद्विग्न होकर वह आकाशकी तरफ देख रहा है।

सुबह होते ही चक्रवर्ती रमेशके कमरेमें जा पहुँचे। देखा कि रमेश अब तक बिस्तरपर पड़ा ही है। चक्रवर्तीको देखकर वह झटपट उठके बैठ गया। इस कमरेमें रमेशकी शयनावस्था देखकर चक्रवर्तीने कल रातकी

घटनासे मन-ही-मन आजका मिलान कर लिया। बोले—"कल रातको शायद इसी कमरेमें सो गये थे ?"

रमेश असल सवालका जवाब न देकर बोला—"कैसा तूफान शुरू हुआ है बताइये तो ! रातको आपको नींद कैसी आई ?"

चक्रवर्तीने कहा—"रमेश बाबू, मैं बेवकूफ-सा मालूम देता हूँ, मेरी बातें भी वैसी ही होती हैं ; फिर भी इतनी उमर बीत चुकी, मुझे बड़े-बड़े दुरूह विषयोंकी चिन्ता करनी पड़ी है और बहुतोंका हल भी किया है। लेकिन अब देखता हूँ, आप ही सबसे ज्यादा दुरूह हैं।"—

क्षण-भरके लिए रमेशका चेहरा सुर्ख हो उठा ; दूसरे ही क्षण वह अपनेको सम्हालकर मुसकुराता हुआ बोला—"दुरूह होना हमेशा अपराधकी ही बात हो, सो बात नहीं, चचा साहब ! तेलगू भाषाका 'वर्णपरिचय' दुरूह है, पर त्रैलङ्ग बालकके लिए वह पानीके समान सरल है। जिसे न समझ सकें उसे चटसे दोषी करार देना ठीक नहीं। और, अक्षर बगैर समझे, उसपर बार-बार आँख फेरनेसे ही वह समझमें आ जायगा, ऐसी आशा करना भी ठीक नहीं।"

चक्रवर्तीने कहा—"मुझे माफ करना रमेश बाबू। मेरे साथ जिसका घनिष्ठताका खास कोई सम्बन्ध नहीं, उसे समझनेकी कोशिश करना ही धृष्ठता है। परन्तु, दुनियामें क्वचित-कभी एकआध हो ऐसे आदमी मिलते हैं, दृष्टिपात होते ही जिनके साथ सम्बन्ध स्थिर हो जाता है। गवाह चाहें तो आप इस जहाजके दढ़ियल सारेनसे पूछ देखिये। बहूरानीके साथ उसका आत्मीय-सम्बन्ध उसे अभी तुरत मंजूर करना होगा। न करे तो उसे मैं मुसलमान ही न कहूँगा। ऐसी हालतमें अचानक बीचमें तेलगू-भाषा आ धमके, तब तो पूरी मुसीबत ही समझिये। बेमतलब नाराज होनेसे तो काम नहीं चलनेका ! जरा विचार कर देखिये।"

रमेशने कहा—"विचार कर देखा है, इसीसे तो नाराज नहीं हो रहा। लेकिन, मैं चाहे नाराज होऊं या न होऊं, आप चाहे दुःख पायें या न पायें, तेलेगू-भाषा तेलेगू ही रह जायगी ; प्रकृतिका ऐसा ही निष्ठुर नियम है।" कहते हुए उसने एक गहरी साँस ली और चुप हो रहा।

इस बीचमें, रमेश सोचने लगा था कि गाजीपुर जाना चाहिए या नहीं। पहले उसने सोचा था कि अपरिचित जगहमें रहनेके लिए इस बृद्धके साथ परिचय उसके काम आयेगा। किन्तु अब उसे मालूम होने लगा कि परिचयमें असुविधाएँ भी हैं। कमलाके साथ उसका सम्बन्ध अगर आलोचना और अनुसन्धानका विषय बन गया, तो किसी दिन कमलाके लिए वह पीड़ादायक हो उठेगा। इससे अच्छा यह है कि जहाँ सभी अपरिचित हों, जहाँ कोई कुछ पूछनेवाला नहीं, वहीं जाकर रहना चाहिए।

गाजीपुर पहुँचनेके एक दिन पहले रमेशने चक्रवर्तीसे कहा—"चचा, गाजीपुर प्रेक्टिसके लिहाजसे मुझे कुछ कम जचता है, फिलहाल मैंने काशी जाना ही स्थिर किया है।"

रमेशकी बातमें निःसंशयका स्वर सुनकर चक्रवर्ती हँस दिये, बोले—"यह तो अस्थिर करना हुआ! बार-बार भिन्न-भिन्न प्रकारकी बात तय करनेको स्थिर करना नहीं कहते, स्थिर उसका नाम है जो एक जगह स्थिर रहे। खैर, यही सही, काशी जाना फिलहाल आखिरी 'स्थिर' है न?"

रमेशने संक्षेपमें जवाब दिया—"जी हाँ।"

चक्रवर्ती कुछ जवाब न देकर चले गये; और चीज-वस्त बाँधनेमें लग गये। इतनेमें कमलाने आकर कहा—"चाचाजी, आज क्या मेरे साथ अड्डी कर दी है?"

चक्रवर्ती—"झगड़ा तो दोनों ही वक्त हुआ करता है, पर एक दिन भी तो जीत नहीं सका।"

कमला—"आज सवेरेसे तुम मुझसे बचते क्यों फिर रहे हो?"

चक्रवर्तीने कहा—"तुमलोग तो, बेटी, मुझसे भी बढ़कर भागनेकी कोशिशमें हो! अब मुझे तुम कुछ नहीं कह सकतीं।" बातको कमला समझ न सकी, वह उनके मुँहकी तरफ देखती रही। चक्रवर्तीने कहा—"रमेश बाबूने तुमसे कुछ कहा नहीं क्या? उन्होंने काशी जाना तय किया है।"

सुनकर कमलाने 'हाँ' 'ना' कुछ भी नहीं कहा। कुछ देर बाद उसने कहा—"चाचाजी, तुमसे नहीं बनेगा; लाओ, मैं तुम्हारा बकस जचा दूं।"

काशी जानेके सम्बन्धमें कमलाकी इस उदासीनतासे चक्रवर्तीके हृदयको गहरी चोट पहुँची। वे मन-ही-मन सोचने लगे, 'अच्छा ही हुआ, मेरे लिए इस उमरमें नया जाल बिछानेसे फायदा ?' इतनेमें, कमलासे काशी जानेकी बात कहनेके लिए रमेश आ पहुंचा। बोला—"मैं तुम्हें वहाँ ढूंढ़ रहा था।" कमला चक्रवर्तीके कपड़े-लत्ते तह करके रख रही थी। रमेशने कहा—"कमला, इस मरतबा हमारा गाजीपुर जाना न हो सकेगा। मैंने तय किया है कि बनारस जाकर वहीं प्रैक्टिस करूँगा। तुम्हारी क्या राय है ?"

कमला काम करते-करते नीची नजर किये-हुए ही बोली—"नहीं, मैं गाजीपुर जाऊंगी। मैंने अपनी चीज-वस्त सब बांध-बूंधकर तैयार कर ली है।"

कमलाके इस बिना-दुबिधाके निश्चित उत्तरसे रमेशको बड़ा ताज्जुब हुआ; बोला—"तुम क्या अकेली ही चली जाओगी ?"

कमलाने चक्रवर्तीके मुँहकी तरफ स्निग्धदृष्टिसे देखते हुए कहा—"क्यों, वहाँ चाचाजी हैं तो सही !"

कमलाके इस जवाबसे चक्रवर्ती चंचल और संकुचित हो उठे; बोले—"नहीं, बेटी, तुमने अगर अपने चाचाके प्रति इतना पक्षपात किया तो रमेश बाबूके लिए मैं असह्य हो उठूँगा।"

इसके जवाबमें भी कमलाने यही कहा—"मैं गाजीपुर जाऊंगी।" उसके कहनेके ढंगसे ऐसा नहीं मालूम हुआ कि वह किसीकी सम्मतिकी अपेक्षा रखती है।

रमेशने कहा—"चचा, तो फिर गाजीपुर ही जाना तय रहा।"

आंधी-मेहके बाद, उस दिन रातको चाँदनी खूब साफ निकली थी। रमेश डेकपर आरामकुरसी डाले पड़ा-पड़ा सोचने लगा, 'इस तरह कब तक चल सकता है ? क्रमशः विद्रोही कमलाको लेकर उसके जीवनकी समस्या कठिन होती जा रही है। इस तरह पास रहकर दूरत्वको रक्षा करना बड़ा कठिन है। अब आशा छोड़ देनी चाहिए। कमला ही मेरी स्त्री है, मैंने तो उसे स्त्री जानकर ही ग्रहण किया था। मन्त्रोचारण-पूर्वक विवाह नहीं हुआ इस खयालसे सङ्कोच करना अन्याय होगा। यमराजने उस दिन कमलाको वधूके

रूपमें मेरे पास लाकर उस निर्जन टापूमें स्वयं गठबन्धन कर दिया था ; उनसे बढ़कर पुरोहित संसारमें और कौन हो सकता है ?'

हेमनलिनी और रमेशके बीच एक युद्धक्षेत्र पड़ा हुआ है। बाधा, अपमान और अविश्वास दूर करके रमेश अगर विजयी हो सके, तभी वह अपना सिर ऊंचा करके हेमनलिनीके पास खड़ा हो सकता है। उस युद्धका खयाल आता है तो उसे डर मालूम होता है ; जीतनेकी कोई आशा ही नहीं दिखाई देती। कैसे वह अपनी सफाई देगा ? और अगर वह सचाई प्रमाणित करना चाहे तो सारी बातें जन-साधारणके सामने ऐसी भद्दी और कमलाके लिए ऐसी जबरदस्त चोट पहुँचानेवाली होंगी कि मनमें उसकी कल्पना करना भी पीड़ादायक है। इसलिए, मनमें कमजोरी लाकर अब दुबिधा करना ठीक नहीं, कमलाको स्त्रीके रूपमें ग्रहण करना ही सबसे अच्छा है। हेमनलिनी भी उससे घृणा करने लगी है ; यह घृणा ही उसे किसी योग्य वरको हृदय-समर्पण करनेमें मदद करेगी। यह सोचकर उसने एक गहरी साँस ली ; और उसके साथ ही उसने अपनी दुबिधा भी छोड़ दी।

२१

रमेशने उमेशसे पूछा—"क्या रे, कहाँ चला ?"

उमेशने कहा—"मैं जीजी-बाईके साथ जा रहा हूँ।"

रमेश—"मैंने तो तेरे लिए काशीका टिकट कटाया है। यह तो गाजीपुर है। हम तो अब काशी नहीं जा रहे हैं।"

उमेश—"मैं भी नहीं जाता काशी।"

रमेशके मनमें ऐसी आशंका नहीं थी कि उमेश उनलोगोंके साथ स्थायी रूपसे रहेगा। किन्तु लड़केकी अविचलित दृढ़ता देखकर रमेशको दंग रह जाना पड़ा। उसने कमलासे पूछा—"कमला, उमेश भी अपने साथ जायगा क्या ?"

कमलाने कहा—"नहीं तो वह कहाँ जायगा ?"

रमेश—"क्यों, काशीमें उसकी नानी रहती है न ?"

कमला—"नहीं, वह हमारे ही साथ रहना चाहता है। उमेश, तू चाचाजीके साथ-साथ रहना ; नहीं तो परदेसमें इधर-उधर भटक जायगा।"

कहाँ जाना है, किसे साथ लेना है, इन सब बातोंका फैसला कमला खुद ही करने लगी। रमेशकी इच्छा-अनिच्छाके बन्धनको कमला पहले नम्रतासे स्वीकार करती थी, पर इधर कई दिनोंसे सहसा वह स्वाधीन हो गई है। लिहाजा, उमेश भी अपनी छोटी-सी पोटली बगलमें दबाकर उसके साथ जानेको तैयार हो गया। इस विषयमें फिर किसी तरहकी चर्चा नहीं हुई।

शहर और साहबी मुहल्लेके बीचमें एक जगह चक्रवर्ती-चचाका छोटा-सा बंगला है। उसके पीछे आमका बाग है, और बगलमें पक्का कुआ। सामने नीची दीवार है। कुएके पानीसे गोभी और छीमीका खेत सींचा जाता है।

पहले दिन कमला और रमेश उस बंगलेमें ही ठहरे। चक्रवर्ती लोगोंमें प्रचार किया करते हैं कि उनकी स्त्री हरिभामिनीकी तबीयत ठीक नहीं रहती; किन्तु उन्हें देखकर ऐसा नहीं मालूम हुआ कि वे बीमार या कमजोर हैं। उनकी उमर कम नहीं, पर चेहरेपर सामर्थ्य और मजबूती झलकती है। सामनेके कुछ बाल सफेद हो गये हैं, बाकीके सब काले हैं। उनपर बुढ़ापेने मानो डिक्री तो पा ली है, पर दखल अभी नहीं पाया। असलमें बात यह है कि यह दम्पती जब तरुण थी, तब हरिभामिनीको मैलेरियाने खूब जोरसे जकड़ लिया था। आब-हवा बदलनेके सिवा और कोई उपाय न देख चक्रवर्तीने गाजीपुरके स्कूलमें हेड-मास्टरी कर ली; और तबसे वे वहीं रहने लगे। स्त्री सम्पूर्णतः स्वस्थ होनेपर भी चक्रवर्तीको उनके स्वास्थ्यपर जरा भी विश्वास नहीं है।

अतिथियोंको बाहरके कमरेमें बिठाकर चक्रवर्ती साहब भीतर गये; और आवाज दी—"सुनती हो!"

'सुनती हो' तब प्राचीर-वेष्टित आँगनमें बैठी रामकौलसे आटा पिसवा रही थीं; और साथ-साथ छोटे-बड़े नानाप्रकारके भाँड़ोंमें अचार और खटाई वगैरह घाममें सुखाने रख रही थीं। चक्रवर्तीने भीतर आकर कहा—"यह क्या! ठंड पड़ने लगी है, अलवान तो ओढ़ लिया होता।"

हरिभामिनी—"तुम्हें हमेशा डर ही लगा रहता है। ठंड है कहाँ, धूपसे मेरी पीठ तो जली जा रही है।"

चक्रवर्ती—"यह भी अच्छा नहीं। छाया ऐसी कोई कीमती चीज नहीं जो दुर्लभ हो।"

हरिभामिनी—"अच्छा, देखा जायगा। तुमने इतने दिन कैसे लगा दिये?"

चक्रवर्ती—"यह सब पीछे सुनना। फिलहाल, घरमें जो अतिथि आये हैं उनकी सेवाकी तयारी करनी है।" इतना कहकर उन्होंने अतिथियोंका परिचय दिया। उनके घर इस तरहके अतिथियोंका समागम यह नया नहीं है, अकसर ऐसा हुआ करता है। मगर, सस्त्रीक अतिथिके लिए हरिभामिनी तैयार नहीं थीं; उन्होंने कहा—"वाह जी वाह, अपने यहाँ इतने कमरे कहाँ हैं?"

चक्रवर्तीने कहा—"पहले परिचय तो होने दो, उसके बाद कमरोंकी बात सोची जायगी। शशी कहाँ है?"

हरिभामिनी—"वो अपनी लड़कीको नहला रही है।"

चक्रवर्ती जल्दीसे जाकर कमलाको भीतर ले आये। कमलाने हरिभामिनीके पाँव छुए। हरिभामिनीने उसे पुचकारा; और अपने पतिसे कहा—"देखा, चेहरा बिलकुल अपनी विधु सरीखा है न!"

विधुमुखी इनकी बड़ी लड़कीका नाम है। वह अपनी ससुरालमें इलाहाबाद रहती है। चक्रवर्ती मन-ही-मन हँस लिये; वे समझते हैं कि कमलाके साथ विधुका कुछ भी सादृश्य नहीं, पर हरिभामिनी रूप-गुणमें बाहरकी किसी लड़की की जीत मंजूर नहीं कर सकतीं। शशिमुखी उन्हींके घर रहती है, और प्रत्यक्ष तुलनामें उसकी हार हो सकती है, इसलिए अनुपस्थितकी उपमा देकर गृहणीने अपनी जय-पताका फहरा दी।

हरिभामिनीने कहा—"इनलोगोंके आनेकी मुझे बड़ी खुशी हुई। अपने छोटे मकानकी मरम्मत हो रही है। यहाँ इनलोगोंको बड़ी तकलीफ होगी। कोई इन्तजाम करो तो ठीक हो।"

बाजारमें चक्रवर्तीका एक छोटा-सा मकान है, पर असलमें उसे दूकान कहना चाहिए; वहाँ घर-गृहस्थोके लायक सुविधा नहीं। किन्तु चक्रवर्तीने इस झूठका कोई प्रतिवाद नहीं किया; जरा हँसकर बोले—"बेटी अगर मेरे साथ रहनेमें तकलीफ ही समझती तो अपने घर इन्हें मैं लाता ही क्यों?

(रसोईसे) खैर, और-सब पीछे देखा जायगा। तुम अब ज्यादा ठण्ड न लगाओ, कुछ ओढ़ लो।" इतना कहकर वे रमेशके पास बाहर चले गये।

हरिभामिनी कमलाका विस्तृत परिचय लेने लगीं—"तुम्हारे पति वकील होंगे? काम शुरू किये कितने दिन हुए? कितना रोजगार हो जाता है? अभी वकालत शुरू नहीं की? तो खर्च कहाँसे चलता है? तुम्हारे ससुर सम्पत्ति छोड़ गये होंगे? नहीं मालूम? तुम हो कैसी! सुसरालको कुछ खबर ही नहीं रखती? घर-खचके लिए पति तुम्हें महीनेमें कितने रुपये देते हैं? जब कि सासु नहीं हैं तो घरका सारा भार तुम्हें अपने हाथमें ले लेना चाहिए। तुम कोई नन्हीं-सी बच्ची थोड़े ही हो! मेरा तो बड़ा दामाद जो-कुछ रोजगार करता है, सब विधुके हाथमें सौंप देता है।" इत्यादि असंख्य प्रश्न करके थोड़ी ही देरमें उन्होंने कमलाको 'भोली लड़की' साबित कर दिया। और इससे, कमला भी समझ गई कि रमेशकी अवस्था और इतिहासके सम्बन्धमें वह कितना थोड़ा जानती है; और उनके सम्बन्धके देखे उसकी यह अज्ञानता कितनी असङ्गत और लज्जाजनक है। वह सोचने लगी, आज तक रमेशके साथ अच्छी तरह बातचीत करनेका उसे कभी मौका ही नहीं मिला। रमेशकी स्त्री होकर भी वह उसके विषयमें कुछ नहीं जानती। यह बात आज उसे अद्भुत-सी मालूम हुई; और मारे शरमके वह गड़-गड़ गई।

हरिभामिनीने फिर शुरू किया—"बहू, देखूं तुम्हारे कड़े! यह सोना तो उतना अच्छा नहीं! मायकेसे कुछ गहने नहीं मिले? बाप नहीं हैं? इससे क्या, लड़कीको कहीं कोई इस तरह विदा करता है? तुम्हारे पतिने तुम्हें कुछ नहीं दिया? मेरा बड़ा दामाद हर दूसरे महीने विधुको कोई-न-कोई चीज बनवा ही देता है।" ये सवाल-जवाब चल ही रहे थे कि इतनेमें शशिमुखी अपनी दो सालकी बच्चीका हाथ पकड़े वहाँ आ पहुँची। शशिमुखीका रंग साँवला है, मुँह छोटा-सा, मुट्ठीमें आने लायक; आँखें चमकदार, ललाट चौड़ा, चेहरा देखते ही मालूम हो जाता है कि उसमें स्थिर बुद्धि और शान्त परितृप्तिकी कमी नहीं। शशिमुखीकी छोटी लड़की कमलाके सामने खड़ी होकर क्षण-भर उसे गौरसे देखकर बोल उठी—"मौसी!" उसने कोई

विधुमुखीका सादृश्य विचारकर 'मौसी' कहा हो सो बात नहीं। एक खास उमरकी कोई भी लड़की अगर उसे अप्रिय न लगे, तो उसको वह अनायास ही 'मौसी' कह देती है। कमलाने उसी क्षण उसे गोदमें उठा लिया। हरिभामिनीने शशिमुखीका परिचय देते हुए कहा—"इसके पति भी वकील हैं; अभी हाल ही में काम करना शुरू किया है।"

शशिमुखीने कमलाके मुँहकी ओर देखा, कमलाने भी उसके मुँहकी तरफ देखा; और उसी क्षण दोनोंमें सखीका सम्बन्ध हो गया। हरिभामिनी अतिथि-सत्कारकी तैयारी करने चली गईं। शशिमुखीने कमलाका हाथ पकड़के कहा—"आओ बहन, मेरे कमरेमें आओ।"

थोड़ी ही देरमें दोनोंमें घनिष्ठता हो गई। शशिमुखीके साथ कमलाकी उमरका जो पार्थक्य है वह सहसा नजरमें नहीं आता। शशिमुखीका कुल मिलाकर छोटा-मोटा संक्षिप्त भाव है; और कमला ठीक उससे उलटी है, आयतन और हाव-भावमें वह अपनी उमरसे आगे बढ़ गई है। ब्याहके बाद उसके ऊपर सुसरालका कोई भार न होनेसे हो या और-किसी कारणसे हो, देखते-देखते वह बिना किसी संकोचके बढ़ती चली जा रही थी। उसके चेहरेपर एक तरहका स्वाधीन तेज था। उसके सामने जो-कुछ भी आता है, उसपर कम-से-कम मन-ही-मन प्रश्न करनेमें उसके कोई रुकावट नहीं थी। सुसरालकी "चुप रहो", "जो कहा है सो सुनो", "बहुओंको ज्यादा चतुराई दिखानेकी जरूरत नहीं" इत्यादि बातें उसे नहीं सुननी पड़ीं। इसीसे शायद वह सिर ऊँचा करके सीधी खड़ी हो सकती है; उसकी सरलतामें सबलता मौजूद है।

शशिमुखीकी लड़की उमा उन दोनोंका पूरा ध्यान अपनी तरफ खींचनेकी बराबर कोशिश करती रही, फिर भी नई सखियोंमें परस्पर बातोंका सिलसिला खूब जम उठा। इस बातचीतमें कमलाने अपनी तरफ काफी कमी महसूस की। शशिमुखीके अन्दर कहनेको बहुत-सी बातें हैं, कमलाके पास कुछ नहीं। कमलाके जीवनके चित्रपटपर उसके दाम्पत्यका जो चित्र अब तक अंकित हुआ है वह पेन्सिलकी रेखाओंके सिवा और कुछ नहीं; उसमें अभी स्पष्टता और परिस्फुटताकी कमी है। कमला अब तक इस शून्यताको साफ-साफ समझ

नहीं पाई थी, और न इसके लिए उसे अवकास ही मिला था। अपने हृदयमें उसे अभाव महसूस जरूर हुआ है, पर उस अभावका रूप क्या है सो उसे नहीं मालूम था। कभी-कभी विद्रोही भाव भी आया है, किन्तु उसका अर्थ उसकी समझमें नहीं आया। मित्रताके आरम्भमें ही शशिमुखीने जब अपने पतिकी बातें बताना शुरू किया तो जिस सुरमें उसके हृदयके सब तार बँधे हुए थे उनपर उँगलियाँ पड़ते ही वे उसी सुरमें बज उठे; और तब कमलाने देखा कि उसके अपने हृदयमें वैसे सुरकी कोई झङ्कार ही नहीं; पतिकी बातें वह क्या बतावे, बताने लायक ऐसी बात ही क्या है! सुखका बोझ लेकर शशिका इतिहास जहाँ जोरोंसे बहता जा रहा है, कमलाकी रीती नाव वहाँ जमीनसे ही लगी हुई है।

शशीका पति विपिन गाजीपुरमें आबगारी-विभागमें काम करता है। चक्रवर्तीकी दो लड़कियाँ हैं। बड़ी लड़की सुसरालमें है। छोटीको वे इस डरसे दूर न दे सके कि फिर उनके पास रह ही कौन जायगा? इसलिए उन्होंने एक गरीब लड़केसे उसका ब्याह कर दिया; और उसे अपने पास ही रखकर यहीं नौकरी लगा दी है। विपिन इन्हींके घर रहता है। बात करते-करते सहसा शशी बोल उठी—"तुम यहीं बैठना जरा, मैं अभी आई।" और दूसरे ही क्षण जरा-सा मुसकराकर कारण भी बता दिया—"वे नहा-धोकर तैयार हैं, खा-पीकर आफिस जायेंगे, उन्हें विदा कर आऊँ।" कमलाने आश्चर्यके साथ पूछा—"वे नहा-धोकर तैयार हैं, तुम्हें कैसे मालूम हुआ?" शशीने कहा—"हँसी क्यों उड़ाती हो! जैसे सबको मालूम होता है वैसे ही मुझे हो गया। तुम 'उन'के पैरोंकी आहट कैसे जान जाती हो?" इतना कहकर वह कमलाकी ठोड़ी हिलाकर, सिरका पल्ला सम्हालकर, लड़कीको गोदमें लेकर वहाँसे चल दी। पगध्वनिकी भाषा इतनी सहज है, कमलाको इस बातका अब तक पता नहीं था। वह चुपचाप बैठी जंगलेके बाहर देखती हुई न-जाने क्या-क्या सोचती रही। जंगलेके बाहर अमरूदके पेड़की डालियाँ फूलोंसे छा गई हैं, और उनपर मधुमक्खियोंका मेला-सा लग गया है।

३२

गंगाके किनारे खुली जगहमें अलग मकान लेनेकी कोशिश चल रही है। रमेशको गाजीपुरकी अदालतमें नियमानुसार प्रवेशाधिकार पानेके लिए और अपने कामकी चीज-वस्त लानेके लिए एक बार कलकत्ता जाना पड़ेगा; किन्तु उसे कलकत्ता जानेकी हिम्मत नहीं पड़ती। कलकत्ताकी एक गलीका चित्र उसके मनमें उदित होते ही उसकी छाती धड़कने लगती है। अभी तक वहाँका जाल टूटा नहीं है; और इधर कमलाके साथ पति-पत्नीका सम्बन्ध सम्पूर्णरूपसे स्वीकार करनेमें देर करनेसे काम नहीं चल सकता। इसी उधेड़-बुनमें उसका कलकत्ता जाना बार-बार स्थगित होने लगा।

कमला चक्रवर्तीके अन्तःपुरमें ही रहती है। बंगलेमें कमरे कम होनेसे रमेशको बाहरकी बैठकमें ही रहना पड़ता है। कमलासे मिलनेका उसे मौका ही नहीं मिलता। इस अनिवार्य विच्छेदके विषयमें शशिमुखी बार-बार कमलासे अपना दुःख प्रकट करने लगी। कमलाने कहा—"बहन, क्यों तुम इतनी फड़फड़ाती रहती हो? ऐसी क्या बात है जिसके बिना चैन नहीं पड़ेगा?"

शशीने हँसते हुए कहा—"अहा हा! ऐसी क्या बात है, सो क्या मैं नहीं समझती? मनमें जो बीत रही है सो मैं जानती हूँ।"

कमलाने पूछा—"अच्छा बहन, सच बताओ, दो-चार दिन अगर विपिन बाबू तुमसे न मिलें, तो क्या तुम—"

शशिमुखीने गर्वके साथ कहा—"हाँ हाँ, दो-चार दिन बिना मिले उन्हें चैन पड़ेगा न!"

इतना कहकर वह विपिन बाबूके अधैर्यके सम्बन्धमें किस्से सुनाने लगी। ब्याहके बाद पहले-पहल बचपनमें विपिनने बड़े-बूढ़ोंका व्यूह भेदकर अपनी बालिका बधूसे मिलनेके लिए कैसी-कैसी तरकीबें निकाली थीं, कब-कब वे असफल रहीं और कब-कब चोरी पकड़ी गई, दिनमें मिलनेको मनाहीका दुःख मिटानेके लिए भोजन करते समय आईनेमें कैसे चार आँखें होती थीं, ये सब बातें कहते-कहते पुरानी स्मृतियोंके आनन्दमें शशिमुखीका चेहरा हास्योज्ज्वल

हो उठा। उसके बाद जब आफिस जानेका किस्सा शुरू हुआ तो दोनोंकी हृदय-वेदना और जब-तब आफिससे भाग आनेकी बातें करते-करते वह बहुतसे किस्से सुना गई। एक बारका किस्सा है कि ससुरके किसी कामसे कुछ दिनोंके लिए विपिनको पटना जाना पड़ा था; तब शशीने उससे पूछा, 'पटनामें तुम अकेले रह सकोगे?' विपिनने गर्वके साथ कहा था, 'क्यों, अकेले रहनेमें मुझे डर लगता है क्या?' इससे शशीको बड़ी ठेस लगी थी, उसने रूठकर प्रतिज्ञा कर ली थी कि जानेके पहले, रातको, वह जरा भी दुःख प्रकट नहीं करेगी। किन्तु उसकी वह प्रतिज्ञा ऐन वक्तपर आँसुओंमें ऐसी बह गई कि उसका फिर कहीं पता ही न लगा। और दूसरे दिन विपिन जब जानेको तैयार हुआ तो अचानक उसका ऐसा सिर दुखने लगा कि यात्रा स्थगित रखकर डाक्टरकी शरण लेनी पड़ी; और अन्तमें दवा नालीमें डालकर किस तरह रोग दूर हुआ, यह कहते-कहते शाम हो गई। इतनेमें सहसा दूरसे किसीके पैरोंकी आहट सुनकर वह चंचल हो उठी। विपिन आफिससे लौटा है। बातचीतकी इस तल्लीनतामें भी शशीके कान इसी आहटकी बाट देख रहे थे।

कमलाके लिए ये बातें बिलकुल आकाश-कुसुम ही हों सो बात नहीं। इस तरहका आभास उसे कुछ-कुछ मिला है। पहले-पहल कई महीने तक रमेशके साथ प्रथम-परिचयके रहस्यमें इसी तरहकी एक रागिणी बजा करती थी। उसके बाद, स्कूलसे निकलकर कमला जब दुबारा रमेशके पास आई तब भी कभी-कभी ऐसी तरंगोंने अपूर्व संगीत और रमणीय नृत्यसे उसके हृदयपर आघात किये हैं, जिसके ठीक मानो वह शशिमुखीके इन किस्सोंसे समझ रही है। पर उसका यह सब-कुछ टूटा-फूटा है, उसमें धाराबाहिकता कुछ भी नहीं। मानो उसे किसी एक परिणाम तक नहीं पहुँचने दिया गया। शशिमुखी और विपिनमें जो एक आग्रहका खिंचाव है, वैसा खिंचाव रमेश और कमलामें कहाँ है? इधर जो कई दिनोंसे उन दोनोंका मेल नहीं हो रहा है, उससे उसके मनमें अस्थिरता कहाँ पैदा हो रही है? और रमेश भी क्या उसे देखनेके लिए बाहर बैठा-बैठा तरह-तरहकी तरकीबें सोच रहा होगा? उसे विश्वास नहीं होता।

इस बीचमें, जिस दिन रविवार आया, उस दिन शशी जरा-कुछ परेशानीमें पड़ गई। उसे अपनी नई सखीको दिन-भरके लिए बिलकुल अकेली छोड़नेमें शरम मालूम होने लगी; और नहीं छोड़ती है तो आजकी छुट्टी बिलकुल व्यर्थ चली जाती है। इतना बड़ा त्याग उससे करते नहीं बनता। दूसरे, रमेश बाबूके इतने पास रहते हुए भी कमला जब कि मिलनसे वंचित है तब छुट्टीके उत्सवका पूरा आनन्द लेनेमें उसका हृदय व्यथित होने लगा। किसी तरह रमेशसे कमलाका मेल हो जाता तो वह सुखसे छुट्टी बिता सकती।

इन सब विषयोंमें बड़े-बूढ़ोंसे सलाह-मशविरा नहीं किया जा सकता। किन्तु चक्रवर्ती-चचा सलाह-मशविराके भरोसे रहनेवाले आदमी नहीं। उन्होंने घरमें प्रचार कर दिया कि आज वे किसी जरूरी कामसे बाहर जा रहे हैं। रमेशको समझा गये कि आज उनके घर बाहरका कोई नहीं आनेवाला, वे बाहरका फाटक बन्द करके चले जा रहे हैं। और यह संवाद अपनी लड़कीको भी सुना गये। संवादका गूढ़ अर्थ समझना शशीके लिए कठिन न था।

नहानेके बाद शशीने कहा—"आओ बहन, तुम्हारा जूड़ा बाँध दूँ।"

कमलाने कहा—"क्यों, आज इतनी जल्दी काहेकी है?"

शशी—"सो पीछे बताऊँगी, पहले जूड़ा बाँध दूँ।" कहकर कमलाको अपने सामने बिठा लिया; और बड़े समारोहके साथ उसका जूड़ा बाँधने लगी। बहुत देर तक केश-विन्यास होता रहा। उसके बाद कपड़े पहननेके विषयमें जबरदस्त बहस छिड़ गई। कमलाकी कुछ समझ ही में न आया कि शशी उसे एक खास रंगीन साड़ी पहनानेके लिए क्यों इतनी जिद कर रही है? अन्तमें, शशीको खुश करनेके लिए उसे वह साड़ी पहननी ही पड़ी।

दोपहरको खाना-पीना हो जानेके बाद शशी अपने पतिके कानमें कुछ कहकर थोड़ी देरके लिए छुट्टी ले आई। उसके बाद कमलाको बाहरकी बैठकमें भेजनेके लिए वह उसके पीछे पड़ गई।

इसके पहले कमला रमेशके पास अनेकों बार बिना किसी सङ्कोचके यों ही गई है। इस सम्बन्धमें समाजमें लज्जा दिखानेका कोई विधान है, इतना सोचनेका उसे कभी अवसर ही नहीं मिला। परिचयके आरम्भमें ही रमेशने

उसकी लज्जा दूर कर दी थी ; और निर्लज्जताका दोष देकर धिक्कार देनेवाली साथिन भी उसके आसपास कोई नहीं थी। किन्तु आज, शशिमुखीका अनुरोध पालन करना उसके लिए दुःसाध्य हो उठा। पतिके पास शशी जिस अधिकारसे जाती है उसे वह जान गई है। कमला उस अधिकारका गौरव जब कि अपनेमें अनुभव ही नहीं कर रही, तो दीनभावसे आज वह कैसे जाय?

कमला जब किसी भी तरह राजी नहीं हुई तो शशीने समझा, रमेशसे वह रूठी हुई है ; यह मानिनीका मान है। क्यों न हो, कई दिन बीत गये, रमेश बाबू क्या किसी भी बहानेसे एक बार उससे मिल नहीं सकते थे?

शशीकी मा उस समय खा-पीकर अपने कमरेका दरवाजा बन्द करके सो गई थीं। शशीने विपिनसे कहा—"रमेश बाबूको तुम आज कमलाका नाम लेकर भीतर बुला लाओ। बापूजी कुछ नहीं कहेंगे ; और माको कुछ मालूम ही नहीं पड़ेगा।" विपिन जैसे संकोचशील आदमीके लिए इस तरहका दौत्य करना किसी भी हालतमें रुचिकर नहीं हो सकता ; फिर भी, छुट्टीके दिन खासकर किये-जानेवाले इस अनुरोधकी वह उपेक्षा न कर सका।

रमेश तब बाहरकी बैठकमें जाजिमपर चित्त पड़ा हुआ 'पायोनियर' अखबार पढ़ रहा था। पाठ्य विषय खतम करके, कामके अभावमें जब वह विज्ञापनोंकी तरफ ध्यान दे रहा था तब अचानक विपिनको आते देख वह प्रसन्न होकर उठ बैठा। साथीके लिहाजसे विपिन कोई पहले दरजेकी चीज नहीं, फिर भी, विदेशमें दोपहरका वक्त काटनेके लिए रमेशने उसे परम-लाभके रूपमें ही ग्रहण किया ; बोल उठा—"आइये विपिन बाबू, आइये, बैठिये।"

विपिन बैठा नहीं, खड़ा-खड़ा ही सिरपर हाथ फेरता हुआ बोला—"आपको भीतर वे जरा बुला रही हैं।"

रमेशने पूछा—"कौन, कमला?"

विपिन बोला—"हाँ।"

रमेश कुछ आश्चर्यमें पड़ गया। हालाँ कि उसने पहले ही तय कर लिया था कि अब वह कमलाको स्त्रीके रूपमें ही ग्रहण करेगा, किन्तु फिर भी, उसका स्वभावतः दुबिधा करनेवाला मन, उसके पहले, इधर कई दिनोंसे विश्राम कर

रहा था ; इसलिए वह ऐसी बुलाहटके लिए तैयार नहीं था। अपनी कल्पनामें कमलाको गृहिणीके पदपर अभिषिक्त करके उसने अपने मनको नानाप्रकारके भावी सुखके आश्वाससे उत्तेजित भी कर लिया था, किन्तु प्रथम-आरम्भ ही उसके लिए दुरूह हो रहा था। कुछ दिनसे कमलासे जितनी दूर रहनेका उसे अभ्यास हो गया था, सहसा उसे कैसे तोड़े, उसकी कुछ समझमें नहीं आ रहा था ; और इसीलिए किसी तरहकी ज्यादती करनेकी उसे कोई जल्दी नहीं थी।

'कमला बुला रही है' सुनकर रमेश सोचने लगा, कमलाको मुझसे कोई जरूरी काम होगा। फिर भी, जरूरी कामकी पुकार होनेपर भी, उसके मनमें एक तरहकी हिलोर उठने लगी। 'पायोनियर' छोड़कर जब वह विपिनके पीछे-पीछे भीतर जाने लगा तो उस मधुकर-गुञ्जित कार्तिकके अलस-दीर्घ जनहीन मध्याह्नमें एक तरहके अभिसारके आभासने उसके चित्तको चञ्चल कर दिया।

विपिन कुछ दूरसे कमरा दिखाकर चलता बना। कमलाने समझा था कि शशी उसके विषयमें निराश होकर विपिनके पास चली गई है। और इसलिए वह खुले दरवाजेकी चौखटपर बैठी सामनेके बगीचेकी तरफ देख रही थी। शशीने न-जाने कैसे कमलाके भीतर और बाहर प्रेमका एक मीठा सुर बाँध दिया है। कुछ-गरम हवासे बाहर पेड़के पत्ते जैसे मरमराकर काँप उठते हैं, कमलाकी छातीके भीतर भी उसी तरह गहरी साँसोंकी हवासे अव्यक्त वेदनाका एक अपूर्व स्पन्दन शुरू हो गया है।

इतनेमें रमेशने कमरेमें आकर जब उसे पुकारा, 'कमला!' तो वह चौंक कर तुरत उठ खड़ी हुई। उसके हृदयका रक्त तरङ्गित हो उठा। जो कमला इसके पहले कभी भी रमेशसे विशेष नहीं शरमाई, आज वह अच्छी तरह मुँह उठाकर उसकी तरफ देख भी न सकी। उसकी लोलकियाँ सुर्ख हो उठीं। आजके साज-सिंगार और भाव-आभाससे रमेशने कमलाको नई मूर्तिमें देखा। सहसा कमलाके विकाशने उसे आश्चर्यमें डाल दिया, वह मन्त्रमुग्ध-सा खड़ा-खड़ा देखता रहा ; और दूसरे ही क्षण धीरे-धीरे कमलाके पास खड़ा होकर मृदुस्वरमें बोला—"कमला, तुमने मुझे बुलाया है?"

कमला चौंक उठी ; और अनावश्यक उत्तेजनाके साथ बोली—"नहीं-नहीं, मैंने नहीं बुलाया, मैं क्यों बुलाने लगी !"

रमेशने कहा—"बुलानेमें दोष क्या है कमला ?"

कमला दूनी प्रबलताके साथ बोली—"नहीं, मैंने नहीं बुलाया।"

रमेशने कहा—"तो अच्छा ही है। तुम्हारे बुलानेके पहले ही मैं आ गया ! अब क्या मुझे अनादरसे लौट जाना पड़ेगा ?"

कमला—"तुम यहाँ आये हो, सब जान जायेंगे तो नाराज होंगे। तुम जाओ ! मैंने तुम्हें नहीं बुलाया।"

रमेशने कमलाका हाथ दबाते हुए कहा—"अच्छा, तुम बाहर मेरे कमरेमें चलो। वहाँ कोई भी नहीं है।"

काँपती-हुई कमलाने जल्दीसे रमेशका हाथ छुड़ाकर अलग कर दिया और बगलके कमरेमें भागकर भीतरसे दरवाजा बन्द कर लिया। रमेशने समझा, यह सब-कुछ घरकी किसी तरुणीका षड़यन्त्र है ; और वह पुलकित-चित्तसे बाहरकी बैठकमें चला गया। चित पड़कर फिर एक बार वह 'पायोनियर' पढ़नेकी कोशिश करने लगा, किन्तु मानो कुछ भी समझमें नहीं आये। उसके हृदयाकाशमें भावोंके रंग-बिरंगे बादल इधरसे उधर उड़ते फिरने लगे।

शशीने आकर बाहरसे दरवाजा खटखटाया। किसीने दरवाजा नहीं खोला। तब उसने दरवाजेकी झिलमिली उठाकर हाथ बढ़ाकर साँकल खोल दी। कमरेमें घुसकर उसने देखा, कमला जमीनपर औंधी पड़ी दोनों हथेलियोंपर मुँह रखे रो रही है ! देखकर वह दंग रह गई। ऐसी क्या बात हो सकती है जिससे कमलाको इतनी गहरी ठेस लगी हो ? जल्दीसे उसके पास जाकर स्निग्ध कण्ठसे उसने कानमें पूछा—"क्यों बहन, तुम्हें क्या हो गया, रो क्यों रही हो ?"

कमलाने कहा—"तुमने क्यों उन्हें भीतर बुलाया ? यह तुम्हारा बड़ा-भारी अन्याय है।"

कमलाके इस आकस्मिक आवेगकी प्रबलताको समझना दूसरोंके लिए तो कठिन है ही, खुद उसके लिए भी आसान नहीं। इस बीचमें उसके अन्दर

कितनी गुप्त वेदनाओंका सञ्चार हुआ है, कोई नहीं जानता। कमला आज अपने कल्पना-लोकमें पूरे अधिकारके साथ बैठी थी। रमेश अगर खूब आसानीसे उसमें घुस सकता, तो वह दोनोंके लिए अत्यन्त सुखकर होता। किन्तु उसे जो बुलवाया गया, इससे सब मटियामेट हो गया। छुट्टीके दिनोंमें स्कूलमें उसे कैद कर रखनेकी कोशिश, स्टीमरमें रमेशकी तरफसे उपेक्षा-भाव, इन सब बातों ने उसके मनकी गहराईमें खलबली पैदा कर दी थी। रमेश खुद आता तो भी वह मिलन होता और बुलानेपर आया तो भी मिलन ही हुआ, ऐसा वह नहीं समझती। असल बात क्या है, सो गाजीपुर आनेके बाद वह थोड़े ही दिनमें स्पष्ट समझ गई है। किन्तु, शशीके लिए ये सब बातें समझना मुश्किल है। कमला और रमेशके बीच सचमुचका कोई व्यवधान हो सकता है, शशी इसकी कल्पना भी नहीं कर सकती। उसने बड़े प्यारसे कमलाका सिर अपनी गोदमें रखते हुए पूछा—"क्यों बहन, रमेश बाबूने क्या तुमसे कोई कड़ी बात कह दी है? शायद 'वे' उन्हें बुलाने गये थे इसलिए नाराज हो गये होंगे? तुमने कह क्यों नहीं दिया कि यह सब मेरी करतूत है?"

कमलाने कहा—"नहीं-नहीं, उन्होंने कुछ भी नहीं कहा। पर, क्यों तुमने उन्हें बुलवाया?"

शशी दुःखित होकर बोली—"अच्छा, मुझसे गलती हो गई बहन, माफ करो।"

कमला चटसे उठकर उसके गलेसे लिपट गई, बोली—"जाओ बहन, तुम जाओ, विपिन बाबू गुस्सा हो रहे होंगे।"

बाहर बैठकमें अकेला लेटा हुआ रमेश कुछ देर तक 'पायोनियर' पढ़नेकी वृथा कोशिश करता रहा, और फिर उसे झटकेसे उठाकर दूर फेंक दिया। उसके बाद उठके बैठ गया, और अपने आपको कहने लगा, 'नहीं, अब नहीं। कल ही कलकत्ता जाकर तैयार हो जाऊँगा। कमलाको स्त्रीके रूपमें स्वीकार करनेमें जितनी ही देर हो रही है, उतना ही उसपर अन्याय हो रहा है।' और इस तरह, रमेशकी कर्त्तव्य-बुद्धि आज अचानक जाग उठी; और वह अपने सम्पूर्ण संशय और सारी दुविधाओंको एक ही छलाँगमें लाँघकर पार हो गया।

२२

रमेशने तय किया था कि कलकत्ता जाकर वह सिर्फ अपना काम पूरा करके वापस चला आयेगा ; कोल्हूटोलाकी उस गलीके पास भी न फटकेगा।

कलकत्ता आकर रमेश दरजीपाड़ा-वाले मकानमें ठहरा। दिनमें बहुत कम समय काम-काजमें बीतता, बाकीका वक्त कटना ही नहीं चाहता। पहले जिन लोगोंके साथ वह मिलता-जुलता था, अबकी बार वह उनलोगोंके साथ कतई नहीं मिला। रास्तेमें किसीसे भेंट न हो जाय, इस डरसे वह भरसक सावधानीसे रहने लगा। किन्तु दो-एक दिन बाद ही उसने अपनेमें एक परिवर्तन अनुभव किया। जिस निर्जन आकाशमें, जिस शान्तिके परिवेष्टनमें, कमला अपने नव-कैशोरके प्रथम आविर्भावको लेकर रमेशको दृष्टिमें रमणीय दीख पड़ी थी, कलकत्ता आनेके बाद उसका वह मोह बहुत-कुछ दूर हो गया। दरजीपाड़ाके मकानमें रमेशने कमलाको अपने कल्पना-लोकमें लाकर प्रेमकी मुग्ध-दृष्टिसे देखनेकी बहुत कोशिश की, पर उसके मनको इससे कोई उत्साह नहीं मिला। आज कमला उसकी दृष्टिमें अपरिणत अशिक्षित बालिका ही मालूम हुई।

'जोर' चीज ऐसी है कि उसका जितना ही ज्यादा प्रयोग किया जाता है उतना ही वह कम होने लगता है। हेमनलिनीको किसी भी हालतमें मनमें स्थान न देनेकी प्रतिज्ञा करते-करते ही रमेशके मनमें दिन-रात हेमनलिनीकी ही याद जागरूक होने लगी, भूलनेका कठोर संकल्प ही याद रखनेका प्रबल सहायक बन गया। रमेशको अगर जरा भी जल्दी होती, तो वह कभीका कलकत्ताका अपना काम खतम करके वापस चला जा सकता था। लेकिन जरा-सा काम लुढ़कते-लुढ़कते बढ़ता ही चला गया। अन्तमें जब वह भी खतम हो गया तब उसने पहले इलाहाबाद जाकर वहाँसे गाजीपुर जानेका निश्चय किया। इतने दिन तक वह धीरज धारण किये हुए था, पर धीरजका क्या कोई भी पुरस्कार नहीं? विदाके पहले छिपकर एक बार कोल्हूटोलाकी खबर ले आये तो हर्ज क्या है?

आज, कोल्हूटोलाकी उस गलीमें जानेका निर्णय करके वह चिट्ठी लिखने बैठ गया। उस चिट्ठीमें कमलाके साथ अपने सम्बन्धका आद्योपान्त वर्णन लिख

डाला। अब गाजीपुर जाकर वह हतभागिनी कमलाको अपनी परिणीता-पत्नीके रूपमें ग्रहण करेगा, यह बात भी उसने चिट्ठीमें लिख दी। इस तरह, हेमके साथ यावजीवन विच्छेद होनेके पहले, सच्ची घटनाका सम्पूर्ण वर्णन लिखकर चिट्ठीमें ही उसने अन्तिम विदा ले ली।

चिट्ठी उसने लिफाफेमें बन्द कर दी ; उसपर किसीका नाम नहीं लिखा, और न भीतर किसीको सम्बोधन ही किया। अन्नदा बाबूके नौकर रमेशके प्रति अनुरक्त थे ; कारण रमेश हेमनलिनीके सम्पर्कमें रहनेवाले स्वजन-परिजन सबको एक खास ममताकी दृष्टिसे देखता था, इसलिए उस घरके नौकर-चाकर रमेशसे नाना उपलक्षोंमें इनामके तौरपर कपड़े वगैरह पाया करते थे। रमेशने तय किया था कि शामके झुटपुटेमें वह कोल्हूटोला-वाले मकानमें जाकर एक बार हेमको देख आयेगा ; और किसी एक नौकरके मारफत चुपकेसे चिट्ठी भेजकर हमेशाके लिए अपना पूर्व-बन्धन तोड़ आयेगा।

शामको वह चिट्ठी हाथमें लेकर धड़कती-हुई छाती और काँपते-हुए पैरोंसे उस चिरपरिचित गलीमें घुसा। दरवाजेके पास जाकर देखा कि दरवाजा बन्द है ; ऊपर ताककर देखा, सारी खिड़कियाँ बन्द हैं, मकान सूना पड़ा है। फिर भी रमेशने दरवाजा खटखटाया। दो-चार बार खटखटानेपर भीतरसे एक नौकर दरवाजा खोलकर बाहर निकल आया। रमेशने पूछा—"कौन, सुक्खन ?"

सुक्खनने कहा—"हाँ, बाबू सा'ब, हुकम ?"

रमेश—"बाबू कहाँ गये ?"

सुक्खन—"जीजो-बाईको लेकर पश्चिम गये हैं, हवा बदलने।"

रमेश—"कहाँ ?"

सुक्खन—"सो तो नहीं मालूम।"

रमेश—"साथमें और कौन-कौन गये हैं ?"

सुक्खन—"नलिन बाबू गये हैं।"

रमेश—"नलिन बाबू कौन ?"

सुक्खन—"सो तो मैं नहीं जानता।"

रमेशने पूछ-पूछकर जान लिया कि नलिन बाबू नवयुवक हैं, कुछ दिनोंसे

यहाँ आने लगे हैं। यद्यपि रमेशने हेमनलिनीकी आशा छोड़ दी थी, फिर भी नलिन बाबूके प्रति उसका कतई आकर्षण नहीं हुआ।

रमेशने पूछा—"तेरी जीजी-बाईकी तबीयत कैसी है?"

सुक्खन—"तबीयत तो अच्छी ही है।"

सुक्खनने सोचा था कि इस सुसंवादसे रमेश बाबू निश्चिन्त और प्रसन्न होंगे। अन्तर्यामी ही जानते हैं कि सुक्खनका यह खयाल कहाँ तक ठीक था।

रमेशने कहा—"मैं एक बार ऊपरके कमरेमें जाऊँगा।"

सुक्खन धुआँ उगलती-हुई किरासिनकी बत्ती दिखाता हुआ रमेशको ऊपर ले गया। रमेश भूतकी तरह हर कमरेमें घूमता रहा। फिर हेमके कमरेमें जाकर एक कुरसीपर बैठ गया। चीज-वस्त और सजावट वगैरह सब-कुछ पहले जैसी ही है; बीचमें यह नलिन बाबू कौन आ गया? संसारमें किसीके अभावमें ज्यादा दिन कुछ भी सूना नहीं रहता। जिस वातायनके पास हेमके बगलमें खड़े होकर रमेशने वर्षासे धुले-हुए श्रावणके दिनमें सूर्यास्तकी आभामें दो हृदयोंके निस्तब्ध मिलनका सुख पाया था, उस वातायनमें अब क्या सूर्यास्तकी आभा नहीं पड़ती? उस वातायनमें और-किसी दिन और-कोई आकर जब युगल-मूर्तिकी रचना करना चाहेगा, तो पहलेका इतिहास आकर क्या उनकी जगह रोक लेगा, और तर्जनी उठाकर उन्हें क्या दूर हटा देगा? क्षुब्ध अभिमानसे रमेशका हृदय उफनने लगा।

दूसरे ही दिन रमेश इलाहाबाद न जाकर सीधा गाजीपुरके लिए रवाना हो गया।

३४

रमेश करीब महीने-भर कलकत्ता रह आया है। एक महीनेका समय कमलाके लिए कम नहीं है। कमलाके जीवनमें एक परिणतिका स्रोत सहसा अत्यन्त तेजीसे बहने लगा है। ऊषाका प्रकाश जैसे देखते-देखते प्रभातकी धूपमें खिल उठता है, कमलाकी नारी-प्रकृति भी उसी तरह थोड़े ही समयमें सुषुप्तिमेंसे जागरणमें आकर सचेतन हो उठी। शशिमुखीके साथ अगर उसका घनिष्ठ परिचय न होता, शशीके जीवनमेंसे प्रेमालोककी छटा और उष्णता

प्रतिफलित होकर अगर उसके हृदयपर न पड़ती, तो कब तक उसे प्रतीक्षा करनी पड़ती कौन कह सकता है ?

इस बीचमें, रमेशके आनेमें देर होती देख शशिमुखीके विशेष अनुरोधसे चचाने कमलाके लिए शहरके बाहर गंगा-किनारे एक बंगला किरायेपर तय कर लिया। नई गृहस्थीके लायक थोड़ा-बहुत असबाब भी वहाँ पहुँचाया जा चुका है ; और आवश्यकतानुसार नौकर-चाकरकी भी व्यवस्था कर दी गई है।

बहुत दिन बाद रमेश जब गाजीपुर पहुंचा तो चचाके घर पड़े रहनेकी और-कोई वजह ही नहीं रही। इतने दिन बाद कमलाने अपनी स्वाधीन घर-गृहस्थीमें कदम रखा। बंगलेके चारों तरफ बगीचा करने लायक काफी जगह है। दोनों तरफ पेड़ोंकी कतारके भीतरसे छायादार रास्ता गया है। शीतऋतुकी शीर्ण गङ्गा बहुत दूर हट गई है, जिससे मकान और गङ्गाके बीच थोड़ा-सा चर पड़ गया है। उस चरमें किसानोंने गेहूँ बो दिये हैं; और तरबूज और खरबूजे भी लगा दिये हैं। मकानकी दाहनी हदमें गङ्गाकी तरफ एक बड़ा-सा नीमका पेड़ है, जिसके नीचे चबूतरा बना हुआ है। बहुत दिनोंसे किरायेदारके अभावमें सूना पड़ा रहनेके कारण पेड़-पौधे सब सूख चुके थे, और मकान भी गन्दा पड़ा था। पर, कमलाको यह-सब अच्छा ही मालूम हुआ। गृहिणी-पदकी प्राप्तिकी आनन्द-आभामें उसकी दृष्टिमें सब-कुछ सुन्दर-सुहावना मालूम होने लगा। कौनसा कमरा किस काममें आयेगा, जमीनमें कहाँ क्या लगाया जायगा, मन ही मन उसने सब-कुछ तय कर लिया। चाचाके साथ सलाह करके कमलाने सारी जमीनको गुड़वाकर ठीक करनेकी व्यवस्था कर ली। खुद मौजूद रहकर रसोई-घरमें चूल्हा बनवाया, और उसके बगलकी कोठरीमें रसोईकी चीजें रखवा दीं। दिन-भर धुलाई-सफाईका काम चलता रहा। कमलाकी ममताने सारे मकानमें चारों तरफ ऐसा कब्जा जमा लिया कि जैसे वह उसका अपना मकान हो।

घरके काम-काजमें रमणीका सौन्दर्य जैसा विचित्र और मधुर हो उठता है वैसा और कहीं भी नहीं। रमेशने आज कमलाको काम-काजमें गरक देखा, तो देखता ही रह गया ; मानो चिड़ियाको पींजड़ेसे निकालकर आकाशमें छोड़ दिया गया हो और वह उड़ने लगी हो। उसका प्रसन्न चेहरा और सुनिपुण पटुता

देखकर रमेशका मन एक नये विस्मय और आनन्दसे भर उठा। इतने दिनोंसे कमलाको उसने 'अपनी-जगह' नहीं देखा। आज उसने जब उसे अपनी नई गृहस्थीकी चोटीपर देखा तो उसके सौन्दर्यके साथ उसे एक अपूर्व महिमा-सी दीख पड़ी।

रमेशने कमलाके पास जाकर कहा—"कमला, तुम कर क्या रही हो? थक जाओगी जो!"

कमलाने हाथका काम छोड़कर, रमेशकी तरफ मुँह उठाके जरा मधुर हँसी हँसते हुए कहा—"नहीं नहीं, मुझे कुछ नहीं होगा।"

रमेश जो उसकी खबर-सुध लेने आया, यही तो उसका पुरस्कार है। उस पुरस्कारको ग्रहण करके वह उसी क्षण फिर अपने काममें गरक हो गई।

मुग्ध रमेश किसी बहानेसे फिर उसके पास जाकर बोला—"कमला, तुमने खा-पी लिया या नहीं?"

कमलाने कहा—"वाह, खाया नहीं तो क्या यों ही! कबकी खा चुकी।"

यद्यपि रमेशको सब मालूम था, किन्तु फिर भी पूछकर जरा लाड़ दिखाये बिना उससे रहा नहीं गया। कमला रमेशके इस अनावश्यक प्रश्नसे खुश न हुई हो सो बात नहीं।

रमेशने फिर जरा बात जमानेकी गरजसे कहा—"कमला, तुम अपने हाथसे कितना काम करोगी? मुझसे भी थोड़ा-बहुत काम लो न!"

कर्मठ आदमियोंमें यही दोष होता है कि उन्हें दूसरोंकी कार्य-पटुतापर जल्दी विश्वास नहीं होता। उन्हें आशंका रहती है कि जिस कामको वे खुद कर रहे हैं उसे अगर कोई दूसरा करेगा तो सब चौपट कर देगा। कमलाने हँसते हुए कहा—"नहीं, ये सब काम तुम्हारे करनेके नहीं हैं।"

रमेशने कहा—"पुरुष लोग हद दरजेके सहनशील होते हैं इसीसे पुरुष-जातिके प्रति तुम्हारी ऐसी अवज्ञाको हम सह लिया करते हैं, विद्रोह नहीं करते। तुम्हारी तरह अगर मैं स्त्री होता तो अभी तुरत जोरका झगड़ा शुरू कर देता। चचासे तो तुम काम लेनेमें कोई कसर उठा नहीं रखतीं! मुझे क्या बिलकुल ही निकम्मा समझ रखा है क्या?"

कमलाने कहा—"सो मैं नहीं जानती। पर, तुम रसोईका जाला साफ करा रहे हो, इस बातका खयाल आते ही मुझे हँसी आने लगती है। अब तुम यहांसे चलते बनो, बड़ी धूल उड़ रही है।"

रमेशने कमलाके साथ बात चालू रखनेके लिए कहा—"धूल तो किसीसे पक्षपात नहीं करती ; वह हम-तुम दोनोंका एक निगाहसे देखती है।"

कमला—"मेरा तो काम है इसलिए धूल-मिट्टी सह रही हूँ, तुम्हारा कुछ काम नहीं, तुम क्यों सहोगे ?"

रमेशने नौकरके कान बचाते हुए धीमे स्वरमें कहा—"काम हो चाहे न हो, तुम जो कुछ सहोगी उसमें मेरा भी हिस्सा है।"

कमलाकी लोलकियोंपर सुर्खी आ गई ; रमेशकी बातका कोई जवाब न देकर वह जरा हटकर बोली—"उमेश, इस जगह और-एक घड़ा पानी डालकर साफ तो कर, देखता नहीं कितनी मिट्टी जमी हुई है। ला, बुहारी मुझे दे।" और बुहारी लेकर वह खूब जोरसे रगड़-रगड़कर मिट्टी साफ करनेमें लग गई।

रमेश कमलाको झाड़ू लगाते देख अत्यन्त चंचल हो उठा, बोला—"अरे, तुम कर क्या रही हो ?"

इतनेमें पीछेसे सुनाई दिया—"क्यों रमेश बाबू, कोई बेजा काम हो रहा है क्या ? इधर अंग्रेजी पढ़कर मुँहसे आपलोग खूब साम्यवादका प्रचार करते हैं, पर काम सड़नेपर चंचल हो उठते हैं। अगर यह अन्याय है तो फिर नौकरसे झाड़ू क्यों दिलवाते हैं ? मैं मूरख आदमी हूँ, मुझसे अगर पूँछें, तो कहूँगा कि सती बहन-बेटियोंके हाथकी झाड़की प्रत्येक सींक मुझे सूरजकी किरण-सी उज्ज्वल मालूम होती है। कमला-बेटी, तुम्हारा जंगल तो मैं बिलकुल साफ करा आया ; अब कहाँ कौन-सी तरकारी बोना चाहती हो, बता देना होगा।"

कमलाने कहा—"चाचाजी, जरा सबर करो, घरका काम करके चलती हूँ।"

और फिर, थोड़ी देर बाद, वह घरका काम खतम करके, कमरसे लिपटा हुआ धोतीका पल्ला माथेपर रखकर बाहर चली आई ; और तरकारीके खेतके बारेमें बातचीत करने लगी।

इस तरह देखते-देखते दिन छिप गया, किन्तु घर सजानेका काम अभी तक

पूरा नहीं हुआ। बंगला बहुत दिनोंसे बन्द पड़ा था, इसलिए और-भी दो-चार दिन धो-पोंछकर दरवाजे-जंगले खुले रखे बगैर वह रहने-लायक नहीं हो सकता। लिहाजा, उस दिन भी उन्हें चचाके घर ही रहना पड़ा। और इसलिए, रमेशका मन आज कुछ भारी ही रहा है। आज वह दिन-भर बार-बार कल्पना कर रहा था कि आज उसके एकान्त घरमें संध्याप्रदीप जलेगा, और कमलाके सलज्ज स्मित-हास्यके सामने वह अपने परिपूर्ण हृदयको न्योछावर कर देगा। किन्तु, इसमें जब उसने और-भी दो-चार दिनकी देर देखी, तब वह अपने अदालत सम्बन्धी कामसे इलाहाबाद चला गया।

३५

दूसरे दिन कमलाने अपने नये घरमें शशिमुखीको निमन्त्रण देकर बुलाया। विपिन खा-पीकर जब आफिस चला गया तब शशी कमलाके घर पहुंची। कमलाके अनुरोधसे चचाने उस दिन स्कूलसे छुट्टी ले ली। दोनोंने मिलकर नीमके नीचे रसोई चढ़ा दी; और उमेश उनकी मदद करने लगा।

रसोई और खाना पीना खतम हो जानेपर चचा भीतर आराम करने चले गये; और दोनों सखियाँ उसी नीमके नीचे गपशप करने लगीं। इस गपशपके साथ नदीका तट, जाड़ेकी घाम, पेड़की छाया, सब-कुछ कमलाको बड़ा सुहावना मालूम होने लगा; मेघशून्य नील-आकाशमें बहुत ऊंचे चीलोंका उड़ना उसे ऐसा मालूम होने लगा जैसे उसके हृदयकी उद्देश्यहीन आकांक्षाएँ दूर आकाशमें उड़ती फिर रही हों।

दिन छिपने भी न पाया था कि शशिमुखी चञ्चल हो उठी। विपिनका आफिससे लौटनेका समय हो गया। कमलाने कहा—"क्यों बहन, एक दिन भी क्या नियम भङ्ग नहीं कर सकतीं?"

शशीने कमलाकी बातका कोई जवाब न देकर मुसकराते हुए उसकी ठोड़ी पकड़के हिला दी; और बंगलेके भीतर जाकर अपने पिताको जगाते हुए कहा—"बापूजी, मैं घर जा रही हूँ।"

चचाने कमलासे कहा—"तुम भी चलो बेटी!"

कमलाने कहा—"नहीं, मेरा अभी काम बाकी है, मैं पीछे आऊंगी।"

चक्रवर्ती अपने पुराने नौकर और उमेशको कमलाके पास छोड़कर शशीको घर पहुंचाने चले गये। वहाँ उन्हें कुछ काम था, बोले—"मुझे लौटनेमें ज्यादा देर न होगी।"

कमलाने घरके कामसे जब छुट्टी पाई, तब सूरज डूब रहा था। वह दुशाला ओढ़कर नीमके नीचे जा बैठी। नदीके उसपार बहुत दूर जहाँ दो-चार बड़ी-बड़ी नावें अपने मस्तूलोंसे आकाशपर काली लकीरें खींचे खड़ी थीं, उसके पीछे ऊँची पाड़के नीचे सूरज छिप गया। इतनेमें उमेश किसी बहानेसे उसके पास आ खड़ा हुआ। बोला—"जीजी-बाई, बहुत देरसे तुमने पान नहीं खाया, चक्रवर्ती-बाबाके घरसे मैं पान लेता आया था, ये लो।" कहते हुए उसने एक कागजमें मुड़े हुए पान कमलाके हाथमें दे दिये। अब कमलाको होश आया कि शाम हो चुकी। वह जल्दीसे उठ खड़ी हुई। उमेशने कहा—"चक्रवर्ती-बाबाने गाड़ी भेजी है।"

कमला जानेके पहले फिर एक बार देख-भाल करनेके लिए बंगलेमें गई। बड़े कमरेमें जाड़ोंमें आग सुलगाये रखनेके लिए विलायती ढंगका एक चूल्हा-सा था; और उसके पास ही एक आलेमें मिट्टीके तेलकी बत्ती जल रही थी। उसी आलेमें पानकी पुड़िया रखकर कमला कुछ देख रही थी; इतनेमें अचानक उसने देखा कि उस पानकी पुड़ियाके ऊपर रमेशके हस्ताक्षर हैं। कमलाने उमेशसे पूछा—"यह कागज तुझे कहाँ मिला?"

उमेशने कहा—"बाबू साहबके कमरेमें एक कोनेमें पड़ा था।"

कमला कागज खोलकर पढ़ने लगी। रमेशने हेमनलिनीको जो उस दिन विस्तृत चिट्ठी लिखी थी यह वही चिट्ठी है। शिथिल-स्वभाव रमेशके हाथसे वह चिट्ठी कब कहाँ गिर गई, उसे होश ही नहीं। कमला उसे पूरी पढ़ गई। उमेशने कहा—"जीजी-बाई, इस तरह चुपचाप खड़ी क्यों रह गईं? रात हो रही है न!"

घरमें सन्नाटा था। कमलाके चेहरेको देखकर उमेश डर गया। बोला—"जीजी-बाई, सुनतीं नहीं? घर चलो, रात हो गई।"

कुछ देर बाद नौकरने आकर कहा—"बहूजी, गाड़ी बहुत देरसे खड़ी है। चलिये।"

३६

शशिमुखीने पूछा—"आज तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं क्या? सिरमें दर्द है?"

कमलाने कहा—"नहीं तो। चाचाजीको नहीं देख रही, कहां गये हैं?"

शशिमुखी—"इस्कूलकी छुट्टियां हैं न, जीजोको देख आनेके लिए माने उन्हें इलाहाबाद भेज दिया है। कुछ दिनोंसे जीजोकी तबीयत खराब चल रही है।"

कमला—"कब तक आयेंगे?"

शशी—"हफ्ते-भरमें लौट आयेंगे। बंगला सजानेमें तुम दिन-भर मेहनत करती रहती हो। आज तुम बड़ी उदास मालूम हो रही हो। जल्दी खा-पीकर सो जाओ तो अच्छा है।"

शशिमुखीसे मनकी सब बात कह सकती तो कमला जी जाती, पर कहनेकी बात नहीं, कैसे कहे? 'जिसे अब तक मैं अपना पति समझ रही थी, वह मेरा पति नहीं' यह बात और चाहे किसीसे कहे या न कहे, पर शशिमुखीसे तो हरगिज नहीं कही जा सकती।

कमलाने अपने कमरेमें जाकर किवाड़ बन्द कर लिये; और बत्तीके पास जाकर फिर उस चिट्ठीको पढ़ने लगी। चिट्ठी जिसके लिए लिखी गई है, उसका उसमें नाम नहीं, पता नहीं, किन्तु वह है लड़की ही। रमेशके साथ उसकी सगाई हो थी, और कमलाकी वजहसे ही वह छूट गई, यह बात चिट्ठीसे साफ जाहिर है। जिसे चिट्ठी लिखी गई है, उसे रमेश सम्पूर्ण हृदयसे चाहता है, और दैवके फेरसे कमला न-जाने कहाँसे आकर उसके सरपर सवार हो गई, जिससे उसपर दया करके उसे अपना यह प्रेमका बन्धन हमेशाके लिए तोड़ना पड़ रहा है – इन सब बातोंका भी चिट्ठीमें उल्लेख है।

उस दिन नदीकी गोदमें रेतीपर पहले-पहल उनका जो मिलन हुआ था, तबसे लेकर गाजीपुर आने तककी सारीकी सारी स्मृतियाँ कमलाके मनमें चक्कर काटने लगीं। जो कुछ अस्पष्ट था, आज वह सबका सब स्पष्ट हो गया।

रमेश जब कि उसे पराई स्त्री समझता है, और उस चिन्तामें चञ्चल हो रहा है कि उसका वह क्या करे, तब कमला जो उसे निश्चिन्त मनसे अपना पति समझकर बिना किसी सङ्कोचके उसके साथ चिरस्थायी घर-गृहस्थीका सम्बन्ध कायम कर रही है, इस बातकी लज्जा कमलाको बार-बार तप्त शलाका-सी चुभने लगी। प्रतिदिनकी विचित्र घटनाओंको याद कर-करके मारे शरमके वह गड़-गड़ गई। यह लज्जा उसके जीवनसे ऐसी लिपट गई है कि उससे उसका उद्धार नहीं।

बन्द कमरेके किवाड़ खोलकर कमला पीछेके बगीचेमें चली गई। जाड़ेकी अँधेरी रात है, काला आकाश और काले पत्थरकी-सी ठंड! कहीं भी जरा गरमीकी भाप नहीं; आसमानमें सिर्फ तारे चमक रहे हैं। सामने आमका बाग खड़ा अँधेरेको और भी बढ़ा रहा है। कमला किसी भी तरह किसी निर्णयपर नहीं पहुँच सकी। वह ठंडी घासपर बैठ गई और काठकी मूर्तिकी तरह स्थिर बैठी रही; आँखसे एक बूंद आँसू भी नहीं निकला। इसी तरह कब तक बैठी रही, कोई ठीक नहीं। अन्तमें जोरकी ठंडने उसके हृत्पिण्डको हिला दिया, उसका सारा शरीर थर-थर काँपने लगा। गहरी रातमें कृष्णपक्षके चन्द्रोदयने जब निस्तब्ध ताड़के जंगलकी ओटमेंसे अन्धकारके एक प्रान्तको फाड़ दिया तब कमला उठकर धीरे-धीरे भीतर चली आई और किवाड़ बन्द कर लिये।

सवेरे कमलाने आँख खोलकर देखा, शशिमुखी उसकी खाटके पास खड़ी है। बहुत अबेर हो जानेसे लज्जित कमला चटसे उठकर बैठ गई।

शशीने कहा—"नहीं बहन, तुम उठो मत, और जरा सो लो। जरूर तुम्हारी तबीयत खराब है। मुँह तुम्हारा बिलकुल सूख गया है, आँखोंके नीचे कालिख पड़ गई है। क्या हुआ है बहन, मुझसे न कहोगी?" यह कहती हुई शशिमुखी उसके बगलमें बैठ गई और उसके गलेसे लिपट गई।

कमलाकी छातीके भीतर उफान-सा आ रहा था, उसके आँसू रोके नहीं रुक रहे थे। शशीके कंधेपर मुँह रखकर वह रोने लगी। शशीने मुँहसे कुछ न कहकर उसे छातीसे लगा लिया।

थोड़ी देर बाद कमला जल्दीसे शशीका बाहुबन्धन छुड़ाकर उठ बैठी।

और आँखें पोंछकर जोरसे हँसने लगी। शशीने कहा—"बस, अब रहने दो, हँसनेकी जरूरत नहीं। औरतें मैंने बहुत देखी हैं, पर तुम-सी गहरे पेटकी औरत मैंने कभी नहीं देखी। पर तुम समझती हो कि मुझसे सब छिप लोगी। मुझे ऐसी भोंदू मत समझना। कहो तो कह दूँ मनकी बात? रमेश बाबूने इलाहाबाद जानेके बाद चिट्ठी नहीं दी, इसीसे इतना गुस्सा है, मानिनीको मान हुआ है। लेकिन तुम्हें समझना चाहिए, वहाँ वे कामसे गये हैं, दो-तीन रोजमें लौट आयेंगे। इस बीचमें अगर चिट्ठी लिखनेका उन्हें मौका न मिले, तो क्या इस तरह रूठा जाता है कहीं! इसमें रूठनेकी कौन-सी बात है? लेकिन हाँ, कहनेमें कोई चोरी नहीं, आज तुम्हें मैं समझा रही हूँ, मैं होती तो मैं भी शायद तुम्हारी तरह तूफान मचा देती। ऐसा झूठमूठका रोना औरतोंको बहुत रोना पड़ता है। और फिर यह रोना घूमकर जब हँसी खिला देता है, तब फिर पिछली बातें कुछ याद ही नहीं रहतीं!"—कहते हुए उसने कमलाको फिर छातीसे लगा लिया—"आज तुम समझ रही हो कि रमेश बाबूको अब तुम हरगिज माफ नहीं कर सकती; क्यों, ठीक है न! सच बताना?"

कमलाने कहा—"हाँ, सच कहती हूँ।"

शशी कमलाके गालपर हलकी-सी चपत जमाकर बोली—"ओफ्-हो! अच्छा, देखा जायगा! होड़ बदती हो?"

कल सवेरे कमलासे बात होनेके बाद ही शशीने इलाहाबाद अपने पिताको चिट्ठी लिख भेजी। उसमें लिखा, 'कमलाको रमेश बाबूकी कोई चिट्ठी न मिलनेसे बड़ी चिन्ता है। एक तो बेचारी नई-नई परदेशमें आई है, उसपर रमेश बाबू जब-तब उसे छोड़कर बाहर चले जाते हैं; और चिट्ठी भी नहीं देते। इससे उसे कितना कष्ट होता है, इसका उन्हें खयाल करना चाहिए। उनका इलाहाबादका काम क्या कभी खतम न होगा? काम तो और-भी बहुतसे लोग करते हैं, उन जैसा काम किसीको करते नहीं देखा, जो एक चिट्ठी तक देनेकी फुरसत नहीं!" इत्यादि।

चक्रवर्ती रमेशसे जाकर मिले; और अपनी लड़कीकी चिट्ठीका कुछ हिस्सा पढ़के सुनाया; और ऊपरसे थोड़ी डाट भी सुनाई।

कमलाकी तरफ रमेशका मन आकृष्ट हुआ है, यह बात सच है ; किन्तु उस आकर्षणसे उसकी दुविधा घटी नहीं, बल्कि और-भी बढ़ गई। और इस दुविधाके कारण ही वह इलाहाबादसे वापस नहीं जा रहा था। इस बीचमें चक्रवर्तीसे शशिमुखीकी चिट्ठीकी बातें सुनी, जिससे वह समझ गया कि कमला उसके लिए विशेष उद्विग्न हो रही है ; शरमसे वह खुद चिट्ठी नहीं लिख सकी है। इससे रमेशकी दुविधाकी दो शाखाएँ देखते-देखते एकमें आ मिलीं। अब तो अकेले रमेशके सुख-दुःखकी बात नहीं रही, कमला भी रमेशसे प्रेम करने लगी है। विधाताने सिर्फ नदीके चरमें उन दोनोंको मिला दिया हो सो बात नहीं, दोनोंके हृदय भी एक कर दिये हैं। यह सोचकर रमेश और देर न करके कमलाको चिट्ठी लिखने बैठ गया। उसने लिखा :—

"प्रियतमा,

कमला, तुम्हें जो मैंने 'प्रियतमा' लिखा है, इसे तुम चिट्ठी लिखनेकी प्रचलित पद्धति न समझना। अगर मैं तुम्हें संसारमें सबसे ज्यादा प्रिय न समझता, तो हरगिज 'प्रियतमा' नहीं लिख सकता। अगर तुम्हारे मनमें मेरे प्रति कभी कोई सन्देह हो या रहा हो, अगर तुम्हारे कोमल हृदयको मैंने कभी कोई ठेस पहुँचाई हो, तो यह जो आज मैंने तुम्हें हृदयसे 'प्रियतमा' कहा है, यही तुम्हारे समस्त संशयको, तुम्हारी सम्पूर्ण वेदनाको धो-पोंछकर साफ कर देगा। इससे ज्यादा खुलासा और मैं क्या लिखूँ? अब तक मेरे बहुतसे आचरण तुम्हारे लिए वेदनादायक हुए हैं, उसके लिए मन-ही-मन तुम अगर मुझपर आरोप भी लगाओ, तो मैं प्रतिवादी होकर उसका जरा भी प्रतिवाद न करूँगा। मैं केवल इतना ही कहूँगा कि आज तुम मेरी प्रियतमा हो, तुमसे प्रिय मेरा और कोई भी नहीं है। इससे भी अगर मेरे समस्त अपराधोंकी समस्त असङ्गत आचरणोंकी जवाबदेही पूरी न हो, तो और किसी भी तरह नहीं हो सकती।

इसीलिए, कमला, आज मैंने तुम्हें 'प्रियतमा' सम्बोधन करके हमारे बीचके सम्पूर्ण संशयाच्छन्न अतीतको दूर हटा दिया है। इस 'प्रियतमा' सम्बोधनसे हम अपने भविष्यका आरम्भ करते हैं। तुमसे मेरी एक बिनती है, तुम आज

मेरे इस 'प्रियतमा' शब्दपर सम्पूर्ण रूपसे विश्वास करो। इसे अगर तुम ठीक तौरसे ग्रहण कर सको, तो फिर किसी भी तरहके संशयका कोई भी प्रश्न करनेकी जरूरत नहीं रह जायगी।

इसके बाद, मैंने तुम्हारा प्रेम पाया है या नहीं, यह पूछनेकी मुझे हिम्मत ही नहीं होती। मैं पूछूंगा भी नहीं। मेरे इस अनुच्चारित अनुकूल प्रश्नका उत्तर एक दिन तुम्हारे हृदयके भीतरसे मेरे हृदयमें चुपकेसे चला आयेगा, इसमें मुझे जरा भी सन्देह नहीं। यह बात मैं अपने प्यारके जोरसे कह रहा हूँ। अपनी योग्यतापर मैं अहङ्कार नहीं करता। किन्तु मेरी साधना क्यों सार्थक नहीं होगी?

मैं खूब समझ रहा हूँ, मैं जो-कुछ लिख रहा हूँ वह उतना सरल नहीं हो रहा है जितना कि होना चाहिए; 'रचना'-सी मालूम पड़ती है, तबीयत होती है कि यह चिट्ठी फाड़कर फेंक दूँ। किन्तु जो चिट्ठी मेरे मनकी-सी हो सके ऐसी चिट्ठी मैं अभी नहीं लिख सकता। कारण, चिट्ठी दोनोंकी चीज है, केवल एक पक्षसे जब चिट्ठी लिखी जाती है तो उसमें सब बातें ठीकसे नहीं लिखी जा सकतीं। हमारा-तुम्हारा मन जब एक दूसरेको अच्छी तरह जान जायगा, उसी दिन चिट्ठी-सी चिट्ठी लिख सकूंगा। आमने-सामनेके दोनों दरवाजे जब खुले रहते हैं तभी बिना बाधाके हवा चल-फिर सकती है। कमला, प्रियतमा, तुम्हारे हृदयको मैं कब पूरा-पूरा खोल सकूंगा?

इन सब बातोंकी मीमांसा धीरे-धीरे क्रमशः होती रहेगी, चञ्चल होनेसे कुछ फायदा नहीं। जिस दिन तुम्हें यह चिट्ठी मिलेगी, उसके दूसरे ही दिन सवेरे मैं गाजीपुर पहुंच जाऊंगा। तुमसे मेरा एक अनुरोध है, गाजीपुर जाकर मैं तुम्हें अपने बंगलेमें ही देख सकूं। बहुत दिनसे बिना-घरके गृहहीनों जैसे दिन काटे हैं, अब मेरा मन धीरज नहीं मानता। अबकी बार मैं अपने घरमें प्रवेश करूंगा, हृदय-लक्ष्मीको गृहलक्ष्मीके रूपमें देखूंगा। उन क्षणोंमें दूसरी बार हमारी शुभदृष्टि होगी। हमारी पहली बारकी शुभदृष्टि तुम्हें याद है? चाँदनी रातमें नदीकी गोदमें निर्जन बालू-तटपर, जहाँ छत नहीं थी, दीवार नहीं थी, पिता-माता भाई-बहन स्वजन-परिजन पास-पड़ोसी कोई भी

नहीं था, घरके बाहर खुले आकाशके नीचे, याद है ? मानो वह स्वप्न था, मानो वह सत्य नहीं था। इसीलिए तो और एक बार, स्निग्ध निर्मल प्रभातके प्रकाशमें, घरके भीतर, सत्यके भीतर, उस शुभदृष्टिको सम्पूर्ण कर लेनेकी इच्छा होती है। पुण्य-पौषके प्रभातोदयमें अपने घरके द्वारपर खड़ी सरल सहास्य मूर्तिको चिरजीवनके लिए अपने हृदयमें अङ्कित कर लेना चाहता हूं, इसीलिए आग्रहसे मेरा मन भर उठा है। प्रियतमे, मैं आज तुम्हारे हृदय-द्वार पर अतिथि हूं, मुझे लौटाना नहीं। तुम्हारा प्रसादप्रार्थी—रमेश।"

३७

शशिमुखीने सुस्त कमलाको जरा उत्साहित करनेके लिए कहा—"आज तुम अपने बंगले नहीं जाओगी ?"

कमलाने कहा—"नहीं, अब कोई जरूरत नहीं।"

शशी—"सब काम हो चुका ?"

कमला—"हां, बहन, सब हो चुका।"

थोड़ी देर बाद शशिमुखीने फिर आकर कहा—"एक चीज अगर दूँ तो तुम मुझे क्या दोगी बताओ ?"

कमलाने कहा—"मेरे पास क्या है बहन ?"

शशी—"कुछ भी नहीं रहा ?"

कमला—"कुछ भी नहीं।"

शशीने कमलाके गालपर हलकी-सी एक चपत जमाकर कहा—"ओफहो ! जो-कुछ था, सबका सब एक आदमीको समर्पण कर चुकी हो ? यह क्या है बताओ तो जानूँ ?" कहते हुए उसने अपने आँचलमेंसे एक चिट्ठी निकाली।

लिफाफेपर रमेशके हस्ताक्षर देखकर उसी क्षण कमलाका मुँह सफेद-फक पड़ गया ! उसने जरा-सा मुँह फेर लिया। शशिमुखीने कहा—"अरी ओ, अब ज्यादा अभिमान दिखानेकी जरूरत नहीं, बहुत हो चुका। भीतरसे तो जी करता होगा, कैसे चील-झपट्टा मारके चिट्ठी छीन लूँ ! लेकिन, मुँहसे माँगे बिना मैं नहीं देनेकी, समझी ! देखूं कब तक रह सकती हो !"

इतनेमें उमा रस्सीसे बँधा साबुनका एक बक्स खींचती हुई चली आई। उसने कहा—"मौसी, गा-गाड़ी !"

कमला चटसे उसे गोदीमें उठाकर बार-बार उसकी मिट्ठी लेती हुई अपने कमरेमें चली गई। किन्तु उमाको इसमें कुछ रस नहीं मिला, गाड़ी चलानेमें अकस्मात् इस तरहका विघ्न उपस्थित हो जानेसे वह जोर-जोरसे चिल्लाने लगी। पर कमलाने उसे छोड़ा नहीं, अपने कमरेमें ले जाकर वह तरह-तरहका प्रलोभन देकर उसे मनानेकी कोशिश करने लगी। इतनेमें शशी आ गई, और बोली—"मैं हारी, तुम जीतीं ! मुझसे तो सबर करते नहीं बनता, बहना ! धन्य हो तुम ! ये लो, मैं क्यों झूठमूठको किसीका श्राप चढ़ाऊँ !" कहते हुए उसने चिट्ठी बिस्तरपर डाल दी; और उमाको गोदमें लेकर चली गई।

कमलाने लिफाफा उठा लिया। थोड़ी देर तक उसे उलटती-पुलटती रही, फिर खोल लिया। शुरूकी दो-चार पंक्तियोंपर नजर पड़ते ही उसका चेहरा सुर्ख हो उठा। मारे शरमके उसने चिट्ठी फेंक दी। पहले धक्केकी प्रबल विरक्ति जब कुछ घटी तब उसने चिट्ठी उठाकर पढ़ना शुरू किया। पूरी चिट्ठी उसकी समझमें आई या नहीं, मालूम नहीं; पर उसे ऐसा मालूम होने लगा जैसे वह कीचड़में हाथ डालकर कुछ ढूँढ़ रही हो। फिर चिट्ठी फेंक दी। जो आदमी उसका पति नहीं, उसीके साथ उसे घर-गृहस्थी करनी पड़ेगी ! इसीके लिए यह आमन्त्रण है ! रमेशने सब जान-बूझकर इतने दिन बाद उसका अपमान किया। गाजीपुर आनेके बाद रमेशकी तरफ जो उसका हृदय प्रतिक्षण आगे बढ़ रहा था, वह क्या रमेशकी वजहसे, या अपने पतिके लिए? रमेशका उसी तरफ लक्ष्य था, इसीलिए उसने 'अनाथा'पर दया करके आज ऐसी प्रेमकी चिट्ठी लिखी है ! भ्रमसे रमेशके प्रति जो-कुछ उससे प्रकट हुआ है, उसे वह अब कैसे वापस ले? ऐसी लज्जा, ऐसी घृणा कमलाके भाग्यमें क्यों बदी थी? दुनियामें जन्म लेकर उसने किसीका क्या बिगाड़ा था? अब 'घर' नामका वीभत्स राक्षस उसे ऐसा लगने लगा जैसे वह मुँह फाड़े उसीको निगलने आ रहा हो। रमेश उसके सामने इतनी बड़ी विभीषिकाके रूपमें आ खड़ा होगा, दो दिन पहले क्या कमलाने इसकी स्वप्नमें भी कल्पना की थी?

इतनेमें दरवाजेके पास उमेश आ खड़ा हुआ। पहले ता वह थोड़ा खाँसा-खखारा, किन्तु उससे भी जब कमलाका ध्यान आकर्षित न हुआ तो उसने जोरसे पुकारा—"जीजी-बाई!" कमला दरवाजेके पास चली आई। उमेशने अपनी कनपटी सहलाते हुए कहा—"जीजी-बाई, आज सिद्धो बाबूकी लड़कीके ब्याहमें कलकत्तासे नाटक खेलनेवाले आये हैं।"

कमलाने कहा—"अच्छी बात है, तू देख आना।"

उमेश—"कल सवेरे क्या फूल चुन लाने होंगे?"

कमला—"नहीं, जरूरत नहीं।"

उमेश जब जाने लगा तो अचानक कमलाने उसे बुलाया—"ओ उमेश, सुन जा। नाटक देखने जा रहा है, ये ले, पाँच रुपये।"

उमेश ताज्जुबमें पड़ गया। ब्याहके घरमें नाटक है, उससे पाँच रुपयेका क्या सम्बन्ध? बोला—"जीजी-बाई, शहरसे तुम्हारे लिए कुछ लाना है क्या?"

कमलाने कहा—"नहीं, मुझे कुछ नहीं चाहिए। तू अपने पास रख, खर्च-पानीके काम आयेंगे।"

हतबुद्धि उमेश जाना ही चाहता था कि कमलाने फिर उसे बुलाकर कहा—"क्यों रे, तू क्या इन्हीं कपड़ोंसे नाटक देखने जायगा! लोग क्या कहेंगे?"

लोग उमेशकी पोशाकके सम्बन्धमें ज्यादा आशा रखते हैं या उसे देखकर किसी तरहकी चरचा करते हैं, उमेशकी ऐसी कोई धारणा नहीं थी; और इसीलिए धोतीकी शुभ्रता और चोला वगैरहके अत्यन्त अभावके सम्बन्धमें वह पूरा उदासीन था। कमलाका प्रश्न सुनकर कुछ बोला नहीं, सिर्फ जरा मुसकरा दिया। कमलाने दो जोड़े साड़ीके निकालकर उसके सामने पटकते हुए कहा—"ये ले, तू पहनना, जा।"

साड़ीकी बहारदार चौड़ी किनारी देखकर उमेश अत्यन्त उत्फुल्ल हो उठा। उसने कमलाके पाँवोंके पास सिर टेककर प्रणाम किया; और हँसी दबानेकी व्यर्थ कोशिशमें सारे चेहरेको विकृत करता हुआ चला गया। उमेशके चले जानेपर कमलाने आँसू पोंछे; और खिड़कीके पास जाकर चुपचाप खड़ी हो गई।

कुछ देर बाद शशिमुखीने आकर कहा—"क्यों बहन, चिट्ठी मुझे नहीं दिखाओगी?"

कमलासे शशीका कुछ छिपाव नहीं था, इसीलिए उसने दूसरे दिन मौका पाकर ऐसी मांग पेश की। कमलाने कहा—"वो पड़ी है बहन, देख लो।" कहकर जमीनपर पड़ी चिट्ठीकी तरफ इशारा कर दिया। शशी आश्चर्यके साथ सोचने लगी, 'ओफ्फो, अभी तक गुस्सा नहीं उतरा!' और चिट्ठी उठाकर पूरी पढ़ डाली। चिट्ठीमें प्यारकी बातें तो बहुत हैं, पर यह कैसी चिट्ठी! आदमी अपनी स्त्रीको इस तरह चिट्ठी लिखता है! कैसी-कैसी तो बातें लिखी हैं! शशीने पूछा—"अच्छा बहन, तुम्हारे पति क्या उपन्यास लिखते हैं?"

'पति' शब्द कानमें पड़ते ही क्षणमें कमलाका शरीर-मन संकुचित हो उठा। उसने कहा—"मालूम नहीं।"

शशिमुखीने कहा—"तो आज तुम बंगलेमें ही जाओगी?"

कमलाने सिर हिलाकर जता दिया—'हाँ।'

शशीने कहा—"मैं भी आज शाम तक तुम्हारे ही पास रहती, पर आज तो नरसिंह बाबूकी बहू आनेवाली हैं। तुम्हारे साथ मा चली जायेंगी।"

कमला उतावलीके साथ कह उठी—"नहीं नहीं, मा जाके क्या करेंगी? वहाँ नौकर तो हैं ही।"

शशीने हँसते हुए कहा—"और तुम्हारा बाहन उमेश है, तुम्हें डर किस बातका?"

उमा उस समय कहींसे पेन्सिल लाकर उससे जहाँ-तहाँ लकीर खींच रही थी और चिल्ला-चिल्लाकर अव्यक्त भाषा उच्चारण कर रही थी; और समझती थी, 'पढ़ रही हूँ'। शशीने इस साहित्य-रचनासे उसे जबर्दस्ती अलग कर लिया; और जब वह जोर-जोरसे आपत्ति प्रकट करने लगी तो कमलाने कहा—"आ बेटी, तुझे एक मजेकी चीज देती हूँ, आ।" और कमरेमें ले जाकर उसे बिस्तरपर डालकर प्यार कर-करके उसे उत्तेजित कर दिया। उसने जब दिये-हुए बचनके अनुसार 'मजेकी चीज'की माँग की, तब कमलाने अपना बकस खोलकर सोनेके कड़े निकालके उसके हाथमें दे दिये। ऐसे दुर्लभ खिलौने पाकर उमा बड़ी खुश हुई। मौसीने कड़े जब उसके हाथमें पहना दिये, तो वह बड़ी सावधानीसे अपने दोनों हाथोंको जमीनसे ऊँचा उठाकर गर्वके साथ माको दिखाने चल दी।

पर मा उन कड़ोंको देखकर व्यस्त हो उठी ; और उन्हें यथास्थान पहुँचा देनेके लिए छीन लिया। कमलासे आकर बोली—"बहन, तुम्हारी यह कैसी अकलमन्दी है ! ये सब चीजें बच्चोंके हाथमें देनी चाहिए !"

इस दुर्व्यवहारसे उमाका आर्तनाद गगनभेदी हो उठा। कमलाने पास आकर कहा—"बहन, ये कड़े मैंने उमाको दे दिये हैं।"

शशीने आश्चर्यके साथ कहा—"तुम्हारा दिमाग तो नहीं फिर गया !"

कमलाने कहा—"तुम्हें मेरे गलेकी सौगन्द है बहन, कड़े तुम मुझे फेर नहीं सकोगी। इन्हें तुड़वाकर उमाके लिए हार बनवा देना।"

शशीने कहा—"नहीं। सच कहती हूँ, तुम जैसी पगली लड़की मैंने कहीं नहीं देखी।" कहती हुई वह कमलाके गलेसे लिपट गई।

कमलाने कहा—"तुम्हारे यहाँसे तो आज मैं चली जा रही हूं बहन ! बड़े आराममें थी। ऐसा सुख मैंने अपने जीवनमें कभी नहीं पाया।" कहते-कहते उसकी आँखोंसे झरझर आँसू झरने लगे।

शशिमुखी उमड़ते हुए आँसुओंको रोकती हुई बोली—"तुम्हारा यह क्या ढंग है कमल, ऐसा लगता है जैसे कितनी दूर न जा रही हो ! आराममें जो थीं सो तो मैं जानती हूं न ! अब सब रुकावट दूर हो गई, सुखसे अपने घरमें अकेली राज्य करोगी। और कभी मैं पहुंच गई तो मनमें कहोगी, कब आफत टले तो छुट्टी मिले !"

विदा होते वक्त कमला शशीको प्रणाम करने लगी तो वह बोली—"कल दोपहरको मैं तुम्हारे यहाँ आऊंगी।"

कमलाने जवाबमें 'हाँ' 'ना' कुछ भी नहीं कहा।

बंगलेमें जाकर कमलाने देखा कि उमेश आ गया है। कमलाने उससे कहा—"अरे, तू नाटक देखने नहीं गया ?"

उमेशने कहा—"तुम आज यहाँ रहोगी न, इससे—"

कमला—"अच्छा अच्छा, इसकी तू फिकर न कर। तू नाटक देखने जा, यहाँ विष्णु रहेगा। जा, देर मत कर।"

उमेश—"अभी तो नाटक होनेमें बहुत देर है।"

कमला—"सो होने दे, ब्याहमें कैसी धूमधाम होगी, सब देखना। जा, चला जा।"

इस विषयमें उमेशको ज्यादा उत्साहित करनेकी जरूरत नहीं थी। वह जानेको तैयार हुआ तो कमलाने उसे बुलाकर कहा—"देख, चाचाजी आ जायें तब तू—" कहते-कहते वह रुक गई; और सोचने लगी, आगे क्या कहे?

उमेश मुँह बाये खड़ा रहा। कमलाने कुछ देर सोचकर कहा—"याद रखना, चाचाजी तुझे बहुत प्यार करते हैं। तुझे जब जिस चीजकी जरूरत पड़े, मेरा प्रणाम जताकर तू उनसे माँग लिया करना। उनसे प्रणाम कहना मत भूलना, अच्छा!"

उमेश इस अनुशासनका कुछ अर्थ न समझकर "अच्छा" कहकर चला गया।

तीसरे पहर विष्णुने आकर पूछा—"बहूजी, कहाँ जा रही हैं?"

कमलाने कहा—"गङ्गामें नहाने जा रही हूं।"

विष्णुने कहा—"मैं साथ चलूं?"

कमलाने कहा—"नहीं, तू घरपर ही रहकर पहरा देना।" इतना कहकर उसके हाथमें बेमतलब एक रुपया देकर कमला गङ्गाकी तरफ चल दी।

३८

एक दिन दोपहरको हेमनलिनीके साथ अकेलेमें चाय पीनेकी आशासे अन्नदा बाबू उसकी तलाशमें ऊपरके कमरेमें आये। देखा, वह बैठकमें नहीं है, सोनेके कमरेमें भी वह नहीं दिखाई दी। नौकरसे पूछा तो मालूम हुआ, वह कहीं बाहर गई है। तब वे अत्यन्त उत्कण्ठित होकर छतपर चले गये।

तब कलकत्ता शहरको नाना आकार और दूर तक विस्तृत छतोंपर हेमन्त ऋतुकी धूप म्लान होती आ रही थी, और दिनान्तकी हलकी हवा रह-रहकर इच्छानुसार घूम-फिर रही थी। हेमनलिनी जीनेकी दीवारकी छायामें अकेली बैठी थी। अन्नदा बाबू कब उसके पीछे आकर खड़े हुए, उसे मालूम नहीं। अन्तमें अन्नदा बाबूने जब उसके पास आकर कँधेपर हाथ रखा तब वह चौंक पड़ी, और दूसरे ही क्षण लज्जासे उसका चेहरा लाल हो उठा। हेमनलिनी जल्दीसे उठना ही चाहती थी कि अन्नदा बाबू उसके पास बैठ गये। जरा चुप रहकर

एक लम्बी साँस छोड़ते हुए बोले—"हेम, इस समय तेरी अगर मा रहती ! मैं तेरे किसी काममें ही नहीं आया ।"

वृद्ध पिताके मुँहसे ऐसी करुण बात सुनते ही हेमनलिनी उसी क्षण मानो गहरी मूर्च्छामेंसे जाग उठी । और अपने बापके मुंहकी तरफ देखने लगी । उस मुँहपर कितना स्नेह, कितनी करुणा, कितनी वेदना है ! इन्हीं कई दिनोंमें उस चेहरेमें कितना परिवर्तन हो गया है ! इस घरमें हेमनलिनीको लेकर जो तूफान उठ खड़ा हुआ है, उसकी सारी उथल-पुथल अपने ऊपर झेलते-हुए वे अकेले ही उससे जूझ रहे हैं । कन्याके आहत हृदयके पास वे बार-बार आ रहे हैं । और सन्त्वना देनेकी सारी कोशिशें व्यर्थ होनेपर आज उन्हें हेमकी माकी याद आ रही है ; और उनका अक्षम स्नेह अन्तःस्तरसे दीर्घनिश्वासके रूपमें बाहर निकला आ रहा है । ये सब बातें हेमनलिनीको आज वज्रके प्रकाशमें सहसा मानो स्पष्ट दिखाई दे गईं । धिक्कारका आघात उसे अपने शोकके परिवेष्टनसे एक क्षणमें बाहर खींच लाया । जो दुनिया उसके लिए छाया-सी विलीन होती जा रही थी, अब वह सत्य-रूपमें उसकी आँखोंके सामने आ खड़ी हुई । हेमनलिनीको सहसा लज्जाने ऐसा आ घेरा कि वह बिकल हो उठी । जिन स्मृतियोंसे वह बिलकुल आच्छन्न हुई बैठी थी, उन्हें अपने चारों तरफसे उसने जबरदस्ती झाड़कर फेंक दिया ; और अपनेको मुक्त कर लिया । उसने बड़े स्नेहसे पूछा—"बापूजी, तुम्हारी तबीयत अब कैसी है ?"

तबीयत ! तबीयत भी कोई चरचाका विषय है, इधर कुछ दिनोंसे वे इस बातको बिलकुल ही भूल गये थे । बोले—"मेरी तबीयत ! मेरी तबीयत तो बिलकुल ठीक है बेटी । इधर तुम्हारी हालत देख-देखकर मुझे बड़ी चिन्ता हो रही है । हमारा शरीर तो इतने सालोंसे यों ही चल रहा है, चलते-चलते टिकाऊ हो गया है, इसका कुछ नहीं बिगड़नेका । तुम लोगोंका शरीर तो उस दिनका है, इसलिए डर लगता है कि कुछ हो न जाय ।" कहते हुए वे लड़कीकी पीठपर हाथ फेरने लगे ।

हेमने पूछा—"अच्छा बापूजी, मा जब मरी थीं तब मैं कितनी बड़ी थी ?"

अन्नदा बाबू—"तू तब तीन सालकी बच्ची थी, तब तू बोलने लगी थी ।

मुझे खूब याद है, तूने मुझसे पूछा था, 'मा कहाँ है ?' मैंने कह दिया, 'मा तेरी अपने बापूजीके पास गई है ।' तेरे जन्मनेसे पहले ही तेरी माके पिताकी मृत्यु हो गई थी । तू उन्हें जानती नहीं थी । मेरी बात सुनकर तू कुछ समझ न सकी, मेरे मुंहकी तरफ देखती रही । थोड़ी देर बाद तू मुझे अपनी माके सूने घरकी तरफ ले जानेके लिए मेरा हाथ पकड़कर खींचने लगी । तेरा विश्वास था कि मैं तुझे वहांकी शून्यताके भीतर तेरी माका कुछ सन्धान दे सकता हूं । तू समझती थी कि तेरा बाप बड़ा-भारी आदमी है ! यह बात कभी तेरे मनमें भी नहीं आई कि जो असल बातें हैं उनके सम्बन्धमें तेरा बड़ा-भारी बाप बच्चोंसे भी गया-बीता है । आज भी मैं सोचता हू कि हम कितने असमर्थ हैं, कितने लाचार हैं ! ईश्वरने बापके मनमें स्नेह दिया है, किन्तु कितनी कम क्षमता दी है !"—कहते हुए उन्होंने हेमके माथेपर अपना दाहना हाथ रखकर शायद मन-ही-मन आशीर्वाद दिया ; और चुप हो गये ।

हेमनलिनी अपने पिताके उस कल्याणवर्षी कांपते हुए हाथको अपने दाहने हाथमें रखकर उसपर हाथ फेरने लगी । और बोली—"माकी मुझे बहुत कम धुँधली-सी याद है । मुझे याद आता है, दोपहरको वे बिस्तरपर पड़ी किताब पढ़ती थीं । मुझे उनका पढ़ना अच्छा नहीं लगता था, इसलिए मैं उनके हाथसे किताब छीन लेनेकी कोशिश करा करती थी ।"

इससे, फिर उन दिनोंकी बात छिड़ गई । मा कैसी थीं, क्या करती थीं, तब क्या होता था, इन सब बातोंकी चरचा होते-होते सूरज डूब गया और आकाशका रंग मैले तांबे जैसा हो गया । चारों तरफ शहरके कर्म-जीवनका कोलाहल है, उस कोलाहलमें एक गलीके मकानकी छतपर एक कोनेमें बैठे वृद्ध और नवीना दोनों मिलकर, पिता और पुत्रीके चिरन्तन स्निग्ध सम्बन्धकी संध्याकाशकी म्रियमान छायामें अश्रुसिक्त माधुरीको प्रस्फुटित करने लगे ।

ठीक इसी समय, जीनेमें योगेन्द्रके पैरोंकी आहट सुनकर दोनोंका गुञ्जन-आलाप उसी क्षण बन्द हो गया ; और दोनोंके दोनों चकित होकर उठ खड़े हुए। योगेन्द्रने आकर दोनोंके मुंहकी तरफ तीव्र दृष्टिसे देखा ; और कहा—"हेमकी सभा आजकल छतपर ही लगती है मालूम होता है !"

योगेन्द्र अधीर हो उठा था। घरमें दिन-रात यह जो एक शोककी कालिमा छाई हुई है, उसने उसका घर छुड़ा-सा दिया है। और, मित्रोंके यहाँ जाता है तो यह मुसीबत है कि वहाँ हेमके ब्याहके बारेमें तरह-तरहकी जवाबदेहियोंका सामना करना पड़ता है। वह बार-बार कहता रहता है, "हेम बहुत ज्यादती कर रही है। लड़कियोंको अंगरेजी उपन्यास पढ़नेसे यही दशा होती है। हेम सोचती है कि 'रमेशने जब कि उसे छोड़ ही दिया है तो उसका हृदय विदीर्ण हो ही जाना चाहिए।' इसीसे अब वह खूब समारोहके साथ हृदय विदीर्ण करने बैठी है। भला, उपन्यास पढ़नेवाली कितनी लड़कियोंके भाग्यमें प्रेमकी निराशा सहनेका ऐसा सुन्दर मौका बदा होता है!"

योगेन्द्रके कठोर व्यंगसे लड़कीको बचानेके लिए अन्नदा बाबू जल्दीसे बोल उठे--"मैं हेमसे जरा बातचीत कर रहा था।" मानो वे ही बातचीत करनेके लिए हेमको ऊपर ले आये थे।

योगेन्द्रने कहा—"क्यों, चायकी टेबिलपर क्या बातचीत नहीं हो सकती? बापूजी, तुम भी हेमका दिमाग खराब करनेमें मदद कर रहे हो! ऐसा करनेसे मेरा घरमें रहना मुश्किल हो जायगा।"

हेमको आश्चर्य हुआ, बोली—"बापूजी, तुमने अभी चाय नहीं पी?"

योगेन्द्र—"चाय तो कल्पना नहीं है जो संध्याकाशकी सूर्यास्त-आभामेंसे वह अपने-आप झड़ पड़ेगी! छतके कोनेमें बैठे रहनेसे चायका प्याला अपने आप परिपूर्ण होकर नहीं आ जाता, यह भी बताना पड़ेगा क्या?"

अन्नदा बाबू हेमकी लज्जा दूर करनेके लिए जल्दीसे बोल उठे—"आज मुझे चाय नहीं पीनी थी।"

योगेन्द्र—"क्यों बापूजी, तुम सब-के-सब तपस्वी हो जाओगे क्या? तो फिर मेरी क्या दशा होगी? वायु-आहारसे तो मेरा जीवन-निर्वाह नहीं हो सकता।"

अन्नदा बाबू—"नहीं नहीं, तपस्याकी बात नहीं है। कल रातको मुझे अच्छी तरह नींद नहीं आई, इसीसे सोचा कि देखूं चाय बगैर पीये कैसी तबीयत रहती है।"

वास्तवमें, हेमके साथ बात करते-करते चायके भरे-प्यालेको ध्यानमूर्तिने बहुत बार अन्नदा बाबूको प्रलुब्ध किया है, पर आज उसका असर जाता रहा है। बहुत दिन बाद आज हेम उनके साथ स्वस्थतासे बात कर रही है, बहुत दिन बाद आज निर्जन छतपर दोनोंमें अत्यन्त घनिष्ठरूपसे बातचीत जमी है; इसके पहले और भी कभी ऐसे खुले मनसे बातचीत हुई हो, उन्हें याद नहीं पड़ता। इस आलापमें इतना दम नहीं कि वह एक जगहसे दूसरी जगह उठा ले जानेपर भी कायम रह सके, हिलानेकी जरा भी कोशिश की गई कि वह डरपोक हरिणकी तरह भाग खड़ा होगा। इसीलिए अन्नदा बाबूने आज चायके प्यालेको क्षण-क्षणके अह्वानकी ऐसी उपेक्षा की थी। किन्तु हेमनलिनीको इस बातपर विश्वास नहीं हुआ कि उसके पिता चाय पीना छोड़कर अनिद्राकी चिकित्सा करना चाहते हैं। उसने कहा—"चलो बापूजी, चाय पीयें चलके।" अन्नदा बाबू उसी क्षण अनिद्राकी आशङ्काको भूलकर तेजीसे चायकी टेबिलकी तरफ चल दिये।

चायके कमरेमें कदम रखते ही उन्होंने देखा, वहाँ अक्षय बैठा है। उनका मन उत्कण्ठित हो उठा। सोचने लगे, हेमका मन आज जरा स्वस्थ हुआ है, अक्षयको देखते ही वह फिर विकल हो उठेगी; किन्तु अब तो कोई उपाय नहीं। दूसरे ही क्षण हेम भी आ पहुँची। अक्षय उसे देखते ही उठ खड़ा हुआ और बोला—"योगेन, मैं चलता हूँ।"

हेमने कहा—"क्यों अक्षय बाबू, आपको कोई काम है? चाय तो पी जाइये।"

हेमनलिनीकी इस अभ्यर्थनासे घरके सभी आश्चर्यमें पड़ गये। अक्षय बैठता हुआ बोला—"आप लोगोंकी अनुपस्थितिमें ही मैं दो प्याले पी चुका हूँ; अनुरोधकी रक्षाके लिए और भी दो-एक प्याले न पी सकूँ ऐसी तो कोई बात नहीं।"

हेमनलिनीने हँसते हुए कहा—"चायके प्यालोंके बारेमें तो आपसे कभी अनुरोध ही नहीं करना पड़ा।"

अक्षयने कहा—"नहीं, अच्छी चीजकी मैंने 'जरूरत नहीं' कहके कभी भी बेकदरी नहीं की, विधाताने इतनी बुद्धि तो मुझे दे ही रखी है।"

योगेन्द्रने कहा—"इस बातको याद करके, 'अच्छी चीज' भी तुम्हें कभी 'जरूरत नहीं' कहके वापस न कर दे, मेरा यही आशीर्वाद है।"

बहुत दिन बाद आज अन्नदा बाबूकी चायकी टेबिलपर बातचीतका सहज सिलसिला जम उठा। साधारणतः हेमनलिनी शान्तभावसे हँसा करती है। किन्तु आज उसकी हँसी बातचीतके ऊपर खिल-खिल उठती है। हँसी-हँसीमें पितासे उसने कहा—"बापूजी, अक्षय बाबूकी हरकत तो देखिये, कई दिनोंसे तुम्हारी गोलियाँ नहीं खाईं, फिर भी उनकी तबीयत बिलकुल दुरुस्त है। अगर जरा भी कृतज्ञता होती, तो कम-से-कम दर्द तो होता।"

योगेन्द्रने कहा—"गोली-हराम और किसे कहते हैं?"

अन्नदा बाबू अत्यन्त खुश होकर हँसने लगे। बहुत दिन बाद आज फिर जो उनकी गोलियोंकी शीशीपर लोगोंका कटाक्ष शुरू हुआ, इसे उन्होंने अपने पारिवारिक स्वास्थ्यका लक्षण समझा। आज उनके मनसे एक तरहका बोझ-सा उतर गया। बोले—"यह कैसी बात है! आदमीके विश्वासपर हस्तक्षेप करना ठीक नहीं। मेरे गोल्याहारी-दलमें एकमात्र अक्षय ही बाकी बचा है, उसे भी तुमलोग बहकाये दे रहे हो!"

अक्षयने कहा—"इसका कोई डर नहीं, बाबू साहब! अक्षयका क्षय करना आसान नहीं।"

योगेन्द्रने कहा—"वैसे ही जैसे जाली सिक्केका क्षय असान नहीं! क्षय करनेकी कोशिश की नहीं कि पुलिसके पंजेमें फँसे।"

इस तरह हास्यालापके जादूसे मानो अन्नदा बाबूकी चायकी टेबिलपरसे बहुत दिनोंका भूत उतार दिया। आजकी यह चायकी सभा जल्दी भङ्ग नहीं होती; किन्तु आज यथासमय हेम बाल नहीं बाँध सकी थी, इसलिए उसे उठ जाना पड़ा। और तब अक्षयको भी एक खास कामकी याद उठ आई और वह भी चला गया।

योगेन्द्रने कहा—"बापूजी, अब देर करना ठीक नहीं। जल्दी ही ब्याहका इन्तजाम करना चाहिए।" सुनकर अन्नदा बाबू लड़केके मुँहकी तरफ देखते रह गये। योगेन्द्रने कहा—"रमेशसे सम्बन्ध टूट जानेसे समाजमें बड़ी-भारी

कानाफूसी चल रही है ; इस बातको लेकर मैं अब और कहाँ तक लोगोंसे लड़ता फिरूं ? सब बातें अगर खुलासा कहनेकी होतीं तो लड़नेमें भी कोई आपत्ति नहीं थी। किन्तु हेमके लिए मुँह खोलना भी असम्भव है ; अब तो हाथापाईके सिवा और-कोई चारा नहीं। उस दिन अखिलको चाबुक लगाने पड़े थे ; सुना था कि वह जो मुँहपर आता है वही कहता फिरता है। जल्दीसे अगर हेमका ब्याह हो जाय तो सारा झगड़ा ही मिट जाय ; और मैं भी सारी दुनियाको आस्तीन उठाकर चिनौती देनेसे बाज आऊँ। मेरी बात सुनो, अब देर मत करो।"

अन्नदा—"किससे ब्याह दूँ ?"

योगेन्द्र—"सिर्फ एक आदमी है, जो इतना काण्ड और इतनी ऊधमबाजी के बाद भी ब्याह करनेको राजी हो सकता है। नहीं तो, अब लड़का मिलना मुश्किल ही है।"

अन्नदा—"कौन है वह ?"

योगेन्द्र—"अक्षय। उसे गोली खानेको कहो तो गोली भी खा सकता है, और ब्याह करनेको कहो तो ब्याह भी कर सकता है।"

अन्नदा—"तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है क्या! अक्षयसे ब्याह करनेको हेम कभी राजी हो सकती है!"

योगेन्द्र—"तुम अगर बीचमें कुछ गड़बड़ी न करो, तो मैं हेमको राजी करा सकता हूँ।"

अन्नदा बाबू व्यस्त हो उठे! बोले—"नहीं योगेन, नहीं, तुम हेमको समझते नहीं। तुम डराकर, तकलीफ देकर उसे बेचैन कर दोगे। अभी उसे कुछ दिन स्वस्थ रहने दो। उसने बड़ा कष्ट उठाया है, बेचारीको जरा साँस लेने दो। ब्याहके लिए अभी काफी समय पड़ा हुआ है।"

योगेन्द्रने कहा—"मैं उसे जरा भी तकलीफ नहीं दूँगा। जहाँ तक सावधानी और नरमाईसे काम निकाला जा सकता है, निकालूँगा। तुम्हारा क्या यह खयाल है कि मैं बिना झगड़ेके कोई काम ही नहीं कर सकता ?"

योगेन्द्र अधोर-प्रकृतिका आदमी है। उस दिन शामको हेम ज्यों ही बाल बाँधकर निकली त्यों ही योगेन्द्रने उसे बुलाकर कहा—"हेम, एक बात

सुनना।" सुनते ही हेमका कलेजा काँप उठा। वह योगेन्द्रके पीछे-पीछे जाकर उसके कमरेमें बैठ गई। योगेन्द्रने कहा—"हेम, बापूजीकी तनदुरुस्ती कितनी बिगड़ गई है, देख रही हो?"

हेमके चेहरेपर उद्वेगकी छाया-सी पड़ गई ; वह कुछ बोली नहीं।

योगेन्द्र कहने लगा—"मेरा कहना है कि इसका प्रतिकार होना चाहिए ; नहीं तो, वे सख्त बीमार पड़ जायेंगे?"

हेमनलिनी समझ गई, पिताके इस अस्वास्थ्यके लिए सारा अपराध उसीके सिर मढ़ा जा रहा है। वह सिर झुकाये हुए अपनी साड़ीकी किनारी खींचने लगी। कुछ बोली नहीं। योगेन्द्र कहता गया—"जो हो गया सो तो हो ही गया ; बीती हुई बातपर जितना ही पछताती रहोगी उतनी ही हमलोगोंकी शरमिन्दगी बढ़ती जायगी। अब भी बापूजीके मनको अगर पूरी तरह स्वस्थ रखना चाहती हो, तो जितनी जल्दी हो सके, सारीकी सारी पिछली बातोंको जड़से खतम कर देना होगा।" इतना कहकर वह जवाबकी उम्मीदमें हेमनलिनीके मुँहकी तरफ देखता हुआ चुपचाप बैठा रहा।

हेमने शरमाते हुए कहा—"इन सब बातोंको लेकर मैं बापूजीको कभी भी परेशान नहीं करूँगी।"

योगेन्द्र—"तुम तो न करोगी, मान लिया। लेकिन, इससे तो आदमीकी जबान नहीं रुक सकती।"

हेम—"इसका मैं क्या कर सकती हूँ, बताओ?"

योगेन्द्र—"चारों तरफ तरह-तरहकी जो चरचा हो रही है उसे बन्द करनेका सिर्फ एक ही उपाय है।"

योगेन्द्रने अपने मनमें जो बात तय कर रखी है उसे समझते ही हेम जल्दीसे बोल उठी—"फिलहाल बापूजीको साथ लेकर बाहर कहीं चला जाय तो कैसा रहे? दो-चार महीने बाहर घूम आनेसे सबकी तन्दुरुस्ती भी ठीक हो जायगी ; और चरचा भी बन्द हो जायगी।"

योगेन्द्रने कहा—"उससे भी पूरी कामयाबी नहीं हो सकती। जब तक बापूजीको यह नहीं मालूम हो जाता कि तुम्हारे मनका क्षोभ बिलकुल दूर हो

गया है, तब तक उनके मनमें काँटा चुभता ही रहेगा, तब तक वे हरगिज स्वस्थ नहीं हो सकते।"

देखते-देखते हेमनलिनीकी आँखोंमें आँसू भर आये। जल्दीसे उसने आँखें पोंछ डालीं, और कहा—"मुझे क्या करनेको कहते हो?"

योगेन्द्रने कहा—"मेरी बात तुम्हें जरूर कठोर मालूम होगी, मैं जानता हूँ; लेकिन सब तरफसे अगर मंगल चाहो, तो जल्दसे जल्द तुम्हें ब्याह करना होगा।" हेम स्तब्ध होकर बैठी रही। योगेन्द्र अपने अधैर्यको सम्हाल न सका; बोल उठा—"हेम, तुमलोग कल्पनाके द्वारा छोटी-छोटी बातोंको बहुत बड़ी करके देखा करती हो। तुम्हारे ब्याहके सम्बन्धमें जो गड़बड़ हुई है, ऐसी गड़बड़ कितनी ही लड़कियोंके जीवनमें हुआ करती है, और फिर ब्याह हो जानेके बाद वह मिट भी जाती है। नहीं तो, घरमें बात-बातपर उपन्यास बनाते रहनेसे आदमी जी कैसे सकता है? 'आजीवन संन्यासिनी बनकर छतपर बैठके आकाशकी तरफ देखती रहूँगी, किसीकी मिथ्याचारिताकी स्मृति हृदय-मन्दिरमें स्थापित करके उसकी पूजा करती रहूँगी', इन सब बातोंसे काव्य रचना तुम्हारे लिए लज्जाजनक भले ही न हो, पर हमें तो मारे शरमके गड़ जाना पड़ता है। जितनी जल्दी हो सके, किसी भद्र गृहस्थके घर ब्याह करके अपने इस काव्यको खतम कर डालो। इसीमें सबकी भलाई है, समझीं!"

लोगोंकी दृष्टिमें हेमका जीवन जो काव्य बना जा रहा है, इस बातको वह अच्छी तरह समझती है, और इसकी लज्जा उसके लिए कितनी पीड़ादायक है सो वही जानती है। योगेन्द्रके व्यंग-वाक्य उसके हृदयमें शूलकी तरह चुभ गये। उसने कहा—"भाई साहब, मैंने यह कब कहा है कि मैं संन्यास ले लूँगी, ब्याह नहीं करूँगी!"

योगेन्द्रने कहा—"अगर ऐसा नहीं है तो ब्याह करो। मगर हाँ, तुम अगर यह कहो कि मुझे तो स्वर्गराज्यका इन्द्र ही चाहिए, उसके सिवा मुझे और-कोई पसन्द नहीं, तब तो संन्यास ही लेना पड़ेगा। संसारमें इच्छानुसार क्या-क्या मिलता है? जो मिलता है, मनको उसीके अनुकूल बना लेना पड़ता है। मैं तो कहता हूँ, इसीमें मनुष्यका यथार्थ महत्त्व है।"

हेमने कहा—"भाई साहब, तुम मुझसे ऐसी चुभनेवाली बातें क्यों करते हो? मैंने क्या तुमसे पसन्दके बारेमें कोई बात कही है?"

योगेन्द्र—"कही तो नहीं; लेकिन मैं देख रहा हूँ, बिना-कारण और अन्यायपूर्वक तुम किसी-किसी हितैषी बन्धुपर साफ तौरसे विद्वेष जाहिर करती रहती हो। लेकिन यह बात तुम्हें माननी ही पड़ेगी कि इस जीवनमें जितने आदमियोंसे तुम्हारा परिचय हुआ है, उनमें सिर्फ एक आदमी ऐसा पाया गया है जो सुखमें दुखमें, मान-अपमानमें तुम्हारे प्रति अपने हृदयको स्थिर रख सका है। इसीलिए मेरे मनमें उसके प्रति काफी श्रद्धा है। तुम्हें सुखी करनेके लिए वह अपना जीवन दे सकता है। ऐसा पति अगर चाहो तो उसे ढूँढ़नेमें भटकना नहीं पड़ेगा। और अगर काव्य ही रचना चाहती हो तो—"

हेमनलिनी उठके खड़ी हो गई, और बोली—"मुझसे तुम इस तरह बात न करो! बापूजी मुझे जैसी आज्ञा देंगे, जिससे ब्याह करनेको कहेंगे, मैं उनकी आज्ञाका पालन करूँगी। अगर न करूँ, तब तुम जो जीमें आये सो कहना।"

योगेन्द्र उसी क्षण नरम पड़ गया, बोला—"हेम, नाराज न होओ, बहन! तुम तो जानती हो, मेरा मन खराब हो जानेसे दिमाग ठीक नहीं रहता; जब जैसा मनमें आता है, कह बैठता हूँ। मैं क्या बचपनसे तुम्हें नहीं जानता, लज्जा तुम्हारे लिए कितनी स्वाभाविक है और बापूजीसे तुम कितना मोह करती हो!" इतना कहकर योगेन्द्र अन्नदा बाबूके कमरेमें चला गया। अन्नदा बाबू इस बातकी कल्पना कर-करके कि योगेन्द्र अपनी बहनको न-जाने कैसे-कैसे उत्पीड़ित कर रहा होगा, अत्यन्त उद्विग्न हो रहे थे; और भाई-बहनकी बातचीतके बीचमें पहुँच जानेके लिए उठना ही चाहते थे कि इतनेमें योगेन्द्र आ पहुँचा। अन्नदा बाबू उसके मुँहकी तरफ देखने लगे। योगेन्द्रने कहा—"बापूजी, हेम ब्याहके लिए राजी हो गई है। तुम समझते होगे कि मैंने उसे जबर्दस्ती राजी किया होगा। मैंने कतई जोर नहीं दिया। अब तुम अगर उसे कह दो, तो वह अक्षयसे ब्याह करनेमें कोई आपत्ति नहीं करेगी।"

अन्नदा बाबूने कहा—"मुझे कहना पड़ेगा?"

योगेन्द्र—"तुम नहीं कहोगे तो क्या वह खुद कहने आयेगी कि 'मैं

अक्षयसे ब्याह करूँगी !' अच्छा, अपने मुँहसे कहनेमें तुम्हें अगर सङ्कोच हो, तो मुझे आज्ञा दो, मैं उससे तुम्हारी आज्ञा कह दूँगा ।"

अन्नदा बाबू अत्यन्त चञ्चल हो उठे, बोले—"नहीं-नहीं, मुझे जो कुछ कहना होगा, मैं खुद ही कहूँगा । पर इतनी जल्दबाजी करनेकी क्या जरूरत है ? मेरी रायसे और-भी कुछ दिन जाने दो ।"

योगेन्द्रने कहा—"नहीं बापूजी, देर करनेसे तरह-तरहके विघ्न आ सकते हैं । इस स्थितिको ज्यादा दिन तक बनाये रखना ठीक नहीं है ।"

योगेन्द्रकी जिद्के आगे घरके किसीका कोई बस नहीं चलता ; वह जिस बातपर अड़ जाता है उसे पूरा किये बगैर नहीं मानता । इसलिए अन्नदा बाबू मन-ही-मन उससे डरते हैं । उन्होंने बातको फिलहाल दबा देनेके लिए कहा—"अच्छा, मैं कहूंगा ।"

योगेन्द्रने कहा—"कहूंगा नहीं, बापूजी, आज ही कहनेका ठीक मौका है। वह तुम्हारी आज्ञाकी प्रतीक्षामें बैठी है । आज ही, जैसा भी हो, फैसला कर डालो।" अन्नदा बाबू बैठे सोचने लगे। योगेन्द्र बोला—"बापूजी, अब सोचनेसे काम नहीं चलेगा ! एक बार तुम हेमके पास चलो तो सही !"

अन्नदा बाबूने कहा—"योगेन, तुम यहीं रहो, मैं अकेला जाता हूं ।"

योगेन्द्रने कहा—"अच्छा, मैं यहीं बैठा हुआ हूं ।"

अन्नदा बाबूने बैठकमें जाकर देखा कि बिलकुल अँधेरा है । मालूम हुआ, जल्दीसे कोई कोचसे उठ खड़ा हुआ, और दूसरे ही क्षण एक आँसूसे भीगा कण्ठ बोल उठा—"बापूजी, बत्ती बुझ गई है, नौकरसे कहे आती हूं, जला देगा ।"

बत्ती बुझनेका कारण अन्नदा बाबूसे छिपा न रहा ; उन्होंने कहा—"रहने दो बेटी, बत्तीकी क्या जरूरत है !" कहते हुए वे अँधेरेमें ही अन्दाजसे हेमके पास आकर बैठ गये । हेमने कहा—"बापूजी, अपने शरीरका तुम जरा भी खयाल नहीं कर रहे हो ।"

अन्नदा बाबू बोले—"इसका एक विशेष कारण है, बेटी, शरीर बिलकुल ठीक है, इसीसे उसका खयाल नहीं करता । तुम अपने शरीरको तरफ तो देखो, इधर तुम्हारा स्वास्थ्य बहुत गिर गया है ।"

हेमनलिनी दुःखित होकर बोली—"तुम सब मिलकर एक ही बात कह रहे हो, यह बड़ी बेजा बात है बापूजी ! मेरी तबीयत बिलकुल ठीक है, तुमने मुझे शरीरकी लापरवाही करते कब देखा बताओ भला ? अगर तुम्हारा खयाल हो कि मुझे अपनी तनदुरुस्तीके लिए कुछ करना चाहिए, तो मुझसे कहते क्यों नहीं ! मैंने कब तुम्हारी बात नहीं मानी है, बापूजी ?" अन्तके शब्द कहते हुए हेमका कण्ठ दूना आर्त-सा सुनाई दिया ।

अन्नदा बाबू अत्यन्त चंचल और व्याकुल हो उठे, बोले—"बराबर मानी है, बेटी ! तुम्हें कभी कुछ कहनेकी जरूरत ही नहीं पड़ी । तुम मेरी मा हो न, इसीसे तुम मेरे मनकी बात जान जाती हो ; और उसीके अनुसार सब काम किया करती हो । मेरे अन्तःकरणका आशीर्वाद अगर व्यर्थ न गया तो ईश्वर तुम्हें जरूर चिर-सुखी करेंगे ।"

हेम—"बापूजी, मुझे क्या तुम अपने पास नहीं रखोगे ?"

अन्नदा—"क्यों बिटिया, क्यों नहीं रखूंगा ।"

हेम—"जब तक भाई साहबकी बहू नहीं आती, कमसे कम तब तक तो रह ही सकती हूं ! मेरे बिना तुम्हारी देख-भाल कौन करेगा ?"

अन्नदा—"हुंह्, मेरी देख-भाल ? तू निरी बावली बिटिया है ! मेरी देख-भालके लिए तुझे इतनी चिन्ता ! मेरी इतनी कीमत बढ़ा दी, एँ !"

हेम—"बापूजी, बड़ा अँधेरा है, बत्ती ले आऊं ।" कहती हुई गई और बगलके कमरेमेंसे हाथ-बत्ती लाकर एक तरफ रखती हुई बोली—"इधर कई दिनोंसे शामको मैं तुम्हें अखबार पढ़के नहीं सुना सकी । आज सुनाऊंगी ।"

अन्नदा बाबू उठ खड़े हुए, बोले—"अच्छा, बैठ जरा, मैं अभी आकर सुनता हूं ।" इतना कहकर वे योगेन्द्रके पास पहुँच गये । सोचा था कि वे उससे कहेंगे, 'आज बात नहीं हो सकी, कल करेंगे' ; पर ज्यों ही योगेन्द्रने पूछा, "क्या हुआ बापूजी, ब्याहकी बात कही ?" त्यों ही चटसे उनके मुंहसे निकल गया—"हाँ, कही है ।"

उन्हें डर था कि कहीं वह खुद जाकर हेमको व्यथित न कर डाले ।

योगेन्द्रने कहा—"जरूर वह राजी हुई होगी ?"

अन्नदा बाबू बोले—"हाँ, एक तरहसे राजी ही समझो।"

योगेन्द्रने कहा—"तो मैं अक्षयसे कह आऊं?"

अन्नदा बाबू घबड़ा-से गये, बोले—"नहीं नहीं, अक्षयसे अभी कुछ मत कहो। समझे योगेन, इतनी जल्दबाजी करनेसे सब गड़बड़ हो जायगा। अभी किसीसे कुछ कहनेकी जरूरत नहीं। बल्कि अभी हमलोग कुछ दिन पछाँहकी तरफ कहीं घूम आवें तो अच्छा, उसके बाद सब ठीक हो जायगा।"

योगेन्द्र उनकी बातका कोई जवाब न देकर चला गया। और सीधा अक्षयके घर पहुंचा। अक्षय उस समय एक अंगरेजी महाजनी किताब लेकर 'बुककीपिंग' सीख रहा था। योगेन्द्रने उसकी किताब-कापी सब छीनकर अलग फेंक दी; और बोला—"यह सब पीछे करना, अभी तुम अपने ब्याहका दिन सुधवाओ जाकर।" अक्षयने कहा—"एँ, कहते क्या हो!"

३९

दूसरे दिन, सवेरे उठकर हेमनलिनी जब हाथ-मुँह धोकर अपने कमरेसे बाहर निकली, तो देखा कि उसके बापूजी अपने कमरेमें खिड़कीके पास आराम-कुरसीपर चुपचाप बैठे हैं। कमरेमें असबाब ज्यादा नहीं। एक कोनेमें खाट है और दूसरे कोनेमें एक अलमारी, दीवारपर उनकी स्वर्गीय पत्नीकी धुँधली-सी एक तसवीर टगी है और उसके सामनेकी दीवारपर उन्हींके हाथका रेशमपर ऊनका कढ़ा फ्रेममें मढ़ा-हुआ गुलदस्ता लटक रहा है। स्त्रीकी जीवित-दशामें अलमारीमें उनकी छोटी-मोटी शौककी चीजें जैसे रखी थीं, आज भी वे वैसीकी वैसी ही रखी हैं।

पिताके पीछे खड़े होकर सफेद बाल तोड़नेके छलसे उनके माथेपर कोमल उंगलियाँ चलाते हुए हेमने कहा—"बापूजी, चलो आज सवेरे-सवेरे चाय पी लो। उसके बाद तुम्हारे कमरेमें जाकर तुम्हारी पहलेकी बातें सुनूंगी। वे बातें मुझे बड़ी अच्छी लगी हैं।"

हेमनलिनीके सम्बन्धमें अन्नदा बाबूकी बोधशक्ति आजकल ऐसी प्रखर हो उठी है कि चाय पीनेके लिए इस तकाजेके मानी समझनेमें उन्हें जरा भी

देर न लगी। और-कुछ देर बाद अक्षय चायकी टेबिल आ घेरेगा, इसलिए हेम चाहती है कि जल्दीसे चाय पी-पाकर वह पिताके एकान्त कमरेमें बैठकर उनसे बातें करे, इसे वे तुरत समझ गये। शिकारीके भयसे भयभीत हरिणीकी तरह उनकी कन्या जो सर्वदा त्रस्त रहती है, इस बातसे उन्हें गहरी चोट पहुँची।

नीचे जाकर देखा कि नौकरने अभी तक चायका पानी नहीं चढ़ाया। उसपर वे सहसा गुस्सा हो उठे। उसने यह समझानेकी बहुत कोशिश की कि आज वे निर्दिष्ट समयके पहले ही आ गये हैं, फिर भी, उन्होंने अपना यही मत जाहिर किया कि 'नौकर आजकल बाबू हो गये हैं, उन्हें जगानेके लिए आदमी रखने पड़ेंगे।'

नौकर झटपट चायका पानी ले आया। अन्नदा बाबू दूसरे दिन जैसे बातें करते हुए धीरे-धीरे आरामसे चाय-रस पान करते हैं, आज वैसा न करके उन्होंने जल्दीसे प्याला खतम कर दिया। हेमने कुछ आश्चर्यके साथ कहा—"बापूजी, आज क्या तुम्हें कहीं जाना है?"

अन्नदा बाबूने कहा—"नहीं तो! जाड़ेके दिनोंमें जल्दी-जल्दी चाय पीनेसे पसीना आ जाता है और शरीर जरा हलका हो जाता है।"

किन्तु, अन्नदा बाबूके शरीरमें पसीना आनेके पहले ही योगेन्द्र अक्षयके साथ वहाँ आ पहुंचा। आज अक्षयके पहनावमें जरा विशेषता थी। हाथमें चाँदीकी मूंठवाली छड़ी है, ऊपरकी जेबमें घड़ीकी चैन लटक रही है, और बायें हाथमें ब्राउन कागजमें लिपटी-हुई कोई किताब है। और-और दिन अक्षय जहाँ बैठता है, आज वहाँ न बैठकर वह हेमनलिनीके पासकी कुरसीपर बैठा; और हंसता हुआ बोला—"आपलोगोंकी घड़ी आज तेज चल रही है।"

हेमनलिनीने अक्षयकी तरफ देखा नहीं, और न उसकी बातका कोई जवाब ही दिया। अन्नदा बाबूने कहा—"हेम, चलो बेटी, ऊपर चलें। मेरे गरम कपड़ोंको जरा धूपमें डाल दो।" योगेन्द्रने कहा—"बापूजी, धूप भागी थोड़े ही जा रही है, इतनी जल्दी क्या है?" और हेमसे बोला—"हेम, अक्षयको एक प्याला चाय पिलाओ, मुझे भी देना, लेकिन अतिथिको पहले।"

अक्षयने हँसते हुए हेमसे कहा—"कर्तव्यकी खातिर इतना बड़ा आत्मत्याग देखा है कभी ? इस वक्त आप दूसरे सर फिलिप सिड्नी हो रहे हैं !"

हेमने अक्षयकी बातपर जरा भी ध्यान न देकर चायके दो प्याले भरके एक योगेन्द्रको दे दिया और दूसरा अक्षयकी तरफ जरा-सा खिसकाकर वह पिताके मुंहकी तरफ देखने लगी। अन्नदा बाबूने कहा—"धूप तेज हो जायगी तो तकलीफ होगी, चलो, अब देर न करो।"

योगेन्द्रने कहा—"आज कपड़े नहीं सूखेंगे तो कोई हर्ज हो जायगा ! अक्षय आया है—"

अन्नदा बाबू सहसा उद्दीप्त हो उठे ; बोले—"तुमलोगोंको जबरदस्तीके सिवा कुछ सूझता ही नहीं ! तुमलोग अपनी जिद चलाकर दूसरोंकी मर्म-वेदनापर अपनी इच्छाको जबरदस्ती लादना चाहते हो ! मैं बहुत दिनोंसे चुपचाप सहता आ रहा हूं, पर अब ऐसा नहीं होगा। बेटी हेम, कलसे तुम ऊपर मेरे कमरेमें चायका इन्तजाम करना, अब वहीं अपन चाय पीया करेंगे।"

इतना कहकर अन्नदा बाबू हेमके साथ ऊपर जानेको तैयार थे कि हेम शान्तस्वरमें बोल उठी—"बापूजी, जरा-सा बैठ जाओ। आज तुमने अच्छी तरह चाय नहीं पी।" और अक्षयसे बोली—"अक्षय बाबू, कागजमें लिपटा हुआ यह क्या रहस्य है, मैं पूछ सकती हूं ?"

"सिर्फ पूछ ही नहीं सकतीं बल्कि रहस्यका उद्घाटन भी कर सकती हैं।" कहते हुए अक्षयने उसे हेमकी तरफ बढ़ा दिया।

हेमने उसे खोलकर देखा, मरक्को-जिल्दकी एक टेनिसनकी किताब है। वह सहसा चौंक पड़ी, उसका चेहरा फक्क पड़ गया। ठीक ऐसी ही जिल्दकी यही किताब उसे पहले भी उपहारमें मिल चुकी है, और आज तक वह उसके कमरेमें टेबिलके खानेमें गुप्त-आदरके साथ सुरक्षित रखी है।

योगेन्द्र मुसकराता हुआ बोला—"रहस्य अभी सम्पूर्ण उद्घाटित नहीं हुआ।" कहते हुए उसने किताबका पहला कोरा पन्ना खोलकर हेमको दिखा दिया। उसमें लिखा था, "श्रीमती हेमनलिनीके प्रति अक्षयकी श्रद्धा।" उसी क्षण हेमके हाथसे किताब छूटकर जमीनपर गिर पड़ी ; और उसकी तरफ जरा भी ध्यान न देकर उसने कहा—"बापूजी, चलो।"

दोनोंके दोनों बाहर चले गये । योगेन्द्रकी आँखोंसे आग बरसने लगी। उसने कहा—"नहीं, अब यहाँ नहीं रहा जा सकता । मैं स्कूल-मास्टरी करके अपनी गुजर करूँगा, यहाँसे चला जाऊँगा ।"

अक्षयने कहा—"भाई, तुम व्यर्थ ही गरम हो रहे हो । मैंने तभी कहा था कि तुमने गलत समझा है, ऐसा हरगिज नहीं हो सकता । तुम्हींने मुझे बार-बार आश्वासन देकर मुझे विचलित किया । किन्तु मैं तुमसे निश्चित कहा हूं कि हेमनलिनीका मन मेरे अनुकूल कभी भी नहीं होगा । लिहाजा आशा छोड़ देना ही बुद्धिमानी है । असल बात यह है कि वे रमेशको नहीं भूल नहीं सकी हैं । अब तुम्हारा यही कर्तव्य है कि पहले रमेशको यादसे उनके मनको मुक्त करो ।"

योगेन्द्रने कहा—"कह तो दिया, कर्तव्य है, कुछ उपाय भी बताओगे ?"

अक्षयने कहा—"मेरे सिवा संसारमें क्या और-कोई ब्याह-लायक नवयुवक है ही नहीं ! मैं देखता हूँ, तुम अगर अपनी बहन होते तो मेरा कुआरा-पन दूर करनेके लिए हमारे पुरखोंको हताशामें दिन नहीं काटने पड़ते ! जैसे भी हो जल्दी हो एक ऐसा अच्छा लड़का ढूँढ़ निकालना होगा जिसपर नजर पड़ते ही जल्दी कपड़े सुखानेकी इच्छा प्रबल न होकर मन्द पड़ जाय ।"

योगेन्द्र—"लड़का तो किसी कम्पनीमें आर्डर देनेसे नहीं मिलेगा !"

अक्षय—"जरा-सेमें तुम्हारे हाथ-पाँव ऐसे ढीले क्यों पड़ जाते हैं ? लड़केका सन्धान मैं दे सकता हूँ ; लेकिन जल्दबाजी करोगे तो सब गुड़ गोबर हो जायगा । शुरूमें ही ब्याहका जिक्र छेड़कर दोनों पक्षोंको शङ्कित न कर देना । धीरे-धीरे आलाप-परिचय जमने देना, उसके बाद ठीक मौकेसे कैसे क्या करना होगा, मैं बता दूंगा ।"

योगेन्द्र—"प्रणाली तो अति-उत्तम है ! पर वह है कौन, बताओगे भी ?"

अक्षय—"तुम उसे अच्छी तरह नहीं जानते, पर देखा तुमने जरूर है । नलिनाक्ष डाक्टर ।"

योगेन्द्र—"नलिनाक्ष !"

अक्षय—"चमकते क्यों हो ! उसके विषयमें ब्राह्मसमाजमें जो आन्दोलन

चल रहा है उसे चलने दो। इसके मानी यह नहीं कि तुम लड़का हाथसे निकल जाने दो?"

योगेन्द्र—"मेरे हाथ समटेते ही अगर लड़का हाथसे निकल जाता, तो बात ही क्या थी! लेकिन, नलिनाक्ष क्या ब्याहके लिए राजी होंगे?"

अक्षय—"आज ही राजी हो जायेंगे, ऐसा मैं नहीं कह सकता। पर, समय आनेपर क्या नहीं होता? योगेन, मेरी बात सुनो। कल नलिनाक्षका एक जगह भाषण होगा, उसमें तुम हेमनलिनिको ले जाना। डाक्टरमें बोलनेको अच्छी शक्ति है। स्त्रियोंका चित्त आकर्षित करनेमें यह शक्ति मामूली नहीं! हाय-हाय, अबोध अबलाएँ इस बातको समझती ही नहीं कि वक्ता-पतिको अपेक्षा श्रोता-पति कहीं ज्यादा अच्छा होता है!"

योगेन्द्र—"लेकिन, नलिनाक्षका इतिहास तो बताओ, सुन रक्खूँ।"

अक्षय—"देखो योगेन, इतिहासमें अगर कुछ नुक्स हो भी, तो उसपर ज्यादा दिमाग न खपाना। थोड़ेसे नुक्ससे दुर्लभ चीज सुलभ हो जाती है। मैं तो उसे लाभ ही समझता हूँ।"

अक्षयने नलिनाक्षका जो इतिहास बताया उसका संक्षिप्त रूप यह है:—नलिनाक्षके पिता राजवल्लभ फरीदपुरकी तरफ रहनेवाले छोटे-मोटे जमींदार थे। तीस-बत्तीस सालकी उमरमें उन्होंने ब्राह्मधर्म ग्रहण किया था। पर उनकी स्त्री किसी भी तरह धर्म-परिवर्तनके लिए राजी नहीं हुई। और आचार-विचारके सम्बन्धमें वे अत्यन्त सावधानीसे पतिसे बचकर चलने लगीं, जोकि राजवल्लभ बाबूके लिए कतई सुखकर नहीं हुआ। बादमें उनके पुत्र नलिनाक्षने धर्म-प्रचार के उत्साह और अपनी भाषण-शक्तिसे ब्राह्मसमाजमें काफी प्रतिष्ठा पाई। वे सरकारी डाक्टर नियुक्त होकर नाना स्थानोंमें रहे; और उन्होंने अपने चरित्रकी निर्मलता, चिकित्साकी निपुणता और सत्कार्यकी कर्मठतासे काफी नाम पाया। इस बीचमें ऐसी एक घटना हो गई कि जिसकी कभी किसीने कल्पना भी नहीं की थी। वृद्धावस्थामें राजवल्लभ एक विधवासे ब्याह करनेके लिए उन्मत्त-से हो उठे। कोई भी उन्हें न रोक सका। राजवल्लभने कहा, 'मेरी वर्तमान स्त्री मेरी यथार्थ सहधर्मिणी नहीं है; जिसके साथ धर्म-मत व्यवहार और हृदयका

मेल हुआ है उसे स्त्रीके रूपमें ग्रहण न करना अन्याय होगा।' और उन्होंने सर्व-साधारणके धिक्कारकी जरा भी परवाह न करके उस विधवासे हिन्दू-मतानुसार विवाह कर लिया।

इसके बाद, नलिनाक्षकी मा घर छोड़कर काशी जानेको तैयार हुईं, तो नलिनाक्ष रंगपुरकी डाक्टरी छोड़कर घर चला आया ; और मासे बोला, 'मा, मैं भी तुम्हारे साथ काशी जाकर रहूँगा।' माने रोते हुए कहा, 'बेटा, तुम लोगोंके साथ मेरा तो कुछ मेल नहीं खायेगा ; तू क्यों झूठमूठका तकलीफ उठायेगा !' नलिनाक्षने कहा, 'तुम्हारे साथ मेरा कुछ भी बेमेल नहीं होगा।' इस तरह नलिनाक्षने अपनी पति-परित्यक्ता माको सुखी करनेका दृढ़ संकल्प कर लिया ; और उनके साथ काशी चला गया। माने कहा, 'बेटा, घर क्या सूना ही बना रहेगा ? तू ब्याह नहीं करेगा ?' सुनकर नलिनाक्ष बड़ी मुसीबतमें पड़ गया। बोला, 'क्या जरूरत है मा, हम-तुम बड़े मजेमें हैं।' माने समझा, नलिनने उनके लिए बहुत-कुछ त्याग किया है, पर शायद वह ब्राह्मसमाजके बाहर ब्याह नहीं करना चाहता। व्यथित होकर माने कहा, 'बेटा, मेरे लिए तू जिन्दगी-भर संन्यासी बना रहे, ऐसा तो हरगिज नहीं हो सकता। तेरा जहाँ जी चाहे, तू ब्याह कर ले, मुझे कोई आपत्ति नहीं।' नलिनने दो-एक दिन सोच-विचारकर कहा, 'तुम जैसी चाहती हो, मैं वैसी ही बहू तुम्हें ला दूँगा। वह तुम्हारी सेवा किया करेगी। ऐसी बहू मैं हरगिज नहीं ला सकता जिसकी राय तुमसे अलग हो और उससे तुम्हें कष्ट पहुँचे।' उसके बाद नलिनाक्ष बहूकी तलाशमें बङ्गाल चला आया।

इसके बाद बीचका इतिहास जरा विछिन्न हो गया है। लोग कहते हैं, गुप्तरूपसे किसी गाँवमें जाकर वह किसी अनाथाको ब्याह लाया था, और ब्याहके बाद ही वह स्त्री मर भी गई।' और कोई-कोई इसमें सन्देह भी प्रकट करते हैं। किन्तु अक्षयका मत है कि ब्याहकी सब तैयारी कर चुकनेके बाद, अन्तमें नलिनाक्ष साहस खो बैठा, और उसने ब्याह नहीं किया। कुछ भी हो, अक्षयके मतसे अब वह जिस-किसीको भी पसन्द करके ब्याह करेगा, उसकी माको उसमें कोई आपत्ति नहीं होगी। हेमनलिनी जैसी लड़की नलिनाक्षको और मिलेगी

कहाँ ! और चाहे भी हो, हेमका जैसा मधुर स्वभाव है उससे यह निश्चितरूपसे कहा जा सकता है कि वह सासुकी काफी श्रद्धा-भक्ति करेगी, किसी भी हालतमें उन्हें कष्ट न देगी। नलिनाक्ष दो-चार दिन हेमको अच्छी तरह देखते ही इसी नतीजेपर पहुँचेगा। इसलिए अक्षयकी यही सलाह है कि किसी भी तरह दोनोंका परिचय करा दिया जाय तो बहुत अच्छा हो।

४०

अक्षयके चले जानेके बाद योगेन्द्र ऊपर पहुँचा। देखा कि उसके पिता हेमको अपने पास बिठाकर उससे बातें कर रहे हैं। योगेन्द्रको देखकर अन्नदा बाबू जरा सहम-से गये। आज चायकी बैठकमें उनका स्वाभाविक शान्तभाव नष्ट होकर जो सहसा उनसे रोष प्रकट हो गया, इससे भी वे मन-ही-मन बहुत दुःखित थे। इसलिए जल्दीसे आदरके स्वरमें बोले—"आओ योगेन्द्र, बैठो।"

योगेन्द्रने कहा—"बापूजी, तुमलोगोंने इधर बहुत दिनोंसे बाहर जाना बिलकुल ही छोड़ दिया है ! दोनों जने दिन-रात घरमें बैठे-बैठे न-जाने क्या किया करते हो ! तुम्हें अच्छा कैसे लगता है ?"

अन्नदा बाबूने कहा—"लो सुनो ! हमने तो सारी जिन्दगी ही इसी तरह घरमें बैठके बिताई है। और हेमको तो कहीं बाहर ले जाना ही मुश्किल है।"

हेमने कहा—"क्यों बापूजी, तुम मुझे क्यों दोष दे रहे हो ? तुम मुझे कहाँ ले जाना चाहते हो, ले चलो न, देखो मैं जाती हूँ या नहीं।" हेमनलिनी अपनी प्रकृतिके विरुद्ध चलकर भी जबर्दस्ती यह साबित करना चाहती है कि वह अपने मनमें किसी प्रबल शोकको जकड़के घरकी जमीन पकड़े नहीं पड़ी। उसके चारों तरफ जहाँ भी जो-कुछ हो रहा है, सभी विषयोंमें मानो उसकी उत्सुकता अत्यन्त सजीव बनी हुई है।

योगेन्द्रने कहा—"बापूजी, कल एक मीटिंग है, उसमें हेमको ले चलो।"

अन्नदा जानते थे कि मीटिंगकी भीड़में घुसना हेमनलिनीको कतई पसन्द नहीं और सङ्कोच भी बहुत ज्यादा है, इसलिए वे जवाब न देकर हेमके मुँहकी तरफ देखने लगे। हेमने सहसा एक तरहका अस्वाभाविक उत्साह प्रकट करते हुए कहा—"मीटिंग है ? वहाँ किस-किसके भाषण होंगे, भाई साहब ?"

योगेन्द्र—"मुख्य वक्ता हैं डाक्टर नलिनाक्ष।"

अन्नदा—"नलिनाक्ष!"

योगेन्द्र—"बहुत अच्छा बोलते हैं। इसके सिवा, उनके जीवनका इतिहास सुननेसे बड़ा आश्चर्य होता है। इतना त्याग, इतनी दृढ़ता! ऐसे आदमी बिरले ही मिलेंगे।" इसके घण्टे-भर पहले योगेन्द्र एक अस्पष्ट जन-श्रुतिके सिवा नलिनाक्षके विषयमें कुछ भी नहीं जानता था।

हेमने अपना आग्रह दिखाते हुए कहा—"अच्छा तो है बापूजी, चलो न, उनका भाषण सुन आयें।"

किन्तु हेमके इस तरहके उत्साहपर अन्नदा बाबूको विश्वास नहीं हुआ। फिर भी वे मन-ही-मन खुश हुए; सोचने लगे, हेम अगर अपनी इच्छाके खिलाफ भी इस तरह मिलना-जुलना और जाना-आना करती रहे, तो जल्दी ही उसका मन स्वस्थ हो सकता है। मनुष्यका साथ ही मनुष्यके सब तरहके मनोवैकल्यका सबसे बढ़कर इलाज है। उन्होंने कहा—"तो ठीक है योगेन, कल ठीक वक्तपर हमलोगोंको मीटिंगमें ले चलना। और हाँ, नलिनाक्षके विषयमें तुम क्या कह रहे थे, बताना? लोग तो तरह-तरहकी बातें उड़ाया करते हैं!"

जो लोग तरह-तरहकी बातें उड़ाया करते हैं, पहले तो योगेन्द्रने उन्हें एक बार खूब आड़े हाथ लिया; फिर कहने लगा—"धर्मका जो ढोंग बनाकर ढोल पीटा करते हैं, वे समझते हैं कि बात-बातमें दूसरोंपर अन्याय और पराई निन्दा करनेका भगवानकी तरफसे उन्हें परवाना मिल चुका है! धर्मके ठेकेदारों जैसे सङ्कीर्णचित्त और विश्वनिन्दक दुनियामें ढूँढ़े न मिलेंगे।" कहते-कहते योगेन्द्र अत्यन्त उत्तेजित हो उठा।

अन्नदा बाबू योगेन्द्रको ठण्डा करनेके लिए कहने लगे—"बात तो ठीक है, तुम ठीक कह रहे हो। दूसरोंके दोष ढूँढ़-ढूँढ़कर उनकी चरचा करते रहनेसे मन छोटा हो जाता है, स्वभाव सन्दिग्ध हो उठता है, हृदयमें सरसता बिलकुल नहीं रहती।"

योगेन्द्रने कहा—"बापूजी, तुम क्या मुझे लक्ष्य करके ऐसा कह रहे हो? लेकिन धार्मिकों जैसा मेरा स्वभाव नहीं; मैं बुरा भी कहना जानता हूँ और

अच्छा भी। और फिर, मुँहपर साफ-साफ कहनेसे भी मैं नहीं डरता।"

अन्नदा बाबू उतावले होकर बोल उठे—"योगेन, तुम पागल तो नहीं हो गये? तुम्हें लक्ष्य करके मैं क्यों कहने लगा! मैं क्या तुम्हें नहीं जानता?"

इसके बाद भूरि-भूरि प्रशंसा करके योगेन्द्र नलिनाक्षका वृत्तान्त सुनाने लगा। अन्तमें बोला—"माको सुखी करनेके लिए नलिनाक्ष आचारके सम्बन्धमें संयत होकर काशीमें रह रहा है। इसीलिए, बापूजी, तुम जिन्हें 'लोग' कहते हो, वे उसके बारेमें 'तरह-तरहकी बातें उड़ाया करते हैं! किन्तु मैं इसके लिए नलिनाक्षकी प्रशंसा ही करूँगा। क्यों हेम, तुम्हारी क्या राय है?"

हेमने कहा—"मेरी भी यही राय है।"

योगेन्द्र—"हेम मुझसे सहमत होगी, मुझे इसमें जरा भी सन्देह न था। बापूजी, तुम्हें सुखी करनेके लिए हेमको त्याग स्वीकार करनेका कोई साधन मिल जाय तो यह जी जाय, इस बातको मैं क्या नहीं समझता!"

अन्नदा बाबूने स्नेह-कोमल हँसी हँसते हुए हेमके मुँहकी तरफ देखा। हेमका लज्जासे रक्तिम चेहरा नीचेको झुक गया।

४१

सभा भङ्ग होनेके बाद अन्नदा बाबू हेमनलिनीके साथ जब घर लौटे, तब शाम नहीं हुई थी। अन्नदा बाबू चायकी टेबिलपर बैठते ही बोल उठे—"आज बहुत ही आनन्द आया।" इससे ज्यादा वे कुछ नहीं बोल सके, उनके मनमें भावोंका एक स्रोत-सा बह रहा था।

आज चाय पीनेके बाद ही हेम धीरे-से ऊपर चली गई, अन्नदा बाबूको इसका कुछ खयाल ही नहीं। सभामें नलिनाक्षका भाषण सुनकर, उस तरुण सुकुमार युवकको देखकर अन्नदा बाबूको बड़ी खुशी हुई। इस तरुणावस्थामें भी मानो शैशवका अम्लान-लावण्य उसके चेहरेपर ज्योंका त्यों बना हुआ है। मालूम होता था कि उसकी अन्तरात्मासे मानो ध्यान-मग्नताका गाम्भीर्य चारों तरफ फैलकर श्रोताओंके चित्तको अनायास ही अपनी तरफ खींच रहा हो।

नलिनाक्षके भाषणका विषय था 'क्षति'। उन्होंने कहा था, "संसारमें जिस

आदमीने कुछ खोया नहीं उसने कुछ पाया ही नहीं। यों हो जो-कुछ हमारे हाथ आता है उसे हम पूरी तरह नहीं पाते, त्यागके द्वारा जब हम उसे पाते हैं तभी वास्तवमें वह हमारा अन्तरका धन हो उठता है। जो-कुछ हमारी वास्तविक सम्पदा है, उसके सामनेसे हट जाते हो जो आदमी उसे खो बैठता है, वह अभागा है। असलमें उसका त्याग करके ही उसे अधिक पाया जा सकता है, और यह शक्ति मानव-चित्तमें पूरी-पूरी मौजूद है। हमारा जो-कुछ चला जाता है उसके सम्बन्धमें अगर हम नम्रतासे हाथ जोड़कर कह सकें कि 'मैंने दे दिया अपना त्यागका दान, अपना दुःखका दान, अपने आँसुओंका दान', तो क्षुद्र भी विशाल हो उठता है, अनित्य नित्य हो जाता है; और, जो हमारे व्यवहारका उपकरण मात्र था, वह पूजाका उपकरण बनकर हमेशा हमारे अन्तःकरणके देव-मन्दिरके रत्न-भण्डारमें सञ्चित रहता है।" – ये सब बातें आज हेमनलिनीके समस्त हृदयको घेरे हुए उसपर चोट कर रही हैं। छतपर नक्षत्रदीप्त आकाशके नीचे वह चुपचाप बैठ गई। उसका सम्पूर्ण मन आज भर गया है; सम्पूर्ण आकाश और समस्त जगत्-संसार आज उसके लिए परिपूर्ण है।

सभासे लौटते समय रास्तेमें योगेन्द्रने कहा—"अक्षय, तुमने लड़का तो खूब अच्छा बताया! यह तो पूरा संन्यासी है! उसकी आधी बातें तो मेरी समझ ही में नहीं आईं!"

अक्षयने कहा—"रोगीको अवस्था समझकर औषधकी व्यवस्था की जाती है। हेमनलिनी रमेशके ध्यानमें मग्न हैं, उस ध्यानको संन्यासीके बिना हम जैसे साधारण लोग कैसे भङ्ग कर सकते हैं? जब भाषण हो रहा था तब तुमने हेमके मुहकी तरफ नहीं देखा था?"

योगेन्द्र—"देखा क्यों नहीं। देखते ही समझ गया कि उसे बहुत अच्छा लग रहा है। पर, भाषण अच्छा लगनेसे ही कोई भाषणकर्त्ताके गलेमें वरमाला पहना देगी, यह कैसे कहा जा सकता है?"

अक्षय—"वही भाषण हम जैसे किसीके मुंहसे निकलता तो क्या अच्छा लगता? तुम जानते नहीं योगेन्द्र, तपस्वियोंपर औरतोंका विशेष खिंचाव होता है। संन्यासीके लिए उमाने तपस्याकी थी, खुद कालिदास अपने काव्यमें लिख

गये हैं। मैं तुमसे सच कहता हूं योगेन्द्र, और किसी भी पात्रको तुम खड़ा करोगे तो हेम मन-ही-मन रमेशसे उसकी तुलना करेगी ; और उस तुलनामें कोई भी नहीं टिकेगा। किन्तु, नलिनाक्ष साधारण आदमी-सा नहीं लगता, उसके साथ किसीकी तुलना कर देखनेकी बात मनमें उठेगी ही नहीं। लेकिन, और-किसी युवकको हेमके सामने ले जाओ, वह तुरत तुम्हारा उद्देश्य समझ जायगी ; और उसका सम्पूर्ण मन विद्रोही हो उठेगा। अगर नलिनाक्षको तुम जरा कौशलके साथ यहाँ ला सको, तो हेमके मनमें किसी तरहका सन्देह ही न उठेगा। उसके बाद, क्रमशः श्रद्धासे लेकर वरमाला तक किसी तरहसे बेड़ा पार लगानेमें कठिनाई नहीं होगी।"

योगेन्द्र—"कौशल मुझसे ठीक तौरसे करते नहीं बनेगा, कहना हो मेरे लिए आसान है। लेकिन एक बात है, लड़का मुझे तो पसन्द नहीं आ रहा!"

अक्षय—"देखो योगेन, तुम अपनी जिद करके सब मटियामेट न करो। सब सुविधाएँ एकसाथ नहीं मिल सकतीं। जैसे भी हो, रमेशकी चिन्ता हेमके मनसे बगैर निकाले कुछ भी नहीं किया जा सकता। तुम शारीरिक बलसे सब ठीक कर लोगे ऐसा खयाल भी मत करना। मेरी सलाहपर अगर ठीक तरहसे चलो, तभी काम बन सकता है।"

योगेन्द्र--"असल बात यह है कि नलिनाक्ष मेरे लिए जरा-कुछ ज्यादा दुर्बोध्य है। ऐसे लोगोंसे व्यवहार करनेमें मुझे डर लगता है। कहीं ऐसा न हो कि चूल्हेमेंसे निकलकर भट्टीमें जा पड़ूं।"

अक्षय—"भाई, तुमलोग अपने दोषसे जले हो, और अब लाल बादल देखते ही आतङ्कसे सिहर उठते हो! रमेशके विषयमें तुमलोग शुरूसे ही बिलकुल अन्धे हो रहे थे, 'ऐसा पात्र मिलना मुश्किल है!' 'छल-छन्द वह जानता ही नहीं!' 'दर्शनशास्त्रमें द्वितीय शङ्कराचार्य और साहित्यमें स्वयं सरस्वतीका उन्नीसवीं सदीका पुरुष-संस्करण है!' किन्तु रमेश मुझे शुरूसे ही अच्छा नहीं लग रहा था। ऐसे 'अत्युच्च-आदर्श' वाले आदमी अपनी उमरमें मैंने बहुत देखे हैं! लेकिन मेरे लिए वहाँ जबान हिलानेको भी गुंजाइश नहीं थी। तुमलोग समझते थे कि मुझ जैसे अयोग्य अपात्र सिर्फ महात्मा

जनोंसे ईर्षा करना ही जानते हैं, और कुछ कर ही नहीं सकते। ईश्वरको धन्यवाद है, इतने दिन बाद समझे तो सही कि महापुरुषोंकी दूरसे भक्ति की जा सकती है, किन्तु उनके साथ अपनी बहनका सम्बन्ध करना खतरेसे खाली नहीं। मेरा तो कहना है, 'कण्टकेनैव कण्टकम्'। जब कि यही एकमात्र उपाय है, तो इसके विषयमें ज्यादा ऊहोपोहमें पड़ना वाहियात है।"

योगेन्द्र—"देखो अक्षय, तुमने हमलोगोंसे पहले रमेशको पहचान लिया था, यह बात तुम्हारे हजार कहनेपर भी मैं नहीं मान सकता। तब महज जलनसे तुम्हें वह देखे नहीं सुहाता था। इसे मैं तुम्हारी असाधारण-बुद्धिका परिचायक कैसे मान लूं! कुछ भी हो, इसमें छल-कौशलकी जरूरत हो तो वह तुम्हीं करना, मुझसे नहीं होगा। कुल-जमा, मुझे नलिनाक्ष पसन्द ही नहीं।"

योगेन्द्र और अक्षय दोनों जब अन्नदा बाबूके कमरेमें चाय पीने आये तो देखा कि हेमनलिनी दूसरे दरवाजेसे निकलकर बाहर चली गई। अक्षय समझ गया कि हेमनलिनीने उन्हें पहलेसे ही आते देख लिया था। मुसकराता हुआ वह अन्नदा बाबूके पास जाकर बैठ गया; और बोला—"नलिनाक्ष जो-कुछ कहते हैं, हृदयसे कहते हैं; इसीलिए उनकी बात इतनी आसानीसे हृदयमें पैठ जाती है।" अन्नदा बाबूने कहा—"उनमें शक्ति है।"

अक्षयने कहा—"सिर्फ शक्ति ही क्यों, आजकल ऐसा साधु-चरित्रका आदमी देखनेमें नहीं आता!"

योगेन्द्र यद्यपि इस षड़यन्त्रमें शामिल था, फिर भी उससे रहा नहीं गया; बोला—"भई, साधु-चरित्रकी बात न कहो। साधु-सङ्गसे भगवान हमारी रक्षा करें।" योगेन्द्रने कल इसी नलिनाक्षकी साधुताकी भूरि-भूरि प्रशंसा की थी, और नलिनाक्षके खिलाफ बात करनेवालोंको निन्दक बताया था।

अन्नदा बाबूने कहा—"छि योगेन्द्र, ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए। बाहरसे जो भले मालूम होते हैं, भीतरसे भी वे भले होते हैं, इस बातपर विश्वास करके मैं ठगाया जाना भी पसन्द करता हूं; फिर भी अपनी क्षुद्र बुद्धिमत्ताके गौरवकी रक्षाके लिए सन्देह करनेको मैं तैयार नहीं। नलिनाक्ष बाबूने जो भी कुछ कहा है वह दूसरोंके मुंहकी बात नहीं। अपने आध्यात्मिक अनुभवके

भीतरसे उन्होंने जो-कुछ प्रकट किया है, मेरे लिए आज वह नया लाभ ही साबित हुआ है। जो आदमी स्वयं कपटी है, वह सच्ची चीज देगा कहाँसे? सोना जैसे बनाया नहीं जा सकता, उसी तरह सच्चे ज्ञानकी बात भी बनाई नहीं जा सकती। मेरी तो इच्छा होती है कि मैं खुद जाकर उन्हें साधुवादसे अभिनन्दित कर आऊं।"

अक्षयने कहा--"मुझे डर होता है कि उनका शरीर टिकेगा या नहीं?"

अन्नदा बाबू चंचल हो उठे, बोले--"क्यों, उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता क्या?"

अक्षय--"रहना तो नहीं चाहिए, दिन-रात वे तो अपनी साधना और शास्त्रालोचनामें ही लगे रहते हैं; स्वास्थ्यकी तरफ जरा भी ध्यान नहीं!"

अन्नदा बाबू--"यह बड़ा अन्याय है! शरीर नष्ट करनेका हमें कोई अधिकार नहीं; कारण, शरीरको हमने नहीं बनाया। मैं अगर उन्हें अपने पास पाता, तो थोड़े ही दिनोंमें जरूर उनका स्वास्थ्य ठीक करनेकी व्यवस्था कर देता। असलमें, स्वास्थ्य-रक्षाके कुछ सहज नियम हैं, उनमें पहला यह है कि--"

योगेन्द्र धीरज खो बैठा, बीचमें ही बोल उठा--"बापूजी, झूठमूठको तुम इतनी चिन्ता क्यों करते हो! नलिनाक्ष बाबूका स्वास्थ्य तो मैंने काफी अच्छा देखा है। बल्कि उन्हें देखकर तो मैं यही समझ रहा हूँ कि साधुत्व-चीज ही स्वास्थ्यकर है। मेरा तो मन करता है कि एक बार इसकी परीक्षा कर देखूं।"

अन्नदा बाबूने कहा--"नहीं योगेन्द्र, अक्षय जैसा कि कह रहा है, वैसा अगर हो तो स्वास्थ्य कैसे टिक सकता है! हमारे देशमें बड़े-बड़े लोग अकसर कम उमरमें मर जाया करते हैं; ये लोग अपने शरीरकी उपेक्षा करके देशका नुकसान करते हैं। ऐसा नहीं होने देना चाहिए। योगेन्द्र, तुम नलिनाक्ष बाबूको जैसा समझते हो, वे वैसे नहीं हैं; उनमें असल चीज मौजूद है। उन्हें अभीसे सावधान कर देना हमारा कर्तव्य है।"

अक्षय--"मैं उन्हें आपके पास ले आऊँगा। आप अगर उन्हें अच्छी तरह समझा सकें, तो अच्छा हो। मेरा तो खयाल है कि आपने मुझे परीक्षाके समय जो जड़ीका अर्क दिया था, वह काफी ताकतवर है! जो लोग निरन्तर

मानसिक परिश्रम करते हैं, उनके लिए इससे बढ़कर अच्छी दवा शायद ही हो। आप उसे अगर नलिनाक्ष बाबूको—"

योगेन्द्र यकायक कुरसी छोड़कर उठ खड़ा हुआ; बोला—"आह! अक्षय, तुम मुझे टिकने न दोगे। हद हो गई! मैं चल दिया।"

४२

पहले अन्नदा बाबूका जब स्वास्थ्य खराब रहता था तब वे डाक्टर और वैद्यकी नाना प्रकारकी दवाएँ, खासकर गोलियाँ, बराबर खाया ही करते थे। किन्तु अब दवाओंके विषयमें उनमें कोई उत्साह ही नहीं पाया जाता। और, अपने स्वास्थ्यके सम्बन्धमें अब वे चरचा भी नहीं करते।

आज वे जब असमयमें आरामकुरसीपर लेटे-लेटे सो गये, तब जीनेमें पैरोंकी आहट सुनकर हेमनलिनी अपने हाथकी ऊन-सलाई रखकर भाईको सावधान करने दरवाजेके पास जा खड़ी हुई। देखा कि उसके भाईके साथ नलिनाक्ष बाबू आ रहे हैं। जल्दीसे वह दूसरे कमरेमें भागना ही चाहती थी कि योगेन्द्रने उसे बुलाकर कहा—"हेम, नलिनाक्ष बाबू आये हैं, आओ इनसे तुम्हारा परिचय करा दूँ।"

हेम ठिठकके खड़ी हो गई; और नलिनाक्ष बाबू उसके सामने आते ही, उनके मुँहकी तरफ बगैर देखे ही, उसने उन्हें नमस्कार किया। इतनेमें अन्नदा बाबूकी आँख खुल गई; और उन्होंने पुकारा—"हेम!" हेमने पास आकर मृदुस्वरमें कहा—"नलिनाक्ष बाबू आये हैं।"

योगेन्द्रके साथ नलिनाक्षके भीतर आते ही अन्नदा बाबू व्यस्त भावसे उठ खड़े हुए; और आदरके साथ उन्हें अपने सामने बिठाकर कहने लगे—"आज मेरा बड़ा सौभाग्य है कि आप मेरे यहाँ पधारे। हेम, कहाँ जा रही हो बेटी, यहीं बैठो। नलिनाक्ष बाबू, यह मेरी लड़की है, हेम। हम दोनों उस दिन आपका भाषण सुनने गये थे, सुनकर बड़ी तृप्ति हुई। आपने जो यह कहा था कि 'हम जिसे यथार्थमें पाते हैं उसे हरगिज नहीं खो सकते; जो यथार्थमें नहीं मिला वही खो सकता है।' इसका अर्थ बड़ा गहरा है। क्यों हेम?

वास्तवमें किस चीजको हमने अपनाया है और किसे नहीं, इसकी परीक्षा तभी होती है जब वह हमारे पाससे हट जाती है। नलिनाक्ष बाबू, आपसे मेरा एक अनुरोध है, कभी-कभी आप आयें और हमलोगोंसे आलोचना कर जाया करें तो हमारा बड़ा उपकार हो। हमलोग बाहर कहीं जाते नहीं, आप जब भी आयेंगे, मुझे और हेमको घर ही में पायेंगे।"

नलिनाक्षने शरमती-हुई हेमनलिनीके मुँहकी तरफ एक बार देखकर कहा—"मैं सभामें बड़ी-बड़ी बातें कह आया हूँ, उसका खयाल करके आपलोग मुझे बड़ा-भारी गम्भीर आदमी न समझ लीजियेगा। उस दिन विद्यार्थियोंने पीछा ही नहीं छोड़ा तो व्याख्यान देने जाना पड़ा। अनुरोधसे बचनेकी मुझमें जरा भी ताकत नहीं। लेकिन, वहाँ ऐसी-ऐसी बातें कह आया हूँ कि दुबारा अनुरुद्ध होनेकी कोई आशंका ही नहीं रही। विद्यार्थियोंने साफ-साफ कह दिया है कि मेरे भाषणका बारह-आना हिस्सा उनकी समझ ही में नहीं आया। योगेन बाबू, आप भी तो वहाँ मौजूद थे ; आपको सतृष्णदृष्टिसे घड़ीकी तरफ ताकते देख मेरा मन विचलित न हुआ हो, सो बात नहीं।"

योगेन्द्रने कहा—"मैं ठीकसे समझ नहीं रहा था, यह मेरी बुद्धिका दोष हो सकता है ; उसके लिए आप कुछ खयाल न कीजियेगा।"

अन्नदा बाबू—"योगेन, सभी उमरमें सब बातें समझमें नहीं आतीं।"

नलिनाक्ष—"और सब समय सब बातें समझनेकी जरूरत भी नहीं !"

अन्नदा बाबू—"लेकिन, नलिनाक्ष बाबू, आपको मेरी एक बात रखनी होगी। ईश्वर आप जैसे आदमियोंको संसारमें काम करनेके लिए भेजते हैं, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि शरीरका कुछ खयाल ही न किया जाय। आपको स्वास्थ्यकी तरफसे इतना लापरवाह न होना चाहिए। जो दाता हैं उन्हें इस बातका सदा स्मरण रखना चाहिए कि मूलधन नष्ट न होने पाये, नहीं तो दान करनेकी शक्ति ही नष्ट हो जायगी।"

नलिनाक्ष—"आपको अगर कभी मुझे अच्छी तरह जाननेका अवसर मिला, तो देखियेगा कि मैं संसारकी किसी चीजकी ही उपेक्षा नहीं करता। दुनियामें बिलकुल भिखारी-सा आया हूँ, बड़े कष्टोंसे और बहुतोंकी अनुकूलता पाकर यह

शरीर-मन धीरे-धीरे बनकर तैयार हुआ है। मेरे लिए ऐसी नवाबी शोभा नहीं दे सकती कि मैं लापरवाही करके उसे नष्ट कर दूँ। जिसे आदमी बना नहीं सकता, उसे तोड़नेका हमें अधिकार भी तो नहीं।"

अन्नदा बाबू—"बहुत ठीक बात कही आपने! आपने ऐसी ही कुछ बातें उस दिनके भाषणमें भी कही थीं।"

योगेन्द्र—"आपलोग बैठिये, मैं जा रहा हूँ; मुझे जरा काम है।"

नलिनाक्ष—"योगन बाबू, मुझे लेकिन आप क्षमा कीजियेगा। मेरी तरफसे इतना आप निश्चय समझिये कि बातोंसे लोगोंको परेशान करना मेरा स्वभाव नहीं। अच्छा तो अब मैं भी उठता हूँ। चलिये, कुछ दूर आपके साथ ही चला जाय।"

योगेन्द्र—"नहीं-नहीं, आप बैठिये। मेरी बातका कुछ खयाल न करें। मैं कहीं भी ज्यादा देर तक स्थिर नहीं बैठ सकता।"

अन्नदा बाबू—"नलिनाक्ष बाबू, योगेनके लिए आप चंचल न होइये। वह इसी तरह जब खुशी आता है और जब खुशी चला जाता है; उसे पकड़ रखना मुश्किल है।"

योगेन्द्रके चले जानेपर, अन्नदा बाबू बोले—"आप यहाँ हैं कहाँ?"

नलिनाक्ष बाबूने हँसकर कहा—"मैं खास तौरसे कहीं हूँ, ऐसा नहीं कह सकता। मेरे जान-पहचानके यहाँ बहुतसे लोग हैं, वे मुझे खींच-तानकर इधर उधर ले जाया करते हैं। मुझे वह बुरा भी नहीं लगता। लेकिन, आदमीको चुपचाप रहनेकी भी जरूरत होती है। इसके लिए योगेन बाबूने मेरे लिए आपको बगलवाला मकान ठीक कर दिया है। गली सुनसान भी है, अच्छी है।"

इस संवादसे अन्नदा बाबूने बहुत ज्यादा खुशी प्रगट की। पर, वे अगर लक्ष्य करके देखते तो देख लेते कि इस बातको सुनते ही हेमनलिनीका चेहरा क्षण-भरके लिए वेदनासे विवर्ण हो गया। इसी बगलवाले मकानमें रमेश था!

इतनेमें 'चाय तैयार है'की खबर पाकर सब मिलके नीचे चायके कमरेमें चले गये। अन्नदा बाबूने कहा—"बेटी, नलिनाक्ष बाबूको एक प्याला चाय बना दो।"

नलिनाक्षने कहा—"नहीं अन्नदा बाबू, मैं चाय नहीं पीऊँगा।"

अन्नदा—"यह क्या बात नलिनाक्ष बाबू ! एक प्याला चाय,—न हो तो थोड़ी-सी मिठाई, नमकीन, कुछ तो लिजिये।"

नलिनाक्ष—"मुझे माफ कीजियेगा।"

अन्नदा—"आप डाक्टर हैं, आपसे अब मैं क्या कहूँ ! मध्याह्न-भोजनके तीन-चार घण्टे बाद चायके बहाने थोड़ा-सा गरम पानी पी लेना हाजमाके लिए बहुत अच्छा है। आदत न हो तो, आपके लिए खूब हल्की चाय कर दी जाय !"

नलिनाक्ष एक क्षणके लिए हेमनलिनीके चेहरेकी तरफ देखकर समझ गया कि उसने उसके चाय पीनेके सङ्कोचके विषयमें कुछ अनुमान कर लिया है और उसपर मन-ही-मन वह कुछ विचार भी कर रही है। उसी क्षण उसने हेमकी तरफ देखकर कहा—"आप जो खयाल कर रही हैं, वह ठीक नहीं। आप लोगोंको चायकी टेबिलसे मुझे जरा भी परहेज नहीं। पहले मैंने बहुत चाय पी है; और चायकी सुगन्धसे अब भी मेरा मन उत्सुक हो उठता है। आप लोगोंको चाय पीते देखकर मुझे बड़ा आनन्द हो रहा है। लेकिन, आप शायद नहीं जानतीं कि मेरी मा अत्यन्त 'अचार-विचार'वाली हैं; और मेरे सिवा उनके अपना कोई है नहीं; मैं नहीं चाहता कि माके सामने मैं संकुचित होकर जाऊँ। इसीलिए मैं चाय नहीं पीता। लेकिन आपलोग चाय पीकर जो आराम पा रहे हैं, उसमें मुझे भी हिस्सा मिल रहा है। आपलोगोंके आतिथ्यसे तो मैं वञ्चित नहीं हूँ !"

इसके पहले नलिनाक्षकी बातचीतसे हेमनलिनीको भीतर-ही-भीतर कुछ चोट पहुँच रही थी। वह समझ रही थी कि नलिनाक्ष अपनेको उनलोगोंके सामने यथार्थरूपमें प्रकट नहीं कर रहा है। वह बार-बार ज्यादा बातें करके अपनेको ढक रखनेकी ही कोशिश कर रहा है। हेमनलिनी नहीं जानती कि प्रथम परिचयमें नलिनाक्ष अपने स्वाभाविक सङ्कोच-भावको नहीं छोड़ सकता। और इसीलिए नये आदमियोंके सामने प्रायः वह अपने स्वभावके विरुद्ध जबरदस्ती प्रगल्भ हो उठता है। अपने मनकी अकृत्रिम बात कहते हुए भी सुर बेसुरा हो जाता है और वह उसके अपने कानोंको भी खटकता है। इसीलिए योगेन्द्र जब अधीर होकर उठ खड़ा हुआ, तो उसने भी मनमें एक धिक्कार-सा अनुभव

करके उसके साथ भाग चलनेकी कोशिश की थी। किन्तु, जब उसने माकी बात कही, तो हेमनलिनी श्रद्धाकी दृष्टिसे उसकी तरफ देखे बगैर न रह सकी ; और माका उल्लेख मात्रसे उसी क्षण नलिनाक्षके चेहरेपर जो सरल भक्तिका गाम्भीर्य प्रकट हुआ उसे देखकर हेमका मन आर्द्र हो उठा। उसका जी चाहने लगा कि नलिनाक्षकी माके सम्बन्धमें उससे बात करे ; पर सङ्कोचसे वह कर न सकी।

अन्नदा बाबू व्यस्त हो उठे, बोले—"अच्छा, यह बात है ! मुझे मालूम होता तो मैं आपसे चायके लिए अनुरोध ही नहीं करता। क्षमा कीजियेगा।"

नलिनाक्ष हँसकर बोला—"चाय नहीं पी सका, तो क्या आपके स्नेहके अनुरोधसे भी वञ्चित रह जाता !"

नलिनाक्षके चले जानेपर हेम पिताके साथ ऊपर चली गई ; और एक मासिकपत्र उठाकर उसमेंसे एक निबन्ध चुनकर सुनाने लगी। सुनते-सुनते थोड़ी देरमें अन्नदा बाबूकी आँख लग गई। कुछ दिनोंसे अन्नदा बाबूमें इस तरहकी थकानके लक्षण दिखाई देने लगे हैं।

४३

कुछ ही दिनोंमें नलिनाक्षके साथ अन्नदा बाबूका परिचय घनिष्ठ हो गया। पहले हेमनलिनीने समझा था, नलिनाक्ष जैसे आदमीसे सिर्फ बड़े-बड़े आध्यात्मिक उपदेश ही मिल सकते हैं ; ऐसे आदमीसे साधारण विषयकी बातचीत भी चल सकती है इसकी उसे धारणा ही नहीं थी। फिर भी, यह ठीक है कि हास्यालापमें नलिनाक्ष उनलोगोंसे अपना दूरत्व बनाये रखता है।

एक दिन अन्नदा बाबू और हेमनलिनीके साथ नलिनाक्षकी बातचीत चल रही थी, इतनेमें योगेन्द्र कुछ उत्तेजित होकर बोल उठा—"जानते हो बापूजी, आजकल समाजके लोग हमलोगोंको 'नलिनाक्षके चेले' कहने लगे हैं ! इसपर उस दिन पारसके साथ मेरा खूब झगड़ा हो गया था।"

अन्नदा बाबूने जरा हँसते हुए कहा—"इसमें मुझे तो कोई शरमकी बात नहीं मालूम होती। बल्कि, जहाँ सभी गुरु हैं, चेला कोई भी नहीं, उस दलमें

शामिल होनेमें मुझे शरम मालूम होती है। वहाँ शिक्षा देनेकी होड़ाहोड़ीमें शिक्षा पानेका अवकाश हो नहीं रहता।"

नलिनाक्ष—"अन्नदा बाबू, मैं भी आपके दलमें शामिल हूं, हमारा दल चेलोंका दल है। जहाँ हमारे लिए कुछ भी सीखनेकी सम्भावना है वहीं हम अपना बोरिया-बसना लेकर पहुँच जाया करेंगे।"

योगेन्द्र अधीर हो उठा, बोला—"नहीं नहीं, यह कोई कामकी बात नहीं हुई, नलिन बाबू, यह बदनामीकी बात है कि कोई भी आपका मित्र या आत्मीय नहीं हो सकता, जो भी आपके पास आयेगा वही आपका चेला कहलायेगा! यह कोई हँसीमें उड़ा देनेकी बात नहीं। आप ये सब वाहियात बातें छोड़ दें।"

नलिनाक्ष—"कैसे रहूं, बताइये भी तो?"

योगेन्द्र—"आप जो प्राणायाम किया करते हैं, सवेरे उठकर सूरजकी तरफ ताकते रहते हैं, खाने-पीनेके बारेमें आचार-विचार करना नहीं छोड़ते, इन सब बातोंसे क्या साधारणजनोंकी दृष्टिमें आप ऊटपुटांग-से नहीं लगते?"

योगेन्द्रके इस रूढ़-वाक्यसे व्यथित होकर हेमनलिनीने अपना सिर झुका लिया। नलिनाक्षने हँसते हुए कहा—"योगेन बाबू, लोगोंकी दृष्टिमें ऊटपुटांग लगना क्या हमेशा दोषकी बात होती है? संसारमें सत्य हमेशा ऊटपुटांग-सा लगता है, पर इससे क्या सत्यके उपासक उसे छोड़ देते हैं? मुझे तो आश्चर्य होता है कि मैं सबकी दृष्टिसे बचकर अपने घरमें बैठकर एकान्तमें जो अनुष्ठान किया करता हूं, उसपर लोगोंकी दृष्टि पड़ती ही क्यों है, और उसपर लोग आलोचना करते कैसे हैं?"

योगेन्द्र—"आप जनते नहीं क्या, जिन लोगोंने संसारकी उन्नतिका पूरा भार अपने ऊपर ले रखा है वे पराये घरमें कहाँ क्या हो रहा है, उसका आविष्कार करना अपना कर्तव्य समझते हैं। जितनी खबर नहीं मिलती उतनी पूरी कर लेनेकी उनमें शक्ति है। इसके बिना विश्वके सुधारका काम चल कैसे सकता है? इसके अलावा एक बात और है, नलिन बाबू, पांच आदमी जिस कामको नहीं करते, आँखोंसे ओझल होनेपर भी उसपर लोगोंकी नजर पड़ती ही है; और जो काम सभी-कोई करते हैं उसपर किसीकी निगाह ही नहीं

दौड़ती। यहीं देखिये न, अपनी छतपर आप क्या-क्या करते हैं सो हेम भी जान गई है। हेमने बापूजीको आपकी बातें कही हैं। हेमने तो आपके सुधारका भार नहीं लिया, फिर भी, देख लीजिये।"

हेमका चेहरा सुर्ख हो उठा। व्यथित होकर वह कुछ कहना ही चाहती थी कि इतनेमें नलिनाक्ष बोल उठा—"आप जरा भी लज्जित न होइये। सुबह शाम छतपर टहलते वक्त आपने अगर मुझे संध्या-आह्निक करते देखा हो, तो इसके लिए आपको कौन दोषी बता सकता है? आपको आँखें हैं, सिर्फ इसीलिए लज्जित होनेका कोई कारण नहीं। यह दोष हम सबमें है।"

अन्नदा—"इसके अलावा, आपकी सध्या-पूजाके बारेमें हेमने कोई आपत्ति प्रकट नहीं की, बल्कि श्रद्धाके साथ उसने मुझसे कई एक प्रश्न किये थे।"

योगेन्द्र—"मैं लेकिन इन-सब बातोंको कुछ नहीं समझता। हम साधारण रूपमें सोच-विचारकर चलनेवाले साधारण आदमी ठहरे; और इससे हमें कोई दिक्कतका भी सामना नहीं करना पड़ता। मुझे तो ऐसा नहीं मालूम होता कि छिपे-छिपे कोई अद्‌भुत क्रिया करनेसे कोई खास फायदा हो जाता हो! बल्कि मैं समझता हूँ कि इससे मनका सामञ्जस्य नष्ट होनेसे आदमी किसी एक तरफ जरूरतसे ज्यादा झुक जाता है। लेकिन, आप मेरी बातपर नाराज न होइयेगा, मैं अत्यन्त साधारण आदमी हूँ, इस पृथ्वीपर मैं बिलकुल बीचकी जगहमें रहता हूँ; जो लोग किसी तरहसे ऊंचे मञ्चपर चढ़ जाते हैं, ढेला बिना फेंके मेरे लिए उन तक पहुँचना मुश्किल है। और मुझ जैसे, ऐसे असंख्य आदमी हैं, लिहाजा, आप सबको छोड़कर अगर किसी अद्‌भुत-लोगमें रहने लगेंगे तो जरूर आपको असंख्य ढेलोंकी मार सहनी पड़ेगी।"

नलिनाक्ष—"ढेले भी तो नाना प्रकारके हैं। कोई छू जाते हैं तो कोई दाग बना जाते हैं। अगर कोई कहे कि 'यह पागल है, लड़कपन कर रहा है', तो उससे कोई नुकसान नहीं होता; लेकिन जब कोई यह कहता है कि 'यह शख्स साधु बनकर साधकपना छाँट रहा है, गुरु बनकर चेले इकट्ठे करता फिरता है', तब अगर उसे हँसीमें उड़ानेकी कोशिश की जाय, तो फिर उसके लिए

उतनी हँसी भी तो होनी चाहिए जो उसे ठीकसे उड़ा सके। हँसी उतनी कहाँसे आवे, सवाल तो यह है?"

योगेन्द्र—"पर, मैं फिर कहता हूँ, आप मुझपर नाराज न होइयेगा। आप अपनी छतपर बैठकर जो खुशी आवे सो करें, मैं उसपर आपत्ति करनेवाला कौन हूँ। मेरा तो सिर्फ इतना ही कहना है कि साधारण जनोंकी जो एक सीमा है, उसमें अपनेको रखा जाय तो कोई बात ही नहीं; जैसे सबका काम चल रहा है, अपना भी वैसे ही चल जाना काफी है। उससे ज्यादा चलना शुरू करते ही लोगोंकी भीड़ इकट्ठी होगी ही। फिर चाहे वे गाली दें चाहे भक्ति करें, उससे कुछ बनता-बिगड़ता नहीं। लेकिन, इस तरह भीड़-भम्भड़में जीवन बितानेमें क्या कोई आराम है?" कहता हुआ वह उठ खड़ा हुआ।

नलिनाक्षने कहा—"अजी आप जा कहाँ रहे हैं? मुझे अपनी छतपरसे इस तरह एकदम सर्वसाधारणकी पक्की जमीनपर जोरसे पटककर अचानक भाग खड़े होनेसे काम नहीं चलेगा। बैठिये।"

योगेन्द्र—"बस, अब आजके लिए छुट्टी दीजिये। जरा घूम आऊँ।"

योगेन्द्र चला गया। हेमनलिनी मुँह झुकाये टेबिलपर बिछे कपड़ेकी झालरको बेमतलब छेड़ने लगी। उस समय कोई अगर गौरसे उसके मुँहकी तरफ देखता, तो जरूर उसे हेमकी आँखोंके किनारे भीगे हुए मालूम होते।

हेमनलिनीको, इस तरह दिनपर दिन नलिनाक्षके साथ बातचीत करते करते अपने भीतरका दैन्य दिखाई देने लगा; और वह नलिनाक्षके मार्गपर चलनेके लिए व्याकुल हो उठी। अत्यन्त दुःखके समय जब कि उसे भीतर और बाहर कहीं भी कोई अवलम्बन ढूंढ़े नहीं मिल रहा था, ठीक उसी समय नलिनाक्षने विश्वको उसके सामने मानो एक नये रूपमें उद्घाटित कर दिखाया। ब्रह्मचारिणीकी तरह नियम पालन करनेके लिए हेमका मन वैसे ही कुछ दिनोंसे उत्सुक था; कारण नियम मनके लिए एक दृढ़ अवलम्बन है, सिर्फ यही नहीं, शोक मात्र-एक मनके भावके आकारमें ही टिका रहना नहीं चाहता, वह बाहर भी किसी एक व्रत-चर्यामें अपनेको सत्य साबित करनेकी कोशिश करता है। अब तक हेमनलिनी ऐसा नहीं कर सकी थी; लोगोंकी दृष्टि पड़नेके सङ्कोचसे वेदनाको

वह अपने मन ही में पालती आ रही थी। नलिनाक्षको साधनाका अनुसरण करके आज जब उसने शुद्धाचार और निरामिष भोजन ग्रहण किया तब उसके मनमें बड़ी-भारी तृप्ति हुई। अपने कमरेमेंसे उसने दरी-कारपेट वगैरह उठा दिया, और परदेकी ओटमें एक तरफ अपने बिस्तर लगाये। उस घरमें और कोई चीज ही नहीं रखी। कमरेका फर्श वह रोज अपने हाथसे धो-पोंछकर साफ करती और नहानेके बाद सफेद पवित्र वस्त्र पहनकर सामने एक फूलकी रकाबी रखके चटाईपर बैठ जाती; खुली हुई खिड़कियोंसे बाहरका प्रकाश भीतर आता, और उस प्रकाशसे, आकाशसे, वायुसे वह अपने अन्तःकरणका अभिषेक करती रहती। अन्नदा बाबूसे सम्पूर्णरूपसे हेमनलिनीका साथ देते नहीं बनता था; किन्तु नियम पालनके द्वारा हेमके चेहरेपर जो एक परितृप्तिकी दीप्ति प्रकट होने लगी, उसे देखकर वृद्ध पिताका मन स्निग्ध हो-हो जाता। अब नलिनाक्ष आता है तो हेमनलिनीके कमरेमें जमीनपर बैठे-बैठे ही तीनोंमें बातचीत होती है।

योगेन्द्र बिलकुल ही विद्रोही हो उठा; कहता रहता है, "यह सब वाहियात क्या हो रहा है! तुमलोग सब मिलकर घरको भयानक पवित्र कर डालोगे तो मुझ जैसे आदमीकी यहाँ कैसे गुजर होगी?"

पहले, योगेन्द्रकी व्यंग-भरी बातें सुनकर हेम अत्यन्त व्यथित और कुण्ठित हो उठती थी, आजकल अन्नदा बाबू तो कभी-कभी योगेन्द्रकी बातपर नाराज हो उठते हैं, किन्तु हेमको जरा भी गुस्सा नहीं आता; बल्कि वह तो नलिनाक्षका साथ देकर शान्त-स्निग्ध भावसे हँसती-मुसकराती रहती है। अब उसने एक द्विधा-हीन निश्चित चीजका अवलम्बन ले रखा है, इस विषयमें शरमानेको भी वह कमजोरी समझती है। लोग उसके वर्तमान आचरणको अद्भुत और एक तरहकी सनक समझकर मजाक उड़ाया करते हैं, इस बातको वह जानती है, किन्तु नलिनाक्षके प्रति उसकी भक्ति और विश्वास इतना है कि उसने और-सब बातोंको ढक दिया है; और इसीलिए उसे किसीके सामने किसी तरहका सङ्कोच नहीं।

एक दिन हेमनलिनी प्रातःस्नानके बाद उपासना समाप्त करके अपनी उस

एकान्त कुटीरमें वातायनके सामने चुपचाप स्तब्ध बैठी थी, इतनेमें अचानक नलिनाक्षके साथ अन्नदा बाबू आ गये। हेमका हृदय तब परिपूर्ण था। उसने सहसा जमीनसे माथा टेककर नलिनाक्षको और अपने पिताको प्रणाम किया और पाँवकी धूल माथेसे लगाई। नलिनाक्ष संकुचित हो उठा। अन्नदा बाबूने कहा—"चञ्चल न होइये, नलिन बाबू, हेमने अपना कर्तव्य ही किया है।"

और-और दिन नलिनाक्ष इतने सवेरे नहीं आता। इसीसे विशेष सुत्सुकताके साथ हेम उसके मुँहकी तरफ देखने लगी। नलिनाक्षने कहा—"काशीसे मेरी माका समाचार आया है, उनकी तबीयत ठीक नहीं है, इसलिए आज शामकी गाड़ीसे मैंने काशी जाना तय किया है। दिनमें अपना काम समाप्त कर लेना है, इसीसे सवेरे ही आपलोगोंसे विदा लेने चला आया हूं।"

अन्नदा बाबूने कहा—"क्या कहूं, आपकी मा बीमार हैं, भगवान उन्हें जल्दी आरोग्य करें। इन कुछ ही दिनोंमें आपसे जो मैंने उपकार पाया है, उससे मैं कभी भी उऋण नहीं हो सकता।"

नलिनाक्षने कहा—"यह निश्चय समझिये कि आपसे मैं अत्यन्त उपकृत हुआ हूं। पड़ोसीको आप जितनी भी मदद दे सकते थे सो तो दी ही, साथ ही तात्त्विक आलोचनामें अब तक जो मैं अकेला उलझा रहता था उसमें भी आपने काफी साथ दिया, जिससे मुझे नया तेज मिला ; और मेरी भावना और साधना आपलोगोंके जीवनका अवलम्बन पाकर पहलेसे शक्तिशाली हो उठी। इससे मैं समझ गया कि दूसरोंके हार्दिक सहयोगसे उद्देश्य-सिद्धिमें कितना जबरदस्त लाभ होता है।"

अन्नदा बाबू बोले—"मैंने एक आश्चर्यकी बात यह देखी कि हमें किसी एक चीजकी बहुत ज्यादा जरूरत थी किन्तु हमें यह नहीं मालूम था कि वह क्या चीज है ; ठीक इसी समय आप मिल गये, और देखा कि आपके बिना हमारा काम ही नहीं चल सकता था। हमलोग बहुत ही एकान्तवासी ठहरे, बाहर जाना-आना नहींके बराबर समझिये। खासकर सभा-सोसाइटियोंमें जाना तो बनता ही नहीं ; और कहीं जायें भी, तो हेमको ले जाना अत्यन्त कठिन था। लेकिन उस दिन, कैसे आश्चर्यकी बात है देखिये, ज्यों ही योगेनसे सुना

कि सभामें आपका भाषण है, त्यों ही हम दोनों वहाँ पहुँच गये। ऐसी घटना कभी नहीं हुई। इन सब बातोंको याद रखियेगा, नलिन बाबू! इससे आप समझ जायेंगे कि हमें आपको निस्सन्देह रूपसे आवश्यकता थी। हम आपके सदा कृतज्ञ रहेंगे।"

नलिनाक्ष—"आप भी इस बातको याद रखियेगा कि आपलोगोंके सिवा और किसीसे भी मैंने अपने जीवनकी गूढ़ बातें नहीं कहीं। सत्यको प्रकट कर सकना ही सत्यकी चरम शिक्षा है। सत्यके प्रकाशकके लिए जिस बातकी जबरदस्त कमी थी, वह आपलोगोंसे ही पूरी हुई है। इसलिए मुझे भी आपलोगोंके सहयोगकी कितनी जबरदस्त जरूरत थी, इस बातको आप भी न भूलियेगा।"

हेमनलिनी कुछ भी नहीं बोली; वह खिड़कीमेंसे जो धूप कमरेमें आ रही थी उसीकी तरफ चुपचाप बैठी देख रही थी। नलिनाक्ष जब चलनेके लिए उठ खड़ा हुआ तब उसने कहा—"काशी पहुँचते ही आप अपनी माका समाचार दीजिएगा, हमलोगोंको उनकी चिन्ता है।"

जाते वक्त हेमने नलिनाक्षको फिर ढोक देकर प्रणाम किया।

४४

इधर कई दिनोंसे अक्षय लापता था। आज, नलिनाक्षके काशी चले जानेके बाद, योगेन्द्रके साथ चायकी टेबिलपर उसके दर्शन हुए हैं। अक्षय इस बातको जानता था कि हेमके मनमें रमेशकी स्मृति कितनी जाग्रत है इस बातके समझनेका सिर्फ एक ही तरीका है, और वह यह कि वह अक्षयके प्रति कितना विराग दिखाती है। आज उसने देखा, हेमनलिनीका चेहरा प्रशान्त है; उसे देखकर उसके चेहरेका भाव जरा भी विकृत नहीं हुआ। स्वाभाविक प्रसन्नताके साथ हेमने अक्षयसे कहा—"इधर कई दिनोंसे आपको देखा नहीं?"

अक्षयने कहा—"हमलोग क्या प्रतिदिन देखनेके योग्य हैं?"

हेम हँसती हुई बोली—"योग्यताके अभावमें अगर हम परस्पर मिलना-जुलना बन्द कर दें, तब तो हममेंसे बहुतोंको 'एकान्तवास'का व्रत लेना पड़ेगा।"

योगेन्द्र—"अक्षयने समझा था कि वह अकेला विनय दिखाकर सारी बहादुरी खुद ही ले लेगा, लेकिन हेम उसपर भी बाजी मार ले गई। उसने सम्पूर्ण मनुष्यजातिकी तरफसे विनय दिखाकर सामने एक समस्या भी रख दी। लेकिन, मेरा इस सम्बन्धमें जरा-कुछ वक्तव्य है। असलमें हम-जैसे साधारण आदमी ही प्रतिदिन मिलने-जुलनेके योग्य होते हैं, और जो असाधारण हैं उनका तो क्वचित-कभी ही दर्शन होना अच्छा है। इसीलिए तो वे वन-जंगल और पहाड़-गुफाओंमें रहते हैं। लोकालयमें अगर वे स्थायीरूपसे रहने लगते तो अक्षय-योगेन्द्र आदि अत्यन्त साधारणजनोंको शहर छोड़कर वन या पहाड़ोंमें शरण लेनी पड़ती।" योगेन्द्रके इस कथनमें जो व्यंग था उसे हेम समझ गई और वह उसके चुभ भी गया। किन्तु उसका उसने कुछ जवाब न देकर तीन प्याले चाय बनाकर क्रमसे अन्नदा बाबू, अक्षय और योगेन्द्रके सामने रख दिये।

योगेन्द्रने कहा—"तुम चाय नहीं पीओगी?"

हेमनलिनी जानती थी कि अब उसे योगेन्द्रसे बातें सुननी पड़ेंगी; फिर भी उसने शान्त दृढ़ताके साथ कहा—"नहीं, मैंने चाय छोड़ दी है।"

योगेन्द्र—"अब बाकायदा तपस्या शुरू कर दी मालूम होता है! चायकी पत्तियोंमें शायद आध्यात्मिक तेज काफी नहीं है; जो-कुछ है सब हर्र-बहेड़ामें ही होगा! क्या मुसीबत है! हेम, इन-सब वाहियात बातोंको छोड़ो। एक प्याला चाय पीनेसे ही अगर तुम्हारा योग-यज्ञ भङ्ग होता हो, तो हो जाने दो। इस संसारमें खूब मजबूत चीज ही जब नहीं टिकती, तो ऐसी-ऐसी क्षणभंगुर बातोंका इस दुनियामें क्या ठिकाना, जहाँ हलकी-हलकी बातोंके आधारपर ही समाजको एकसाथ मिलकर रहना पड़ता है!" इतना कहकर योगेन्द्रने अपने हाथसे एक प्याला चाय बनाकर हेमके सामने सरका दी। हेमने उससे हाथ न लगाते हुए अपने पितासे कहा—"बापूजी, आज तुम सिर्फ चाय ही पीओगे! कुछ खाओगे नहीं?"

अन्नदा बाबूका स्वर और हाथ काँपने लगे, बोले—"बेटी, मैं सच कहता हूँ, इस टेबिलपर अब मुझे कुछ भी नहीं रुचता। बहुत देरसे मैं योगेनकी बातें सह लेनेकी कोशिश कर रहा हूँ। मैं जानता हूँ, मेरे शरीर और मनकी

ऐसी हालत है कि मुँह खोलते ही क्याका क्या निकल जाय, कोई ठीक नहीं ! पीछे मुझ ही को पछताना पड़ता है ।"

हेम अपने पिताके पास जा खड़ी हुई ; और बोली—"बापूजी, तुम रंज न किया करो। भाई-साहब मुझे चाय पिलाना चाहते हैं, यह तो अच्छी ही बात है, मैंने इसमें कुछ बुरा नहीं माना । नहीं बापूजी, तुम्हें कुछ खाना ही पड़ेगा, खाली-पेट चाय पीनेसे तुम्हारी तबीयत खराब हो जायगी।" कहते हुए हेमने नाश्तेकी तश्तरी उनके सामने सरका दी । अन्नदा बाबू धीरे-धीरे खाने लगे ।

हेम अपनी कुरसीपर आकर बैठ गई । योगेन्द्रका दिया-हुआ प्याला उठाकर वह मुँहसे लगाना ही चाहती थी कि अक्षय चटसे बोल उठा—"माफ कीजियेगा, अपना प्याला आपको मुझे देना पड़ेगा, मेरी चाय खतम हो चुकी है ।" और, योगेन्द्रने उठकर हेमके हाथसे प्याला ले लिया ; और पितासे बोला—"मुझसे बड़ी गलती हो गई बापूजी, मुझे माफ कीजिये ।"

अन्नदा बाबूसे कुछ जवाब देते न बना, देखते-देखते उनकी दोनों आँखोंसे आँसू ढलक पड़े । योगेन्द्र अक्षयको साथ लेकर बाहर चला गया । अन्नदा बाबू नाश्ता करके उठे और हेमका हाथ पकड़कर काँपते-हुए पैरोंसे ऊपर चले गये ।

उसी दिन रातको अन्नदा बाबूके पेटमें बड़े जोरका दर्द हुआ । डाक्टरने आकर परीक्षा की ; और कहा—"इनके यकृतमें खराबी है । अभी रोग ज्यादा बढ़ा नहीं है । अभीसे अगर कहीं स्वास्थ्यकर जगहमें ले जाकर साल-छै-महीने रखा जाय, तो बिलकुल ठीक हो सकते हैं।"

दर्द घटने और डाक्टरके चले जानेपर अन्नदा बाबूने कहा—"चलो हेम, हमलोग कुछ दिन काशी रह आवें ।" ठीक यही बात हेमके मनमें भी आ रही थी । नलिनाक्षके जाते ही वह अपनी साधनाके सम्बन्धमें कुछ कमजोरी अनुभव कर रही थी । नलिनाक्षकी उपस्थितिसे उसको साधनामें बड़ी-भारी मदद मिलती थी । उसके चेहरेमें ही ऐसी एक स्थिर निष्ठा और प्रशान्त प्रसन्नताकी दीप्ति थी कि वह हेमके विश्वासको प्रतिक्षण मानो विकसित किये रखती थी । नलिनाक्षकी अनुपस्थितिमें हेमके उत्साहपर मानो एक म्लान छाया-सी आ पड़ी, और शायद इसीलिए आज वह दिन-भर नलिनाक्षके बताये

हुए अनुष्ठानोंको जबरदस्ती और देर तक पालती रही। किन्तु उससे ऐसी एक थकान और निराशा आई कि उससे अपने आँसू रोके न रुक सके। चायकी टेबिलपर दृढ़ताके साथ उसने आतिथ्य करना शुरू किया था, किन्तु उसके मनपर जो भारी बोझ था वह बना ही रहा। फिर उसे पूर्व-स्मृतिकी वेदना जोरोंसे सताने लगी, और उससे उसका मन मानो गृहहीन-आश्रयहीनकी तरह हाहाकार कर उठा। इसीलिए, जब उसने पिताके मुँहसे काशी जानेकी बात सुनी तो वह व्यग्र होकर बोल उठी—"हाँ बापूजी, यही ठीक रहेगा।"

दूसरे दिन घरमें बाहर जानेकी-सी तैयारियाँ देखकर योगेन्द्रने पूछा—"क्या, बात क्या है?"

अन्नदा—"हमलोग पश्चिम जा रहे हैं।"

योगेन्द्र—"किस जगह?"

अन्नदा—"घूमते-घूमते जो जगह पसन्द आ जाय।" योगेन्द्रसे यकायक काशी जानेकी बात कहनेमें वे सकुचा गये।

योगेन्द्रने कहा—"लेकिन मैं अबकी बार तुमलोगोंके साथ नहीं जा सकूँगा। मैंने हेडमास्टरीके लिए दरखास्त दी है, उसके जवाबके लिए मुझे यहीं रहना पड़ेगा।"

४५

रमेश सवेरे ही इलाहाबादसे गाजीपुर आ गया। रास्तेमें ज्यादा आदमी नहीं थे, और जाड़ेकी जड़तासे रास्तेके पेड़ मानो अपने पत्तोंके आवरणमें छिपे खड़े थे। मकानोंपर सफेद कुहरा ऐसा लग रहा था जैसे विशालकाय राजहंसिनी अपने-अपने अण्डोंपर बैठी उन्हें से रही हों। ऐसे, निर्जन-पथसे रमेशका ताँगा धीरे-धीरे उसके बंगलेकी तरफ चला जा रहा है; और मोटे ओवरकोटके नीचे रमेशके जो 'हृदय' नामकी चीज है, उसकी गति और कँपकपी प्रतिक्षण बढ़ती ही जा रही है।

बंगलेके फाटकपर ताँगा रुकते ही रमेश उतर पड़ा। उसने सोचा था कि ताँगेकी आवाज सुनते ही कमला जरूर बाहर बरण्डेमें आ खड़ी होगी। अपने

हाथसे कमलाके गलेमें पहनानेके लिए इलाहाबादसे वह एक कीमती जड़ाऊ हार खरीद लाया था। बकस समेत उस हारको रमेशने ओवरकोटकी जेबमेंसे निकाल लिया। फाटकके भीतरसे आगे बढ़कर उसने देखा, विष्णु नौकर बरण्डेमें पड़ा खर्राटे ले रहा है; और मकानके दरवाजे सब बन्द हैं। चोट-सी खाकर वह वहीं ठिठककर खड़ा हो गया। ऊँचे स्वरमें उसने पुकारा—"विष्णु!" उसका खयाल था कि इस पुकारसे भीतर भी किसीकी आँख खुल जायगी। किन्तु इस तरह जगानेमें उसे जो भीतरी चोट पहुँची उससे वह व्यथित हो उठा; उसने तो पिछली रात जागकर ही काटी है।

दो-तीन बार आवाज देनेपर भी जब विष्णु नहीं जगा तब उसे धक्के देकर जगाना पड़ा। विष्णु जागकर उठ बैठा और हतबुद्धि-सा होकर रमेशके मुँहकी तरफ देखता रह गया। रमेशने पूछा—"तेरी बहूजी कहाँ हैं?"

विष्णु पहले तो रमेशकी बातको समझ ही न सका, उसके बाद सहसा चौंककर बोला—"घर ही में हैं बाबू सा'ब!" इतना कहकर वह फिर पड़ रहा।

रमेश दरवाजा खोलकर भीतर गया। भीतर जाकर देखा, वहाँ कोई भी नहीं है। कमरे सब सूने पड़े हैं। फिर भी उसने चिल्लाकर पुकारा—"कमला!" किन्तु किसीने जवाब नहीं दिया। बाहर आकर नीमके नीचे तक घूम आया; फिर रसोईघर, नौकरोंकी कोठरियाँ, अस्तबल वगैरह सब देख डाला, कहीं भी कमला नहीं दिखाई दी। तब कुछ-कुछ धूप निकल आई थी, कौए बोल रहे थे, और बंगलेके कुएसे पानी भरनेके लिए दो-एक पनिहारिनें भी आने लगी थीं। बंगलेके पीछे किसी-एक मकानसे चक्की पीसनेवालियोंका गीत सुनाई दे रहा था।

रमेश फिर बंगलेके सामने आ खड़ा हुआ; देखा कि विष्णु फिर खर्राटे ले रहा है। जरा झुककर उसने विष्णुको झकझोर डाला; देखा कि उसकी साँसमें ताड़ीकी बदबू आ रही है। अबकी बार विष्णु कुछ होशमें आकर भड़भड़ाकर उठके खड़ा हो गया। रमेशने उससे फिर पूछा—"तेरी बहूजी कहाँ हैं?"

विष्णुने कहा—"घर ही में होंगी, बाबू सा'ब!"

रमेश—"घरमें तो नहीं हैं?"

विष्णु—"कल शामको तो यहीं थीं।"

रमेश—"फिर कहाँ गईं ?"

विष्णु मुंह बाये रमेशके चेहरेकी तरफ देखता रह गया।

इतनेमें चौड़ी किनारीकी बहारदार साड़ी पहने-हुए चादर-ओढ़े उमेश आ पहुँचा ; उसकी आँखें लाल-सुर्ख हो रही थीं। रमेशने उससे पूछा—"उमेश, तेरी जीजी-बाई कहाँ हैं ?"

उमेशने कहा—"जीजी-बाई तो कल यहीं आ गई थीं !"

रमेशने पूछा—"तू कहाँ था ?"

उमेशने कहा—"कल मुझे उन्होंने सिद्धो बाबूके यहाँ नाटक देखनेकी छुट्टी दे दी थी।"

ताँगेवालेने आकर कहा—"बाबू सा'ब, किराया ?"

रमेश जल्दीसे उसी ताँगेपर सवार होकर चचाके बंगलेकी तरफ चल दिया। वहाँ जाकर देखा कि घरके सभी अत्यन्त चञ्चल हो रहे हैं। रमेशने समझा, शायद कमला अचानक बीमार पड़ गई है। किन्तु उसका अनुमान गलत निकला। मालूम हुआ कि कल रातको उमा अचानक चीखकर रो उठी थी और उसके हाथ-पैर ठण्डे पड़ गये थे, इसीसे सब चिन्तित हैं। उसके इलाजमें रात-भर सब परेशान रहे, किसीको नींद नहीं आई। रमेशने समझा, उमाकी तबीयत खराब हो जानेसे जरूर कमलाको कल यहीं बुला लिया गया होगा। उसने विपिनसे पूछा—"कमला शायद उमाके पास होगी ? अब उसकी कैसी तबीयत है ?"

कल रातको कमला यहाँ आई है या नहीं, विपिनको निश्चितरूपसे कुछ मालूम नहीं था, फिर भी अन्दाजसे उसने जवाब दिया—"हाँ, उमाको वे बहुत ज्यादा प्यार करती हैं न, इसीसे ! डाक्टरका तो कहना है, अब कोई चिन्ताका कारण नहीं।"

कुछ भी हो, अत्यन्त उल्लास और कल्पनाके पूर्ण उच्छ्वासमें बाधा पड़ जानेसे रमेशका मन अत्यन्त उदास हो गया। वह सोचने लगा, उनके मिलनमें दैव ही बाधक हो रहा है।"

इतनेमें रमेशके बंगलेसे उमेश भी आ पहुँचा। यहाँके अन्तपुरमें उसकी अवाध गति थी। और शशी भी उससे स्नेह करती थी। भीतर जाकर वह शशीके कमरेमें घुस ही रहा था कि शशो लड़कीको नींद उचट जानेकी आशङ्कासे जल्दीसे उठकर दरवाजेके पास आ गई।

उमेशने पूछा—"दीदीजी, जीजी-बाई कहाँ हैं?"

शशिमुखी ताज्जुबमें पड़ गई, बोली—"क्यों, तू तो कल उन्हें बंगलेमें ले गया था। रातको वहाँ लछमनियाको भेजनेकी बात थी, पर उमाको तबीयत खराब हो जानेसे नहीं भेज सकी।"

उमेशका चेहरा उतर गया, बोला—"उस बंगलेमें वे नहीं हैं।"

शशी घबड़ा गई, बोली—"यह क्या बात! कल रातको तू कहाँ था?"

उमेश—"जीजी-बाईने मुझे वहाँ रहने कहाँ दिया! वहाँ पहुँचते ही उन्होंने तो मुझे सिद्धो बाबूके यहाँ नाटक देखने भेज दिया था।"

शशी—"तेरी भी क्या अकल है! विष्णु कहाँ था?"

उमेश—"उसे कुछ पता ही नहीं! कल उसने खूब ताड़ी पी ली थी।"

शशी—"जा जा, जल्दीसे बाबूको बुला ला।"

विपिनके आते ही शशोने कहा—"सुनते हो, यह तो बड़ा गजब हो गया!"

विपिनका चेहरा फक पड़ गया, उसने घबड़ाकर पूछा—"क्यों क्या हुआ?"

शशी—"कमला कल शामको उस बंगलेमें गई थी, अब उसका पता ही नहीं लगता कहाँ गई!"

विपिन—"वे क्या कल रातको यहाँ नहीं आई थीं?"

शशो—"नहीं जी! मेरे मनमें आई भी थी कि बुला लूं, पर कोई आदमी नहीं था। रमेश बाबू आ गये क्या?"

विपिन—"हाँ। कमलाको बंगलेमें न देखकर उन्होंने तो यही समझा था कि वे यहीं होंगी। वे बाहर बैठे हैं।"

शशी—"जाओ जाओ, जल्दी जाकर पता लगाओ। उमी अभी सो रही है, तबीयत ठीक ही मालूम होती है।"

विपिन और रमेश दोनों उसी ताँगेमें बैठकर बंगले पहुँचे; और विष्णुके

पीछे पड़ गये। बड़ी कोशिशके बाद जो-कुछ मालूम हुआ, सबको जोड़-जाड़कर उसका मतलब यह निकलता है कि कल शामको कमला अकेली गङ्गाकी तरफ गई थी। विष्णु साथ जानेको तैयार था, पर कमलाने उसे एक रुपया देकर यहीं रहकर पहरा देनेको कहा; और अकेली चली गई। उसके बाद क्या हुआ, उसे कुछ भी पता नहीं। जिस रास्तेसे कमला गंगाकी तरफ गई थी, विष्णुने वह रास्ता दिखा दिया।

उस रास्तेसे, ओससे भीगे हुए खेतोंके बीचमें होकर, रमेश विपिन और उमेश तीनों कमलाकी खोजमें चल दिये। उमेश चारों तरफ ऐसी व्याकुल दृष्टिसे देखने लगा जैसे शिकारीके हाथ फँसी हुई हरिणी अपने बिछुड़े बच्चेको देखनेके लिए फड़फड़ाती है। गङ्गाके किनारे जाकर तीनों एक जगह खड़े हो गये। चारों तरफ खुला हुआ है; रेतीपर सवेरेकी घाम चमक रही है। खूब गौरसे सबने चारों तरफ निगाह दौड़ाई, पर कहीं भी कोई दिखाई नहीं दिया। उमेश खूब जोर-जोरसे कारने लगा—"जीजी-बाई! ओ जीजी-बाई! कहाँ हो जीजी-बाई?" उस पारके सुदूर तटसे प्रतिध्वनि मात्र सुनाई देकर रह गई, कहींसे कोई जवाब नहीं मिला।

ढूंढ़ते-ढूंढ़ते उमेशको सहसा बहुत दूर सफेद-सी कोई चीज पड़ी दिखाई दी। दौड़ता हुआ वह उसके पास पहुँचा, देखा कि पानीके नजदीक रूमालमें बँधा हुआ चाभीका गुच्छा पड़ा है। "क्या है रे?"—कहता हुआ रमेश भी वहाँ आ पहुँचा। देखा, कमलाका ही चाभीका गुच्छा है।

जहाँ रूमाल पड़ा था, वहाँकी गीली मिट्टीमें देखा गया कि छोटे-छोटे पाँवोंके निशान बने हुए हैं। ये निशान तटसे उतरते हुए सीधे पानीके भीतर चले गये हैं। थोड़ी देरमें पानीके बिलकुल पास ही दूसरी एक चीज चमकती हुई दिखाई दी। चटसे उमेशने उसे उठा लिया, देखा कि सोनेकी छोटी-सी एक सेफ्टिपिन है। रमेश देखते ही समझ गया कि यह उसीका दिया-हुआ उपहार है।

इस तरह इन सभी संकेतोंने जब कि गङ्गाके पानीकी तरफ ही उँगली उठाकर इशारा किया, तो उमेशसे फिर रहा नहीं गया। वह 'जीजी-बाई'

'जीजी-बाई' चिल्लाता हुआ पानीमें कूद पड़ा ; और इधरसे उधर सर्वत्र डुबकियाँ लगा-लगाकर क्या ढूंढ़ने लगा सो वही जाने ! रमेश हतबुद्धि-सा खड़ा रहा। विपिनने कहा—"उमेश, तू कर-क्या रहा है ? निकल आ।"

उमेश मुँहसे पानी फेंकता हुआ बोल उठा—"मैं नहीं निकलूंगा, नहीं निकलूंगा। जीजी-बाई, तुम मुझे छोड़के कहाँ चली गईं, मुझे भी लेती जाओ!"

विपिन डर गया। पर, उमेश पानीमें मछलीकी तरह तैर सकता है, उसके लिए पानीमें डूबकर आत्महत्या करना बहुत मुश्किल था। वह डुबकियाँ लगाते-लगाते जब खूब हाँफने लगा तब किनारे आकर रेतीपर पड़ रहा ; और मछलीकी तरह फड़फड़ाता-हुआ रोने लगा।

विपिनने निस्तब्ध रमेशको छूकर कहा—"रमेश बाबू, चलिये ! यहाँ खड़े रहनेसे अब कोई लाभ नहीं। थानेमें खबर देकर पता लगाना चाहिए।"

शशिमुखीके घर उस दिन खाना-पीना सब बन्द हो गया ; और शशीने रो-रोकर घर भर दिया। गङ्गामें मल्लाहोंने नाव ले-लेकर बहुत दूर तक जाल डाले। पुलिस भी चारों तरफ खोज करने लगी। स्टेशन जाकर पता लगाया। मालूम हुआ कि ऐसी कोई बंगाली स्त्री उस रातको रेलमें नहीं चढ़ी।

उसी दिन शामको चक्रवर्ती भी आ पहुँचे। कई दिनोंका कमलाका व्यवहार और आद्योपान्त सब वर्णन सुनकर उन्हें पूरा विश्वास हो गया कि कमलाने गङ्गामें डूबकर आत्महत्या कर ली है।

लछमनियाने दृढ़ताके साथ कहा कि 'इसीलिए बच्ची कल रातको अचानक चीखकर बीमार पड़ गई थी ! ओझा बुलाकर उसे अच्छी तरह झड़ा देना चाहिए।'

रमेशकी छातीके भीतर सब सूख-सा गया ; उसमें आँसूकी भाप तक नहीं बची जो उसकी आँखोंमें जरा नमी पहुँचा सके। वह पागल-सा बैठा सोचने लगा, 'एक दिन यही कमला इसी गङ्गाके पानीमेंसे उठकर मेरे पास आ खड़ी हुई थी, और आज, पूजाके पवित्र फूलकी तरह आज वह इसी गङ्गाके पानीमें विलीन हो गई !'

सूरज जब डूबने लगा तब रमेश फिर गङ्गाके किनारे उसी जगह पहुँच गया जहाँ रूमालमें बँधा चाभीका गुच्छा पड़ा मिला था। वहाँ खड़ा-खड़ा वह

उन पदचिह्नोंकी तरफ टकटकी लगाये देखता रहा। उसके बाद, जूते उतारकर धोती समेटके पानीके भीतर घुसा; और जेबमेंसे सवेरेवाला नया हार निकालकर दूर पानीमें फेंक दिया।

इसके बाद रमेश कब गाजीपुरसे चला गया, चचाके घर किसीको इतना होश ही नहीं था कि कोई खबर रखता।

४६

अब रमेशके सामने कोई भी काम नहीं रहा। उसे ऐसा मालूम होने लगा जैसे इस जीवनमें अब वह कोई भी काम न कर सकेगा, और कहीं भी वह स्थायी होकर नहीं बैठ सकेगा। हेमनलिनीकी बात उसके मनमें बिलकुल ही न उठी हो, सो नहीं; पर उसे उसने दूर हटा दिया है। उसने मन ही-मन कहा है, 'मेरे जीवनमें जो एक जबरदस्त घटनासे गहरी चोट पहुँची है, उसने मुझे हमेशाके लिए संसारके अयोग्य बना दिया है। बिजलीका मारा पेड़ हरे-भरे बगीचेमें रहनेकी आशा ही क्यों करे?'

रमेश भ्रमण करने निकल पड़ा। कहीं भी एक जगह ज्यादा दिन नहीं रहा। नावपर चढ़कर उसने काशीके घाटोंकी शोभा देखी, दिल्लीमें कुतुबमीनारपर चढ़ा, आगरामें चाँदनी रातमें ताजमहल देखा, फिर अमृतसरमें गुरुद्वार देखकर राजपूतानामें आबूके पहाड़पर मन्दिर देखने गया। इस तरह उसने अपने शरीर और मनको विश्राम नहीं लेने दिया।

अन्तमें, भ्रमणसे थके इस युवकका अन्तःकरण 'घर'की चाहमें हाहाकार करने लगा। उसके मनमें एक शान्तिमय घरकी अतीत स्मृति और एक सम्भावनामय घरकी सुखमय कल्पना बराबर आघात करने लगी। आखिर एक दिन उसका शोकमें सान्त्वना ढूँढ़नेवाला भ्रमण सहसा समाप्त हो गया; और वह एक गहरी साँस लेकर कलकत्ताका टिकट लेकर रेलमें सवार हो गया।

कलकत्ता जाकर रमेश कोलूटोला-वाली उस गलीमें सहसा प्रवेश न कर सका। वहाँ जाकर वह क्या देखेगा, क्या सुनेगा, उसका कोई ठीक नहीं। उसके मनमें बराबर यह आशङ्का होने लगी कि वहाँ जरूर कोई जबरदस्त

परिवर्तन हुआ होगा। एक दिन तो वह गलीको मोड़ तक जाकर लौट आया। दूसरे दिन शामको रमेश अपनेको जबरदस्ती उस मकानके सामने ले गया। देखा, मकानके सब दरवाजे-जंगले बन्द हैं ; भीतर कोई है, ऐसा नहीं मालूम हुआ। फिर भी, इस खयालसे कि सुक्खन नौकर तो जरूर होगा, उसने सुक्खनको आवाज देकर दरवाजा खटखटाया। पर किसीने जबाब नहीं दिया। पड़ोसी चन्द्रमोहन अपने मकानके बाहर चबूतरेपर बैठे तम्बाकू पी रहे थे, उन्होंने कहा—"कौन, रमेश बाबू ? अन्नदा बाबू तो यहां नहीं हैं, सब बाहर गये हुए हैं।"

रमेश—"कहाँ गये हैं मालूम है ?"

चन्द्रमोहन—"सो तो नहीं बता सकता, पछाँहको तरफ कहीं आब-हवा बदलने गये हैं।"

रमेश—"कौन-कौन गये हैं बता सकते हैं ?"

चन्द्रमोहन—"अन्नदा बाबू और उनकी लड़की।"

रमेश—"आपको ठीक मालूम है उनके साथ और-कोई नहीं गया ?"

चन्द्रमोहन—"ठीक नहीं मालूम तो क्या ! जाते समय मुझसे उनकी बात हुई है।"

रमेशसे अब तो रहा नहीं गया, वह धीरज खोकर कह बैठा—"मैंने एक आदमीसे सुना है कि साथमें नलिन बाबू भी गये हैं ?"

चन्द्रमोहन—"गलत बात है। नलिन बाबू आप-वाले मकानमें कुछ दिन रहे थे। वे तो इनके जानेसे कुछ दिन पहले ही यहाँसे चले गये थे।"

रमेशने फिर बातों-ही-बातोंमें चन्द्रमोहनसे नलिनके सम्बन्धमें थोड़ी-बहुत जानकारी हासिल कर ली। उनका नाम है नलिनाक्ष चट्टोपाध्याय, पहले डाक्टरी करते थे, अब माके साथ काशीमें ही रहते हैं। रमेश कुछ देर तक चुपचाप खड़ा सोचता रहा। अन्तमें बोला—"योगेन्द्र कहाँ है, बता सकते हैं ?"

चन्द्रमोहनने बताया कि 'योगेन्द्रने बिशाईपुरके हाई-स्कूलमें नौकरी कर ली है, वहाँ वह हेड-मास्टर है।' और पूछा—"रमेश बाबू, बहुत दिनोंसे आपको देखा नहीं, आजकल आप रहते कहाँ हैं ?"

रमेशने यह सोचकर कि अब छिपाना फजूल है, कह दिया—"प्रैक्टिस करने गाजीपुर गया था।"

चन्द्रमोहन—"तो क्या अब वहीं रहनेका विचार है?"

रमेश—"नहीं, वहाँसे तो चला आया। अभी कुछ तय नहीं किया कि कहाँ रहूँगा।"

रमेशके जानेके थोड़ी देर बाद ही अक्षय आ पहुँचा। बिशाईपुर जाते वक्त योगेन्द्र उसे मकानकी देख-भालका भार दे गया था। अक्षय जिस भारको अपने ऊपर लेता है उसकी रक्षा करनेमें वह शिथिलता नहीं करता; इसीसे वह सुविधानुसार चाहे जब आकर देख जाता है कि दो-दो नौकरोंमेंसे एक भी घरपर रहकर खबरदारी करता है या नहीं। अक्षयको देखते ही चन्द्रमोहन बोल उठे—"अभी-अभी रमेश बाबू आकर गये हैं।"

अक्षय—"अच्छा! क्यों आये थे?"

चन्द्रमोहन—"सो तो नहीं मालूम। मुझसे अन्नदा बाबूका सब समाचार ले गये हैं। ऐसे दुबले हो गये हैं कि सहसा पहचाननेमें नहीं आते। अगर वे नौकरको आवाज न देते, तो मैं उन्हें पहचान ही नहीं पाता।"

अक्षय—"अब कहाँ रहते हैं, कुछ मालूम हुआ?"

चन्द्रमोहन—"अब तक तो गाजीपुर थे। अब शायद यहीं चले आये हैं। कहाँ रहेंगे, अभी कुछ तय नहीं कर पाये।"

अक्षय—"अच्छा!" कहकर अपने काममें लग गया।

रमेश वहाँसे लौटकर बिस्तरपर पड़ रहा; और सोचने लगा, 'भाग्य यह कैसा नाटक-सा खेल रहा है! इधर मेरे साथ कमलाका, और उधर नलिनाक्षके साथ हेमनलिनीका यह मिलन, यह तो बिलकुल नाटकीय मामला है! इस तरहका उलटा-पुलटा मेल मिला देना अदृष्ट जैसे लापरवाह रचयितासे ही सम्भव हो सकता है। संसारमें वह ऐसी अद्भुत घटनाएँ घटा देता है कि डरपोक लेखक काल्पनिक कहानीमें भी वैसा लिखनेका साहस नहीं कर सकते।' फिर उसने सोचा, अब जब कि वह अपने जीवनके समस्या-जालसे मुक्त हो गया है, तो जहाँ तक सम्भव है, अदृष्ट अपने इस जटिल नाटकके अन्तिम अङ्कमें रमेशके लिए कोई भयानक उपसंहार नहीं लिखेगा।

योगेन्द्र बिशाईपुरमें, स्कूलके प्रतिष्ठाता जमींदारके मकानके पास, एक छोटेसे मकानमें रहता है। रविवारके दिन, सवेरे बैठा हुआ वह अखबार पढ़ रहा था; इतनेमें बाजारके किसी आदमीने आकर उसे एक चिट्ठी दी। लिफाफेके ऊपरके अक्षर देखते ही वह दंग रह गया। रमेशने लिखा है, 'मैं बाजारकी एक दूकानपर बैठा हुआ हूँ, तुमसे कुछ जरूरी बात करनी है!'

योगेन्द्र यहायक कुरसी छोड़कर उछल पड़ा। रमेशका अपमान करनेके लिए यद्यपि एक दिन उसे मजबूर होना पड़ा था, फिर भी उस बाल्यबन्धुको इतने दिन बाद इस दूर-देशमें पाकर उसे वह निराश न कर सका। यहाँ तक कि इससे उसके मनमें खुशी ही हुई; और कुतूहल भी कम नहीं हुआ। खासकर जब कि हेमनलिनी यहाँ नहीं है तब रमेशसे किसी अनिष्टकी आशङ्का ही नहीं की जा सकती।

पत्रबाहकके साथ वह खुद ही बाजारकी तरफ चल दिया। दूरसे देखा कि रमेश एक मोदीकी दूकानमें चीड़की पेटीपर चुपचाप बैठा है। योगेन्द्रने तेजीसे जाकर उसका हाथ पकड़ लिया; और खींचकर उसे उठाते हुए कहा—"तुमसे जीतना मुश्किल है! तुम अपनी दुबिधामें ही डूबे रहे! तुम्हें सीधा मेरे घरपर आ जाना चाहिए था, सो तो नहीं, यहाँ गुड़-बतासोंमें बैठे हो! चलो उठो!"

रमेश शरमिन्दा होकर जरा हँस दिया। योगेन्द्र रास्तेमें न-जाने क्या-क्या बकता चला गया। कहने लगा—"कोई कुछ भी कहे, विधाताको हम कोई भी नहीं जान सकते। उन्होंने मुझे शहरमें पैदा किया, वहीं इतना बड़ा किया, सो क्या इस घोर देहातमें लाकर मारनेके लिए?"

रमेशने चारों तरफ देखकर कहा—"क्यों, जगह तो बुरी नहीं है।"

योगेन्द्र—"मतलब?"

रमेश—"मतलब शान्त एकान्त स्थान है—"

योगेन्द्र—"इसीलिए, मुझ जैसे और-एक आदमीको अलग करके इस शान्त निर्जनताको और भी जरा बढ़ानेके लिए मैं व्याकुल हो रहा हूं।"

रमेश—"कुछ भी कहो, मानसिक शान्तिके लिए यह स्थान बड़ा—"

योगेन्द्र—"ये सब बातें मुझसे न कहो। इधर कई दिनोंसे मनकी सुविशाल

शान्तिके मारे मेरे प्राण कण्ठमें आ अटके हैं। मैंने अपनी सारी शक्ति लगाकर इस शान्तिको तोड़नेकी यथासाध्य कोशिश की है ; यहाँ तक कि स्कूलके सेक्रेटरीके साथ हाथापाई होते-होते बच गई। जमींदार साहबको भी अपने मिजाजका मैंने परिचय दे दिया है ; अब वे शायद जल्दी मेरे ऊपर हस्तक्षेप करने नहीं आयेंगे। हजरत अंगरेजी अखबारोंमें अपनी तारीफ लिखवाकर छपवाना चाहते थे ; पर मैं स्वतन्त्र विचारका आदमी ठहरा, नकोबी मुझसे हरगिज नहीं हो सकती, यह बात मैंने उन्हें अच्छी तरह समझा दी है। फिर भी मैं जो यहाँ टिका हुआ हूं, सो अपने गुणोंके कारण नहीं। यहाँके जायेन्ट साहबने मुझे बहुत पसन्द किया है, इसीसे जमींदारको मुझे हटानेकी हिम्मत नहीं पड़ रही है। जिस दिन गजटमें देखूंगा कि जायेण्टका तबादला हो रहा है, उसी दिन बिशाईपुरके आकाशसे मेरा हेड-मास्टरीका सूर्य अस्त हुआ समझो। यहाँ मेरा एकमात्र मित्र है मेरा पञ्च कुत्ता। और-सबकी मेरे प्रति जैसी दृष्टि है, उसे किसी भी हालतमें 'शुभदृष्टि' नहीं कहा जा सकता।"

योगेन्द्रके घर जाकर रमेश एक कुरसीपर बैठ गया। योगेन्द्रने कहा—"नहीं, अब बैठो मत। मुझे मालूम है, प्रातःस्नान नामका तुम्हारा एक घोर कुसंस्कार है, उसे झटपट पूरा कर लो। इतनेमें मैं केटली चढ़ाये देता हूं, आतिथ्यकी दुहाई देकर आज और एक बार चाय पी लूंगा।"

इस तरह आहार आलाप और विश्राममें दिन बीत गया। रमेश जिस खास बातके लिए यहाँ आया था, योगेन्द्रने दिन-भरमें उसके लिए बिलकुल अवकाश ही नहीं दिया। रातको खा-पीकर दोनों जब आरामकुरसीपर बैठे, तब पासके खेतोंमें सियार बोल उठे ; और अंधेरी रात झींगुरोंकी झनकारसे कांपने लगी।

रमेशने कहा—"योगेन, तुम जानते हो, मैं तुमसे क्या कहने यहाँ आया हू। एक दिन तुमने मुझसे एक सवाल पूछा था, उस सवालका आज मैं जवाब देने आया हूं, आज उसमें कोई भी बाधा नहीं है।" कहकर रमेश कुछ देर तक चुप बैठा रहा। उसके बाद धीरे-धीरे आद्योपान्त सब बातें उसने कह डालीं। बीच-बीचमें उसका गला रुक आया, स्वर भी काँप उठा, और कहीं-कहीं दो-एक मिनटके लिए चुप भी रहा। योगेन्द्र चुपचाप सब सुनता गया। जब सब बातें

सुन लीं तब उसने एक गहरी साँस ली ; और कहा—"ये सब बातें अगर उस दिन कहते, तो मैं विश्वास ही नहीं करता।"

रमेश—"विश्वास करनेके कारण उस दिन जितने थे, आज भी उतने ही हैं। इसके लिए तुमसे मेरी एक प्रार्थना है, मेरा जिस गाँवमें ब्याह हुआ था उस गाँवमें तुम्हें एक बार जाना होगा। उसके बाद वहाँसे मैं तुम्हें कमलाकी ननसाल भी ले चलूंगा।"

योगेन्द्र—"मैं यहाँसे एक कदम भी न हिलूंगा। मैं इसी आरामकुरसी पर पड़ा-पड़ा तुम्हारी प्रत्येक बातपर विश्वास करूंगा। तुम्हारी सभी बातोंपर विश्वास करना मेरी हमेशाकी आदत है ; जीवनमें सिर्फ एक बार उसमें फरक पड़ा है, उसके लिए मैं तुमसे माफी चाहता हूं।" इतना कहकर योगेन्द्र कुरसी छोड़कर रमेशके सामने आ खड़ा हुआ। रमेश भी उठ खड़ा हुआ। और दोनों बाल्यबन्धु आपसमें खूब मिल लिये। रमेशने अपने गलेको साफ करते हुए कहा—"मैं न-जाने कैसे भाग्य-रचित ऐसे एक दुश्छेद्य मिथ्याके जालमें फँस गया था कि उसमें पकड़ाई देनेके सिवा मुझे और कोई रास्ता ही नहीं सूझा। आज जो मैं उससे मुक्त हो गया और मेरे लिए अब किसीसे कुछ छिपानेका नहीं रहा, इससे मुझे प्राण मिल गये। कमलाने क्या समझके क्या सोचकर आत्महत्या की, सो आज तक मेरी समझमें नहीं आया, और भविष्यमें भी समझनेकी कोई सम्भावना नहीं। पर, इतना निश्चित है कि मृत्यु अगर इस तरहसे हमारे दो जीवनोंकी इस कठिन गांठको न काट देती, तो अन्तमें हम दोनों कैसी दुर्गतिमें जाकर पड़ते, उसका खयाल करके अब भी मेरी आत्मा काँप उठती है। मृत्युके ग्राससे एक दिन जिस समस्याका अकस्मात् उद्भव हुआ था, मृत्युके गर्भमें ही एक दिन उस समस्याका वैसे ही अकस्मात् अन्त हो गया।"

योगेन्द्र—"कमलाने निश्चितरूपसे आत्महत्या ही कर ली है, इसे तुम निःसंशय होकर विश्वास न कर बैठना। खैर, कुछ भी हो, तुम्हारी तरफसे तो सब साफ हो गया। अब मैं नलिनाक्षके विषयमें सोच रहा हूं।"

इसके बाद योगेन्द्र नलिनाक्षके विषयमें बात करने लगा ; बोला—"मैं ऐसे आदमियोंको अच्छी तरह नहीं समझ पाता ; और जिसे समझता नहीं उसे

पसन्द भी नहीं करता। लेकिन दुनियामें ज्यादातर लोग मुझसे ठीक उलटे मिलेंगे, वे जिसे नहीं समझते उसीको ज्यादा पसन्द करते हैं। इसासे, हेमके विषयमें मुझे काफी डर बना हुआ है। जब देखा कि उसने चाय छोड़ दी है, मांस-मछली भी नहीं खाती, यहाँ तक कि मजाक उड़ानेपर भी पहलेकी तरह उसकी आँखोंमें आँसू नहीं आते, तब मैं समझ गया कि स्थिति चिन्ताजनक है। इस बातका मुझे निश्चय है कि कुछ भी हो, तुम्हारी मदद मिलनेपर उसका उद्धार करना ज्यादा कठिन न होगा। लिहाजा, तैयार हो जाओ, दोनों मित्र मिलकर संन्यासियोंके विरुद्ध युद्धयात्रा शुरू कर दें।"

रमेशने हँसते हुए कहा—"यद्यपि वीर पुरुषोंकी श्रेणीमें मेरा नाम नहीं, फिर भी, मैं तैयार हूँ।" योगेन्द्र—"ठहरो, बड़े दिनोंकी छुट्टी आने दो।"

रमेश—"उसे तो अभी देर है, तब तक मैं अकेला ही आगे क्यों न बढ़ूँ?"

योगेन्द्र—"नहीं नहीं, यह हरगिज नहीं हो सकता। तुम्हारा सम्बन्ध मैंने ही तोड़ा था, मैं अपने हाथसे उसे जोड़ूँगा। तुम पहलेसे ही जाकर मेरे शुभकार्यपर हाथ मारोगे, सो नहीं होगा। छुट्टियोंको अब रह कितने दिन गये हैं, दस ही दिनकी तो देर है।" रमेश—"तो इस बीचमें मैं एक बार—"

योगेन्द्र—"नहीं नहीं, फालतू बात मत करो। दस दिन तुम यहीं रहो। यहाँ झगड़ा करने-लायक जितने भी आदमी थे, सबको एक-एक करके मैंने खतम कर दिया है, अब मुँहका जायका बदलनेके लिए एक मित्रकी जरूरत है। ऐसी हालतमें मैं तुम्हें नहीं छोड़ सकता। इतने दिनोंसे रोज शामको मैं सियारोंकी ही पुकार सुनता आया हूँ; अब, मुझे तुम्हारा कण्ठ ही वीणा-विनन्दित-सा मालूम हो रहा है। सचमुच, मेरी हालत ऐसी ही शोचनीय हो उठी है!"

४७

चन्द्रमोहनसे रमेशकी खबर पाकर अक्षयके मनमें बहुत-सी चिन्ताएँ पैदा हो गईं। वह सोचने लगा, 'बात क्या है जो इतने दिन बाद फिर वह यहाँ आया? गाजीपुरमें प्रैक्टिस कर रहा था, इतने दिनोंसे अपनेको छिपाये हुए था, अचानक क्या हो गया जिससे वह वहाँकी प्रैक्टिस छोड़कर यहाँ चला आया? अब तो वह किसी-न-किसी तरह पता लगा ही लेगा कि अन्नदा बाबू काशीमें

हैं, और वहाँ पहुँच जायगा।' सोचते-सोचते अन्तमें उसने गाजीपुर जाना तय किया। वहाँसे पूरी जानकारी हासिल करके फिर काशी जायगा।

एक दिन अक्षय अगहनकी दोपहरीमें सूटकेस हाथमें लिये गाजीपुर पहुँच गया। पहले बाजारमें पूछताछ की कि बंगाली वकील रमेश बाबू कहाँ रहते हैं, किन्तु कुछ पता नहीं लगा। इधर-उधर दौड़-धूप करके और भी बहुत जगह अनुसन्धान किया, किन्तु रमेश नामके किसी वकीलको वहाँ कोई जानता ही नहीं। अन्तमें वह कचहरी पहुँचा। एक बंगाली वकील अदालतसे घर लौट रहा था, उससे पूछनेपर मालूम हुआ कि 'रमेश अब तक तो चक्रवर्ती-चचाके यहाँ था ; अब वहाँ है या नहीं, पता नहीं। उसकी स्त्रीका पता नहीं लग रहा है। शायद वह गङ्गामें डूबकर मर गई है।'

अक्षय पूछता हुआ चक्रवर्ती-चचाके घरकी तरफ चल दिया। रास्तेमें सोचने लगा, 'अब रमेशकी चाल कुछ-कुछ समझमें आ रही है। स्त्री मर गई है; अब वह हेमनलिनीके आगे बेधड़क यह साबित करनेकी कोशिश करेगा कि उसके कभी कोई स्त्री नहीं थी। और हेमकी अवस्था ऐसी है कि उसके लिए रमेशकी बातपर अविश्वास करना असम्भव है।' जो लोग धर्मके सम्बन्धमें जरूरतसे ज्यादा दिमाग लड़ाया करते हैं, भीतर-ही-भीतर वे कितने भयङ्कर होते हैं, इस बातपर विचार करता हुआ अक्षय अपने प्रति पहलेसे अधिक श्रद्धावान हो उठा। चचाके घर जाकर जब उसने रमेश और कमलाकी बात पूछी, तो चचासे रहा न गया, वे रोने लगे। बोले—"आप जब कि रमेशके मित्र हैं, तो मेरी बेटी कमलाको जरूर जानते होंगे। मैं दावेके साथ कह सकता हूँ कि कुछ ही दिनोंमें मेरा उससे इतना मोह हो गया था कि लड़कीसे क्या होगा! दो दिनके लिए इतना मोह-जाल फैलाकर लछमी-बेटी मेरी इस तरह मुझे छोड़कर चली जायगी, यह किसे मालूम था!"

अक्षय चेहरेपर उदासी लाता हुआ बोला—"ऐसा क्यों हुआ, मेरी कुछ समझमें नहीं आता! जरूर रमेशने उसके साथ बुरा बरताव किया होगा।"

चचा—"आप नाराज न होइयेगा। आपके रमेशको मैं अभी तक नहीं पहचान सका। इधर बाहरसे तो देखनेमें बहुत ही अच्छा मालूम होता था ;

भीतर क्या सोचता था, क्या करता था, भगवान जानें। नहीं तो, कमला जैसी स्त्री, ऐसी सती-लक्ष्मी, उसका अनादर भला कोई कैसे कर सकता है! मेरी लड़कीसे कमलाका बड़ा मेलजोल हो गया था, बड़ा-भारी प्रेम था दोनोंमें, फिर भी कभी उसने अपने पतिके विषयमें उससे एक भी शब्द नहीं कहा। लड़की मेरी समझ रही थी कि कमला मनमें सुखी नहीं है। हार्दिक वेदना उसे खाये जा रही है। मगर पूछनेपर वह भला क्यों बताने लगी! ऐसी स्त्री बहुत ज्यादा कष्ट पानेपर ही ऐसा काम कर सकती है, इतना तो आप समझते ही होंगे। सब बातें सोचता हूँ तो मेरी तो छाती फटने लगती है। मेरी फूटी तकदीर तो देखिये, मैं तब इलाहाबाद गया हुआ था! नहीं तो, बेटी मेरी हरगिज मुझे छोड़कर नहीं जा सकती थी।"

दूसरे दिन सवेरे चचाको साथ लेकर अक्षय बंगला देख आया; और गङ्गाके किनारे भी एक चक्कर लगा आया। घर वापस आकर बोला—"देखिये चचा साहब, कमलाने गङ्गामें डूबकर आत्महत्या कर ली है, इस विषयमें आप जितने निश्चिन्त हैं, मैं उतना नहीं हो सका।"

चचा—"आपका क्या खयाल है?"

अक्षय—"मेरा खयाल है, वे घर छोड़कर चली गई हैं। उनकी अच्छी तरह खोज होनी चाहिए।"

चचा अकस्मात उत्तेजित होकर बोल उठे—"आपने ठीक कहा है, कोई असम्भव बात नहीं।"

अक्षय—"पास ही काशी-तीर्थ है; वहाँ हमारे एक परम मित्र हैं। ऐसा भी हो सकता है कि कमला उन्हींके यहाँ चली गई हो।"

चचाको इससे बड़ी आशा बँध गई; बोले—"अच्छा! रमेशने तो कोई जिक्र नहीं किया कभी! मुझे मालूम होता तो क्या काशी जाकर बिना ढूँढ़े मानता मैं?"

अक्षय—"तो चलिये, एक बार हम दोनों काशी जाकर देखें। आपका तो सब जाना हुआ है, आप वहाँ अच्छी तरह खोज कर सकेंगे।"

चचा इस प्रस्तावपर उत्साहके साथ राजी हो गये। अक्षय जानता था कि

हेमनलिनी उसकी बातपर जल्दी विश्वास नहीं करेगी ; इसलिए साक्षी-सबूतके तौरपर चचाको साथ लेकर खुशी-खुशी वह काशी चल दिया।

४८

शहरके बाहर छावनीकी तरफ अन्नदा बाबूने एक बंगला किरायेपर ले लिया ; और वे उसीमें रहने लगे। काशी पहुँचते ही उन्हें मालूम हुआ कि नलिनाक्षकी मा क्षेमङ्करीको खाँसी-बुखार होते-होते निमोनिया हो गया है। ज्वरमें भी वे, ऐसे जाड़ेमें, रोज गङ्गा नहाती थीं ; और उसीसे उनकी अवस्था ऐसी सङ्कटापन्न हो उठी है।

कई दिनों तक हेमने उनकी जी-जानसे सेवा-टहल की, जिससे अब कुछ सेहत है। पर कमजोरी हदसे ज्यादा है। छुआछूत और पवित्रताका बहुत ज्यादा विचार होनेसे पथ्य-पानी सम्बन्धी हेमकी सेवा उनके कुछ काम नहीं आई। इसके पहले वे अपने हाथका बना हुआ ही खाती थीं, अब नलिनाक्ष स्वयं उनका पथ्य बनाता है। खाने पीनेकी सारी व्यवस्था खुद नलिनाक्षको अपने हाथसे करनी पड़ती है, क्षेमङ्करीको इसका बड़ा रंज है। एक दिन वे कहने लगीं, 'मैं तो चली जाती तो अच्छा था, मालूम होता है बाबा विश्वनाथने तुमलोगोंको कष्ट देनेके लिए ही मुझे बचा लिया है।'

क्षेमङ्करीने अपने सम्बन्धमें काफी कठोरता अवलम्बन कर रखी थी, किन्तु अपने चारों तरफ सफाई और सौन्दर्य-विन्यासपर उनकी खूब सतर्क दृष्टि थी। हेमनलिनीने यह बात नलिनाक्षसे सुनी थी। इसलिए घर-द्वार सजाने और चारों तरफ खूब सफाई रखनेमें वह कोई बात उठा नहीं रखती ; और खुद भी बहुत साफ-सुथरी रहती है। अन्नदा बाबू अपने बंगलेके बगीचेसे रोज फूल लाया करते हैं, और हेमनलिनी उन्हें क्षेमङ्करीकी रोगशय्याके पास नानाप्रकारसे सजा रखती है।

नलिनाक्षने अपनी माकी सेवाके लिए एक दासी रखनेकी कई बार कोशिश की है, पर दूसरोंके हाथकी सेवा लेनेमें वे किसी भी तरह राजी नहीं हुईं। पानी भरने और बासन माजनेके लिए एक नौकरानी थी जरूर, पर अपने काममें उन्हें किसी भी वेतनभोगीका हाथ लगाना सहन नहीं होता। जिस हरियाकी

माने बचपनमें उन्हें पाला था, उसके मरनेके बाद फिर उन्होंने बड़ी-से-बड़ी बीमारीमें भी किसीकी सेवा नहीं की।

सुन्दर बच्चे, सुन्दर चेहरे उन्हें बहुत प्यारे लगते हैं। दशाश्वमेध-घाटसे प्रातःस्नान करके जब घर लौटतीं, तो रास्तेमें अगर कोई सुन्दर लड़का या लड़की मिल जाती तो वे उसे अपने साथ घर ले आतीं। मुहल्लेमें जो दो-एक सुन्दर बच्चे हैं, उन्हें खिलौने देकर खिला-पिलाकर उन्होंने वश कर लिया था। वे जब तब उनके घर आकर ऊधम मचाया करते, और इससे उन्हें आनन्द ही होता। उनमें एक सनक-सी थी कि कहीं भी कोई सुन्दर चीज देख लेतीं तो उसे खरीदे बगैर न मानतीं। वे चीजें उनके कोई काम नहीं आतीं, पर किस चीजसे कौन खुश हो सकता है इस बातका उन्हें पूरा खयाल था। ऐसी चीजें वे किसीको उपहारमें दे या भेजकर अत्यन्त खुश होतीं। और कभी-कभी तो ऐसी चीजें डाकसे पाकर दूर रहनेवाले उनके आत्मीय या परिचित जन भी दंग रह जाते। उनके एक आबनूसका सन्दूक था, जिसमें इस तरहकी अनावश्यक सुन्दर शौककी चीजें और रेशमी कपड़े वगैरह भरे पड़े थे। उन्होंने मन-ही-मन तय कर रखा था कि नलिनकी बहू आयेगी तब ये सब चीजें उसीको दे देंगी। नलिनके लिए एक परम सुन्दरी बालिका वधूकी उन्होंने मन-ही-मन कल्पना कर रखी थी; और सोचा करती थीं कि उसने आकर उनके घरमें उजाला कर रखा है, उसे वे अपने हाथसे सजा रही हैं, इत्यादि। किन्तु खुद तपस्विनी जैसी थीं। स्नान-ध्यान-पूजा-पाठमें ही उनका दिन बीत जाता था। दिनमें सिर्फ एक बार खातीं, सो भी फल-दूध-मिठाई, बस। किन्तु, नियम-संयममें नलिनाक्षकी इतनी निष्ठा उन्हें अच्छी नहीं लगती। कहतीं, "पुरुषोंको इतना आचार-विचार नहीं करना चाहिए।" असलमें, पुरुषोंको वे बड़े बालकोंके समान समझती हैं। उनमें खाने-पीने और चाल-चलनके विषयमें कर्तव्य-ज्ञान न भी रहे तो उनके खयालसे वह क्षमाके ही योग्य है; उनका कहना है कि 'मरदोंसे इतने कड़े नियम कैसे पल सकते हैं! हां, धर्म सबको पालना चाहिए, पर आचार-विचार पुरुषोंके लिए नहीं, स्त्रियोंके लिए ही बनाये गये हैं।' नलिनाक्ष अगर अन्यान्य साधारण पुरुषोंकी तरह कुछ अविवेचक और स्वेच्छाचारी होता,

और सावधानीमें, सिर्फ उनको पूजाकी कोठरीमें न घुसता और असमयमें उन्हें न छूकर जरा बचकर चलता, तो इतने ही से वे बहुत खुश रहतीं।

क्षेमङ्करी बीमारीसे उठीं तो देखा कि हेमनलिनी नलिनाक्षके उपदेशानुसार नाना प्रकारके नियम पालन करने लगी है; और तो क्या, वृद्ध अन्नदा बाबू भी नलिनाक्षकी सब बातें प्रवीण गुरुकी आज्ञाकी तरह विशेष श्रद्धा और भक्तिके साथ सुनने लगे हैं। इससे क्षेमङ्करीको बड़ा आश्चर्य और कुतूहल मालूम होने लगा। एक दिन उन्होंने हेमको बुलाकर कहा—"बेटी, मालूम होता है तुम दोनों मिलकर नलिनाक्षको और भी सनकपर चढ़ा दोगे। उसकी पागलपनकी बातें तुम क्यों सुनती हो? तुम्हारी अभी खाने-पीने पहनने-ओढ़ने हँसने-खेलनेकी उमर है; सो तो नहीं, अभीसे साधना करना शुरू कर दिया! तुम कहोगी कि फिर तुम क्यों इतना किया करती हो, सो, उसमें एक बात है। मेरे मा-बाप बड़े धर्मात्मा थे। बचपनसे ही हम सब भाई-बहन उन्हीं संस्कारोंमें पले हैं। इसे अगर हम छोड़ दें, तो फिर हमारे लिए दूसरा कोई सहारा नहीं रह जाता। लेकिन, तुम तो ऐसेमें नहीं पली-पनपीं; तुम्हारी शिक्षा-दीक्षा तो मैं जानती हूँ। तुम जो कुछ कर रही हो, सो तो जबरदस्ती है! इससे क्या लाभ बेटी! मेरा तो कहना है, जिसे जो मिला हो उसीको वह अच्छी तरह पाले। नहीं बेटी, इन सब फालतू बातोंको छोड़ो। भला तुम जैसी लड़की निरामिष क्यों खाने लगीं, योग-तप तुम्हारे लिए थोड़े ही है! और नलिन ऐसा कहाँका गुरु बन गया है जो उसकी उसकी बातें सुना करती हो! धर्मध्यानका वह क्या जाने! वो तो कल तक जो जीमें आता सो करता फिरता था, शास्त्रकी बात सुनते ही उछलने लगता था। मुझे खुश करनेके लिए उसने ये सब बातें शुरू की थीं, सो अब देखती हूँ कि पूरा संन्यासी ही बन जायगा! बार-बार मैं उससे यही कहा करती हूँ कि बचपनसे तू जैसा करता आया है, अपने उसी विश्वासपर चल, उसीसे मैं खुश रहूँगी।' सुनकर हँस देता है, यही उसका स्वभाव है, सब बातें चुप-चाप सुन लेता है। कड़ीसे कड़ी बात कह देती हूँ, तो भी जवाब नहीं देता।"

शामके पाँच बजे होंगे, क्षेमङ्करी हेमनलिनीके बाल बाँधते हुए ये बातें कह

रही थीं। क्षेमङ्करीको हेमका जूड़ा बाँधना पसन्द न आता था। वे कहतीं, 'तुम शायद समझती होगी बेटो, कि मैं बिलकुल पुराने जमानेकी ही हूँ, आजकलकी फैशनका कुछ समझती ही नहीं! लेकिन, मैं जितने तरहके जूड़े बाँध सकती हूँ, उतने तरहके तुम्हें भी न आते होंगे। मुझे, एक बड़ी अच्छी मेम मिल गई थी। वह मुझे सिलाईका काम सिखाने आती थी। उससे मैंने बहुत तरहके जूड़े बाँधना सीख लिया था। उसके चले जानेपर मुझे नहाना पड़ता था। क्या बताऊँ बेटी, संस्कार ठहरा, उसकी भलाई-बुराई कुछ नहीं मालूम, फिर भी मन नहीं मानता। इसमें घृणाका भाव हो सो बात नहीं। आदतकी बात है। नलिनके बाप हिन्दूधर्मको छोड़कर जब दूसरा मत मानने लगे, तो मुझे सहन न होनेपर भी सब सहना पड़ा। मैं कुछ नहीं कहती थी, सिर्फ इतना ही कहती थी कि जिसे जो अच्छा लगे सो करे, मैं मूरख हूँ और स्त्री हूँ, अब तक जैसा करती आई हूँ उसे मैं नहीं छोड़ सकती।" और कहते-कहते क्षेमङ्करीकी आँखें भर आईं।

इस तरह, हेमका जूड़ा खोलकर उसके लम्बे-लम्बे बालोंको नित्य नये ढंगसे बाँधनेमें क्षेमङ्करीको बड़ा आनन्द मिलता। कभी-कभी वे अपने आबनूसके सन्दूकमेंसे बढ़िया रेशमी साड़ी निकालकर हेमको पहना देतीं; और खूब खुश होतीं। हेमने उनसे बहुत तरहका सुईका काम भी सीख लिया। हेम उन्हें कभी-कभी मासिकपत्रोंमेंसे कहानी और निबन्ध पढ़कर सुनाती, तो वे उनपर ऐसी टीका-टिप्पणी करतीं कि सुनकर हेमको बड़ा ताज्जुब होता। अंगरेजी बिना पढ़े भी इस तरहकी चरचा की जा सकती है, हेमको इस बातकी धारणा ही नहीं थी। उनकी बातचीत, संस्कार, धर्माचरण, व्यवहार, पसन्दगी आदिको देखते हुए हेमको वे बड़ी आश्चर्यमयी मालूम होने लगीं। उसने जैसा सोचा था, ये तो उससे बिलकुल ही भिन्न हैं!

४९

क्षेमङ्करी फिर बुखारमें पड़ रहीं। पर अबकी बार बीमारी ज्यादा बढ़ी नहीं; जल्दी ही आराम हो गया। सवेरे नलिनाक्षने उनके पाँव छूकर प्रणाम करते हुए कहा—"मा, अब तुम्हें कुछ दिन तक रोगीके नियमानुसार रहना

पड़ेगा। कमजोर शरीर ज्यादा कठोरता सह नहीं सकता।" क्षेमङ्करीने कहा—"मैं रोगीके नियमानुसार चलती रहूं और तू योगीके नियमानुसार चलता रह, क्यों? देख नलिन, अब मैं तेरी यह-सब वाहियात बातें नहीं सुननेकी! अब मैं तुझे आज्ञा देती हूँ कि तुझे ब्याह करना ही पड़ेगा।"

नलिन चुप रहा, कुछ बोला नहीं। क्षेमङ्करी कहने लगीं—"देखो बेटा, मेरा शरीर अब नया नहीं बननेका, अब तो बिगड़ता ही जायगा। मैं तुम्हें सद्‌गृहस्थ देखकर सुखसे मरना चाहती हूँ। पहले मैं सोचा करती थी कि छोटी-सी बहू लाऊँगी, उसे सिखा-पढ़ाकर अपने मनकी-सी बना लूँगी, और बहूको खूब पहना-उढ़ाकर सुखसे जीवन बिताऊँगी। पर अबकी जो बीमार पड़ी, उसमें भगवानने मेरी आँखें खोल दीं। मेरी आयुका क्या ठीक! आज हूं, कल नहीं! एक छोटी-सी लड़कीको तेरे माथे मढ़ जाऊँ तो उससे तुझे कुछ आराम तो मिलेगा नहीं, उलटी परेशानी होगी। इससे अच्छा है कि तू अपने मतानुसार बड़ी लड़कीसे ब्याह करके सुखसे रह। बीमारीके समय पड़ी-पड़ी मैं यही-सब बातें सोचा करती थी, और सोचते-सोचते रातको नींद नहीं आती थी। मैंने खूब अच्छी तरह समझ लिया है कि मेरा आखिरी कर्तव्य अभी बाकी है, उसे पूरा करनेके लिए मुझे जिन्दा रहना पड़ेगा, नहीं तो मुझे शान्ति नहीं मिलेगी।"

नलिनाक्षने कहा—"ऐसी लड़की मिलेगी कहाँ जो सब तरहसे तुम्हारे मनकी-सी हो?"

क्षेमङ्करीने कहा—"अच्छा, सो सब मैं देख लूँगी, तुझे फिकर करनेकी जरूरत नहीं।"

आज तक क्षेमङ्करी अन्नदा बाबूके सामने नहीं निकली थीं। आज, शामके कुछ पहले रोजकी तरह अन्नदा बाबू घूमते हुए जब नलिनाक्षके घर आये, तो क्षेमङ्करीने उन्हें भीतर बुलवा भेजा। और, उनसे कहा—"आपकी लड़की बड़ी सुशील है, उससे मुझे बड़ा स्नेह हो गया है। मेरे नलिनको तो आप जानते ही हैं, उस लड़केमें कोई दोष नहीं है यह भी आपको मालूम है। डाक्टरीमें भी उसका अच्छा नाम है। अपनी लड़कीके लिए ऐसा सम्बन्ध आप कहाँ ढूँढ़ते फिरेंगे?"

अन्नदा बाबू व्यस्त होकर बोल उठे—"आप कहती क्या हैं! मुझे तो इस तरहकी आशा करनेकी भी कभी हिम्मत नहीं हुई। नलिनाक्षके साथ मेरी लड़कीका अगर ब्याह हो, तो इससे बढ़कर मेरा सौभाग्य और क्या हो सकता है! लेकिन वे क्या—"

क्षेमङ्करीने कहा—"नलिनको इसमें कोई आपत्ति नहीं होगी। वह आजकलके लड़कों जैसा नहीं है, वह मेरी बात मानता है। और, इसमें जोर जबरदस्तीकी कोई बात नहीं। आपकी लड़की उसे क्यों नहीं पसन्द आयेगी? पर, इस कामको मैं जल्दी ही कर डालना चाहती हूँ। मेरी तबीयत ठीक नहीं रहती; कब क्या हो जाय, कोई ठीक नहीं।"

उस रातको अन्नदा बाबू अत्यन्त उत्फुल्ल होकर घर लौटे। उन्होंने हेमको बुलाकर कहा—"बेटी, मेरी काफी उमर हो चुकी, और इधर मेरा स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहता। तुम्हारी मुझे बहुत चिन्ता है। तुम्हें किसी योग्य वरके हाथ सौंपकर मैं निश्चिन्त होना चाहता हूँ। बेटी, मुझसे शरमाना नहीं। तुम्हारी मा नहीं हैं, सारा भार मेरे ही ऊपर है।"

हेमनलिनी उत्कण्ठित होकर पिताके मुँहकी तरफ देखती रही। अन्नदा बाबू कहने लगे—"बेटी, तुम्हारे लिए ऐसा एक सम्बन्ध आया है जिसकी खुशी मुझसे रोके नहीं रुकती। मुझे डर लगता है कि कहीं कोई विघ्न न आ पड़े। आज नलिनाक्षकी माने मुझे बुलाकर कहा है कि वे अपने पुत्रके साथ तुम्हारा सम्बन्ध करनेको तैयार हैं।"

मारे शरमके हेमका चेहरा सुर्ख हो उठा, अत्यन्त सङ्कोचके साथ उसने कहा—"बापूजी, तुम क्या कह रहे हो! नहीं नहीं, ऐसा भी कहीं होता है!"

नलिनाक्षके साथ उसका ब्याह हो सकता है इस बातकी हेमने कभी कल्पना भी नहीं की थी। अचानक पिताके मुँहसे इस प्रस्तावको सुनकर सङ्कोचसे वह अस्थिर हो उठी। अन्नदा बाबूने पूछा—"क्यों नहीं हो सकता, बेटी?"

हेमने कहा—"नलिनाक्ष बाबूसे! ऐसा भी कहीं होता है!" इस तरहके उत्तरको ठीक युक्तिसङ्गत नहीं कहा जा सकता; किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि यह युक्तिकी अपेक्षा कई गुना प्रबल है।

हेमसे फिर वहाँ बैठा नहीं गया, वह उठकर बरण्डेमें चली गई ।

अन्नदा बाबू अत्यन्त विमष हो उठे । उन्होंने इस तरहकी वाधाकी कभी कल्पना भी नहीं की थी । बल्कि उनकी तो धारणा थी कि नलिनाक्षके साथ ब्याहका प्रस्ताव सुनकर हेमको खुशी ही होगी । हतबुद्धि वृद्ध पिता अत्यन्त व्यथित होकर बत्तीकी तरफ देखते हुए स्त्री-प्रकृतिके कल्पनातीत रहस्य और हेमकी माके अभावके विषयमें विचार करने लगे ।

हेम बहुत देर तक बरण्डेके अँधेरेमें बैठी रही । उसके बाद जब उसने भीतर कमरेकी तरफ देखा, तो उसकी नजर पड़ी अपने पिताके अत्यन्त हताश चेहरेपर । इससे उसके हृदयको बड़ी गहरी चोट पहुँची । चटसे उठकर वह पिताकी कुरसीके पीछे आ खड़ी हुई, और उनके बालोंमें उंगलियाँ फेरती हुई बोली—"चलो बापूजी, खाने चलो, फिर सब ठण्डा हो जायगा ।"

अन्नदा बाबू यन्त्र-चालितकी तरह उठके चल दिये ; और खाने बैठ गये । किन्तु अच्छी तरह खा नहीं सके । कुछ दिनसे वे समझ रहे थे कि हेमनलिनीके सम्बन्धमें अब सब बाधाएँ दूर हो चुकी हैं । और इससे वे आशान्वित हो उठे थे ; किन्तु हेमकी तरफसे ही इतनी बड़ी बाधा देखकर उनका कलेजा बैठ गया । फिर वे व्याकुल दीर्घनिश्वास छोड़कर मन-ही-मन सोचने लगे, 'तो हेम अभी तक रमेशको भूल नहीं सकी है !'

और-और दिन भोजन करनेके बाद ही अन्नदा बाबू सोने चले जाया करते थे, किन्तु आज वे बरण्डेमें आरामकुरसीपर बैठ गये, और बगीचेके सामनेवाली छावनीकी सुनसान सड़ककी तरफ देखते हुए हेमके विषयमें सोचने लगे । थोड़ी देर बाद हेमनलिनी हँसती हुई स्निग्धस्वरमें बोली—"बापूजी, यहाँ बड़ी ठण्ड है, चलो, भीतर चलके सो जाओ अब ।"

अन्नदा—"तुम सोने जाओ बेटी, मैं थोड़ी देरमें आऊँगा ।"

हेम चुपचाप खड़ी रही । थोड़ी देर बाद फिर बोली—"बापूजी, तुम्हें ठण्ड लग रही है । न-हो-तो, बैठकमें हो चलो ।"

अन्नदा बाबू उठके सोने चले गये ।

हेमनलिनी, इस डरसे कि कहीं उसके कर्तव्यमें त्रुटि न हो, रमेशकी बात

सोच-सोचकर अपनेको पीड़ित नहीं करती। इसके लिए उसे अपने खिलाफ बहुत जूझना पड़ा है। किन्तु बाहरसे जब खिंचाव आता है तो घावको पीड़ा जाग उठती है। हेमसे अपने भविष्य-जीवनके विषयमें आज तक कुछ भी तय करते नहीं बन रहा है, और इसीलिए वह एक मजबूत सहारा ढूँढ़ रही थी। इतमेंमें नलिनाक्ष मिल गया ; और उसे वह गुरु मानकर उसके उपदेश-अनुसार अपनेको चलानेके लिए तैयार हो गई थी। किन्तु जब विवाहका प्रस्ताव उसके सामने आया और उसने उसे उसके हृदयके गभीरतम आश्रयसूत्रसे खींचना चाहा तब उसकी समझमें आया कि रमेशका बन्धन उसके लिए कितना कठिन है ! और उससे कोई उसे छुड़ाने आता है तो उसका मन व्याकुल होकर उस बन्धनको दूने बलसे जकड़े रहनेकी कोशिश करता है।

५०

उधर क्षेमङ्करीने नलिनाक्षको बुलाकर कहा—"मैंने तेरे लिए लड़की ठीक कर ली है।"

नलिनाक्षने हँसते हुए कहा—"बिलकुल ठीक ही कर ली ?"

क्षेमङ्करी—"नहीं तो क्या ! मैं क्या हमेशा जिन्दा रहूँगी ? मेरी बात सुन, मैंने हेमनलिनीको पसन्द किया है। ऐसी लड़की मिलना मुश्किल है। रंग उतना साफ नहीं है, लेकिन—"

नलिनाक्ष—"नहीं नहीं, मा, मैं साफ रंगकी बात नहीं सोच रहा ! पर हेमनलिनीसे कैसे हो सकता है ! ऐसा भी कहीं होता है !"

क्षेमङ्करी—"क्यों, क्या हो गया ! इसमें अड़चनकी क्या बात है ?"

नलिनाक्षके लिए इसका जवाब देना मुश्किल है। किन्तु, हेमनलिनी ! अब तक जिसे वह गुरुकी तरह बिना किसी सङ्कोचके उपदेश देता आया है, अकस्मात उसके साथ विवाहके प्रस्तावसे नलिनाक्षको अत्यन्त लज्जा होने लगी। नलिनाक्षको चुप देखकर क्षेमङ्करीने कहा—"अब मैं तेरी कोई भी आपत्ति नहीं सुननेकी। मेरे लिए तू इस उमरमें सब-कुछ छोड़-छाड़कर काशीवासी होकर तपस्या करता रहेगा, यह मुझसे हरगिज न सहा जायगा। अबकी बार जो शुभ दिन आयेगा वह खाली नहीं जायगा, मैं कहे देती हूँ !"

नलिनाक्ष कुछ देर तक चुप रहा. फिर बोला—"तो एक बात तुमसे कहता हूँ, मा। पहलेसे कहे देता हूँ, तुम चञ्चल न होना। उस घटनाको आज नौ-दस महीने बीत चुके, अब उसमें विचलित होनेकी कोई बात नहीं। पर तुम्हारा जैसा स्वभाव है, कोई अमङ्गल दूर हो जानेपर भी उसका डर तुम्हें बना ही रहता है। इसीलिए बहुत दिनोंसे कहूँ-कहूँ करते-करते भी मैं तुमसे नहीं कह सका। मेरे उस ग्रहका शान्तिके लिए तुम जितना चाहो स्वस्त्ययन करा सकती हो, पर बेमतलब मनको पीड़ित मत करना।"

क्षेमङ्करी उद्विग्न हो उठीं, बोलीं—"क्या मालूम बेटा, तू क्या कहेगा! पर तेरी भूमिका सुनकर तो मेरा मन बहुत उद्विग्न हो उठा है। जब तक मैं मौजूद हूँ, तब तक तो अपनेको तुझे इतना ढककर नहीं रखना चाहिए। मैं तो दूर ही रहना चाहती हूँ। पर, बात यह है कि बुरी चीजको ढूँढ़ना नहीं पड़ता, वह अपने आप ही सबके ऊपर आकर बैठ जाती है। खैर, बुरी हो, भली हो, क्या बात है सो बता, सुन लूँ?"

नलिनाक्ष कहने लगा—"तुम्हें मालूम है मा, पिछले साल माह-फाल्गुनमें मैं रङ्गपुर गया था, घरका इन्तजाम करने। घरकी सब चीज-वस्त बेचकर और बगीचा मकान वगैरह सब किरायेपर उठाकर मैं वापस आने लगा, तो रास्तेमें क्या सनक सूझी कि नावमें चला जाय तो अच्छा रहे, सैरकी सैर और यात्राकी यात्रा! दो दिनका रास्ता तय करके तीसरे दिन एक जगह नाव ठहराकर नहा रहा था कि इतनेमें अचानक देखा कि अपना भूपेन्द्र बन्दूक हाथमें लिये हुए चला आ रहा है! मुझे देखते ही वह उछल पड़ा, बोला, 'शिकारके लिए आया था, सो खूब ही बड़ा शिकार हाथ लगा भई! अच्छी साइत देखकर चला था!' वहीं कहीं वह डिप्टी-मजिस्ट्रेटी करता था, सो दूरपर निकला था। बहुत दिन बाद भेंट हुई, सो उसने छोड़ा ही नहीं, साथ-साथ घुमाने ले चला। धोबीपोखर नामके एक गाँवमें तम्बू डाला। शामके वक्त गाँवमें घूमने निकले। खेतोंके पास दीवारसे घिरा हुआ एक कच्चा मकान था, उसमें पहुँचे। घरके मालिकने हमारे बैठनेके लिए दो मोढ़े डाल दिये। देखा कि एक पण्डितजी चौकीपर बैठे हुए लड़कोंको पढ़ा रहे हैं। घरके मालिकका नाम था तारिणी चट्टोपाध्याय। भूपेनसे

उन्होंने मेरा पूरा परिचय ले लिया। लौटते समय रास्तेमें भूपेनने कहा, 'भई, तुम्हारी तकदीर तो बड़ी जोरदार निकली ; आतेके साथ ही सगाई तैयार मिली !' मैंने कहा, 'सो कैसे ?' भूपेनने कहा, 'जिससे मैं बात कर रहा था, उसका नाम है तारिणी चटर्जी, महाजनी करता है। ऐसा कंजूस लाखोंमें एक मिलेगा। अपने मकानमें स्कूल कर रखा है, और इसके लिए जो भी कोई मजिस्ट्रेट आता है उसे अपनी लोकहितैषिताका खूब अडम्बर दिखाता है। पर, असल बात यह है कि स्कूलके पण्डितको सिर्फ अपने घरमें खिला देता है और उससे रातके दस बजे तक ब्याजका हिसाब करता रहता है। स्कूलका खर्चा सरकारी सहायता और लड़कोंकी फीससे चल जाता है। उसको एक बहन विधवा हो जानेके बाद और-कहीं आश्रय न पाए उसीके घर रहने लगी थी। तब वह गर्भवती थी। यहाँ आकर उसके एक लड़की हुई, और प्रसूतिमें ही वह बिना चिकित्साके ही मर गई। और-एक विधवा बहन थी, जो घरका सब काम-धन्धा करके नौकरानीका खर्च बचाती थी। उसने उस लड़कीको पाल-पनासकर बड़ा किया। लड़की कुछ बड़ी हुई तो उस विधवाकी मृत्यु हो गई। उसके बाद, मामा मामीकी नौकरी बजाती हुई लड़की अब ब्याह-लायक हो गई है। किन्तु ऐसी अनाथ लड़कीके लिए पात्र कहाँसे मिले ? खासकर उसके मा-बापको यहाँका कोई जानता नहीं ; और पितृहीन अवस्थामें उसका जन्म हुआ है, इस विषयमें यहाँवालोंमें काफी चरचा है। तारिणी चटर्जीके पास रुपया बहुत है इस बातको सभी जानते हैं, इसलिए लोग चाहते हैं कि इस लड़कीके सम्बन्धमें चरचा चलाकर ऐसी स्थिति पैदा कर दें, ताकि तारिणीको अच्छी तरह दुहा जा सके। तारिणी तो चार सालसे लड़कीकी उमर दस सालकी बता रहा है, लिहाजा हिसाबसे उमर चौदह सालकी होनी चाहिए। लड़कीका नाम है कमला, और वास्तवमें है भी वह लक्ष्मीकी-सी प्रतिमा। ऐसी सुन्दर लड़की बहुत कम देखनेमें आती है। इस गाँवमें कोई ब्राह्मण युवक आते ही तारिणी उसके पीछे पड़ जाता है। किन्तु मुश्किल यह है कि कोई राजी भी होता है तो गाँवके लोग उसे भड़का देते हैं। इसलिए, अब तुम्हारी पारी है।' तुम तो जानती हो मा, तुम्हें सुखी देखनेके लिए भीतरसे मैं कितना व्याकुल रहता था ;

इसलिए मैंने बिना विचारे ही चटसे कह दिया, 'मैं तैयार हूँ।' भूपेन तो सुनके दंग रह गया। पर मैंने तो पहलेसे ही तय कर रखा था कि हिन्दूके घरकी कोई ऐसी लड़की ब्याहकर लाऊँगा जिसे देखकर तुम दंग रह जाओ। भूपेनने कहा, 'मजाक कर रहे हो क्या?' मैंने कहा, 'मजाक नहीं, मैंने पक्का निश्चय कर लिया है।' उसने कहा, 'बिलकुल पक्का?' मैंने कहा, 'हाँ हाँ, बिलकुल पक्का!' उसी रातको तारिणी चटर्जी हमारे तम्बूमें आ धमका; और जनेऊ हाथमें लेकर हाथ जोड़कर बोला, 'मेरा उद्धार करना ही पड़ेगा। लड़कीको आपलोग देख आइये, पसन्द न हो तो कोई बात नहीं। पर शत्रुपक्षकी बात हरगिज न सुनियेगा!' मैंने कहा, 'देखनेकी जरूरत नहीं, मुहूरत सुधवाइये।' तारिणीका शायद मुहूरत देखा हुआ था, बोला, 'परसों बहुत अच्छा दिन है, परसों ही कर डालिये।' वह समझता था कि जल्दीमें बहुत थोड़े खर्चमें काम बन जायगा, इसलिए और-भी ज्यादा आग्रह करने लगा। आखिर ब्याह हो गया।"

क्षेमङ्करी चौंक उठीं, बोलीं—"ब्याह हो गया! ऐं! तू कहता क्या है!"

नलिनाक्ष—"हाँ, हो गया। और उसी दिन मैं बहूके साथ नावपर सवार होकर वहाँसे चल दिया। रास्तेमें उसी दिन शामको ऐसा जोरका तूफान आया कि नाव उलट गई। मेरी कुछ समझ ही में न आया कि क्या हुआ!"

क्षेमङ्करीके रोंगटे खड़े गये, उनके मुँहसे निकल पड़ा—"हे भगवान!"

नलिनाक्ष कहता गया—"क्षण-भर बाद जब होश आया तो देखा कि मैं गङ्गामें तैर रहा हूँ! लेकिन पासमें कहीं नाव नहीं दिखाई दी। थानेमें खबर दी, बहुत खोज की, पर कुछ भी पता नहीं लगा।"

क्षेमङ्करीका मुँह सूख गया, बोली—"खैर जाने दे, जो हुआ सो हो गया, अब ये सब बातें मुझे मत सुना। मेरा जी घबड़ाने लगता है।"

नलिनाक्ष—"ये सब बातें तुम्हें मैं कभी भी नहीं कहता; पर जब तुम ब्याहके लिए जिद करने लगीं तब कहनी पड़ीं।"

क्षेमङ्करी—"एक बार कोई दुर्घटना हो गई, तो क्या अब तू ब्याह ही नहीं करेगा?"

नलिनाक्ष—"सो बात नहीं मा, पर, अगर वह अभी तक जिन्दा हो?"

क्षेमङ्करी—"पागल कहींका ! जिन्दा होती तो क्या अभी तक तुझे खबर नहीं देती ?"

नलिनाक्ष—"मुझे क्या वह पहचानती है ! मुझसे ज्यादा अपरिचित उसके लिए और-कोई नहीं होगा। उसने मेरा चेहरा भी नहीं देखा। काशी आकर तारिणी चटर्जीको मैंने अपना पता लिख भेजा था, चिट्ठी भी दी थी। उन्होंने लिखा था, कुछ पता नहीं चलता कि वह जिन्दा है या मर गई।"

क्षेमङ्करी—"तो फिर क्या बात है ?"

नलिनाक्ष—"मैंने मन-ही-मन तय किया है कि साल-भर तक देखूंगा, उसके बाद समझ लूंगा कि वह मर गई।"

क्षेमङ्करी—"तेरा तो सब विषयोंमें अपना सिद्धान्त न्यारा ही चलता है ! इसमें एक साल तक बाट देखनेकी क्या बात है ?"

नलिनाक्ष—"साल पूरा होनेमें अब देर क्या है, मा ! अभी अगहन है, पूसमें ब्याह होता नहीं, उसके बाद माघ बीता नहीं कि फागुन आ गया।"

क्षेमङ्करी—"अच्छी बात है, लेकिन लड़की यही तय रही ! हेमनलिनीके बापको मैं बचन दे चुकी हूँ।"

नलिनाक्ष—"मा, आदमी तो सिर्फ वचन ही दे सकता है ; पर उसे सफल करना जिसके हाथ है उसीपर भरोसा करना ठीक है।"

क्षेमङ्करी—"कुछ भी हो बेटा, तेरी इन बातोंको सुनकर अभी तक मेरा कलेजा धड़क रहा है।"

नलिनाक्ष—"सो तो मैं जानता हूँ मा, तुम्हारे मनको सुस्थिर होनेमें कितने ही दिन लग जायेंगे। इसीलिए मैं तुमसे ऐसी बातें कहता नहीं।"

क्षेमङ्करी—"अच्छा ही करते हो बेटा। आजकल मेरा जाने-कैसा जी हो गया है कि कोई भी ऐसी-वैसी बात सुनती हूँ तो डरसे छाती धड़कने लगती है। कहींसे कोई चिट्ठी आती है तो खोलनेमें डर लगता है, कहीं कोई बुरी खबर न आई हो ! और मैंने तो सबसे कह ही दिया है, मुझे कोई खबर सुनानेकी जरूरत नहीं। मैंने समझ लिया है कि अपनी घर-गृहस्थीसे मैं मरकर छुट्टी पा चुकी हूँ, वहांकी चोट सहनेमें अब फायदा ही क्या ?"

५१

कमला जब गङ्गाके किनारे पहुँची, जाड़ोंका सूरज तब अपनी मन्द-किरणोंके साथ पश्चिम-आकाशमें डूब चुका था। उसने उस आसन्न-अन्धकारके सामने खड़े होकर अस्तगामी सूर्यको प्रणाम किया। उसके बाद माथेपर गङ्गा-जलके छींटे डालकर कुछ दूर तक पानीमें घुसी; और अंजुलिमें गङ्गाका पानी भरकर फूलके साथ उसे गङ्गाके लिए ही अर्पण कर दिया। फिर समस्त गुरुजनोंके लिए प्रणाम किया। प्रणाम करके सिर उठाते ही और-एक प्रणम्य व्यक्तिकी बात उसे याद आ गई। किसी दिन मुँह उठाकर उसने कभी उनके मुँहकी तरफ नहीं देखा; एक दिन जब रातको वह उनके पास बैठी थी तब उनके पाँवोंपर भी उसकी दृष्टि नहीं पड़ी थी। सुहाग-रातमें और-और लड़कियोंसे जब उन्होंने दो-चार बातें कही थीं, उन्हें भी वह अपने घूँघटमेंसे, अपनी लज्जामेंसे, स्पष्ट नहीं सुन पाई थी। उनकी उस कण्ठध्वनिको स्मरणमें लानेके लिए गङ्गाके किनारे खड़े-खड़े आज उसने एकान्तमनसे बहुत देर तक चेष्टा की, किन्तु किसी भी तरह न ला सकी।

बहुत रात बीते ब्याहका लग्न था। बिवाह-मण्डपसे आनेके बाद अत्यन्त श्रान्त शरीर लेकर कब वह सो गई, उसे कुछ भी खयाल नहीं। सबेरे उठकर उसने देखा कि पड़ोसीके घरकी एक बहूने उसे धक्का देकर जगा दिया, और वह खिलखिलाकर हँस रही है; पलंगपर और कोई नहीं है। जीवनके इन अन्तिम क्षणोंमें अपने जीवनेश्वरकी याद करने लायक पूंजी भी उसके पास नहीं है। चारों तरफ अँधेरा है, न कोई मूर्ति है, न कोई बात है, कोई चिह्न तक नहीं! जिस लाल रेशमी साड़ीका उनकी चादरसे गठबन्धन हुआ था (तारिणीकी दी-हुई सस्ती साड़ीकी कीमत तो वह जानती न थी), उसे भी उसने जतनसे नहीं रखा। रमेशने हेमनलिनीको जो चिट्ठी लिखी थी वह उसके आँचलमें बँधी थी। उस चिट्ठीको खोलकर गोधूलिके प्रकाशमें रेतीपर बैठकर उसका एक अंश उसने पढ़ लिया, जिसमें उसके पतिका परिचय लिखा था। ज्यादा बात नहीं, सिर्फ उनका नाम है नलिनाक्ष चट्टोपाध्याय, वे रंगपुरमें डाक्टरी करते थे और अब वहाँ उनका कुछ पता नहीं चलता, बस, इतनी बात लिखी थी। चिट्ठीका बाकीका

अंश उसे बहुत ढूँढ़नेपर भी कहीं नहीं मिला। 'नलिनाक्ष' नाम उसके मनमें सुधा बरसाने लगा, इस नामने मानो उसकी रीती छातीको बिलकुल भर दिया, इस नामने मानो एक वस्तुहीन देह बनकर चारों तरफसे उसको घेर लिया। उसकी आँखोंसे आँसुओंकी धारा बहने लगी, और उसने उसके हृदयको अभिषिक्त कर दिया, उसका तन-मन स्निग्ध हो उठा; मालूम हुआ मानो उसका असह्य दुःखदाह शान्त हो गया। कमलाका अन्तःकरण कहने लगा, 'यह तो शून्यता नहीं है, यह तो अन्धकार नहीं है! मैं तो देख रही हूँ, वे हैं, वे मेरे ही हैं।' तब फिर वह सम्पूर्ण प्राण-मनसे बोल उठी, 'मैं अगर सती होऊं, तो इसी जीवनमें मैं उनके चरणोंकी धूल पाऊँगी; विधाता मुझे हरगिज बाधा नहीं दे सकते। मैं जब मौजूद हूँ तो वे हरगिज नहीं जा सकते। उन्हींकी सेवा करनेके लिए भगवानने मुझे बचा लिया है।'

इतना कहकर उसने अपना रूमालमें बँधा चाभीका गुच्छा वहीं डाल दिया, और फिर तुरत ही उसे खयाल आया कि रमेशकी दी-हुई एक सेफ्टिपिन उसकी साड़ीमें बिंधी हुई है। जल्दीसे उसे खोलकर उसने पानीमें फेंक दिया। उसके बाद पश्चिमकी तरफ मुँह करके उसने चलना शुरू कर दिया। कहाँ जायगी, क्या करेगी, ये सब बातें उसके मनमें जरा भी स्पष्ट नहीं थीं। उसने सिर्फ इतना ही समझ लिया था कि उसे चलना ही होगा, यहाँ उसे एक क्षण भी खड़ा नहीं रहना चाहिए, यह उसकी जगह ही नहीं।

जाड़ेके दिन थे। दिनान्तका अन्तिम प्रकाश देखते-देखते बिला गया। अँधेरेमें सफेद बालू-तट अस्पष्ट-सा चमकने लगा। सहसा एक जगह न-जाने किसने मानो विचित्र रचनावलीके बीचमेंसे सृष्टिका थोड़ा-सा चित्रलेख बिलकुल पोंछ दिया। कृष्णपक्षकी अन्धकार-रात्रि मानो अपने समस्त तारोंको लेकर उस जनशून्य नदी-तटपर अत्यन्त धीरे-धीरे अपना निश्वास छोड़ रही है। कमलाको अपने सामने गृहहीन अनन्त अन्धकारके सिवा और कुछ भी दिखाई नहीं दिया। किन्तु वह समझ गई कि उसे चलना ही होगा, कहीं पहुंचेगी या नहीं, इतना सोचनेका उसे अवकाश ही नहीं है।

उसने तय किया कि वह बराबर नदीके किनारे-किनारे चली चलेगी, और

इसमें उसे किसीसे रास्ता पूछनेकी जरूरत ही नहीं पड़ेगी। अगर कोई विपत्ति उसपर आक्रमण करे, तो उसी क्षण वह मा-गङ्गाकी गोदमें शरण ले लेगी।

आकाशमें कुहेलिकाका चिह्न तक न था। स्वच्छ अन्धकारने कमलाको घेर रखा था, किन्तु उसकी दृष्टिको उसने बाधा नहीं पहुँचाई। रात बढ़ने लगी। जौके खेतोंमेंसे गीदड़ बोल उठे। चलते-चलते बहुत दूर जाकर रेती खतम हो गई। और-कुछ दूर जानेके बाद एक गाँव दिखाई दिया। कमलाने कम्पित हृदयसे गाँवके पास जाकर देखा, सारा गाँव सो रहा है। डरते-डरते गाँवको पार करके वह और भी आगे चलने लगी, किन्तु उसके शरीरमें अब चलनेकी ताकत नहीं रही। अन्तमें ऐसी एक जगह पहुँची जहाँ सामने कोई रास्ता ही नहीं दिखाई दिया। अत्यन्त थक जानेसे वह एक बड़के पेड़के नीचे पड़ रही; और कब उसे नींद आ गई सो पता नहीं।

खूब सवेरे आँख खुलते ही देखा कि कृष्णपक्षके चाँदके प्रकाशसे अँधेरा क्षीण हो आया है; और, एक प्रौढ़ा स्त्री उससे पूछ रही है—"तुम कौन हो बेटी? जाड़ेके दिनोंमें इस तरह पेड़के नीचे पड़ी हुई हो?"

कमला चौंककर उठ बैठी। देखा कि पास ही घाटपर दो बजरे बँधे हुए हैं। और वह प्रौढ़ा स्त्री जगार होनेके पहले ही नहा-धोकर तैयार हो आई है। प्रौढ़ाने फिर कहा—"क्यों बेटी, तुम तो बंगाली-सी दीख रही हो?"

कमलाने कहा—"हाँ, मैं बंगालिन हूँ।"

प्रौढ़ा—"यहाँ कैसे पड़ी हो?"

कमला—"मैं काशी जाना चाहती हूँ। रात ज्यादा हो जानेसे यहीं सो गई थी।"

प्रौढ़ा—"मइया री! पैदल काशी जाओगी? अच्छा चलो, हमारे बजरेमें चलो, मैं तुम्हें काशी पहुँचा दूँगी।"

बजरेमें उससे कमलाका परिचय हुआ। गाजीपुरमें सिद्धेश्वर बाबूके यहाँ जो बड़े आडम्बरके साथ ब्याह हो रहा था, उसीमें गई थीं। सिद्धेश्वर बाबू उनके रिश्तेदार हैं। प्रौढ़ाका नाम है नवीनकाली और उनके पतिका नाम मुकुन्दलाल दत्त। कुछ दिनोंसे वे काशीमें ही रहते हैं।

नवीनकालीने पूछा—"तुम्हारा नाम क्या है?" उसने अपना नाम बता दिया।

नवीनकालीने कहा—"पहनावसे मालूम होता है तुम्हारे पति मौजूद हैं, फिर काशी क्यों?"

कमला—"ब्याहके बाद वे न-जाने कहाँ चले गये, कुछ पता नहीं।"

नवीनकालीने उसे आपादमस्तक निरीक्षण करते हुए कहा—"हाय भगवान! तुम्हारी उमर तो बहुत कम मालूम होती है!" पन्द्रहसे ज्यादा न होगी?"

कमलाने कहा—"मुझे ठीक मालूम नहीं, पन्द्रह ही होगा।"

नवीनकाली—"ब्राह्मणकी लड़की हो न?"

कमला—"हाँ।"

नवीनकाली—"तुम्हारा देश कहाँ है?"

कमला—"कभी सुसराल तो गई नहीं; मेरा मायका है बिसखाली।"

कमला इतना जानती थी।

नवीनकाली—"तुम्हारे मा-बाप—"

कमला—"कोई भी नहीं हैं।"

नवीनकाली—"हे भगवान! तो अब तुम क्या करोगी?"

कमला—"काशीमें अगर कोई भद्र-गृहस्थ मुझे अपने घर रखकर थोड़ा खाने-पहननेको दे दें, तो वहीं काम करूँगी! मैं रसोई बनाना जानती हूँ।"

नवीनकालीको बिना तनखाके रसोई बनानेवाली मिल जानेसे बड़ी-भारी खुशी हुई। बोलीं—"हमें तो जरूरत नहीं है, हमारे यहाँ महाराज और नौकर-चाकर सब मौजूद हैं। और फिर, हमारे घर बड़ी-भारी दिक्कत यह है कि 'उन'के खाने-पीनेमें जरा भी इधर-उधर हुआ नहीं कि फिर खैर नहीं! लेकिन, खैर, तुम ब्राह्मणकी लड़की हो, आफतकी मारी दुखिया वैसे हो; चलो, हमारे ही घर रहना। कितने ऐसे-गैरे खाया करते हैं, कितना बिगड़ता है, उसमें और एक सही! हमारे यहाँ काम भी ज्यादा नहीं। मैं हूँ और 'वे' हैं, बस दो जनोंकी गृहस्थी है। लड़कियोंका ब्याह हो चुका है, वे अपने-अपने घर सुखी हैं। मेरे सिर्फ एक लड़का है, वह हाकिम है; अभी सिराजगंजमें रहता है। लाट-साहबके यहाँसे उसके नाम महीने-महीने चिट्ठी आया करती है।

में 'उन'से कहा करती हूँ, 'हमारे घर तो कोई कमी नहीं, फिर क्यों लड़केको इतनी दूर रखते हो!' पर सुनते ही नहीं, कहते हैं, 'ठलुआ बैठनेसे फायदा क्या, खराबी ही है।' मैंने सोच लिया कि करने दो, इज्जतका काम है।"

हवा अनुकूल थी। काशी पहुँचनेमें ज्यादा दिन नहीं लगे। शहरके कुछ आगे जाकर एक बगीचेके बीच उनका दुमंजिला मकान था। कमला वहाँ जाकर उनके साथ ही रहने लगी।

वहाँ पहुँचनेपर मालूम हुआ कि जो होशियार महाराज उनके यहाँ रसोई बनाता था, उनके पीछे वह देश चला गया है। एक उड़िया ब्राह्मण था, उसपर भी नवीनकाली बहुत जोरसे बिगड़ पड़ीं; और उसी वक्त उन्होंने उसे तनखा बगैर दिये ही निकाल बाहर किया। और, जब तक कि उनका 'पुराना होशियार महाराज' देशसे वापस नहीं आता तब तक रसोईका भार कमलापर ही छोड़ दिया गया। नवीनकालीने कमलाको सावधान कर दिया कि 'देखो बेटी, काशी-शहर बड़ा खतरनाक है। तुम्हारी अभी कम उमर है। घरके बाहर कभी न निकलना। गङ्गा-स्नान या विश्वनाथ-बाबाके दर्शनके लिए जाना हो तो मेरे साथ जाना। अकेली कहीं न निकलना!'

नवीनकालीको डर था कि कहीं किसीके भड़कावेमें आकर कमला हाथसे न निकल जाय; और इसलिए वे उसे आँखों-ही-आँखोंमें रखने लगीं। अड़ोस पड़ोसकी बंगाली स्त्रियोंसे भी वे उसे नहीं मिलने देतीं। और, दिन-भर अपने देशके ऐश्वर्यकी चरचा, अपने 'उन'की तारीफ, गहनोंका प्रदर्शन, घर-गृहस्थीकी सुव्यवस्था और नौकर-चाकरोंपर शासन करनेकी नीति, स्त्रियोंका कर्तव्य, फजूलखर्चीकी खराबियाँ इत्यादि नाना विषयोंकी आलोचना करती हुई वे कमलाको बाहरके समस्त प्रलोभनोंसे बचानेकी कोशिश करती रहतीं।

५२

नवीनकालीके घरमें कमलाके प्राण ऐसे फड़फड़ाने लगे जैसे अध-सूखे तालाबके गंदले पानीमें मछली फड़फड़ाती है। यहाँसे निकल सके तो वह जी जाय। पर बाहर जाकर खड़ी कहाँ होगी? उस दिन रातमें पहले-पहल उसने बाहरकी पृथिवीको जाना है, और वहाँ अन्धभावसे आत्म-समर्पण करनेका उसे साहस ही नहीं हुआ।

नवीनकाली कमलाको चाहती न हों ऐसी बात नहीं ; किन्तु उसमें रस नहीं है। दो-एक दिन बीमार पड़नेपर कमलाकी उन्होंने देखभाल भी की है, पर कमलाके लिए उसे कृतज्ञताके साथ ग्रहण करना कठिन है। इससे तो बल्कि वह काम-काजमें अच्छी रहती है। और जो समय उसे नवीनकालीके सखीत्वमें बिताना पड़ता वह तो उसके लिए सबसे बढ़कर दुःसमय होता।

एक दिन सवेरे नवीनकालीने कमलाको बुलाकर कहा—"सुनो कमला, आज उनकी तबीयत ठीक नहीं है, आज भात नहीं बनेगा, रोटी करना ; लेकिन ध्यान रखना, घीका श्राद्ध न कर बैठना! तुम्हारी रसोईका हाल तो मुझे मालूम है, उसमें इतना घी काहेमें लग जाता है कुछ समझ-ही-में नहीं आता! तुमसे तो वो उड़िया-महाराज अच्छा था, वो घी तो लेता था, पर रसोईमें उसको गन्ध थोड़ी-बहुत रहती थी।" कमला इन-सब बातोंका कुछ जवाब नहीं देती, सुनी अनसुनी करके रह जाती।

आज अपमानके गुप्त भारसे व्यथित हृदय लेकर वह चुपचाप तरकारी बनार रही थी। दुनिया उसे नीरस और जीवन असह्य मालूम हो रही थी। इतनेमें गृहिणीके कमरेमेंसे एक बात उसके कानमें पड़ी, और सुनते ही वह चौंक पड़ी। नवीनकाली अपने नौकरको बुलाकर कह रही थीं—"तुलसी, जा तो, शहरसे नलिनाक्ष डाक्टरको तो बुला ला जल्दीसे। कहना, बाबू सा'बकी तबीयत ठीक नहीं है, जरा बुलाया है।"

नलिनाक्ष डाक्टर! कमलाकी आँखोंके सामने सम्पूर्ण आकाशका प्रकाश आहत वीणाकी स्वर्णतन्त्रीकी तरह काँप उठा। वह हाथका काम छोड़कर दरवाजेके पास आकर खड़ी हो गई। तुलसीके नीचे उतरते ही कमलाने उससे पूछा—"कहाँ जा रहा है तुलसी?"

तुलसीने कहा—"नलिनाक्ष डाक्टरको बुलाने।"

कमलाने कहा—"तू उन्हें जानता है?"

तुलसी—"हाँ, वे यहाँके बहुत बड़े डाक्टर हैं।"

कमला—"रहते कहाँ हैं?"

तुलसी—"शहरमें ही रहते हैं, यहाँसे कोस-भर होगा।"

चौकेमें थोड़ी-बहुत जो-कुछ चीज वह बचा सकती, सब नौकरोंको बाँट देती। इसके लिए उसे खोटी-खरी बहुत सुननी पड़ती, फिर भी वह अपनी आदत न छोड़ सकी। मालिकिनके कड़े कानूनके अनुसार इस घरके नौकरोंको खाने-पीनेका बड़ा कष्ट था। इसके सिवा मालिक-मालिकिनको खाने-पीनेमें इतनी अबेर हो जाती है कि नौकरोंको मुश्किलसे तीसरे पहर खानेको मिलता। इस बीचमें जब वे कमलासे आकर कहते कि 'मिसरानीजी, भूखके मारे पेट जला जा रहा है', तब कमलासे न रहा जाता ; वह कुछ-न-कुछ उन्हें खानेको दे देती। इस तरह थोड़े ही दिनोंमें नौकर-चाकर कमलाको बहुत मानने लगे थे।

तुलसीको रसोईके सामने रुकते देख नवीनकाली बोल उठीं—"रसोईके दरवाजेपर खड़ा-खड़ा क्या सलाह कर रहा है रे तुलसी, मेरी आँखें हैं, समझा! शहर जाते समय रसोईमें बिना घुसे तेरा काम ही नहीं चलता, क्यों? इसी तरह घरकी चीज उड़ाई जाती है, मैं सब समझती हूँ। और तुम भी खूब हो कमला, रास्तेमें पड़ी थीं, दया करके घरमें लाकर रक्खा, उसका ऐसे ही बदला चुकाया जाता है, क्यों?"

नवीनकाली अपने सन्देहको किसी भी तरह न छोड़ सकीं कि सभी उनके घरकी चीज चुरा-चुराकर बाजारमें बेच आते हैं। कुछ भी सबूत न मिलनेपर भी वे कहने-सुननेमें कोई कसर नहीं उठा रखतीं। उनकी धारणा है, अँधेरेमें ढेला फेंकनेपर भी अधिकांश ढेले ठीक जगहपर जाकर चोट करते हैं, और सब समझ जाते हैं कि मालिकिनकी निगाह बड़ी तेज है, उनकी आँखोंमें धूल झोंकना मुश्किल है।

किन्तु आज नवीनकालीके ऐसे तीव्र वाक्य भी कमलाको चुभे नहीं। वह आज मशीनकी तरह काम करती रही, उसका मन मानो उड़ा-उड़ा फिरने लगा।

कमला नीचे रसोईघरके दरवाजेके पास खड़ी प्रतीक्षा कर रही थी। इतनेमें तुलसी लौट आया। उसे अकेला देख कमलाने पूछा—"तुलसी, डाक्टर नहीं आये?" तुलसीने कहा—"नहीं, वे नहीं आयेंगे।"

कमला—"क्यों?"

तुलसी—"उनकी मा बीमार हैं।"

कमला—"मा बीमार हैं! उनके घरमें क्या और-कोई नहीं हैं?"

तुलसी—"नहीं, उन्होंने ब्याह नहीं किया।"

कमला—"ब्याह नहीं किया, तुझे कैसे मालूम?"

तुलसी—"नौकरोंके मुँह सुना है, उनके स्त्री नहीं हैं।"

कमला—"शायद मर गई होंगी?"

तुलसी—"हो सकता है। पर उनका नौकर बिरजू कहता है कि वे जब रंगपुरमें डाक्टरी करते थे, तब भी उनके स्त्री नहीं थी।"

ऊपरसे आवाज आई—"तुलसी!"

कमला जल्दीसे रसोईघरमें घुस गई; और तुलसी ऊपर चला गया।

नलिनाक्ष रंगपुरमें डाक्टरी करते थे, कमलाके मनमें अब कोई सन्देह ही नहीं रहा। तुलसी जब नीचे आया तो उसने उससे पूछा—"देख तुलसी, डाक्टर बाबूके नामके मेरे एक रिश्तेदार हैं। अच्छा, तुझे मालूम है, डाक्टर बाबू ब्राह्मण हैं?"

तुलसी—"हाँ, ब्राह्मण तो हैं ही, चटर्जी हैं।"

मालिकिनके डरसे तुलसीको कमलासे ज्यादा बात करनेकी हिम्मत न पड़ी, वह अपने कामसे चला गया।

कमलाने नवीनकालीके पास जाकर कहा—"काम-काज सब पूरा करके आज मैं एक बार दशाश्वमेध-घाटमें नहाने जाऊंगी?"

नवीनकाली—"तुम्हारी जितनी बातें होती हैं सब दुनियासे न्यारी ही होती हैं! आज 'उन'की तबीयत खराब है; कब क्या काम पड़े, कोई ठीक नहीं; और आज ही तुम्हें छुट्टी चाहिए!"

कमला—"मेरे एक अपने आदमी काशीमें हैं, सुना है, सो उनसे मिलने जाऊंगी।"

नवीनकाली—"यह-सब अच्छी बात नहीं, कमला! मेरी उमर हो चुकी है, मैं सब समझती हूँ। उसकी खबर तुम्हें किसने लाकर दी? तुलसीने दी होगी! उस गधेको अब निकाल ही देना है। सुनो मेरी बात, जब तक

तुम मेरे यहाँ हो, अकेली नहाने जाना, अपने आदमीकी तलाशमें शहर जाना, यह-सब नहीं होनेका, कहे देती हूँ !"

दरवानपर हुकम हो गया कि तुलसीको इसी वक्त निकाल बाहर करो। और साथ ही मालिकिनके डरसे नौकर-चाकरोंने कमलासे सम्पर्क रखना यथासम्भव कम कर दिया।

नलिनाक्षके सम्बन्धमें जब तक कमला निश्चित नहीं थी तब तक उसे धीरज था, किन्तु अब उसके लिए सबर रखना मुश्किल हो गया। इसी शहरमें उसके पति मौजूद हैं, फिर भी वह एक क्षणके लिए भी दूसरेके घर रहे तो क्यों रहे ? यह स्थिति उसके लिए असह्य हो उठी ; और उसके काम-काजमें त्रुटियाँ होने लगीं।

नवीनकालीने कहा—"क्या बात है मिसरानीजी, तुम्हारा रंग-ढंग तो दिनों-दिन बिगड़ता ही जा रहा है ! तुमपर भूत सवार तो नहीं हो गया ? तुमने खुद खाना-पीना बन्द किया सो तो किया ही, अब क्या हमें भी भूखों मरना पड़ेगा ? आजकल जैसी रसोई बनाती हो उसे ढोर भी नहीं खा सकते !"

कमलाने कहा—"अब मुझसे यहाँका काम नहीं किया जाता ; मेरा मन नहीं लगता। अब मुझे आप विदा कर दीजिये।"

नवीनकाली झनककर बोल उठीं—"अच्छा ! कलिकालमें किसीका भला नहीं करना चाहिए। तुमपर दया करके मैंने तुम्हें रास्तेसे लाकर घरमें रखा, जात-पाँतके बारेमें बिना पता लगाये ही तुम्हारी बातपर विश्वास करके रसोईका काम सौंप दिया, तुम्हारे लिए हमने अपने इतने दिनके पुराने महाराजको निकाल दिया, और आज कहती हो कि 'मुझे विदा कर दीजिये !' देखो, अगर तुमने भागनेकी कोशिश की, तो मैं थानेमें खबर दूँगी, समझ लेना ! मेरा लड़का हाकिम है, उसके हुकमसे कितनोंको फाँसी हो गई है ! यहाँ तुम्हारी चालाकी नहीं चलनेकी ! सुना नहीं क्या, गदाईने 'उन'के मुँहपर जवाब दिया था, सो आज तक वो जेलमें पड़ा सड़ रहा है ? किनके घर हो, सो समझ लेना !" बात झूठी नहीं है, गदाई बेचारेको घड़ीकी चोरी लगाकर पुलिसके हवाले कर दिया गया था ; और अब वह जेलमें है।

कमलाको चारों तरफ अँधेरा दिखाई देने लगा। उसकी चिरजीवनकी सार्थकता जब कि हाथ बढ़ाते ही उसे मिल सकती है, तब, उन हाथोंमें हथकड़ियाँ पड़ रही हैं। ऐसी निष्ठुरता और क्या हो सकती है? इस घरमें, घरके काम-काजमें कमलाका बिलकुल ही मन नहीं लगता; अब वह यहाँ कैसे कैद रह सकती है! रातको अपना काम खतम करके वह चादर ओढ़कर बगीचेमें चली जाती; और वहाँ बैठी-बैठी शहर-जानेवाली सड़ककी तरफ देखा करती। उसका जो तरुण हृदय किसीकी सेवाके लिए व्याकुल और भक्ति करनेके लिए फड़फड़ा रहा है, उस हृदयको कमला उस सड़कसे न-जाने किस अपरिचित घरके लिए भेजती रहती; और उसके बाद कुछ देर स्तब्ध खड़ी रहकर जमीनसे माथा छुआकर प्रणाम करके अपनी कोठरीमें आकर सो जाती।

किन्तु, इतनी भी स्वाधीनता, इतना भी सुख कमलाके भाग्यमें ज्यादा दिन न रह सका। रातका सारा काम खतम हो जानेपर भी एक दिन किसी कारणसे नवीनकालीने कमलाको बुलवा भेजा। नौकरने आकर कहा—"मिसरानीजी तो घरमें नहीं हैं।"

नवीनकाली चञ्चल हो उठीं, बोलीं—"एँ, तो क्या सचमुच ही भाग गई?" और खुद लालटेन हाथमें लेकर ढूंढ़ने चल दीं। पर कमला नहीं मिली। मुकुन्द बाबू आँखें मूंदे गुड़गुड़ीमें कश लगा रहे थे, उनसे जाकर बोलीं—"सुनते हो, मिसरानी तो भाग गई!"

इससे मुकुन्द बाबूकी शान्ति भङ्ग न हुई। वे अलसाये-हुए स्वरमें बोले—"मैंने तो तभी मना किया था, किसी अनजानको घरमें नहीं रखना चाहिए। देखो, कोई चीज तो नहीं ले गई?"

मालिकिनने कहा—"उस दिन जो उसे गरम अलवान ओढ़नेको दिया था, उसका पता नहीं! उसके सिवा और क्या-क्या गया है, सो अभी देखा नहीं।"

मालिक साहबने अविचलित गम्भीरस्वरमें कहा—"थानेमें खबर भेज दो।"

एक नौकर लालटेन हाथमें लिये बाहर चला गया। इतनेमें कमला अपनी कोठरीमें पहुँच गई, और देखा कि नवीनकाली कोठरीकी सब चीजें उलटपुलट

कर देख रही हैं। वे देख रही थीं, क्या-क्या चीज चोरी गई है। इतनेमें सहसा कमलाको देखकर वे बोल उठीं—"तुम भी खूब हो मिसरानी! कहाँ गई थीं?" कमलाने कहा—"काम खतम करके जरा बगीचेमें घूम रही थी।"

अब तो नवीनकाली आपेसे बाहर हो गईं; और जो मनमें आया सो कह डाला। घरके नौकर-चाकर दरवाजेके बाहर आकर जमा हो गये। कमलाने कभी भी नवीनकालीकी डाट-फटकारपर आँसू नहीं बहाये; और आज भी वह पत्थरकी मूर्तिकी तरह चुपचाप खड़ी रही। नवीनकालीके वाक्य-वाण जरा रुकते ही कमलाने कहा—"आपलोग मुझसे असन्तुष्ट हैं, अब मुझे विदा कर दीजिये।"

नवीनकाली और-भी बिगड़ पड़ीं—"विदा कर दीजिये! विदा नहीं करूँगी तो क्या तुम जैसी कृतघ्नीको खिला-पिलाकर पालती रहूँगी! लेकिन, किससे पाला पड़ा है, अच्छी तरह समझाकर तब विदा करूँगी!"

इसके बाद फिर कमलाको घरसे बाहर पाँव रखनेकी हिम्मत नहीं पड़ी। घर ही में बन्द रहकर वह मन-ही-मन कहती रहती, 'जो इतना दुःख सह रही है, भगवान जरूर उसका उद्धार करेंगे।'

मुकुन्द बाबू दो-दो नौकरोंके साथ गाड़ीमें बैठकर हवा खाने निकले हैं। घरमें भीतरसे हुड़का बन्द है। रात पड़ने लगी है।

दरवाजेके बाहरसे आवाज आई—"मुकुन्द बाबू हैं क्या?"

नवीनकाली चौंककर बोल उठीं—"अरे, नलिनाक्ष डाक्टर आ गये! बुधिया, अरी ओ बुधिया!"

बुधियाका कहीं पता नहीं। तब नवीनकालीने कमलाको आवाज देकर कहा—"मिसरानी, जाओ तो जरा, दरवाजा खोल आओ। डाक्टर बाबूसे कहना, बाबू सा'ब बाहर गये हैं, अब आते ही होंगे, तब तक ऊपर आकर उनके कमरेमें बैठें।"

कमला लालटेन लेकर नीचे उतर गई। उसकी देह काँप रही है, छातीके भीतर कैसी-तो एक तरहकी फुरफुरी-सी मच उठी है, और हाथ-पाँव ठण्डे-से हुए जा रहे हैं। उसे डर लगने लगा कि इस व्याकुलतामें कहीं ऐसा न हो कि

उसे आँखसे ठीक दिखाई ही न दे। किसी तरह उसने हुक्का खोल दिया; और खुद घूंघट निकालकर किवाड़की ओटमें खड़ी हो गई।

नलिनाक्षने पूछा—"बाबू साहब हैं क्या ऊपर?"

कमलाने किसी कदर अपनेको सम्हालते हुए कहा—"नहीं, आप ऊपर आइये, उनके कमरेमें—"

नलिनाक्ष ऊपर जाकर बैठ गया। इतनेमें बुधियाने आकर कहा—"बाबू सा'ब हवा खाने गये हैं, आप जरा बैठिये, अब आते ही होंगे।"

कमलाकी जल्दी-जल्दी साँस चलने लगी, और उससे तकलीफ होने लगी। वह अँधेरे बरण्डेमें ऐसी जगह जा खड़ी हुई जहाँसे नलिनाक्षको अच्छी तरह देख सके, पर उससे खड़ा नहीं रहा गया; अपने विक्षुब्ध हृदयको शान्त करनेके लिए उसे उसी जगह बैठ जाना पड़ा। एक तो जोर-जोरसे हृदय धड़कना, उसपर जाड़ेकी ठण्डी-ठण्डी हवा, दोनोंने मिलकर उसे थरथर कँपा दिया।

नलिनाक्ष हरीकैन बत्तीके सामने चुपचाप बैठा क्या सोच रहा था, पता नहीं। अँधेरेके भीतरसे काँपती हुई कमला नलिनाक्षके मुंहकी ओर एकटक देखती रही। देखते-देखते उसकी आँखोंमें आँसू भर आये। जल्दीसे आँसू पोंछकर उसने एकाग्रदृष्टिसे नलिनाक्षको मानो अपने गभीरतम अन्तःकरणकी ओर खींच लिया। उसकी एकाग्रदृष्टिके सामने वह जो उन्नत-ललाट स्तब्ध चेहरा दिखाई दे रहा है, दीपालोक जिसपर मूर्च्छित-सा पड़ा है, उस चेहरेको वह जितना ही देखने लगी उतना ही वह उसके हृदयपर मुद्रित और प्रस्फुटित होने लगा, उतना ही उसका सारा शरीर मानो क्रमशः शिथिल होकर चारों तरफके आकाशमें विलीन-सा होने लगा। उस चेहरेके सिवा विश्वजगतमें उसके देखनेके लिए और कुछ भी नहीं रह गया; और देखनेवाली भी सम्पूर्णरूपसे उसीमें विलीन हो गई। इस तरह वह कुछ देर सचेतन रही या अचेतन, कहा नहीं जा सकता। इतनेमें सहसा चौंककर उसने देखा, नलिनाक्ष कुरसी छोड़कर उठ खड़ा हुआ है; और मकुन्द बाबूके साथ बात कर रहा है। कमला इस डरसे कि कहीं दोनों बात करते-करते बाहर बरण्डेमें न आ जायँ, और वह पकड़ाई न दे जाय, वहाँसे चली गई; और नीचे जाकर रसोईमें बैठ गई। आँगनके

एक कोनेमें रसोई है ; और उसके बगलसे बाहर जानेका रास्ता निकल गया है।

कमला सर्वाङ्ग-पुलकित मनसे बैठी-बैठी सोचने लगी, 'मुझ जैसी अभागिनके ऐसे पति ! देवताके समान ऐसी सौम्य-निर्मल प्रसन्न-सुन्दर मूर्ति ! हे मेरे भगवान, आज मेरा सारा दुःख सार्थक हुआ !' कहते हुए उसने भगवानको बार-बार नमस्कार किया।

इतनेमें जीनेमें किसीके उतरनेकी आवाज सुनाई दी। कमला जल्दीसे उठकर दरवाजेकी ओटमें अँधेरेमें खड़ी हो गई। बुधिया हाथमें लालटेन लिये आगे-आगे आ रही थी और पीछे-पीछे डाक्टर। दोनों बाहर चले गये। कमलाने मन-ही-मन कहा—'तुम्हारे श्रीचरणोंकी सेविका' मैं, यहाँ दूसरोंके घर कैद पड़ी हुई हूं, और तुम मेरे सामनेसे निकल गये, फिर भी जान न सके !'

मुकुन्द बाबू खा-पीकर जब सोने चले गये, तो कमला धीरे-धीरे उस कमरेमें पहुँची जहाँ थोड़ी देर पहले नलिनाक्ष बैठा था। जिस कुरसीपर वह बैठा था उसके सामने जाकर कमलाने जमीनसे माथा छुआकर प्रणाम किया और वहाँकी धूल चूमी। सेवा करनेका कोई मौका न मिलनेसे रुकी-हुई भक्तिसे उसका हृदय विह्वल हो उठा था।

दूसरे दिन कमलाको मालूम हुआ कि आब-हवा बदलनेके लिए डाक्टर बाबूने मुकुन्द बाबूको दूर कहीं स्वास्थ्यकर जगहमें जाकर रहनेकी सलाह दी है। इसीलिए आज बाहर जानेकी तैयारियाँ हो रही हैं। कमलाने नवीनकालीसे जाकर कहा—"मैं तो काशी छोड़कर बाहर नहीं जा सकूंगी।"

नवीनकाली—"हम-सब तो जा रहे हैं, और, तुमसे नहीं जाया जायगा ! बड़ी-भारी भक्तिन मालूम होती हो !"

कमला—"आप कुछ भी कहिये, मैं यहीं रहूंगी।"

नवीनककाली—"अच्छा, कैसे रहती हो देख लूंगी !"

कमला—"मुझपर दया कीजिये, मुझे यहाँसे न ले जाइये।"

नवीनकाली—"तुम तो बड़ी खतरनाक औरत मालूम होती हो ! ठीक जाते वक्त झंझट शुरू कर दिया ! इस समय जल्दीमें हमें कौन मिल जायगा जिसे ले जायें ? नहीं, तुम्हें चलना ही होगा।"

कमलाका अनुनय-विनय सब व्यर्थ गया। वह अपनी कोठरीमें जाकर दरवाजा बन्द करके भगवानको पुकारती हुई रोने लगी।

५२

जिस दिन रातको अन्नदा बाबूकी हेमनलिनीसे ब्याहके बारेमें बातचीत हुई थी, उसी रातको उनके पेटमें जोरका शूलका दर्द उठ खड़ा हुआ। बड़ी मुश्किलसे रात कटी। सवेरे दर्द कुछ शान्त होनेसे वे अपने बगीचेमें सड़कके पास आरामकुरसीपर पड़े जाड़ेको घाम ले रहे थे। और हेम वहीं उनके लिए चायका इन्तजाम कर रही थी। रातकी तकलीफसे उनका चेहरा फीका और आँखोंके नीचे काला पड़ गया था। मालूम होता था, मानो एक ही रातमें उनकी उमर बहुत बढ़ गई हो। हेम उनके चेहरेकी तरफ देखती है तो उसके कलेजेमें छुरी-सी चुभ जाती है। नलिनाक्षसे ब्याह करनेमें उसकी असम्मति ही उनकी पीड़ाका वर्तमान कारण है, हेमके लिए यह अत्यन्त परिताप का विषय हो उठा। किसी भी तरह उससे यह निश्चय करते नहीं बनता कि क्या करनेसे उसके वृद्ध पिताको सान्त्वना मिल सकती है।

इतनेमें अकस्मात् चक्रवर्ती-चचाके साथ अक्षय वहाँ आ पहुँचा। हेम जल्दीसे वहाँसे जाना चाहती थी कि अक्षय बोल उठा—"आप जाइये नहीं, ये गाजीपुरके चक्रवर्ती साहब हैं, इन्हें इधरके सब जानते हैं। आपसे इन्हें कुछ खास बात करनी है।" इतना कहकर उसने चक्रवर्तीको पास पड़ी-हुई पीठदार बेञ्चपर बैठनेका इशारा किया; और दोनों उसपर बैठ गये। चचाने कहा—"सुना है कि रमेश बाबूके साथ आपलोगोंका विशेष बन्धुत्व है; इसीसे मैं पूछने आया हूँ कि उनकी स्त्रीके विषयमें आपलोगोंको कोई खबर मिली है?"

अन्नदा बाबू क्षण-भरके लिए दंग रह गये। उसके बाद कुछ प्रकृतिस्थ होकर बोले—"रमेश बाबूकी स्त्री!"

हेमनलिनीकी आँखें झुक गईं। चक्रवर्ती कहने लगे—"बेटी, अवश्य ही तुम मुझे पुराने जमानेका असभ्य समझती होगी। पर जरा धीरज धरके मेरी पूरी बात सुनोगी तो समझ जाओगी कि मैं खामखा इतनी दूर चलकर

आपलोगोंसे बात करने नहीं आया। रमेश बाबू पूजाकी छुट्टियोंमें अपनी स्त्रीके साथ जिस स्टीमरमें बैठकर घूमने जा रहे थे, उसीमें मैं आ रहा था। कमलाको देखते ही मेरा मोह ऐसा उमड़ पड़ा कि उसे बेटी बनाये बिना मुझे चैन ही न पड़ा। रमेश बाबू कुछ तय नहीं कर पा रहे थे कि कहाँ जायँ, इसपर मैंने कहा कि चलिये गाजीपुर हमारे घर ठहरियेगा। दोनोंको मैं ले गया गाजीपुर। वहाँ मेरी लड़कीसे कमलाका ऐसा मेल हो गया कि सगी बहनसे भी ज्यादा। कुछ दिन बाद उनके लिए एक बंगला भी किरायेपर ले दिया। इतनेमें एक जरूरी कामसे मैं चला गया इलाहाबाद। वहाँसे लौटा तो सुना कि कमला तो गङ्गामें डूबकर मर गई। तबसे रोते-रोते मेरे तो आँसू ही सूख गये; और लड़कीका भी हाल बेहाल है।" कहते-कहते चक्रवर्तीकी आँखें भर आईं।

अन्नदा बाबू घबड़ा-से गये थे, बोले—"अचानक बात क्या हुई, क्यों उसने आत्महत्या की?" चचाने कहा—"अक्षय बाबू, आपने तो सब बातें सुनी हैं, आप ही बता दीजिये।"

अक्षयने आद्योपान्त समस्त घटनाका ऐसा विस्तृत वर्णन पेश किया कि फिर कोई बात अस्पष्ट नहीं रह गई। उसने अपनी तरफसे कोई टीका-टिप्पणी नहीं की, किन्तु फिर भी, उसके वर्णनसे रमेशका चरित्र रमणीय नहीं मालूम हुआ।

अन्नदा बाबू बार-बार यही कहने लगे कि 'हमलोगोंने इस विषयमें कुछ भी नहीं सुना। रमेश जिस दिनसे कलकत्ता छोड़कर बाहर गया है उस दिनसे आज तक उसकी कोई चिट्ठी भी नहीं मिली।' और अक्षय तुरत उनकी बातको पूरा करता गया, 'और तो क्या, उन्होंने कमलासे ब्याह किया है यह भी निश्चित रूपसे हम नहीं जानते थे।' और फिर पूछने लगा—"अच्छा, चक्रवर्ती साहब, आप ठीक जानते हैं न, कि कमला रमेशकी स्त्री ही थी? बहन या और-कोई रिश्तेदारिन तो नहीं थी?"

चक्रवर्तीने कहा—"आप कहते क्या हैं अक्षय बाबू! स्त्री नहीं तो कौन थी! ऐसी सती-लक्ष्मी स्त्री कितनोंके भाग्यमें बदी होती है!"

अक्षयने कहा—"लेकिन बड़े ताज्जुबकी बात तो यह है कि स्त्री जितनी अच्छी होती है, उसका पति उतना ही उसका अनादर करता है। भगवान अच्छे

आदमियोंको ही शायद ज्यादा कठिन परीक्षामें डाला करते हैं।" कहते हुए उसने एक गहरी साँस ली, और चुप रह गया।

अन्नदा बाबू अपने बालोंमें हाथ फेरते हुए बोले—"बड़े दुःखकी बात है इसमें सन्देह नहीं; पर जो-कुछ होना था सो तो हो ही चुका, अब वृथा शोक करनेमें क्या फायदा है?"

अक्षय—"लेकिन मेरे मनमें सन्देह है। ऐसा भी तो हो सकता है कि कमला गङ्गामें न डूबी हो, सिर्फ घरसे निकल गई हो। इसीसे चक्रवर्तीजीको साथ लेकर मैं यहाँ चला आया कि शायद आपलोगोंसे कुछ पता चले। पर यहाँ आपलोगोंको तो कोई खबर ही नहीं। कुछ भी हो, दो-चार दिन यहाँ खोज करनी पड़ेगी।"

अन्नदा—"रमेश अभी कहाँ है?"

चचा—"वे हमलोगोंसे बगैर कुछ कहे-सुने ही चले गये हैं।"

अक्षय—"मुझसे तो भेंट नहीं हुई, पर लोगोंके मुँह सुना है कि आजकल वे कलकत्ता ही रहते हैं। शायद अलीपुरमें प्रैक्टिस शुरू करेंगे। आदमी तो कोई अनन्तकाल तक शोकमें नहीं पड़ा रह सकता, खासकर इस उमरमें। हाँ तो, चक्रवर्ती साहब, चलिये, एक बार चक्कर लगाकर देखा जाय, कुछ पता चलता है या नहीं।"

अन्नदा—"तो तुम यहीं आ रहे हो न, अक्षय?"

अक्षय—"ठीक कह नहीं सकता। मेरा मन आज बहुत ही खराब हो रहा है। जब तक काशीमें हूँ, मुझे कमलाकी खोज ही करना है। आप ही बताइये जरा, भले घरकी लड़की, बेचारी अगर सचमुच ही मानसिक कष्टसे घर छोड़कर चली गई हो, तो उसके दुःखका आज क्या ठिकाना है! कैसे सङ्कटमें उसके दिन कट रहे होंगे, कौन कह सकता है! रमेश बाबू निश्चिन्त होकर रह सकते हैं; पर मुझसे नहीं रहा जाता।"

चचाको साथ लेकर अक्षय चला गया।

अन्नदा बाबूने उद्विग्न होकर एक बार हेमके मुँहकी तरफ देखा। हेम जी-जानसे अपनेको संयत रखनेकी कोशिश कर रही थी, वह समझ रही थी कि

उसके पिता मन-ही-मन उसके लिए चिन्तित हो रहे हैं। थोड़ी देर बाद हेम कह उठी—"बापूजी, आज डाक्टर बुलाकर तुम अच्छी तरह दिखा तो देखो! जरा-सेमें तुम्हारी इतनी तबीयत खराब हो जाती है, इसका इलाज तो होना चाहिए।"

अन्नदा बाबूको भीतर-ही भीतर बड़ा आराम महसूस हुआ। रमेशके सम्बन्धमें इतनी बड़ी चरचा हो गई, फिर भी हेमको उनकी बीमारीकी ही चिन्ता है। इससे उनको छातीपरसे एक बोझ-सा उतर गया। दूसरा वक्त होता तो शायद वे अपनी बीमारीकी बातको हँसीमें ही उड़ा देते, किन्तु आज उन्होंने कहा—"हाँ, तुम ठीक कहती हो। एक बार अच्छी तरह परीक्षा करा ही लेना चाहिए। न हो तो, एक काम करो, आज या कल नलिनाक्षको ही बुला लिया जाय, क्यों?"

नलिनाक्षके विषयमें अपनी राय देनेमें हेम जरा सङ्कोचमें पड़ गई, पिताके सामने पहलेकी तरह स्वाभाविक तौरपर उससे मिलना-जुलना उसके लिए कठिन होगा, फिर भी उसने कह दिया—"हाँ, बुलाकर दिखा देना चाहिए।"

अन्नदा बाबूने हेमके इस अविचलित भावको देखकर धीरे-धीरे साहस पाकर कहा—"हेम, देखो रमेशकी करतूत!"

हेमने उसी क्षण उन्हें बाधा देते हुए कहा—"बापूजी, घाम बड़ी तेज हो गई है। चलो, भीतर चलो।" कहती हुई वह उन्हें सहारेसे उठाकर भीतर ले गई। बैठकमें ले जाकर उन्हें आरामकुरसीपर बिठा दिया; और हाथमें आजका अखबार देकर चश्मा निकालके उनकी आँखोंमें पहनाती हुई बोली—"अखबार पढ़ो। मैं अभी आई।"

अन्नदाबाबू शऊरदार लड़केकी तरह हेमका आदेश पालन करनेकी कोशिश करने लगे। किन्तु किसी भी तरह अपने मनको वे खबरोंमें नहीं उलझा सके। हेमके लिए उनका मन उत्कण्ठित होने लगा। अन्तमें अखबार फेंककर हेमकी तलाशमें चल दिये। देखा कि इतने सवेरे असमयमें उसके कमरेका दरवाजा भीतरसे बन्द है। बिना आवाज दिये ही वे चुपचाप लौट आये; और बरण्डेमें चहलकदमी करने लगे। बहुत देर बाद, फिर वे हेमके कमरेके सामने पहुँचे।

देखा, अब भी दरवाजा बन्द है। तब फिर थककर धपसे एक कुरसीपर बैठ गये ; और बार-बार अपने बालोंपर हाथ फेरते हुए न-जाने किसी चिन्तामें डूब गये, पता नहीं।

नलिनाक्षने आकर अन्नदा बाबूकी परीक्षा की ; और 'क्या करना चाहिए' सब बता दिया। उसके बाद उसने हेमसे कहा—"आजकल, मालूम होता है ये सोचते बहुत हैं। इधर कोई दुश्चिन्ताकी बात हुई है क्या ?"

हेमने कहा—"हो सकती है।"

नलिनाक्षने कहा—"अगर सम्भव हो तो इन्हें पूरा विश्राम लेना चाहिए। और माको लेकर मैं भी क्या मुसीबतमें फँसा हूँ ! वे जरा-सेमें घबड़ा जाती हैं, उनका स्वास्थ्य भी ठीक रखना मुश्किल हो उठा है। कल जरा-सी बातपर इतना विचार करने लगीं कि रात-भर नींद नहीं आई। मैं भरसक कोशिश करता रहता हूं कि वे स्वस्थ-सन्तुष्ट रहें, किन्तु संसारका कुछ ऐसा हाल है कि कुछ कहते नहीं बनता।"

हेम—"आपकी तबीयत भी आज ठीक नहीं मालूम होती।"

नलिन—"नहीं, मेरी तबीयत बिलकुल ठीक है। मुझे बीमार रहनेकी आदत ही नहीं। हाँ, कल जरा रातको जगना पड़ा था न, इससे ताजगीको जरूर थोड़ा-सा धक्का पहुँचा होगा।"

हेम—"आपकी माकी सेवाके लिए कोई स्त्री अगर उनके पास हमेशा बनी रहती, तो शायद अच्छा होता। आप अकेले हैं, और फिर काम-काज भी है, कैसे आप उनको पूरी सेवा कर सकते हैं ?" हेमने यह बात स्वाभाविक रूपमें कही थी ; और बात भी ठीक है इसमें सन्देह नहीं। किन्तु कहनेके बाद ही तुरत उसपर शरम सवार हो गई ; उसे सहसा खयाल आया कि नलिनाक्ष बाबू कहीं और-कुछ न समझ बैठें। अकस्मात् हेमकी लज्जा देखकर नलिनाक्षको भी अपनी माकी बातका खयाल आ गया। हेमने तुरत अपनेको सम्हालते हुए कहा—"उनकी सेवाके लिए आपको जल्दी ही कोई अच्छी नौकरानी रख लेना चाहिए।"

नलिनाक्षने कहा—"मैंने बहुत बार कोशिश की है, पर मा किसी भी तरह

राजी हो नहीं होतीं। वे अपने शुद्धाचारके विषयमें इतनी सावधान हैं कि पूछिये मत। किसी वेतनभोगीसे सेवा लेना उन्हें कतई पसन्द नहीं। इसके अलावा, स्वभाव भी ऐसा है कि मजबूरीसे कोई उनकी सेवा कर रहा हो, यह उनसे सहा नहीं जाता।

आगे इस विषयमें हेम और कह ही क्या सकती थी? कुछ देर तक चुप रहनेके बाद बोली—"आपके उपदेशानुसार चलते-चलते बीच-बीचमें एक-आध विघ्न आ ही जाते हैं। उससे मैं पिछड़ जाती हूं। मुझे तो डर है, शायद मैं सफल न हो सकूं। मेरा क्या कभी भी मन स्थिर नहीं होगा? बाहरका आघात क्या हमेशा मुझे अस्थिर करता ही रहेगा?"

हेमनलिनीके इस करुण निवेदनसे नलिनाक्ष जरा चिन्तित-सा हो उठा। बोला—"देखिये, विघ्न हमारे हृदयकी सम्पूर्ण शक्तिको जाग्रत करनेके लिए आता है। आप हताश न होइयेगा।"

हेमने कहा—"कल सवेरे आप एक बार आ सकेंगे? आपकी सहायतासे मुझे बहुत-कुछ बल मिल जाता है।"

नलिनाक्षके मुह और कण्ठस्वरमें जो एक अविचलित शान्तिका भाव है उससे हेमको बड़ा-भारी सहारा मिल जाता है। नलिनाक्ष चला गया; किन्तु हेमके मनमें वह सान्त्वनाका स्पर्श छोड़ गया। वह अपने कमरेके सामनेवाले बरण्डेमें खड़ी होकर सूर्य-किरणोंसे उद्भासित बाहरकी दुनियाको देखने लगी। उसने देखा, शीतऋतुके उस रमणीय मध्याह्नमें उसके चारों तरफ, सम्पूर्ण विश्वप्रकृतिमें कामके साथ विराम, शक्तिके साथ शान्ति और उद्योगके साथ वैराग्य एकसाथ विराज रहा है। देखकर, उस विशाल भावकी गोदमें उसने अपने व्यथित हृदयको समर्पण कर दिया। और तब, सूर्यालोक और उन्मुक्त उज्ज्वल नीलाम्बरने उसके अन्तःकरणमें संसारके नित्य-उच्चारित सुगभीर आशीर्वचन बरसाकर उसकी सारी व्यथाको हर लिया।

फिर वह नलिनाक्षकी माकी बात सोचने लगी। किस चिन्तासे वे चिन्तित हैं और क्यों उन्हें रातको नींद नहीं आती, हेम सब समझ गई। नलिनाक्षसे उसके ब्याहकी बातसे उसे जो चोट पहुँची थी, उस पहली चोटका सङ्कोच अब

जाता रहा । नलिनाक्षके प्रति हेमनलिनीको एकान्त-निर्भरशील भक्ति क्रमशः बढ़ती ही जा रही है, किन्तु उसमें प्रणयका विद्युत-संचारी वेदना नहीं है। नहीं है तो न सही। इस आत्म-प्रतिष्ठ नलिनाक्षमें किसी स्त्रीके प्रणयकी चाह ही नहीं, यह तो प्रत्यक्ष दीखता है । फिर भी, सेवाकी आवश्यकता तो सभीको होती है। नलिनाक्षकी मा बीमार भी हैं और वृद्ध भी। नलिनाक्षको कौन सम्हालेगा? इस संसारमें नलिनाक्षका जीवन तो अनादरकी वस्तु नहीं है, ऐसे आदमीकी सेवा तो भक्तिकी ही सेवा है ।

आज सवेरे हेमनलिनीने रमेशके जीवन-इतिहासका जो थोड़ा-सा अंश सुना है, उससे उसके हृदयमें इतनी गहरी और इतनी जोरकी चोट लगी है कि उस जबरदस्त चोटसे अपनी रक्षा करनेके लिए उसका मन आज अपनी सम्पूर्ण शक्ति लेकर उठ खड़ा हुआ है। आज वह ऐसी अवस्थामें आ पहुँची है कि रमेशके लिए वेदना अनुभव करना उसके लिए लज्जाजनक हो उठा है। वह रमेशका विचार करके उसे अपराधी भी नहीं कहना चाहती। संसारमें असंख्य आदमी भले-बुरे न-जाने कितने काम करते होंगे, संसार-चक्र यों ही चला करता है, हेमने उन सबोंके विचारका भार नहीं लिया। रमेशकी बात हेम मनमें भी नहीं लाना चाहती। कभी-कभी आत्मघातिनी कमलाकी कल्पना करके वह सिहर उठती है। और सोचती है, उस अभागिनीकी आत्महत्याके साथ क्या मेरा भी कोई सम्बन्ध है? और तब, वह लज्जासे घृणासे करुणासे अपने सम्पूर्ण हृदयको मथ डालती है। वह हाथ जोड़कर कहती है, 'हे भगवान, मैंने तो कोई अपराध नहीं किया, तो फिर मैं क्यों इस तरह इसमें लिपट गई? तुम मेरे इस बन्धनको खोल दो, इस जालको तोड़कर मुझे मुक्त कर दो। मैं और कुछ भी नहीं चाहती, मुझे तुम अपने इस संसारमें सहज-स्वाभाविक भावसे जीने दो।'

रमेश और कमलाकी घटना सुनकर हेम क्या सोच रही है यह जाननेके लिए अन्नदाबाबू उत्सुक बने हुए हैं, और दिक्कत यह कि पूछनेकी उन्हें हिम्मत नहीं पड़ रही है। हेमनलिनी बरण्डेमें चुपचाप बैठी सिलाईका काम कर रही थी। अन्नदाबाबू दो-एक बार वहाँ गये और उसके चिन्तामग्न चेहरेकी तरफ देखकर लौट आये।

शामके वक्त डाक्टरके कहे-अनुसार अन्नदा बाबूको पाचक चूर्ण-मिश्रित गरम-गरम दूध पिलाकर हेम उनके पास बैठ गई। अन्नदाबाबूने कहा—"आँखके सामनेसे बत्तीको जरा हटा देना बेटी!" और बत्ती हट जानेके बाद कमरेमें जब कुछ अँधेरा हो गया तब बोले—"सवेरे जो वृद्ध सज्जन आये थे, उन्हें देखकर तो यही मालूम होता है कि वे सरल-प्रकृतिके आदमी हैं।"

यह प्रसङ्ग हेमको पसन्द नहीं था, इसलिए वह चुप रह गई। अन्नदा बाबूसे भी इससे ज्यादा भूमिका बनाते नहीं बना। उन्होंने कहा—"रमेशकी बातें सुनकर मुझे लेकिन बड़ा आश्चर्य हो रहा है। लोगोंने उसके सम्बन्धमें बहुत तरहकी बातें कही हैं, मैंने आज तक किसी बातपर विश्वास नहीं किया; लेकिन आज—"

हेमने करुणकण्ठसे कहा—"बापूजी, छोड़ो इन सब बातोंको, फिर तुम्हारी तबीयत खराब हो जायगी!"

अन्नदा—"बेटी, भीतरसे मेरी इच्छा ही नहीं होती कि इन बातोंका जिक्र किया जाय। किन्तु विधिकी विडम्बनासे और-किसीके साथ हमारे सुख-दुःखका सम्बन्ध हो जाता है तो फिर उसके आचरणकी उपेक्षा भी नहीं की जा सकती।"

हेमनलिनी जोरसे बोल उठी—"नहीं नहीं, अपने सुख-दुखको हमें जहाँ-तहाँ नहीं उलझने देना चाहिए। बापूजी, मैं बहुत अच्छी तरह हूँ, मेरे लिए तुम फजूल उद्विग्न होकर मुझे शरमिन्दा न करो।"

अन्नदा—"बेटी हेम, मेरी उमर हो चुकी है, अब तुम्हारी कोई स्थिति बिना किये तो मेरा मन स्थिर नहीं रह सकता। मैं तुम्हें तपस्विनीकी तरह कैसे छोड़ जा सकता हूँ, बताओ?"

हेम चुप रह गई। अन्नदा बाबू कहने लगे—"देखो बेटी, संसारमें किसी एक आशाके नष्ट हो जानेसे क्या जीवनकी और-सब बहुमूल्य चीजोंको नष्ट कर डालना चाहिए? तुम्हारा जीवन कैसे सुखी होगा, कैसे सार्थक होगा, मनके क्षोभमें आज तुम भले ही न समझ सको, किन्तु मेरा मन तो निरन्तर तुम्हारा मङ्गल सोचता रहता है। मैं जानता हूं कि किसमें तुम्हारा मङ्गल है, कैसे तुम सुखी हो सकती हो। मेरी बातकी बिलकुल ही उपेक्षा मत करो बेटी!"

हेमनलिनीकी दोनों आँखोंमें आँसू छलछला आये। उसने कहा—"ऐसी बात न कहो बापूजी! मैं तुम्हारी किसी भी बातकी उपेक्षा नहीं करती। तुम जैसी आज्ञा दोगे, मैं जरूर उसका पालन करूंगी। सिर्फ मैं एक बार अपने अन्तःकरणको साफ करके अच्छी तरह तैयार हो लेना चाहती हूं।"

अन्नदा बाबूने उस अन्धकारमें एक बार हेमके आँसूसे भीगे-हुए मुंहपर हाथ फेरकर उसके माथेपर हाथ रखा। और कुछ नहीं कहा।

दूसरे दिन सवेरे अन्नदा बाबू हेमके साथ बगीचेमें पेड़के नीचे चाय पीने बैठे ही थे कि इतनेमें अक्षय आ पहुंचा। अन्नदा बाबूने मौन-प्रश्नके साथ उसके मुंहकी तरफ देखा। अक्षयने कहा—"अभी तक कुछ पता नहीं लगा।" और चाय पीने बैठ गया।

हेमने स्निग्धस्वरमें कहा—"बापूजी, तुम गुस्सा मत हुआ करो, तुम्हारी तबीयत खराब हो जाती है। अक्षय बाबू जो कुछ कहना चाहें, कहें न, उसमें दोष क्या है!"

अक्षयने कहा—"नहीं नहीं, मुझे माफ कीजियेगा। मैं ठीकसे समझ नहीं सका था।"

५४

मुकुन्द बाबूने तय किया कि वे सपरिवार मेरठ जायेंगे। चीज-वस्त सब बँधकर तैयार है, कल सवेरेको गाड़ीसे रवाना होंगे। कमलाको पूरी आशा थी कि इस बीचमें ऐसी कोई घटना हो जायगी जिससे उनका जाना रुक जायगा। और दूसरी उम्मीद यह भी थी कि नलिनाक्ष डाक्टर शायद फिर अपने रोगीको देखने आयेंगे। किन्तु दोनोंमेंसे कोई भी घटना नहीं हुई।

नवीनकालीको इस बातका पूरा डर था कि मौका पाते ही कमला कहीं भाग न जाय; और इसलिए उन्होंने उसीसे सब चीज-वस्त निकलवाने-बँधवाने का काम लिया। उसे अपनी आँखोंसे जरा भी इधर-उधर नहीं होने दिया। और कमला एकाग्रचित्तसे भगवानसे यह मानने लगी कि आज रातको उसे ऐसी कोई कठिन बीमारी हो जाय जिससे उसे साथ ले जाना नवीनकालीके लिए

असम्भव हो जाय। उस कठिन बीमारीकी चिकित्साका भार किस डाक्टरपर पड़ेगा, इसका भी मन-ही-मन उसने अनुमान न किया हो सो बात नहीं। उस बीमारीमें अगर उसकी मौत भी हो जाय, तो आसन्न मृत्युके समय वह उस चिकित्सकको पदधूलि लेकर मर सकेगी, इसको भी उसने आँख मोचकर कल्पना कर ली।

रातको नवीनकालीने कमलाको अपने कमरेमें सुलाया। दूसरे दिन स्टेशन जाते समय भी उसे अपनी ही गाड़ोमें बिठाया। रेलमें मुकुन्द बाबू सेकेण्ड क्लासमें चढ़े; और नवीनकाली कमलाको लेकर इण्टर-क्लासके जनाने डब्बेमें सवार हुईं। आखिर रेल छूट गई; और कमलाको जाना ही पड़ा। मदोन्मत्त हाथी जैसे लताको उखाड़ लेता है उसी तरह रेलगाड़ी कमलाको काशीसे उखाड़ ले गई। कमला प्यासी आँखोंसे खिड़कीके बाहर देखने लगी। नवीनकालीने कहा—"मिसरानी, पानका डब्बा कहाँ है?"

कमलाने पानका डिब्बा निकाल दिया। डिब्बा खोलकर नवीनकालीने कहा—"ये लो! जो सोचा था वही हुआ न आखिर! चूनेकी डिबिया भूल आई न! अब मैं क्या करूँ? जो काम अपने हाथसे न करो उसीमें गलती। मिसरानी, इसमें तुम्हारी शैतानीके सिवा और कुछ नहीं, तुमने मनमें ठान ली है कि जैसे भी हो मुझे तंग करना। आज तरकारीमें नमक नहीं तो कल खीरमें धुआँकी बदबू! तुम समझती हो कि मैं कुछ समझती नहीं, क्यों? अच्छा चलो मेरठ, उसके बाद देख लूँगी, तुम्हीं हो या मैं ही हूँ!"

गाड़ी जब पुलपर पहुँची तो उसने खिड़कीमेंसे मुँह निकालकर एक बार गङ्गा-किनारेका काशी-शहर देख लिया; उस शहरमें किस जगह नलिनाक्षका मकान है, उसे नहीं मालूम। इसलिए दौड़ती हुई रेलगाड़ीमेंसे घाट मकान मन्दिर जो-कुछ भी दिखाई दिखाई दिया, सबने नलिनाक्षके आविर्भावसे मण्डित होकर उसके हृदयको स्पर्श किया।

नवीनकालीने कहा—"ऐसे झुक-झुकके क्या देख रही हो? तुम तो चिड़िया नहीं हो जो उड़कर भाग जाओगी!"

काशी-नगरीका चित्र कहाँ छिप गया, पता नहीं। कमला चुपचाप स्थिर बैठी हुई आकाशकी ओर देखती रह गई। और गाड़ी जब मुगलसराय जाकर

ठहरी, तो स्टेशनका शोरगुल, लोगोंकी दौड़धूप, सब-कुछ उसे छायाकी तरह स्वप्न-सा मालूम होने लगा। वह मशीनकी पुतलीकी तरह चुपचाप उतरकर दूसरे डब्बेमें चली गई।

गाड़ी छूटनेका समय हो रहा था कि इतनेमें कमलाने सहसा चौंककर सुना, उसे कोई परिचित कण्ठसे पुकार रहा है, "जीजी-बाई!" कमलाने प्लाटफारमकी तरफ देखा तो उमेश है। देखते ही कमलाका चेहरा चमक उठा, उसने कहा—"क्या रे उमेश! तू यहाँ कैसे?" कहती हुई वह तुरत दरवाजा खोलकर उतर पड़ी। उमेशने पाँव छूकर उसे प्रणाम किया। उसका चेहरा मारे खुशीसे खिल उठा, खुशीके मारे वह फूला न समाया। दूसरे ही क्षण गार्डने गाड़ीका दरवाजा बन्द कर दिया। नवीनकाली शोर मचाने लगीं, "मिसरानी, क्या कर रही हो! गाड़ी छूट रही है, जल्दी आओ।" पर कमलाके कानों तक उनकी आवाज पहुँची ही नहीं। और गाड़ी छूट गई।

कमलाने उमेशसे पूछा—"उमेश, तू कहाँसे आ रहा है?"

उमेश—"गाजीपुरसे।"

कमला—"वहाँ सब राजी-खुशी हैं न? चाचाजीका क्या हाल है?"

उमेश—"ठीक है।"

कमला—"शशी-दीदी?"

उमेश—"वे तो तुम्हारे लिए रो-रोकर मरी जाती हैं।"

सुनते ही कमलाकी आँखें भर आई। बोली—"उमा अच्छी तरह है? वह मेरी याद करती है?"

उमेश—"जीजी-बाई, तुम जो उसे गहना दे आई हो उसे बिना पहनाये वह दूध ही नहीं पीती! तुम्हारी वह बहुत याद करती है; और हाथमें कड़े पहनके हाथ हिला-हिलाकर कहती है, मौसी गाड़ी गई! सुनते ही शशी दीदी रोने लगती हैं।"

कमला—"तू यहाँ क्यों आया था?"

उमेश—"मुझे गाजीपुरमें अच्छा नहीं लगता था, इसीसे चला आया।"

कमला—"अब कहाँ जायगा?"

उमेश—"अब मैं कहीं नहीं जाऊँगा, तुम्हारे ही साथ रहूंगा।"

कमला—"मेरे पास तो एक भी पैसा नहीं है।"

उमेश—"मेरे पास हैं।"

कमला—"कहाँसे आये ?"

"तुमने दिये थे न, पाँच रुपये ! मैंने वे खर्च थोड़े ही किये हैं।" कहते हुए उसने धोतीके छोरमेंसे पाँच रुपयेका नोट खोलकर दिखा दिया।

कमलाने कहा—"तो चल उमेश, हम तुम दोनों काशी चलें। तू टिकट ला सकेगा न ?"

उमेश "हाँ, मैं ले आऊँगा" कहके चला गया ; और थोड़ी देरमें टिकट ले आया। गाड़ी तैयार खड़ी थी। कमलाको जनाने-डब्बेमें बिठाकर बोला—"जीजी-बाई, मैं बगलके डब्बेमें हूँ।"

काशी उतरकर कमलाने पूछा—"उमेश, अब कहाँ चलें, बता तो ?"

उमेशने कहा—"तुम कुछ फिकर न करो, जीजी-बाई, मैं तुम्हें ठीक जगह ले चलूँगा।"

कमला—"ठीक जगह कहाँ रे ? तू यहाँका क्या जानता है ?"

उमेश—"मुझे सब मालूम है। देखो तो सही, मैं कहाँ ले जाता हूं!" कहता हुआ वह आगे बढ़ा और एक गाड़ीमें कमलाको बिठाकर खुद कोचबक्स पर बैठ गया। एक मकानके सामने गाड़ी खड़ी कराके उमेश उतरकर बोला—"जीजी-बाई, उतरो।" कमला गाड़ीसे उतरकर उमेशके पीछे-पीछे चल दी। मकानके भीतर जाकर उमेशने आवाज दी—"बाबा!"

मकानके भीतरसे आवाज आई—"कौन, उमेश है क्या! तू फिर आ गया ?" और दूसरे ही क्षण हुक्का हाथमें लिये-हुए चक्रवर्ती-चचा आ पहुंचे। उमेश भर-मुँह हँसने लगा। आश्चर्यसे दंग कमलाने चचाके पाँव छुए। चचाके मुँहसे कुछ देर तक कोई बात ही नहीं निकली। वे क्या कहें, हुक्का कहाँ रखें, कुछ तय नहीं कर सके। अन्तमें कमलाको ठोड़ी पकड़के उसके लज्जित मुँहको जरा ऊपर उठाते हुए बोले—"बिटिया मेरी, लौट आई, चलो ऊपर चलो।"

भीतर जाकर चचाने पुकारना शुरू कर दिया—"शशी, ओ शशी, देख तो,

कौन आया है!" शशी झटसे बाहर निकल आई। कमलाने उसे प्रणाम किया। शशीने जल्दीसे उसे छातीसे लगा लिया; और आँसुओंसे दोनों कपोलोंको भिगोती हुई बोली—"हाय हाय, हमलोगोंको इस तरह रुलाया जाता है, क्यों?"

चचाने कहा—"अब उन-सब बातोंको छोड़ो, शशी! नहाने-खानेका इन्तजाम करो।"

इतनेमें दोनों हाथ फैलाकर उमा आ पहुँची। कमलाने उसे तुरत गोदमें ले लिया; और छातीसे लगाकर, चूमकर, मिट्टी लेकर उसे बेचैन कर दिया।

शशीसे कमलाके रूखे बाल और मैले कपड़े देखकर रहा नहीं गया। उसे पकड़कर वह भीतर ले गई; और नहला-धुलाकर अच्छे कपड़े पहना दिये। बोली—"कल रातको सोई नहीं मालूम होता है, मुँह सूख गया है, आँखें बैठ गई हैं। तब तक तुम बिस्तरपर आराम करो, मैं चौकेमें जा रही हूँ।"

कमलाने कहा—"नहीं बहन, मैं भी तुम्हारे साथ चौकेमें ही चलती हूं।"

दोनों सखी मिलकर रसोई बनाने चली गईं।

चक्रवर्ती-चचा जब अक्षयके साथ काशी आने लगे, तो शशी भी उनके पीछे पड़ गई थी कि 'मैं भी चलूँगी।' चचाने कहा, 'विपिनको तो छुट्टी नहीं मिलेगी।' शशीने कहा, 'मैं अकेली ही चलूँगी। मा यहाँ हैं, कोई दिक्कत नहीं होगी।' इस तरह पति-विच्छेदकी बात शशीने कभी नहीं कही। चचाको राजी होना पड़ा। गाजीपुरसे उमेश भी उनके साथ आया था, किन्तु उन्हें नहीं मालूम। काशी स्टेशनपर देखा कि उमेश भी गाड़ीसे उतर रहा है। चचाने कहा, 'अरे, तू क्यों आया रे?' और-सब जिस कामसे आये थे वह भी उसी कामसे आया था। किन्तु उमेश आजकल उनके घर काम करने लगा है, इस तरह उसके चले आनेसे घरमें बड़ी चिन्ता होगी और शशीकी मा नाराज भी होंगी, इसलिए चचाने उसे वापस गाजीपुर रवाना कर दिया था। उसके बाद क्या हुआ, सो सबको मालूम ही है। गाजीपुरमें उसका मन नहीं लगा। शशीकी माने उसे सौदा लानेके लिए बाजार भेजा था, उन पैसोंसे सौदा न लेकर वह सीधा स्टेशन आकर गाड़ीमें सवार हो गया। शशीकी मा उस दिन खूब झुंझलाती रहीं, और अन्तमें पछताकर रह गईं।

५५

अक्षय आज चक्रवर्तीसे मिलने आया था, पर चक्रवर्तीने उससे कमलाके आनेकी चरचा नहीं की। अब वे समझ गये हैं कि अक्षय रमेशका मित्र नहीं।

कमला क्यों चली गई थी और कहाँ गई थी, इस सम्बन्धमें घरके किसीने उससे कोई सवाल नहीं किया। सबने यही भाव दिखाया कि वह उन्हींके साथ काशी घूमने आई है। उमाकी दाई लछमनिया स्नेह-मिश्रित नाराजीके साथ कुछ कहना चाहती थी, पर चचाने उसे अलग बुलाकर समझा दिया कि वह इस सम्बन्धमें कोई बात न करे।

रातको शशिमुखीने कमलाको अपने बिस्तरपर सुलाया; और उसके गलेसे लिपटकर वह दाहने हाथसे उसके बदनपर हाथ फेरने लगी। इस कोमल स्पर्शसे मानो वह उसकी गुप्त वेदनाके बारेमें कुछ पूछना चाहती है। कमलाने कहा—"क्यों बहन, मेरे बारेमें तुम क्या सोच रही थीं? मुझसे नाराज तो नहीं हुईं?"

शशिमुखीने कहा—"हमलोग मूरख थोड़े ही थे जो कुछ बुरी बात सोचते? इतना तो मैं समझती ही हूं कि और-कोई रास्ता होता तो तुम इस तरह हरगिज नहीं जा सकती थीं। मैं तो सिर्फ इसी बातपर रो रही थी कि भगवानने तुम्हें ऐसे सङ्कटमें क्यों डाला? जो बिलकुल निर्दोष है, जिसे कोई कसूर करना आता ही नहीं, उसे दण्ड क्यों मिलता है!"

कमलाने कहा—"दीदी, मेरी सब बातें तुम सुनोगी?"

शशिमुखीने स्निग्धस्वरमें कहा—"क्यों नहीं सुनूंगी, बहन!"

कमला कहने लगी—"तब तुम्हें क्यों नहीं कह सकी थी, सो मुझे नहीं मालूम। तब कोई बात मैं सोच ही नहीं सकती थी। अचानक सिरपर ऐसी बिजली-सी गिरी कि मारे शरमके मैं तुम्हारे सामने मुंह नहीं दिखा सकती थी। संसारमें मेरी मा-बहन कोई भी नहीं है, दीदी, तुम्हीं मेरी मा-बहन दोनों हो। इसीसे तुमसे मैं सब बातें कह रही हूं। नहीं तो, मेरी ऐसी बातें हैं कि किसीसे कही नहीं जा सकतीं।" कहते-कहते वह उठके बैठ गई। शशिमुखी भी उठके उसके सामने बैठ गई। उस अँधेरेमें बैठकर कमला अपने ब्याहसे लेकर अब तककी अपनी सारी जीवन-कहानी सुनाने लगी। उसने जब यह कहा कि

'ब्याहके पहले या ब्याहके बादकी रातको उसने अपने पतिको नहीं देखा', तब शशीने कहा—"तुम जैसी बेवकूफ लड़की तो मैंने कहीं नहीं देखी! तुमसे कम उमरमें मेरा ब्याह हुआ था, फिर भी, तुम क्या यह समझती हो कि मारे शरमके मैंने उन्हें किसी भी मौकेसे देखा ही न था?"

कमलाने कहा—"शरमकी बात नहीं, शशी-दीदी। मेरी ब्याहकी उमर तब पार हो चुकी थी। इतनेमें, अचानक जब मेरे ब्याहकी बात पक्की हो गई, तो मेरी सब साथियोंने मुझे ऐसा परेशान कर दिया था कि कुछ पूछो मत। और मैं भी ऐसी कि उनलोगोंके आगे यह साबित करनेके लिए कि बड़ी उमरमें दूल्हा पाकर मैं बावली नहीं हुई, मैंने उनकी तरफ आँख उठाकर देखा तक नहीं! फिर मैं सो गई; और सवेरे उठी तो देखा कि वहाँ कोई है ही नहीं! उसीका तो आज फल भोग रही हूं।" इतना कहकर वह थोड़ी देर तक चुप रही; और फिर कहने लगी, "ब्याहके बाद ससुराल जाते समय नाव डूब गई, फिर भी मैं कैसे बच गई, भगवान जानें! ये सब बातें जब तुम्हें मैंने कही थीं, तब मैं यह नहीं जानती थी कि मौतसे बचकर मैं जिनके हाथ पड़ी और जिन्हें मैंने अपना पति समझा, वे मेरे पति नहीं हैं!"

शशिमुखी चौंक पड़ी, और जल्दीसे कमलाके गलेमें बाँह डालकर बोली—"हाय री फूटी तकदीर, यह बात थी क्या! अब सब बात मैं समझ गई। ऐसा सर्वनाश भी किसीका होता है! हे भगवान!"

कमलाने कहा—"अच्छा, तुम्हीं बताओ बहन, जब मरनेसे ही सब जंजाल मिट जाता, तो विधाताने मुझे जिलाकर ऐसी आफतमें क्यों डाला?"

शशीने पूछा—"रमेश बाबू भी कुछ नहीं जान पाये थे?"

कमलाने कहा—"ब्याहके कुछ दिन बाद एक दिन उन्होंने मुझे सुशीला कहकर पुकारा था; मैंने उनसे कहा 'मेरा नाम तो कमला है, तुम मुझे सुशीला क्यों कहते हो?' मैं अब समझ रही हूं, उसी दिन उनकी गलतफहमी दूर हुई थी। पर बहन, उन दिनोंकी याद आते ही मारे शरमके मेरा सिर नीचा हो जाता है।" इतना कहकर कमला चुप हो रही।

शशिमुखीने धीरे-धीरे सब बातें जान लीं। अन्तमें उसने कहा—"बहन,

तुम्हारी बड़ी फूटी तकदीर है, लेकिन, फिर भी मैं तुम्हें भाग्यवान समझती हूं ! भाग्यसे तुम रमेश बाबूके हाथ पड़ी थीं ! कुछ भी कहो, बहन, बेचारे रमेश बाबूकी बात सोचती हूं तो बड़ा दुःख होता है । बहुत रात हो गई, बहन, अब तुम सो जाओ । बहुत दिनोंसे जगते-जगते तुम्हारा चेहरा स्याह पड़ गया है । अब जो कुछ करना है, सो कल सवेरे तय किया जायगा ।"

रमेशकी वह चिट्ठी कमलाके पास ही थी । दूसरे दिन उस चिट्ठीको लेकर शशिमुखीने अपने पिताको एकान्तमें बुलाकर सारा हाल कह सुनाया ; और चिट्ठी उनके हाथमें दे दी । चचाने चश्मा लगाकर पूरी चिट्ठी पढ़ डाली ; और चश्मा उतारते हुए बोले—"हूँ ! अब क्या करना चाहिए ?"

शशीने कहा—"बापूजी, उमाको कई दिनसे सरदी-खाँसी हो रही है, एक बार नलिनाक्ष डाक्टरको बुलाकर दिखा दो न !"

रोगीको देखनेके लिए डाक्टर आया ; और डाक्टरको देखनेके लिए शशी चञ्चल हो उठी । कमलासे बोली—"कमला, आ जल्दी आ !"

कलकी बातचीतके बाद घनिष्ठता बढ़ जानेसे शशिमुखीने कमलासे 'तुम' कहना छोड़ दिया है ; और आजकी खुशी भी उसका एक कारण है ।

नवनकालीके घरमें नलिनाक्षको देखनेकी व्यग्रतामें जो कमला लगभग अपनेको भूल-सी गई थी, वही कमला आज मारे शरमके उठना ही नहीं चाहती !

शशिमुखीने कहा—"देख मुँहजली, मैं तेरी ज्यादा खुशामद नहीं करूंगी, कहे देती हूँ ! मेरे पास इतना समय नहीं । उमाको बीमारी तो नामके लिए है, असल बीमारी तो तेरी है ! तुझे मनानेमें मैं भी देखनेसे रह जाऊं क्या ? उठ जल्दी !" इतना कहकर वह जबरदस्ती उसे खींच ले गई ; और दरवाजेकी ओटमें जा खड़ी हुई । नलिनाक्षने उमाकी छात-पीठ सब देख-भालकर दवा लिख दी ; और चल दिया ।

शशीने कहा—"कमल, विधाताने तुझे दुःख तो बहुत दिया, पर तेरे भाग्य अच्छे हैं । जली तो जली, पर सिकी भी खूब ! अब दो-एक दिन तुझे धीरज रखना पड़ेगा । देख तो सही, मैं तेरे मिलनका कैसा इन्तजाम कराती

हूं। उमाकी बीमारीमें मैं उन्हें जल्दी-जल्दी बुलाऊंगी ही, इसलिए उनके दर्शनसे तू वञ्चित न रहेगी, समझी !"

चचा ऐसे समय डाक्टरको बुलाने गये जब नलिनाक्ष घरमें नहीं रहता। नौकरने कहा—"डाक्टर बाबू नहीं हैं।" चचाने कहा—"माजी तो हैं, उन्हें खबर दो। कहो कि एक वृद्ध ब्राह्मण आपसे मिलना चाहते हैं।"

चचाकी पुकार हुई। ऊपर जाकर चचाने कहा—"मा, आपका नाम काशीमें प्रसिद्ध है। इसीसे आपके दर्शनका पुण्य संचय करने चला आया। मेरी और-कोई कामना नहीं है। मेरी एक दोहिती बीमार है, सो आपके लड़केको बुलाने आया था। वे घरमें नहीं हैं, इसलिए सोचा कि यों ही क्यों लौटूँ, एक बार आपके दर्शन ही कर लूँ।"

क्षेमङ्करीने कहा—"नलिन अब आता ही होगा, तब तक आप बैठिये। अबेर काफी हो चुकी है, आपके लिए थोड़ा-सा जलपान मंगाती हूँ।"

चचाने कहा—"मैं जानता था कि आप मुझे बिना खिलाये नहीं छोड़ेंगी, और मुझे जरा खाने-पीनेका शौक भी है। मुझे देखते ही सब समझ जाते हैं, और खिला भी देते हैं।"

क्षेमङ्करी चचाको जलपान कराके बहुत ही खुश हुईं। बोलीं—"कल दोपहरको आपका मेरे यहां निमन्त्रण रहा। आज तैयारी नहीं थी, इससे आपको अच्छी तरह खिला नहीं सकी।"

चचाने कहा—"जब भी तैयारी हो, इस ब्राह्मणकी याद रखियेगा। आपके मकानसे ज्यादा दूर नहीं रहता। कहें तो आपके नौकरको साथ ले जाकर आज ही अपना घर दिखा दूंगा।"

इस तरह चचाने दो-चार बार जाना-आना करके नलिनाक्षके घर अपनी कुछ-कुछ धाक जमा ली।

क्षेमङ्करीने नलिनाक्षको बुलाकर कहा—"नलिन, तू चक्रवर्तीजीसे फीस मत लिया कर, समझा !"

चचा हँसते हुए बोले—"माको आज्ञा पानेके पहले ही उन्होंने उसका पालन शुरू कर दिया है। मुझसे ये कुछ नहीं लेते। जो दाता होते हैं वे गरीबको देखते ही पहचान जाते हैं।"

दो-चार दिन बाद पिता और पुत्रीमें सलाह होती रही। उसके बाद एक दिन चचाने कमलासे कहा—"चलो बेटी, दशाश्वमेध-घाट जाकर स्नान कर आवें।"

कमलाने शशीसे कहा—"दीदी, तुम भी चलो न!"

शशीने कहा—"नहीं बहन, उमीकी तबीयत ठीक नहीं।"

चचा जिस रास्तेसे नहाने गये थे, लौटते वक्त उस रास्तेसे न आकर दूसरे रास्तेसे चलने लगे। कुछ दूर जाकर देखा कि पीछेसे एक प्रवीणा महिला गङ्गास्नान करके पट्टवस्त्र पहने और हाथमें गङ्गाजलका कमण्डल लिये हुए धीरे-धीरे चली आ रही हैं।

कमलाको उनके सामने ले जाकर चचाने कहा—"बेटी, इनके पाँव छुओ। ये डाक्टर बाबूकी मा हैं।" सुनकर कमला चौंक पड़ी; और उसी क्षण उनके पाँव लागकर पाँवकी धूल माथेसे लगा ली।

क्षेमङ्करीने कहा—"तुम कौन हो बेटी! देखूं-देखूं, अहा, कैसा रूप है! लछमीकी-सी प्रतिमा!" कहते हुए उन्होंने कमलाका घूंघट उठाकर झुके हुए चेहरेको अच्छी तरह देख लिया। बोलीं—"तुम्हारा नाम क्या है बेटी?"

कमलाके जवाब देनेके पहले ही चचा बोल उठे—"हरिदासी। यह मेरी दूरके नातेसे भतीजी लगती है। इसके मा-बाप कोई भी नहीं हैं, मेरे ही यहाँ रहती है।" क्षेमङ्करीने कहा—"चलिये चक्रवर्तीजी, हमारे घर चलिये।"

घर जाकर क्षेमङ्करीने नलिनाक्षको बुलाया। पर नलिनाक्ष तब था नहीं।

चचा कुरसीपर बैठ गये; और कमला जमीनपर। चचाने कहा—"देखिये, मेरी इस भतीजीका भाग्य बड़ा खराब है। ब्याहके दूसरे ही दिन इसके पति संन्यासी होकर चले गये, इससे फिर उनकी भेंट ही नहीं हुई। इसकी इच्छा है कि धर्मध्यान करती हुई काशीमें ही जीवन बिता दे। धर्मके सिवा इसके लिए सान्त्वनाका और उपाय ही क्या है। यहाँ मेरा कोई मकान नहीं, गाजीपुरमें मैं नौकरी करता हूं, उसीसे मेरी गुजर चलती है। मुझमें इतनी सामर्थ्य नहीं कि इसे लेकर मैं यहाँ रह सकूं। इसीसे आपकी शरणमें आया हूं। इसे आप अपनी लड़की समझकर अपने पास रखें तो मैं इसकी तरफसे निश्चिन्त हो जाऊं। जब भी आपको कोई असुविधा हो, तुरत आप

इसे गाजीपुर भेज सकती हैं। पर मैं कहता हूं, दो दिन आप इसे अपने पास रखते ही समझ जायेंगी कि लड़की क्या है, रत्न है! फिर आप एक क्षणके लिए भी इसे छोड़ना नहीं चाहेंगी।"

क्षेमङ्करी खुश होकर बोलीं--"हाँ हाँ, यह तो बहुत अच्छी बात है। ऐसी लड़कीको आप मेरे पास छोड़े जाते हैं, यह तो मेरे लिए बड़ा-भारी लाभ है। मैं राह-चलते कितनी लड़कियोंको घर लाकर उन्हें खिला-पिलाकर आनन्द पाती हूं, पर उन्हें तो मैं रख नहीं सकती। आज मेरी इच्छा पूरी हुई। तो हरिदासी अब मेरी हो रही, आप इसके लिए जरा भी चिन्ता न कीजियेगा। मेरे लड़केके विषयमें अवश्य ही आपने लोगोंसे सुना होगा, वह बहुत अच्छा लड़का है। उसके सिवा मेरे घरमें और कोई भी नहीं है।"

चचा बोले---"नलिनाक्ष बाबूका नाम सभी जानते हैं। वे यहीं आपके पास रहते हैं जानकर मैं और भी निश्चिन्त हुआ। मैंने सुना है, ब्याहके बाद किसी दुर्घटनामें उनकी स्त्री पानीमें डूबकर मर जानेसे फिर उन्होंने ब्याह ही नहीं किया, ब्रह्मचारी-से रहते हैं?"

क्षेमङ्करीने कहा--"सो, जो कुछ हो चुका सो हो चुका। उस बातको अब न छेड़िये। उसका खयाल आते ही मेरा जी खराब हो जाता है।"

चचाने कहा—"अगर आज्ञा हो तो इस लड़कीको आपके पास छोड़कर मैं विदा लूं? बीच-बीचमें आकर देख जाया करूंगा। इसकी एक बड़ी बहन है, वह भी आपके पाँव छूने आयेगी।"

चचाके चले जानेपर क्षेमङ्करीने कमलाको अपने पास खींचकर कहा--"आओ तो बेटी, देखूं! तुम्हारी उमर तो ज्यादा नहीं है। हाय भगवान, ऐसे भी पत्थर दुनियामें हैं जो तुम्हें छोड़कर चले जाते हैं! मैं आशीर्वाद देती हूं बेटी, वह फिर घर लौट आयेगा। विधाताने ऐसे रूपको वृथा नष्ट करनेको हरगिज नहीं गढ़ा।" कहते हुए उन्होंने कमलाकी ठोढ़ी छूकर अपनी उंगलियां चूम लीं। और फिर बोलीं—"यहां तुम्हारी बराबरकी कोई साथिन भी नहीं, अकेली मेरे पास रह सकोगी?" कमलाने अपने बड़े-बड़े दोनों स्निग्ध नेत्रोंसे अपनेको सम्पूर्णरूपसे समर्पण करते हुए कहा—"रह सकूंगी, मा!"

क्षेमङ्करीने कहा—"तुम्हारा दिन कैसे कटेगा, मैं यही सोच रही हूं।"

कमलाने कहा—"मैं तुम्हारा काम करती रहूंगी।"

क्षेमङ्करी—"फूट गये भाग्य! मेरा, और काम! घरमें वही तो एक मेरा लड़का है, सो भी संन्यासी-सा रहता है। कभी अगर झूठमूठको भी कहता कि 'मा, मुझे इस चीजकी जरूरत है, मैं फलानी चीज खाऊंगा, मुझे अमुक चीज अच्छी लगती है', तो मैं कितनी खुश होती। सो भी कभी नहीं कहता। रोजगार काफी करता है, पर हाथमें कुछ नहीं रखता। कितने अच्छे-अच्छे कामोंमें कितना खर्च करता है, किसीको जानने भी नहीं देता। देखो बेटी, जब कि तुम्हें मेरे ही पास चौबीसों घण्टा रहना है, तो एक बात मैं पहलेसे कहे रखती हूं, मेरे मुंहसे अपने लड़केका गुणगान सुनते-सुनते तुम्हें परेशान हो जाना पड़ेगा, फिर भी, इतना तुम्हें सह लेना पड़ेगा।"

कमलाने पुलकित चित्तसे आंखें झुका लीं। क्षेमङ्करीने कहा—"मैं तुम्हें क्या काम दूं यही सोच रही हूं। सिलाईका काम आता है?"

कमला—"अच्छा नहीं आता, मा!"

क्षेमङ्करी—"अच्छा, मैं तुम्हें सिखा दूंगी। और हां, पढ़ना आता है?"

कमला—"हां, आता है।"

क्षेमङ्करी—"तो ठीक है। बिना चश्माके मुझसे पढ़ा नहीं जाता, तुम पढ़के सुना दिया करना।"

कमला—"मुझे रसोई बनाना और घरका सब काम करना आता है।"

क्षेमङ्करी—"ऐसा अन्नपूर्णा-सरीखा चेहरा, तुम्हें रसोई-पानीका काम न आयेगा तो किसे आयेगा! आज तक नलिनाक्षको मैं बनाकर खिलाया करती थी, मेरी बीमारीमें उसने खुद अपने हाथसे बनाके खाया, पर और-किसीके हाथका नहीं खाया। अब तुम बनाने लगोगी तो उसे अपने हाथसे थोड़े ही बनाने दूंगी। और, असमर्थ हो जानेपर मेरे लिए भी तुम हविष्यान्न बनाओगी तो क्या मैं नहीं खाऊंगी! चलो बेटी, मैं तुम्हें भण्डार और रसोई-घर सब दिखा दूं।"

इसके बाद कमलाको ले जाकर उन्होंने अपनी छोटी-सी घर-गृहस्थी दिखा दी। कमलाने मौका देखकर धीरे-सी अपनी दरखास्त पेश की, बोली—"मा, आज मुझे ही रसोई बनाने दो न!"

क्षेमङ्करी हँस दीं। बोलीं—"गृहिणीका राज्य है भण्डार और रसोईमें। जीवनमें बहुत-सी चीजें छोड़नी पड़ी हैं, फिर भी, इतना तो साथ लगा ही हुआ है। तो बेटी, आज तुम्हीं बनाओ, दो-चार दिन बाद धीरे-धीरे सब तुम्हारे ही कब्जेमें आ जायगा। और मुझे भी भगवानका नाम लेनेका समय मिल जायगा। बन्धन एकसाथ तो कटता नहीं, अब भी दो-चार दिन तो मन चञ्चल होता रहेगा ही! भण्डारका सिंहासन कोई मामूली चीज थोड़े ही है!" इतना कहकर क्षेमङ्करी रसोईके बारेमें थोड़ा-सा उपदेश देकर अपने पूजा-घरमें चली गईं। आजसे क्षेमङ्करीके आगे कमलाकी विद्या-बुद्धि और घर-गृहस्थीके काम-धन्धकी परीक्षा शुरू हो गई। और कमला अपनी स्वाभाविक तत्परताके साथ रसोईके काममें जुट पड़ी।

नलिनाक्ष बाहरसे घर आते ही पहले अपनी माको देखने जाता है। माके सम्बन्धमें वह सदा चिन्तित रहता है। आज घरमें घुसते ही रसोईघरकी आवाज और गन्धने उसपर हमला-सा किया। नलिनाक्ष यह सोचकर कि आज माने अभीसे रसोई शुरू कर दी, सीधा रसोईके सामने जा पहुंचा।

आहटसे चौंककर कमलाने ज्यों ही पीछे मुड़कर देखा, नलिनाक्षसे उसकी चार आँखें हो गईं। चटसे चमचा रखकर उसने घूंघट खींचनेकी कोशिश की, पर जल्दीमें उससे कुछ करते न बना; और तब तक आश्चर्यसे चकित नलिनाक्ष वहाँसे चलता बना। उसके बाद कमलाने चमचा उठा लिया, पर अभी तक उसके हाथ काँप ही रहे थे।

पूजा-पाठ करके क्षेमङ्करी जब रसोईमें पहुंचीं, तो देखा कि रसोई बन चुकी है! कमलाने घर धो-पोंछकर बिलकुल साफ कर रखा है, कहीं भी एक तिनका तक नहीं पड़ा। देखकर क्षेमङ्करी मन-ही-मन बहुत खुश हुईं, बोलीं—"बेटी, आखिर ठहरीं तो तुम ब्राह्मणकी ही बेटी!"

नलिनाक्ष भोजन करने बैठा, तो क्षेमङ्करी उसके सामने बैठकर परोसने लगीं। और, एक संकुचित प्राणी दरवाजेकी ओटमें कान बिछाये खड़ा था, जिसमें झाँककर देखनेकी भी हिम्मत नहीं थी, और डरके मारे जिसके होश गायब हो रहे थे कि कहीं उसकी रसोईमें कोई त्रुटि न निकल आवे!

क्षेमङ्करीने पूछा—"नलिन, आज रसोई कैसी बनी है ?"

नलिनाक्ष भोज्य-पदार्थके सम्बन्धमें कोई खास समझदार नहीं था, इसलिए क्षेमङ्करी ऐसा अनावश्यक प्रश्न उससे कभी नहीं करती थीं, किन्तु आज वे विशेष कुतूहलवश ही पूछ बैठीं।

नलिनाक्षको आजकी रसोईका नया रहस्य मालूम हो गया है, उसकी माको यह बात मालूम नहीं थी। इधर जबसे माकी तबीयत खराब रहने लगी है तबसे नलिनाक्ष कितनी ही बार अनुरोध कर चुका है कि रसोईके लिए कोई महाराज रख लिया जाय तो अच्छा हो ; किन्तु वे किसी भी तरह राजी नहीं हुईं। आज नये व्यक्तिको रसोई बनाते देख वह मन-ही-मन बहुत खुश हुआ है। पर, रसोई कैसी बनी है इस बातपर उसका ध्यान नहीं गया ; फिर भी उत्साहके साथ उसने कहा—"रसोई, बहुत ही उमदा बनी है मा !"

ओटमें खड़ी कमलाने ज्यों ही ये प्रशंसाके शब्द सुने, त्यों ही वह स्थिर न रह सकी ; चटसे भागकर वह बगलके कमरेमें जाकर अपने उछलते हुए हृदयको दोनों बाहुओंसे दबाकर वशमें लानेकी कोशिश करने लगी।

भोजन करनेके बाद, नलिनाक्ष अपने अन्दर किसी एक अस्पष्टताको स्पष्ट करनेकी कोशिश करता हुआ रोजकी आदतके अनुसार उपासन-घरमें जाकर एकान्त-अध्ययनमें प्रवृत्त हो गया।

शामको क्षेमङ्करीने कमलाके बाल बाँध दिये ; और माँगमें सींदूर भरकर उसके चेहरेको इधर-उधर हिलाकर अच्छी तरह देखती हुई बोलीं—"अहा, मुझे अगर ऐसी ही एक बहू मिल जाती !"

उसी रातको क्षेमङ्करीको फिर बुखार आ गया। नलिनाक्ष उद्विग्न हो उठा। बोला—"मा मैं तुम्हें कुछ दिनके लिए काशीसे किसी स्वास्थ्यकर जगहमें ले जाना चाहता हूँ। यहाँ तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं रहती !"

क्षेमङ्करीने कहा—"सो नहीं होगा, बेटा ! दो-चार दिन ज्यादा जिलानेके लिए मुझे काशी छोड़कर और कहाँ ले जायगा ? सो नहीं होनेका। अरे, तुम क्यों दरवाजेके पास खड़ी हो बेटी ? जाओ, सोओ जाकर। सारी रात ऐसे जागती रहेगी तो तुम भी बीमार पड़ जाओगी। जब तक मैं अच्छी

नहीं होती, तुम्हींको तो सब देखभाल करनी है। रात जगोगी तो कैसे कर सकोगी? जा तो नलिन, जरा उस कमरेमें चला जा।"

नलिनाक्ष बगलके कमरेमें चला गया। कमला क्षेमङ्करीके पाँयते बैठकर उनके पाँवोंपर हाथ फेरने लगी।

क्षेमङ्करीने कहा—"पहले जनममें जरूर तुम मेरी मा थीं बेटी। नहीं तो, कोई बात नहीं चीत नहीं, चटसे ऐसे तुम्हें मैं कहाँसे पा जाती! देखो, मेरी एक आदत है कि मैं फालतू किसी आदमीकी सेवा नहीं सह सकती; पर तुम मेरी देहसे हाथ लगाती हो तो मेरे जीमें शान्ति आ जाती है। आश्चर्य तो इस बातका है कि ऐसा लगता है मानो तुम्हें बहुत दिनोंसे जानती हूं। तुम तो मुझे जरा भी गैर नहीं मालूम होतीं। हाँ, अब तुम निश्चिन्त होकर सोओ बेटी। बगलके कमरेमें नलिन है, वो अपनी माकी सेवा दूसरेको नहीं करने देता। हजार समझाती हूँ, पर उससे हार माननी पड़ती है। लेकिन उसमें एक गुण है, रात-रात भर जगता रहेगा, पर चेहरा देखकर कोई कह नहीं सकता। इसका कारण, वह कभी किसी बातपर अस्थिर नहीं होता। और मैं बिलकुल उलटी हूँ। बेटी, तुम समझती होगी, अब बेटेकी बात शुरू हो गई, अब मेरा मुँह बन्द नहीं होनेका, सो बेटी, एक बेटा होनेसे माका यही हाल होता है। और फिर, नलिन जैसा लड़का कितनी माको मिलता है! सच कहती हूं, मैं कभी-कभी सोचती हूँ, नलिन तो मेरा बाप है, उसने मेरे लिए जितना किया है, मैं क्या उसके लिए उतना कर सकी हूँ? लो, फिर नलिनकी बात ही कहती जा रही हूँ! अब नहीं, जाओ तुम सोओ। तुम रहोगी तो मेरा मुँह बन्द नहीं होगा। बूढ़ोंमें यही दोष होता है, पासमें कोई रहता है तो उनका मुँह चलता ही रहता है। जाओ, सोओ बेटी!"

दूसरे दिन कमलाने खुद ही घर-गृहस्थीका सारा भार अपने ऊपर ले लिया। नलिनाक्षने पूरबके बरण्डेके एक कोनेमें थोड़ी-सी जगह घेरकर संगमरमरका फर्श बिछवाकर अपने लिए पूजाका घर बनवा लिया था; और दोपहरको वहीं वह आसनपर बैठकर अध्ययन करता था। उस दिन सवेरे उस घरमें घुसते ही नलिनाक्षने देखा कि घर मजा धुला-पुछा बिलकुल साफ-सुथरा है। और

पीतलका जो धूपदान था, वह सोने जैसा चमक रहा है। छोटी-सी अलमारीमें जो थोड़ी-सी पुस्तकें और पोथियाँ थीं, वे भी ठीकसे जची हुई रखी हैं। और इस छोटेसे उपसना-गृहकी यत्न-मार्जित निर्मलतापर खुले-हुए द्वारसे प्रभात-सूर्यकी किरणें पड़ रही हैं। देखकर स्नान करके आये-हुए नलिनाक्षका मन तृप्तिसे भर उठा।

सवेरे ही कमला गङ्गाजलका लोटा लिये हुए क्षेमङ्करीके बिस्तरके पास आ खड़ी हुई। क्षेमङ्करीने उसकी नहाई-हुई मूर्ति देखकर कहा—"यह क्या बेटी, तुम अकेली ही गङ्गा नहाने गई थीं? आज मैं सवेरेसे ही सोच रही थी कि मैं बीमार हूँ, तुम किसके साथ गङ्गा नहाने जाओगी। लेकिन बेटी, अभी तुम छोटी हो, इस तरह अकेली—"

कमला बीच ही में बोल उठी—"नहीं मा, मेरे मायकेका एक नौकरका जी नहीं माना तो वह कल रातको यहीं आ गया था, उसे मैं साथ ले गई थी।"

क्षेमङ्करी—"हाँ, तुम्हारी चाचीसे रहा नहीं गया होगा, इसीसे बेचारीने नौकरको भेजा होगा। अच्छी बात है, तो उसे भी तुम यहीं रख लो न! तुम्हारे काम-काजमें भी मदद पहुँचायेगा। कहाँ है वो, बुलाओ तो जरा।"

कमला उमेशको उनके सामने ले आई। आते ही उमेशने ढोक देकर क्षेमङ्करीको प्रणाम किया। क्षेमङ्करीने पूछा—"तेरा नाम क्या है रे?"

"मेरा नाम उमेश।"—कहता हुआ वह बेमतलब मुंह भरके हँस दिया।

क्षेमङ्करीने हँसते हुए कहा—"उमेश! तुझे यह बहारदार धोती किसने दी रे?" उमेशने कमलाकी तरफ इशारा करते हुए कहा—"जीजी-बाईने।"

क्षेमङ्करीने कमलाकी तरफ देखते हुए हँसीमें कहा—"मैंने समझा था कि शायद जमाई-षष्ठीमें उमेशकी सासने दी होगी!"

क्षेमङ्करीका स्नेह पाकर उमेश यहीं रह गया।

उमेशकी मददसे कमलाने दिनका सारा काम-काज खतम कर दिया। अपने हाथसे नलिनाक्षका कमरा साफ किया, उसके बिछौने धूपमें सुखाये और ठीकसे बिछा दिये; और चारों तरफ सफाई-ही-सफाई कर दी। नलिनाक्षकी उतरी हुई मैली धोती एक कोनेमें पड़ी थी, उसे धो-सुखाकर चुनके अलगनीपर

टाँग दिया। जो चीजें बिलकुल साफ-सुथरी थीं, उन्हें भी उसने पोंछनेके बहाने बार-बार हिलाकर देख लिया। बिस्तरके सिरहानेके पास एक दीवार-अलमारी थी, उसे खोलकर देखा ; उसमें सिवा खड़ाऊँके और कुछ नहीं था। उस खड़ाऊँको जल्दीसे उठाकर उसने माथेसे लगाया, और छोटे बच्चेकी तरह छातीसे लगाकर आँचलसे उसकी धूल पोंछ दी।

शामको कमला क्षेमङ्करीके पाँयते बैठी उनके पाँवोंपर हाथ फेर रही थी कि इतनेमें फूलोंकी डाली लिये-हुए हेमनलिनी आ पहुँची ; और उसने क्षेमङ्करीको प्रणाम किया। क्षेमङ्करी उठके बैठ गईं ; और बोलीं—आओ, आओ हेम, बैठो। अन्नदा बाबूकी तबीयत ठीक है न ?" हेमने कहा—"उनकी तबीयत ठीक न होनेसे कल मैं नहीं आ सकी थी, आज तबीयत ठीक है।"

क्षेमङ्करीने कमलाको दिखाते-हुए कहा—"यह देखो बेटी, बचपनमें मेरी मा मर गई थीं ; वे फिरसे जन्म लेकर इतने दिन बाद अचानक मेरी खबर लेने आई हैं। मेरी माका नाम था हरिभामिनी, अबकी नाम लिया है हरिदासी ! लेकिन हेम, ऐसी लक्ष्मीकी प्रतिमा तुमने और-कहीं देखी है, सच बताना ?" कमलाने लज्जासे सिर झुका लिया।

हेमनलिनीके साथ धीरे-धीरे कमलाका परिचय हो गया।

हेमने क्षेमङ्करीसे पूछा—"मा, आपकी तबीयत कैसी है ?"

क्षेमङ्करी बोलीं—"देखो, इस उमरमें अब मुझसे तबीयतकी बात पूछना फजूल है। मैं जो अभी तक बनी हुई हूं, यही बहुत समझो। पर, कालको अब ज्यादा दिन धोखा नहीं दिया जा सकता। सो, तुमने बात छेड़ ही दी है तो सुनो। कई दिनसे मैं तुमसे कहनेको थी, पर मौका ही नहीं मिला। देखो बेटी, बचपनमें मुझसे अगर कोई ब्याहकी बात कहता था, तो मारे शरमके मैं गड़-गड़ जाती थी। पर तुमलोगोंकी शिक्षा तो वैसी नहीं है। तुमलोग पढ़ी-लिखी हो, बड़ी भी हो गई हो, तुमलोगोंसे सगाई-ब्याहके बारेमें साफ-साफ बात कही जा सकती है। इसीलिए बात छेड़ रही हूं, तुम मुझसे शरम मत करना। अच्छा, बताओ तो बेटी, उस दिन तुम्हारे पितासे मैंने जो बात कही थी, उस विषयमें उन्होंने तुमसे कोई बात की थी ?"

हेमनलिनीने नीचेको देखते हुए कहा—"हाँ, की थी।"

क्षेमङ्करीने कहा—"पर तुम शायद उस बातपर राजी नहीं हुईं? अगर राजी होतीं, तो अन्नदाबाबू उसी वक्त मेरे पास दौड़े आते। तुम सोचती होगी कि मेरा नलिन संन्यासी आदमी ठहरा, दिन-रात जप-तप-स्वाध्यायमें लगा रहता है, ऐसे आदमीसे क्या ब्याह करना! लड़का मेरा है तो क्या, बात उड़ा देने लायक नहीं। उसे बाहरसे देखनेसे यही मालूम होता है कि उसमें आसक्तिका भाव कभी नहीं आ सकता, पर यह तुमलोगोंकी भूल है। वह इतना ज्यादा प्यार कर सकता है कि उस डरसे हमेशा अपनेको दमन किये रहता है। उसके इस संन्यासके ढक्कनको उठाकर देखोगी, तो भीतर ऐसा मधुर हृदय पाओगी कि उसकी जोड़ी मिलना मुश्किल है। बेटी हेम, तुम बच्ची नहीं हो, तुम शिक्षित हो, तुमने मेरे नलिनसे दीक्षा ली है; तुम्हें नलिनके घरमें प्रतिष्ठित करके अगर मैं मर सकी, तो निश्चिन्त होकर मर सकूँगी। नहीं तो, मैं निश्चित जानती हूँ कि मेरे मरनेके बाद फिर वह ब्याह ही नहीं करेगा। तब उसकी क्या दशा होगी, सोचो तो सही! बिलकुल बहता बहता फिरेगा। तुम्हीं बताओ बेटी, तुम तो नलिनाक्षकी श्रद्धा करती हो, मैं जानती हूँ, फिर तुम्हारे मनमें आपत्ति क्यों उठी?"

हेमनलिनीने सिर झुकाये हुए ही कहा—"मा, तुम अगर मुझे इस योग्य समझती हो, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं।"

सुनकर क्षेमङ्करीने हेमको अपनी छातीके पास खींचकर उसका माथा चूम लिया; और इस विषयमें फिर कोई बात नहीं की।

"हरिदासी, इन फूलोंको—" कहते हुए क्षेमङ्करीने पाँयतेकी तरफ देखा तो वह थी ही नहीं! वह चुपकेसे कब उठके चली गई, खबर ही नहीं।

पूर्वोक्त बातचीतके बाद क्षेमङ्करीके आगे हेमको सङ्कोच मालूम होने लगा; और क्षेमङ्करी भी जरा-कुछ सङ्कोचमें पड़ गईं। हेमने कहा—"अच्छा मा, आज मुझे जल्दी ही जाना है। बापूजीकी तबीयत कब खराब हो जाय, कोई ठीक नहीं।" इतना कहकर उसने प्रणाम किया; और क्षेमङ्करीने उसके माथेपर हाथ रखकर कहा—"अच्छा बेटी, फिर आना।"

हेमनलिनीके चले जानेपर क्षेमङ्करीने नलिनाक्षको बुलवा लिया ; और कहा—"नलिन, अब मैं देर नहीं सह सकती।"

नलिनाक्षने कहा—"क्या बात है मा ?"

क्षेमङ्करीने कहा—"मैंने आज हेमसे सब बात खुलासा कही थी ; वह राजी है, अब मैं तेरी कोई भी बात नहीं सुनना चाहती। मेरे शरीरकी हालत तो तू देख ही रहा है। तेरी गृहस्थी बिना बसाये मुझे चैन नहीं पड़ रहा है। आधी रातको मेरी आँख खुल जाती है तो सोचते-सोचते नींद ही नहीं आती।"

नलिनाक्षने कहा—"अच्छा मा, तुम निश्चिन्त होकर सोओ। जो तुम कहोगी वही होगा।"

नलिनाक्षके चले जानेपर क्षेमङ्करीने पुकारा—"हरिदासी !" कमला बगलके कमरेमेंसे चली आई। तब दिन छिप चुका था। अँधेरेमें हरिदासीका चेहरा ठीकसे दिखाई नहीं दिया। क्षेमङ्करीने कहा—"बेटी, इन फूलोंको जरा पानीके छींटे देकर ठीकसे सजा दो।" और, एक गुलाब उठाकर फूलकी डाली कमलाके आगे बढ़ा दी।

कमलाने कुछ फूल थालीमें सजाकर नलिनाक्षके उपासना-घरमें आसनके सामने रख दिये ; और कुछ फूल एक फूलदानीमें सजाकर उसके कमरेमें तिपाईपर रख दिये। और, बाकीके फूल उसने दीवार-अलमारीमें रखी हुई खड़ाउँओंपर चढ़ाते हुए ज्यों ही उनपर मस्तक रखकर प्रणाम किया त्यों ही उसकी आँखोंसे झरझर आँसू गिरने लगे। इन खड़ाउँओंके सिवा संसारमें उसका और-कोई नहीं, पद-सेवाका अधिकार भी उसका जाता रहा !

इतनेमें अचानक कोई कमरेमें चला आया। कमला भड़भड़ाकर उठ खड़ी हुई ; और तुरत अलमारी बन्द कर दी। उसने पीछेको मुड़कर देखा तो नलिनाक्ष ! किसी भी तरफसे भागनेका कोई रास्ता न पाकर मारे शरमके वह आसन्न-संध्याके अन्धकारमें समा गई।

नलिनाक्ष कमरेमें कमलाको देखकर बाहर चला गया। कमला भी फिर देर न करके तुरत दूसरे कमरेमें भाग गई। तब नलिनाक्ष फिर अपने कमरेमें गया। लड़की अलमारी खोलकर क्या कर रही थी, और उसे देखते ही चटसे

दरवाजा क्यों बन्द कर दिया, इस कुतूहलसे नलिनाक्षने अलमारी खोलकर देखा कि उसकी खड़ाऊँपर कुछ ताजे फूल पड़े हुए हैं। उसने अलमारी बन्द कर दी; और वह जंगलेके पास जाकर खड़ा हो गया। बहुत देर तक आकाशकी तरफ देखता रहा, इतनेमें सूर्यास्तकी क्षणभंगुर आभा विलीन हो गई और अन्धकार घना हो आया।

५६

हेमनलिनी नलिनाक्षके साथ अपने ब्याहकी सम्मति देकर सोचने लगी, 'यह मेरे लिए परम सौभाग्यकी बात हुई।' और मन-ही-मन हजारों बार बोली, 'मेरा पुराना बन्धन टूट गया। मेरे जीवन-आकाशको घेरे हुए जो आँधीके बादल जमा हो रहे थे, वे बिलकुल फट गये, यह अच्छा ही हुआ। अब मैं स्वाधीन हूँ, अपने अतीतकालके लगातार होनेवाले आक्रमणोंसे अब मैं बिलकुल मुक्त हूँ।' और साथ ही वह विशाल वैराग्यका आनन्द भी अनुभव करने लगी। श्मशानमें दाह-कृत्य कर चुकनेके बाद यह विशाल संसार जैसे अपना विपुल भार छोड़कर खेल-सा दिखाई देता है, और तब कुछ देरके लिए मनुष्यका मन जैसे हलका हो जाता है, हेमनलिनीके मनकी भी ठीक वैसी ही हालत हो गई; उसने अपने जीवनके एकांशको जड़से समाप्त होते देख ठीक वैसी ही शान्ति प्राप्त कर ली।

घर आकर हेम सोचने लगी, 'मेरी मा होती, तो उन्हें आज अपने इस आनन्दकी बात सुनाकर आनन्दित कर देती। बापूजीसे कैसे ये सब बातें कहूं!'

कमजोरी बढ़ जानेसे अन्नदा बाबू आज जल्दी सोने चले गये। और हेमने एक कापी निकालकर टेबिलपर बैठकर लिखना शुरू कर दिया—"मैं मृत्युजालमें फँसकर समस्त संसारसे विच्छिन्न हो गई थी। इस दुःखसे उद्धार करके ईश्वर आज फिर मुझे नये जीवनमें प्रतिष्ठित कर देंगे, इसकी कभी मैंने कल्पना भी नहीं की थी। आज मैं उनके चरणोंमें हजारों प्रणाम करके नये कर्तव्य-क्षेत्रमें प्रवेश करनेको तैयार हो गई। मैं किसी भी हालतमें जिस सौभाग्यके योग्य नहीं, आज मैं उसी सौभाग्यसे सौभाग्यवती होने जा रही हूं।

ईश्वर. मुझे चिरजीवन उसकी रक्षा करनेका बल दें। मुझे इस बातका पूरा विश्वास है कि जिनके जीवनके साथ मेरे इस क्षुद्र जीवनका मिलन होने जा रहा है, वे मुझे सर्वांशमें परिपूर्णता देंगे। उस परिपूर्णताके सम्पूर्ण ऐश्वर्यको मैं सम्पूर्णरूपसे उन्हींको प्रत्यर्पण कर सकूं, ईश्वरसे यही मेरी एकमात्र प्रार्थना है।"

इसके बाद, कापी बन्द करके हेमनलिनी बगीचेमें जाकर उस नक्षत्र-खचित अन्धकारमें, निस्तब्ध शीत-रात्रिमें, बहुत देर तक इधरसे उधर टहलती रही। और अनन्त आकाश उसके आँसुओंसे धुले अन्तःकरणमें नीरव-शान्तिमन्त्र सुनाता रहा।

दूसरे दिन, शामके कुछ पहले, अन्नदाबाबू हेमको साथ लेकर नलिनाक्षके घर जानेकी तैयारी कर रहे थे कि इतनेमें उनके मकानके फाटकके सामने एक गाड़ी आकर खड़ी हो गई। कोचबक्ससे उतरकर नौकरने खबर दी कि 'माजी आई हैं।' अन्नदाबाबू झटपट फाटकपर पहुंच गये। उन्हें देखते ही क्षेमङ्करी गाड़ीसे उतर पड़ीं। अन्नदाबाबूने कहा—"आज मेरे सौभाग्यका क्या ठिकाना!"

क्षेमङ्करीने कहा—"आज आपकी लड़की देखकर उसकी गोद भरने आई हूं।" कहती हुई वे भीतर चली आईं। अन्नदा बाबूने उन्हें बड़ी खातिरसे बैठकमें ले जाकर सोफेपर बिठाया; और कहा—"आप बैठिये, मैं हेमको बुला लाऊं।"

हेम बाहर जानेके लिए तैयार हो रही थी, 'क्षेमङ्करी आई हैं' सुनते ही वह जल्दीसे अपने कमरेमेंसे निकलकर बैठकमें आ गई; और क्षेमङ्करीको प्रणाम किया। क्षेमङ्करीने कहा—"सौभाग्यवती होओ, दीर्घायु होओ, बेटी! देखूं, बेटी, तुम्हारा हाथ तो देखूं जरा!" कहते हुए उन्होंने एक-एक करके उसके दोनों हाथोंमें दो सोनेके मोटे कड़े पहना दिये। हेमनलिनीके दुबले-पतले हाथोंमें मोटे कड़े ढिलढिल करने लगे। कड़े पहनकर फिर हेमने उन्हें ढोक देकर प्रणाम किया। क्षेमङ्करीने दोनों हाथोंसे उसका मुंह थामकर ललाट चूम लिया। इस आशीर्वाद और प्यारसे हेमका हृदय सुगम्भीर माधुर्यसे परिपूर्ण हो उठा।

क्षेमङ्करीने कहा—"ब्याईजी, कल हमारे यहाँ आप दोनोंका निमन्त्रण रहा।

दूसरे दिन सवेरे अन्नदाबाबू हेमनलिनीके साथ नियमानुसार बाहर बगीचेमें चाय पीने बैठे। उनका रोगक्लिष्ट चेहरा रात-भरमें आनन्दसे सरस और ताजा हो गया है। क्षण-क्षणमें वे हेमके शान्तोज्ज्वल चेहरेकी तरफ देखते हैं और सोचते हैं, 'आज हेमको मानो उसकी स्वर्गीय माके मङ्गल-मधुर आविर्भावने परिवेष्टित कर रखा है, और उस वेष्टनने सुदूरव्याप्त अश्रुजलके आभाससे उसके मुखकी अत्युज्ज्वलताको स्निग्ध-गम्भीर कर दिया है।

अन्नदाबाबूको आज बार-बार ऐसा मालूम हो रहा है कि 'अब क्षेमङ्करीके यहाँ जानेका समय हो गया, तैयारी करनी चाहिए, अब देर करना ठीक नहीं।' हेमनलिनी उन्हें बार-बार कह रही है कि 'अभी बहुत देर है, अभी तो कुल आठ बजे हैं।' अन्नदा बाबू कहते हैं, 'नहा-धोकर तैयार होनेमें भी तो समय लगेगा। देर करनेकी अपेक्षा जरा जल्दी पहुँच जाना ही ठीक है।'

इतनेमें ट्रङ्क सूटकेस और बिस्तर आदिसे लदी हुई एक किरायेकी गाड़ी फाटकके सामने आ खड़ी हुई। और, हेमनलिनी सहसा "भाई साहब आ गये" कहती हुई फाटककी तरफ चल दी। योगेन्द्र हँसता हुआ गाड़ीसे उतरा, और बोला—"क्यों हेम, अच्छी तरह हो?"

हेमनलिनीने पूछा—"तुम्हारी गाड़ीमें और कोई है क्या?"

योगेन्द्रने हँसते हुए कहा—"है न! बापूजीके लिए बड़े दिनका एक उपहार लाया हूं!"

इतनेमें गाड़ीसे रमेश उतर पड़ा। हेमनलिनी एक क्षणके लिए उधर देखकर तुरत पीठ फेरकर चल दी।

योगेन्द्रने कहा—"हेम, जाओ मत, सुनो एक बात है!"

किन्तु यह आह्वान हेमनलिनीके कानों तक नहीं पहुंचा। वह जल्दी-जल्दी कदम रखती हुई ऐसे चली गई जैसे कोई प्रेतमूर्ति उसका पीछा कर रही हो।

रमेश क्षण-भरके लिए एक बार ठिठककर खड़ा हो गया। उससे कुछ तय करते नहीं बना कि वह आगे बढ़े या लौट पड़े। योगेन्द्रने कहा—"रमेश, आओ, बापूजी यहीं बाहर ही बैठे हैं।" और हाथ पकड़कर उसे अन्नदा बाबूके पास ले गया।

अन्नदाबाबू दूरसे ही रमेशको देखकर हतबुद्धि-से हो गये थे। वे सिरपर हाथ फेरते हुए सोचने लगे, 'अब ऐन वक्तपर यह कैसा विघ्न उपस्थित हुआ !'

रमेशने अन्नदा बाबूको झुककर नमस्कार किया। अन्नदा बाबूने उसे बैठनेके लिए कुरसी दिखाते हुए कहा—"योगेन्द्र, तुम ठीक वक्तपर आ गये, अच्छा ही हुआ। मैं तुम्हें टेलिग्राम करना चाहता था।"

योगेन्द्र—"क्यों ?"

अन्नदा—"हेमको नलिनाक्षसे सगाई कर दी है। कल नलिनाक्षको मा हेमको गोद भर गई हैं।"

योगेन्द्र—"वाह ! बिलकुल पक्की बात हो चुकी है ! मुझसे एक बार पूछ तो लेते ?"

अन्नदा—"योगेन, तुम कब क्या कहते हो, कोई ठीक नहीं ! मैं जब नलिनाक्षको जानता भी न था, तब तुम्हीं तो उससे सम्बन्ध करानेको उतावले हो रहे थे !"

योगेन्द्र—"हाँ, तब जरूर हो रहा था। पर अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है। मुझे बहुत-सी बातें कहनी हैं। पहले सब सुन लो, उसके बाद जो उचित समझो सो करना।"

अन्नदा—"फुरसतसे फिर-कभी सुनूंगा, अभी मुझे फुरसत नहीं है। अभी-तुरत मुझे बाहर जाना है।"

योगेन्द्र—"कहाँ जाओगे ?"

अन्नदा—"नलिनाक्षकी माके यहाँ मेरा और हेमका निमन्त्रण है। तुम लोगोंके लिए यहीं—"

योगेन्द्र—"नहीं नहीं। हम लोगोंके लिए व्यस्त होनेकी जरूरत नहीं ! मैं रमेशके साथ यहांके किसी होटलमें खा-पी लूंगा। शामके पहले तुमलोग आ जाओगे तो ? तभी आऊंगा।"

अन्नदाबाबूसे रमेशके प्रति किसी प्रकारका शिष्ट-सम्भाषण करते नहीं बना। उसके मुंहकी ओर देखना भी उनके लिए कष्टसाध्य हो उठा। रमेश भी, अब तक चुप रहकर, जाते समय उन्हें नमस्कार करके चला गया।

५७

क्षेमङ्करीने घर जाकर कमलासे कहा—"बेटी, हेम और उसके पिताको मैं कलके लिए खानेका निमन्त्रण दे आई हूँ। क्या-क्या बनाओगी बताओ तो? समधीको इस तरह खिलाना चाहिए कि वे निश्चिन्त हो जायँ कि उनकी लड़की यहाँ खाने-पीनेका कष्ट नहीं पायेगी। क्यों ठीक है न, बेटी? सो, तुम जैसी रसोई बनाती हो उससे मुझे इतना तो भरोसा है कि बदनामी हरगिज नहीं होगी। मेरे लड़केने खानेके विषयमें आज तक कभी भला-बुरा कुछ भी नहीं कहा, और कल तुम्हारे हाथकी रसोईकी उसने खूब तारीफ की। पर, तुम्हारा चेहरा आज ऐसा सूखा-सा क्यों मालूम हो रहा है? तबीयत ठीक नहीं है क्या?"

मलिन मुँहपर जरा-सी हँसी लाते हुए कमलाने कहा—"नहीं तो, मेरी तबीयत बिलकुल ठीक है, मा!"

क्षेमङ्करीने सिर हिलाते हुए कहा—"शायद तुम्हारा मन नहीं लगता होगा। इतने दिनसे सब एकसाथ रही हो, घरके लिए मन तो उचटेगा ही। इसमें शरमानेकी क्या बात है! मुझे गैर न समझना बेटी, मैं तुम्हें अपनी लड़की ही समझती हूँ, यहाँ तुम्हें किसी बातकी अड़चन हो, या तुम अपने घरवालोंसे किसीसे मिलना चाहो, तो बिना मुझसे कहे कैसे काम चलेगा बताओ?"

कमला व्यग्र होकर बोली—"नहीं मा, तुम्हारी सेवा करनेको मिले, फिर मुझे कुछ नहीं चाहिए।"

क्षेमङ्करी इस बातपर ध्यान न देकर कहने लगीं—"न हो तो, कुछ दिनके लिए तुम चाचाके घर जाकर रहो। फिर जब तुम्हारी इच्छा हो, आ जाना।"

कमला अस्थिर हो उठी, बोली—"नहीं मा, जब तक मैं तुम्हारे पास हूं तब तक मैं और-किसीको याद नहीं करूँगी। मुझसे तुम्हारे चरणोंमें अगर कभी कोई कसूर भी बन जाय, तो मुझे तुम और-चाहे जो भी सजा दो, पर अपनेसे दूर कहीं नहीं भेजना।"

क्षेमङ्करीने कमलाके दाहने कपोलपर हाथ फेरते हुए कहा—"इसीसे तो

कहती हूँ, बिटिया, पहले जनममें तुम मेरी मा थीं ! नहीं, तो देखते हो ऐसा बन्धन कैसे हो सकता है ! अब जाओ बेटी, देर न करो, सोओ जाकर ; दिन-भर काम करती रही हो, घड़ी-भर भी तुमसे बैठा तो जाता नहीं । इतनी मेहनत न किया करो, नहीं तो थक जाओगी ।"

कमला अपने घरमें जाकर किवाड़ बन्द करके बत्ती बुझाकर अँधेरेमें जमीनपर बैठी रही । बहुत देर तक बैठी-बैठी सोचती रही, और अन्तमें उसने मनमें समझ लिया कि भाग्यके दोषसे जिनपरसे मेरा अधिकार जाता रहा है, उन्हें मैं अगोरे बैठी रहूँ, यह कैसे हो सकता है ! सब-कुछ छोड़नेके लिए मनको तैयार करना होगा । सिर्फ सेवा करनेका मौका, जैसे भी बनेगा, हाथसे न जाने दूँगी । भगवान करें, इतना मैं हँसते-हँसते कर सकूँ, इससे ज्यादा और-किसी बातपर मेरी नजर न पड़े । अनेक कष्टोंने जितना मुझे मिला है उतनेको भी अगर मैं प्रसन्न मनसे न ले सकी, अगर मुँह फुलाकर अलग हो गई, तो मुझे सब-कुछ खोना पड़ेगा ।' ऐसा समझकर बार-बार वह संकल्प करने लगी कि 'मैं कलसे किसी भी दुःखको मनमें स्थान नहीं दूँगी, एक क्षणके लिए मेरा चेहरा उदास न हो ; जो आशाके अतीत है उसके लिए कोई भी कामना मेरे मनमें न रहे । मैं केवल सेवा करती रहूँगी, और कुछ भी नहीं चाहूँगी, नहीं चाहूँगी, नहीं चाहूँगी ।'

इसके बाद वह बिस्तरपर जाकर सो रही । इधर-उधर करवट बदलते बदलते नींद आ गई । रातको दो-तीन बार उसकी आँख खुल-खुल गई ; और खुलते ही वह मन्त्रकी तरह उच्चारण करने लगी, 'मैं कुछ भी नहीं चाहूँगी, नहीं चाहूँगी, नहीं चाहूँगी ।' सवेरे ही उठकर वह हाथ जोड़कर बैठ गई, और सम्पूर्ण चित्तका जोर लगाकर बोली—"मैं आमरण तुम्हारी सेवा करती रहूँगी, और कुछ भी नहीं चाहूँगी, नहीं चाहूँगी, नहीं चाहूँगी ।"

इसके बाद हाथ-मुँह धोकर, बासी कपड़े बदलकर, नलिनाक्षके उपासना-घरमें पहुँच गई ; और अपने आँचलसे सारे फर्शको पोंछकर साफ किया और ठीक जगहपर आसन बिछाकर जल्दीसे गङ्गा नहाने चली गई । आजकल नलिनाक्षके विशेष अनुरोधसे क्षेमङ्करीने सूर्योदयके पहले नहाने जाना छोड़

दिया है। इसलिए उमेशको ही इस दुःसह जाड़ेमें तड़के ही उठकर कमलाके साथ गङ्गा नहाने जाना पड़ा।

स्नानसे लौटनेके बाद कमलाने क्षेमङ्करीको प्रफुल्ल मुखसे प्रणाम किया। वे तब नहाने जानेकी तैयारीमें थीं। कमलाको देखते ही बोलीं—"इतने सवेरे तुम क्यों नहाने गईं बेटी? मेरे साथ जातीं तो ठीक रहता न!"

कमलाने कहा—"आज जो घरमें काम है मां! कल शामको जो साग-तरकारी आई है उसे बनाना है। और जो-कुछ बजारसे मँगाना है सब उमेशको भेजकर मँगा लेना है।"

क्षेमङ्करीने कहा—"यह तुमने खूब सोचा बेटी! ज्यों ही समधी आयेंगे त्यों ही उन्हें खाना तैयार मिलेगा।"

इतनेमें नलिनाक्ष अपने कमरेमेंसे बाहर निकल आया। उसे देखते ही कमला अपने भीगे बालोंपर जल्दीसे घूंघट खींचकर कमरेके भीतर चली गई। नलिनाक्षने कहा—"मा, आज ही तुम नहाने चल दीं? कल ही तो जरा बुखार उतरा है!"

क्षेमङ्करीने कहा—"नलिन, तू अपनी डाक्टरी रहने दे। सवेरे गङ्गा नहीं नहानेवाले अमर नहीं हो जाते। तू अभी बाहर जा रहा है क्या? आज जरा जल्दी आ जाना।"

नलिनाक्षने पूछा—"क्यों मा?"

क्षेमङ्करी—"कल तुझसे मैं कहना भूल गई, आज अन्नदा बाबू तुझे आशीर्वाद देने आयेंगे।"

नलिन—"आशीर्वाद देने? क्यों, अकस्मात् वे मुझपर इतने प्रसन्न क्यों हो उठे? उनके साथ तो मेरी रोज मुलाकात होती है।"

क्षेमङ्करी—"मैं जो कल हेमको कड़ोंकी जोड़ी देकर आशीर्वाद कर आई हूँ। अब अन्नदाबाबूकी पारी है। खैर, तू जल्दी आ जाना। आज वे यहीं जीमेंगे।" कहती हुई क्षेमकरी गङ्गा-नहाने चली गईं; और नलिनाक्ष सिर नीचा किये सोचता हुआ बाहर चला गया।

५८

हेमनलिनी रमेशके पाससे तेजीसे भागकर अपने कमरेमें चली गई, और दरवाजा बन्द करके बिस्तरपर पड़ रही। पहला आवेग जरा शान्त होते ही एक तरहकी लज्जाने उसे घेर लिया, वह सोचने लगी, 'क्यों मैं रमेश बाबूसे सहज स्वाभाविक-रूपसे नहीं मिल सकी? जिसकी मुझे कोई आशा नहीं थी, वही बात क्यों मुझसे इस तरह अशोभन-रूपमें जाहिर हो गई? नहीं नहीं, किसी बातपर मेरा दृढ़ विश्वास नहीं। इस तरह कहाँ तक डगमगाती रहूँगी!' इसके बाद, जबरदस्ती उठकर उसने दरवाजा खोल दिया; और बाहर निकल आई। मन-ही-मन कहने लगी, 'मैं भागूंगी नहीं, विजय पाऊंगी।' और फिर रमेश बाबूसे मिलने चल दी। सहसा न-जाने किस बातकी याद उठ आई, फिर वह अपने कमरेमें चली आई। उसने अपना सन्दूक खोलकर उसमेंसे क्षेमङ्करीके दिये-हुए दोनों कड़े निकालकर पहन लिये; और इस तरह मानो अस्त्र धारण करके वह अपनेको दृढ़ताके साथ सिर उठाकर युद्धके लिए बगीचेकी तरफ ले चली।

अन्नदा बाबू हँसते हुए बोले—"हेम, कहाँ चली?"

हेम—"रमेश बाबू नहीं हैं, भाई साहब नहीं हैं?"

अन्नदा—"नहीं, दोनों चले गये।"

आत्म-परीक्षाकी आसन्न-सम्भावनासे छुटकारा पाकर हेमको कुछ आराम मालूम हुआ। अन्नदा बाबूने कहा—"तो अब चलना चाहिए। उसने कहा—"हाँ बापूजी, मैं नहा-धोकर अभी आती हूँ। तुम गाड़ी लानेको कह दो।"

इस तरह निमन्त्रणमें जानेके लिए सहसा हेमनलिनीका स्वभाव-विरुद्ध अति-उत्साह देखकर अन्नदाबाबू निश्चिन्त न होकर और-भी उत्कण्ठित हो उठे।

हेमनलिनी झटपट नहा-धोकर कपड़े पहनके आ खड़ी हुई; और बोली—"गाड़ी आ गई बापूजी?"

अन्नदा बाबूने कहा—"नहीं, अभी नहीं आई।"

सुनकर हेमनलिनी बगीचेमें जाकर इधरसे उधर टहलने लगी। और अन्नदा बाबू बरण्डेमें बैठे हुए सिरपर हाथ फेरने लगे।

अन्नदा बाबू जब नलिनाक्षके घर जाकर पहुँचे, तब करीब साढ़े-दस बजे होंगे। नलिनाक्ष भी वापस नहीं आया था। इसलिए उनकी खातिरदारीका भार क्षेमङ्करीको ही लेना पड़ा। उन्होंने अन्नदा बाबूके स्वास्थ्यके सम्बन्धमें नाना प्रश्न किये, और उनके घरके विषयमें भी बातें की। बीच-बीचमें वे हेमके चेहरेकी तरफ भी देखती जाती थीं। किन्तु उसपर उत्साह या खुशीका कोई लक्षण नहीं दिखाई दिया। आसन्न शुभ-घटनाकी सम्भावनाने सूर्योदयके पहले अरुणच्छटाकी किरणोंकी तरह उसके चेहरेपर कोई दीप्ति क्यों नहीं प्रकट की? बल्कि उसकी अन्यमनस्क दृष्टिमें तो किसी दुश्चिन्ताका ही अन्धकार दिखाई दे रहा है! यह क्या बात है? इससे क्षेमङ्करीको चोट पहुँची; और उनका मन भी कुछ बैठ गया। सोचने लगीं, 'नलिनके साथ ब्याह होना किसी भी लड़कीके लिए सौभाग्यका विषय है; और यह शिक्षा-मदोन्मत्ता आधुनिक लड़की मेरे नलिनको अपने योग्य ही नहीं समझती! आखिर उसकी यह चिन्ता, यह दुबिधा है किस बातपर? असलमें दोष मेरा ही है। बूढ़ी हो गई, पर धीरज किसे कहते हैं नहीं जानती। ज्यों ही इच्छा हुई, चटसे उतावली हो उठी। बड़ी उमरकी लड़कीसे लड़केका ब्याह करने चल दी, पर उसे अच्छी तरह जाननेकी कोशिश ही नहीं की। पर हाय, जानने-देखनेका समय अब कहाँ रहा, अब तो संसारका सब काम जल्दी पूरा करके जानेका निमन्त्रण आ गया है।' अन्नदा बाबूके साथ बात करते हुए उनके मनमें ये ही सब बातें चक्कर काट रही थीं। बात करना उनके लिए कष्टकर हो उठा। उन्होंने अन्नदा बाबूसे कहा—"देखिये, ब्याहके सम्बन्धमें ज्यादा जल्दबाजी करनेकी जरूरत नहीं। इन दोनोंकी उमर हो चुकी है, अब इन्हींपर छोड़ देना चाहिए; जैसा उचित समझेंगे, करेंगे। हमारा जोर लगाना ठीक न होगा। हेमके मनकी बात मैं नहीं कह सकती, पर नलिनके विषयमें मुझे जहाँ तक मालूम है, अभी तक वह अपने मनको स्थिर नहीं कर पाया है।"

यह बात क्षेमङ्करीने खास तौरसे हेमको सुनानेके लिए कही। हेमनलिनी अप्रसन्न चित्तसे विचार कर रही है और उनका लड़का ब्याहकी बात सुनकर नाच उठा है, ऐसी धारणा वे दूसरोंके मनमें हरगिज पैदा नहीं होने देना चाहतीं।

हेमनलिनी आज यहाँ आते समय अपने मनमें जबरदस्ती अति-उत्साह पैदा करके आई थी, किन्तु उसका फल हुआ उलटा ही। क्षणिक उत्तेजना गभीर अवसादमें परिणत हो गई। कुछ देर पहले हेमनलिनी जब इस घरमें घुसने लगी तो सहसा उसके मनको एक आशंकाने आ घेरा। जीवनयात्राके जिस नवीन पथपर वह कदम रखनेको तैयार हो रही है वह उसके सामने दूर तक फैला हुआ दुर्गम टेढ़ामेढ़ा शैलपथ-सा प्रत्यक्ष हो उठा! और अब, सम्पूर्ण शिष्टालापमें अपने प्रति उसका अविश्वास उसीके मनको भीतर-ही-भीतर व्यथित करने लगा। ऐसी हालतमें क्षेमङ्करीने जब विवाहके प्रस्तावको एक प्रकारसे वापस ले लिया, तो हेमनलिनीके मनमें दो तरहके परस्पर विरोधी भाव पैदा हो गये। विवाह-बन्धनमें जल्दसे जल्द बँधकर संशयमें झूलती हुई अपनी कमजोर अवस्थासे जल्दी हो छुटकारा पानेकी इच्छा होनेसे उस प्रस्तावको वह शीघ्र ही पक्का कर डालना चाहती थी; और साथ ही, यहाँ जब उस बातको दबा दिया गया, तो फिलहाल उसने आराम भी महसूस किया।

क्षेमङ्करीने बात कहके तुरत कनखियोंसे हेमके चेहरेकी तरफ भी देख लिया। उन्हें ऐसा लगा कि मानो इतनी देर बाद हेमके चेहरेपर एक शान्तिकी स्निग्धता उतर आई। इससे उनका मन उसी क्षण हेमनलिनीके प्रति विमुख हो उठा। उन्होंने मन-ही-मन कहा, 'अपने नलिनको मैं इतने सस्तेमें लुटा देने बैठी थी!' और, नलिनाक्ष जो आज घर लौटनेमें देर कर रहा है, इससे वे खुश ही हुईं। हेमनलिनीकी तरफ देखकर बोलीं—"देखो नलिनाक्षकी अकल! जानता है कि घरमें मेहमान आयेंगे, तो भी अभी तक लौटनेका नाम नहीं! आज कुछ कम ही काम करता। मेरी जरा-सी तबीयत खराब होते ही काम छोड़कर मेरे पास बना रहता है; आज ही ऐसा क्या नुकसान हो जाता!" इतना कहकर वे कुछ देरके लिए वहाँसे छुट्टी लेकर रसोईकी तैयारी देखने चली आईं। उनकी इच्छा है कि हेमको वे कमलासे मिड़ाकर खुद निरीह ढ़ृदसे बैठी बातें करें।

रसोईमें जाकर उन्होंने देखा कि रसोई तैयार है, सब चीजें धीमी आँचपर रखकर कमला एक कोनेमें चुपचाप ऐसी गम्भीर होकर बैठी है मानो उसे

कितनी न चिन्ता हो। क्षेमङ्करीके आगमनसे सहसा वह चौंक पड़ी। और दूसरे ही क्षण लज्जित होकर मुसकराती हुई उठ खड़ी हुई। क्षेमङ्करीने कहा—"अरे! मैंने समझा था कि तुम रसोईके काममें बहुत ही व्यस्त होगी। यहाँ तो सब तैयार भी हो चुकी!"

कमलाने कहा—"हाँ, मा, बिलकुल तैयार है।"

क्षेमङ्करीने कहा—"तो, यहाँ चुपचाप बैठी क्या कर रही हो? अन्नदा बाबू बड़े-बूढ़े आदमी हैं, उनके सामने निकलनेमें शरम काहेकी? हेम आई है, अपने कमरेमें बुलाकर उससे तुम बातें करो। मैं बड़ी-बूढ़ी ठहरी, मेरे पास बिठाकर उसे तकलीफ क्यों दूं?"

हेमनलिनीकी तरफसे मानसिक धक्का खाकर क्षेमङ्करीको कमलासे दूना स्नेह हो गया। कमलाने संकोचके साथ कहा—"मा, मैं उनके साथ क्या बात करूं! वे पढ़ी-लिखी हैं; और मैं कुछ भी नहीं जानती।"

क्षेमङ्करीने कहा—"सो क्या हुआ! तुम किसीसे कम थोड़ी ही हो बेटी! पढ़-लिखकर कोई कितनी ही बड़ी क्यों न हो जाय, तुम्हारे सामने वह कुछ भी नहीं। किताबें पढ़कर सभी विद्वान् हो सकती हैं, पर तुमारी जैसी लछमी-बेटी कितनी हो सकती हैं! आओ बेटी। और हाँ, तुम जरा अच्छे कपड़े पहन लो। चलो, आज तुम्हें मैं तुम्हारे लायक कपड़े पहनाऊंगी। आज तुम्हें मैं अपने हाथसे सजाऊंगी, चलो मेरे कमरेमें।"

सभी तरफसे क्षेमङ्करी आज हेमका गर्व चूर करनेको उद्यत हो उठीं। रूपमें भी उसे वे इस अल्प-शिक्षिता लड़कीके आगे म्लान कर देना चाहती हैं। कमलाको आपत्ति करनेका उन्होंने मौका ही नहीं दिया। अपने निपुण हाथोंसे कमलाको पहना-उढ़ाकर उन्होंने ऐसा बना दिया कि देख-भालकर वे खुद ही उसके रूपपर मुग्ध हो गईं। अन्तमें कमलाका चुम्बन लेते हुए क्षेमङ्करीने कहा—"वाह! यह रूप तो राजाके घर शोभा पाता!"

बीच-बीचमें कमला बराबर कहती रही कि 'मा, बहुत देर हो रही है, हेमके पिताजी आपकी राह देख रहे होंगे।' पर क्षेमङ्करीने उसपर ध्यान ही नहीं दिया, बोलीं, "देर होने दो, आज मैं तुम्हें बिना सजाये नहीं मानूंगी।"

क्षेमङ्करी कमलाको साथ लेकर जाते-जाते बोलीं—"चलो चलो, शरमाओ मत बेटी! तुम्हें देखकर कालेजकी पढ़ी विदुषी रूपसी सबको लज्जित होना पड़ेगा; तुम सबके सामने सिर ऊंचा करके खड़ी हो सकती हो।" कहती हुई वे जबरदस्ती कमलाको खींच ले गईं। जाकर देखा, नलिनाक्ष उनलोगोंसे बातें कर रहा है। देखते ही कमला चटसे रुक गई और उलटे पाँव भागनेकी कोशिश करने लगी, किन्तु क्षेमङ्करी उसे पकड़े ही रहीं। बोलीं—"शरमानेकी क्या बात है बेटी, शरमाओ मत! सब अपने ही आदमी तो हैं।"

कमलाके रूप और इस लज्जासे क्षेमङ्करी अपने मनमें गर्व अनुभव कर रही थीं; वे चाहने लगीं कि देखकर सब-कोई दंग रह जायँ। पुत्राभिमानिनी जननी अपने नलिनाक्षके प्रति हेमनलिनीकी अवज्ञाका आभास पाकर आज उत्तेजित हो उठी थीं; आज नलिनाक्षके आगे भी हेमनलिनीका गर्व खर्व कर सकें तो उन्हें बड़ी खुशी हो।

कमलाको देखकर सचमुच ही सब आश्चर्यसे दंग रह गये। हेमनलिनीसे पहले दिन जब उसका परिचय हुआ था, तब कमला बिलकुल मामूली कपड़ोंमें थी, साज-सिंगार भी बिलकुल नहीं था। उस दिन वह अत्यन्त मलिन-भावसे संकुचित होकर एक तरफ बैठी थी, सो भी ज्यादा देर तक नहीं, कुछ ही क्षण हेमने उसे देखा था। किन्तु आज, आज वह उसे देखते ही क्षण-भरके लिए आश्चर्यसे चकित रह गई। उसके बाद हेम उठी, और कमलाका हाथ पकड़कर उसने उसे अपने पास बिठा लिया।

क्षेमङ्करीने समझा, उनकी विजय हुई। उपस्थित सभामें सभीको मन ही मन स्वीकार करना पड़ा है कि ऐसा रूप दैवसे ही देखनेको मिलता है। तब उन्होंने कमलासे कहा—"जाओ तो बेटी, तुम हेमको अपने कमरेमें ले जाकर बातें करो। मैं तब तक इनलोगोंके लिए आसन बिछवाती हूँ।" कमलाके मनमें एक तरहका आन्दोलन शुरू हो गया। वह सोचने लगी, 'हेमनलिनी मुझे कैसा समझेगी, कौन जाने!' यही हेमनलिनी एक दिन बहू होकर आयेगी, घरकी मालिकिन बन जायगी; इसकी सुदृष्टिकी कमला उपेक्षा नहीं कर सकती। इस घरका गृहणीपद उसीका था, पर उस बातको वह मनमें भी नहीं लाना चाहती।

ईर्षाको वह किसी भी हालतमें अपने मनमें जगह नहीं देगी ; उसके कोई भी चाह नहीं, कोई भी दावा नहीं। हेमके साथ जानेमें उसके पैर काँपने लगे।

हेमनलिनीने आहिस्तेसे कमलासे कहा—"मैंने तुम्हारी सब बातें मासे सुनी हैं। सुनके बड़ा दुःख हुआ। मुझे तुम अपनी बहन ही समझना, बहन! तुम्हारे कोई बहन है?"

कमलाको हेमनलिनीका स्नेह-करुण कण्ठस्वर सुनकर बड़ी तसल्ली हुई। बोली—"मेरी अपनी बहन कोई नहीं, एक चचेरी बहन है।"

हेमने कहा—"मेरी भी बहन कोई नहीं, बहन! मैं जब छोटी थी, तभी मेरी मा मर गई थी। कितनी बार कितने ही सुख-दुखोंमें मैंने सोचा है, 'मेरी मा नहीं हैं, एक बहन भी रहती तो कितना अच्छा होता!' बचपनसे ही मुझे अपने मनकी बातें दबाकर रखनी पड़ी हैं ; और अब तो ऐसी आदत पड़ गई है कि किसीसे मन खोलकर बात ही नहीं कर सकती। लोग समझते हैं, मुझे बड़ा मिजाज है, लेकिन बहन तुम ऐसा कभी न समझना। मेरा मन गूंगा हो गया है।"

कमलाके मनसे सारी बाधा दूर हो गई। उसने कहा—"जीजी, मैं क्या तुम्हारे पसन्द आऊँगी? मुझे तुम जानती नहीं, मैं बिलकुल मूरख हूँ।"

हेमने हँसते हुए कहा—"मुझे जब तुम अच्छी तरह जान जाओगी, तो देखोगी, मैं भी घोर मूर्ख हूँ। मैंने कुछ किताबें रट ली हैं, और कुछ नहीं आता मुझे। इसीसे मेरा तुमसे कहना है कि अगर मेरा इस घरमें आना हुआ तो तुम मुझे कभी छोड़ना मत! किसी दिन सारी घर-गृहस्थीका भार अकेली मुझपर आ पड़ेगा, इस बातको सोचते हुए भी मुझे डर लगता है।"

कमला बच्चोंकी तरह सरलचित्तसे बोल उठी—"भार तुम सब मेरे ऊपर छोड़ देना। मैं बचपनसे काम-धन्धा करती आई हूँ, मुझे जरा भी डर नहीं लगता। हम दोनों बहन मिलकर घर-गृहस्थी चलायेंगी ; तुम मुझे सुखसे रखना, और मैं तुमलोगोंकी सेवा करती रहूँगी।"

हेम पूछ उठी—"अच्छा, बहन, तुमने तो अपने पतिको अच्छी तरह देखा नहीं, उनकी तुम्हें कुछ याद है?"

कमलाने उसकी बातका स्पष्ट उत्तर न देकर कहा—"इस बातको तब मैं जानती ही न थी, जीजी, कि पतिकी याद करनी पड़ती है। मैं जब चाचाके घर आई, तब चचेरी बहन शशी-दीदीसे मेरा खूब मेल हो गया। वे अपने पतिकी इतनी सेवा करती थीं कि कुछ पूछो मत। उन्हें देखकर मुझे होश आया। अपने पतिको मैंने कभी देखा ही नहीं समझो, फिर भी उनके लिए मेरा हृदय-मन भक्तिसे कैसे भर गया, सो मैं नहीं कह सकती। भगवानने मेरी उस पूजाका फल दिया है, अब मेरे पति मेरे मनके सामने स्पष्ट होकर जग उठे हैं, उन्होंने मुझे ग्रहण नहीं किया तो न सही, पर मैंने उन्हें अब पा लिया है।"

कमलाको इन भक्ति-भरी बातोंको सुनकर हेमनलिनीका अन्तःकरण भी आर्द्र हो उठा, कुछ देर चुप रहकर उसने कहा—"तुम्हारी बातें मैं खूब समझ रही हूँ, बहन! इस तरह पाना ही यथार्थ पाना है। और-सब पाना लोभका पाना है, वह रहता नहीं, नष्ट हो जाता है।"

इस बातको कमला पूरी तरह समझी या नहीं सो नहीं कहा जा सकता। वह हेमके मुँहकी तरफ देखती रही; और कुछ देर बाद बोली—"तुम जो कह रही हो, जीजी, सो ही सच होगा। मैं अपने मनमें किसी तरहका दुःख नहीं आने देती, और इससे मैं अच्छी ही हूँ। मुझे जितना मिला है वही मेरा लाभ है।"

हेमने कमलाका हाथ अपने हाथमें लेते हुए कहा—"जब भाग्य और लाभ बिलकुल समान हो जाता है तभी वह यथार्थ लाभ होता है, यह बात मेरे गुरुकी कही हुई है। मैं सच कहती हूँ, बहन, तुमने अपना सर्वस्व अर्पण करके जैसी सार्थकता पाई है वैसी सार्थकता अगर मुझे मिल जाय, तो मैं धन्य हो जाऊँ।"

कमला कुछ आश्चर्यमें पड़ गई, बोली—"क्यों जीजी, तुम्हें तो सब-कुछ मिलेगा, तुम्हारे तो कोई कमी नहीं रहेगी!"

हेमने कहा—"जितना पाने-जैसा पाना है, भगवान करें, उतना ही पाकर मैं सुखी हो सकूं। उससे ज्यादा जितना भी मिलता है, उसमें बड़ा बोझ है, बड़ा दुःख है, बहन! मेरे मुँहसे ये सब बातें तुम्हें अद्भुत-सी मालूम होंगी, खुद मुझे भी ऐसी ही लगती हैं, किन्तु ये सब बातें भगवान मुझसे बुलवा रहे

हैं। तुम जानती नहीं बहन, आज मेरे मनपर कितना बोझ लदा हुआ है! तुम्हें पाकर आज मेरा हृदय हलका हो गया। अब मुझे बल मिल गया है, इसीसे इतना बक रही हूं। वैसे मैं बहुत कम बोलती हूं; तुम कैसे मेरे मनकी सब बातें खींचे ले रही हो, कुछ समझमें नहीं आता बहन!"

५६

क्षेमङ्करीके यहांसे वापस आनेपर हेमनलिनीको अपनी टेबिलपर एक चिट्ठी मिली। लिफाफेपर रमेशके हाथके अक्षर देखकर हेमका हृदय धड़क उठा। धड़कते हुए हृदयसे चिट्ठी उठाकर वह सीधी अपने सोनेके कमरेमें चली गई; और भीतरसे दरवाजा बन्द करके चिट्ठी पढ़ने लगी।

चिट्ठीमें रमेशने कमलाके विषयमें सारी बातें शुरूसे आखीर तक लिख दी हैं; और उपसंहारमें लिखा है, "तुम्हारे साथ मेरे जिस बन्धनको ईश्वरने दृढ़ कर दिया था, संसारने उसे तोड़ दिया। तुमने अब और-किसीको चित्त समर्पण कर दिया है, इसके लिए मैं तुम्हें कोई दोष नहीं दे सकता; किन्तु तुम भी मुझे दोष न देना। यद्यपि मैंने एक दिनके लिए भी कमलाके साथ स्त्री-जैसा व्यवहार नहीं किया, फिर भी क्रमशः उसने मेरे हृदयको आकर्षित करना शुरू कर दिया था, यह बात तुम्हारे सामने मुझे मंजूर करनी ही चाहिए। आज मेरा हृदय किस हालतमें है, सो मैं निश्चित नहीं जानता। तुम अगर मुझे न त्यागतीं तो तुम्हारे अन्दर मैं आश्रय पा सकता था। मैं इसी आशासे अपना विक्षिप्त चित्त लेकर तुम्हारे पास दौड़ा आया था। किन्तु आज जब स्पष्ट देखा कि तुम मुझसे घृणा करके मुझसे विमुख होकर चली गईं, और, किसीके मुँहसे जब सुना कि तुमने और किसीके साथ अपने ब्याहकी सम्मति दे दी है, तब मेरा भी मन डांवाडोल हो उठा। देखा, अभी तक कमलाको पूरी तरह मैं भूल नहीं पाया हूं। भूलूं या न भूलूं, इससे संसारमें मेरे सिवा और-किसीको कोई भी नुकसान नहीं। और मेरा भी ऐसा क्या नुकसान है? संसारमें जिन दो रमणियों को मैं अपने हृदयमें ग्रहण कर सका हूं, उन्हें भूलनेकी शक्ति मुझमें नहीं है; और उन्हें चिरजीवन याद रखना ही मेरे जीवनका परम लाभ है। आज सवेरे

जब तुम्हारे क्षणिक साक्षातसे बिजलीकी-सी चोट खाकर वापस आया, तो एक बार मेरे मुँहसे निकल पड़ा, 'मैं अभागा हूं।' पर अब मैं इस बातको नहीं मानता। मैं सरल चित्तसे आनन्दके साथ तुमसे दूर हट जाऊंगा। तुम्हारी कृपासे, विधाताके आशीर्वादसे, इस विदाके समयमें मैं अपने अन्तःकरणमें जरा भी दीनता अनुभव न करूँ, बस, इतना ही मेरे लिए काफी है। तुम सुखी होओ, तुम्हारा मङ्गल हो। मुझसे तुम घृणा न करना। मुझसे घृणा करनेका कोई भी कारण नहीं है।"

अन्नदा बाबू कुरसीपर बैठे किताब पढ़ रहे थे। सहसा हेमको देखकर चौंक पड़े, बोले—"हेम, तुम्हारी क्या तबीयत खराब है?"

हेमने कहा—"नहीं तो। बापूजी, रमेश बाबूने एक चिट्ठी लिखी है। यह लो, पढ़ चुकनेके बाद मुझे वापस दे देना।" और चिट्ठी देकर वह चली गई।

अन्नदा बाबूने चश्मा लगाकर दो बार चिट्ठी पढ़ डाली। उसके बाद हेमके पास उसे वापस भेजकर बैठे-बैठे सोचने लगे। सोच-विचारकर अन्तमें उन्होंने तय किया कि 'यह एक तरहसे अच्छा ही हुआ। पात्रकी दृष्टिसे रमेशकी अपेक्षा नलिनाक्ष कहीं ज्यादा अच्छा है। क्षेत्रसे रमेश अपने-आप ही चला गया, यह अच्छा ही हुआ।' ये सब बातें सोच ही रहे थे कि इतनेमें नलिनाक्ष आ पहुँचा। उसे देखकर अन्नदा बाबू कुछ आश्चर्यमें पड़ गये। इसके पहले बहुत देर तक वे उनके यहाँ थे, अभी-अभी आये हैं, फिर इतनी जल्दी ऐसा क्या काम आ पड़ा जिससे नलिनाक्षको यहाँ आना पड़ा? वृद्ध पिता अन्तमें यह सोचकर कि 'हेमका आकर्षण ही नलिनाक्षको यहाँ तक खींच लाया है', भीतर ही भीतर बहुत खुश हुए। हेमसे मिलनेका उसे मौका देनेके लिए वे उठकर कहीं जाना ही चाहते थे कि नलिनाक्ष कह उठा—"अन्नदा बाबू, मेरे साथ आपकी कन्याके विवाहका प्रस्ताव चल रहा है। बात ज्यादा आगे बढ़नेके पहले मुझे जो-कुछ कहना है, सो कह देना चाहता हूँ।"

अन्नदा—"हाँ हाँ, सो तो कहना ही चाहिए।"

नलिन—"आपको यह मालूम है कि मेरा पहले ही ब्याह हो चुका है।"

अन्नदा—"मालूम है। पर वो तो—"

नलिन—"आपको मालूम है, ताज्जुबकी बात है ! पर आप जो अनुमान कर रहे हैं कि उसकी मृत्यु हो गई, इस बातका निश्चय क्या ? निश्चित रूपसे कुछ भी नहीं कहा जा सकता। और मेरा तो विश्वास है कि वह अभी तक जीवित है।" अन्नदा—"ईश्वर करें तुम्हारी बात सच हो। हेम, हेम !"

हेम—"बापूजी !"

अन्नदा—"रमेशने जो तुम्हें चिट्ठी लिखी है, उसमें एक जगह जहाँ—"

हेमने पूरी चिट्ठी ही नलिनाक्षके हाथमें देते हुए कहा—"यह चिट्ठी इन्हें पूरी पढ़ लेनी चाहिए।" और फिर वह वहाँसे चली गई।

पूरी चिट्ठी पढ़कर नलिनाक्ष सन्न रह गया। उसे स्तब्ध बैठा देख अन्नदा बाबू बोले—"ऐसी शोचनीय दुर्घटना संसारमें बहुत कम होती हैं। आपको चिट्ठी दिखाकर काफी चोट पहुँचाई गई; किन्तु हम इसे छिपा भी तो नहीं सकते थे। इसका छिपाना हमारे तईं अन्याय होता।"

नलिनाक्ष कुछ देर तक चुपचाप बैठा रहा। फिर अन्नदा बाबूसे विदा लेकर चल दिया। जाते समय उत्तरके बरण्डेके पास ही उसने हेमनलिनीको देखा। देखकर उसके हृदयपर चोट पहुँची। सोचने लगा, 'यह जो नारी यहाँ स्तब्ध खड़ी हुई है, इसकी स्थिर-शान्त मूर्ति इसके अन्तःकरणको कैसे वहन कर रही है ? इन क्षणोंमें इसका मन क्या कर रहा है, ठीक तौरसे इसका अन्दाज लगानेका कोई उपाय नहीं। नलिनाक्षकी उसे आवश्यकता है या नहीं, उससे पूछा भी नहीं जा सकता, और उसका उत्तर मिलना भी कठिन है। नलिनाक्षका पीड़ित चित्त सोचने लगा, 'इसे किसी तरह सान्त्वना दी जा सकती है या नहीं ? लेकिन, आदमी आदमीमें कितना दुर्भेद्य व्यवधान है ! आदमीका मन कैसा भयङ्कररूपसे अकेला है !

नलिनाक्ष जरा घूमकर उस बरण्डेके सामनेसे जाकर गाड़ीमें चढ़ना चाहता था। उसने सोचा था कि हेमनलिनी शायद उससे कोई बात पूछे, किन्तु जब वह बरण्डेके सामने पहुँचा, तो देखा कि हेम वहाँ है ही नहीं ! हृदयके साथ हृदयका साक्षात् सहज नहीं, मनुष्यके साथ मनुष्यका सम्बन्ध सरल नहीं, यह सोचता-हुआ नलिनाक्ष भारी मन लिये हुए गाड़ीमें बैठ गया।

नलिनाक्षके जानेके बाद योगेन्द्र आ गया। अन्नदा बाबूने उससे पूछा—"तुम अकेले कैसे ?"

योगेन्द्रने कहा—"दूसरे और किसको उम्मीद करते हो ?"

अन्नदा—"क्यों, रमेश ?"

योगेन्द्र—"पहले दिनकी अभ्यर्थना ही क्या उसके लिए काफी नहीं थी ? काशीकी गङ्गामें डूबकर अगर उसे मोक्ष न मिलो हो, तो और क्या हुआ होगा, मैं निश्चित नहीं जानता। कलसे अब तक उसका पता नहीं, टेबिलपर एक चिट पड़ी है, उसपर लिखा है, 'भागता हूँ। तुम्हारा रमेश।' इस तरहका कवित्व मुझसे सहन नहीं होता। इसलिए मुझे भी यहाँसे भागना पड़ेगा। मेरी हेड-मास्टरी इससे कहीं अच्छी। उसमें सब-कुछ बिलकुल स्पष्ट है, धुँधलापन जरा भी नहीं।"

अन्नदा—"हेमके लिए तो कुछ—"

योगेन्द्र—"अब फिर मुझे क्यों लपेट रहे हो ? मैं बार-बार स्थिर करता रहूं और तुमलोग अस्थिर करते रहो, यह खेल ज्यादा दिन नहीं अच्छा लगता। मुझे अब किसी भी बातमें मत लपेटो ; जिस विषयको मैं अच्छी तरह समझता नहीं, वह मेरे लिए माफिक नहीं आता। सहसा दुर्बोध्य हो जानेकी जो अद्भुत शक्ति हेममें है, उससे मेरी अकल खराब हो जाती है। कल सवेरेकी गाड़ीसे मैं चला जाऊँगा। रास्तेमें बाँकीपुर मुझे जरा काम है।"

अन्नदा बाबू कुछ जवाब न दे सके, चुपचाप बैठे हुए अपने माथेपर हाथ फेरते रहे। उनकी पारिवारिक समस्या फिर दुरूह हो उठी।

६०

शशिमुखी और उसके पिता नलिनाक्षके घर आये हैं। शशी कमलाके साथ कोनेके कमरेमें बैठी चुपचाप कुछ बतरा रही थी ; और चक्रवर्ती क्षेमङ्करीके साथ बात कर रहे थे। चक्रवर्ती बोले—"मेरी तो छुट्टियाँ खतम हो चलीं। कल ही गाजीपुरके लिए रवाना होना पड़ेगा। हरिदासीने आपलोगोंको अगर किसी तरहसे परेशान किया हो, या—"

क्षेमङ्करी—"अब यह आप कैसी बातें कर रहे हैं चक्रवर्तीजी ? आप क्या कोई बहाना निकालकर अपनी लड़कीको वापस ले जाना चाहते हैं ?"

चक्रवर्ती—"मुझे आप ऐसा आदमी न समझिये, मैं देकर वापस लेनेवाला नहीं। मैं तो यह कह रहा था कि अगर आपको कोई असुविधा या—"

क्षेमङ्करी—"यह तो आपकी सरल बात नहीं हुई। आप अपने मनमें खूब अच्छी तरह समझते हैं कि हरिदासी जैसी लछमी-बिटियाको पास रखनेमें किसीको असुविधा हो ही नहीं सकती, फिर भी—"

चक्रवर्ती—"बस बस, अब कुछ मत कहिये, मैं पकड़ा गया। और-कुछ नहीं, आपके मुँहसे लड़कीकी जरा तारीफ सुननी थी। पर एक चिन्ता है, नलिन बाबू कहीं खयाल न कर बैठें कि उनके घरमें यह नया उपसर्ग कहाँसे आ गया। हमारी लड़की बड़ी अभिमानिनी है ; अगर उसे नलिनाक्षकी तरफसे जरा भी उपेक्षा या विरक्तिका भाव मालूम हुआ, तो उससे सहना मुश्किल हो जायगा।"

क्षेमङ्करी—"राम भजिये ! नलिनने ये सब बातें सीखी ही नहीं।"

चक्रवर्ती—"सो ठीक बात है। पर देखिये, हरिदासीको मैं अपने प्राणोंसे भी ज्यादा प्यार करता हूँ, इसीसे उसके सम्बन्धमें मैं कममें सन्तुष्ट नहीं हो सकता। मैं चाहता हूँ, जब कि आपके घर ही उसे रहना है, तो नलिनाक्ष उसे अपना समझकर स्नेह करें ; नहीं तो, वह मनमें बड़ा सङ्कोच अनुभव करेगी। आखिर वह दीवार तो है नहीं, आदमी है, घरके सब-कोई उससे—"

क्षेमङ्करी—"चक्रवर्तीजी, आप ज्यादा सोचिये नहीं। मेरे नलिनमें ये सब गुण स्वभावसे ही मौजूद हैं। बाहरसे कुछ कहता-सुनता नहीं वह, लेकिन भीतर-ही-भीतर सबके सुख-दुःख और सुविधा-असुविधाके बारेमें सोचता रहता है, और भीतर-ही-भीतर उसके लिए इन्तजाम भी करता रहता है। जरूर उसे हरिदासीके विषयमें चिन्ता होगी कि उसे क्या पसन्द है, क्या चाहिए, कैसे वह आरामसे रह सकती है ; और भीतर-ही-भीतर वह इसका इन्तजाम भी कर रहा होगा। हमें थोड़े ही मालूम होने देगा !"

चक्रवर्ती—"आपकी बात सुनकर निश्चिन्त हुआ। फिर भी, जानेके पहले नलिनाक्ष बाबूसे खास तौरसे एकआध बात कह जाना चाहता हूँ। एक स्त्रीका

सम्पूर्ण भार ले सकें, ऐसे पुरुष संसारमें बहुत कम ही मिलेंगे। भगवानने नलिनाक्ष बाबूको जब कि वैसा यथार्थ पौरुष दे रखा है, तो वे झूठे सङ्कोचमें हरिदासीको अपनेसे दूर रखकर न चलें, यथार्थ आत्मीय समझकर ही उसे अत्यन्त सहज भावसे ग्रहण करें और रक्षा करें, भगवानसे मेरी यही प्रार्थना है।"

नलिनाक्षके प्रति चक्रवर्तीके इस विश्वासको देखकर क्षेमङ्करीका मन विगलित हो उठा। उन्होंने कहा—"कहीं आपको किसी तरहका खयाल न हो, इस डरसे मैं हरिदासीको नलिनाक्षके सामने ज्यादा निकलने नहीं देती। पर, अपने लड़केको मैं जानती हूँ, उसपर विश्वास करके आप निश्चिन्त हो सकते हैं।"

चक्रवर्ती—"तो आपसे मैं सब बातें खुलासा ही कहे देता हूँ। सुना है, नलिनाक्ष बाबूसे जिस लड़कीकी सगाईको बातचीत चल रही है, उसकी उमर भी शायद कम नहीं, और शिक्षा-दीक्षा भी हमारे समाजसे नहीं मिलती। इसीसे सोच रहा था कि शायद हरिदासीका—"

क्षेमङ्करी—"सो क्या मैं नहीं समझती! जरूर तब सोचना पड़ता। लेकिन वह सगाई मैंने छोड़ दी।"

चक्रवर्ती—"छोड़ दी?"

क्षेमङ्करी—"हाँ। बात चल रही थी, मैं ही ज्यादा जिद कर रही थी, नलिनाक्ष तो नहीं चाहता था। पर मैंने अपनी जिद छोड़ दी। जो होनेका नहीं, उसे जबरदस्ती करनेसे मङ्गल नहीं होता। भगवान हो जानें, मरनेके पहले मैं बहूका मुंह देख पाऊँगी या नहीं।"

चक्रवर्ती—"ऐसी बात न कहिये। फिर हमलोग हैं किस लिए? घटक-विदाई और मीठा वसूल किये बिना हम आपको छोड़ सकते हैं भला?"

क्षेमङ्करी—"आपके मुँहपर फूल-चन्दन पड़े चक्रवर्तीजी! मेरे मनमें इस बातका बड़ा दुःख है कि नलिन इस उमरमें मेरे ही लिए गृहस्थ-धर्ममें नहीं प्रवेश कर सका। इसीसे मैं अत्यन्त व्यस्त होकर सब बातोंका विचार किये बिना ही सगाई पक्की करनेको तैयार हो गई थी। पर अब मैं तो आशा छोड़ चुकी, आप ही कोई व्यवस्था कर दीजिये तो ठीक है। पर देर न कीजियेगा, मैं ज्यादा दिन नहीं जीऊँगी।"

चक्रवर्ती—"ऐसी बातें सुनता कौन है आपकी ! आपको जीना ही पड़ेगा, और बहूका मुंह देखना ही होगा। आपको जैसी बहू चाहिए, मुझे मालूम है। निहायत छोटी होनेसे भी काम नहीं चलेगा ; आपको तो ऐसी बहू चाहिए जो-कुछ बड़ी हो, आपकी भक्ति-श्रद्धा कर सके, सेवा कर सके, घर सम्हाल सके। नहीं तो हमें भी पसन्द नहीं आयेगी। सो, अब आप इस विषयमें जरा भी चिन्ता न करें। ईश्वरकी कृपासे सब-कुछ हुआ पड़ा है, समझिये। अब, अगर आप आज्ञा दें, तो हरिदासीको जरा उसके कर्तव्यके सम्बन्धमें दो-चार उपदेश दे आऊं ; और शशीको भी आपके पास भेज दूं। आपको देखनेके बादसे वह तो आपकी ही बातें करते-करते बावली हुई जा रही है !"

क्षेमङ्करी—"नहीं, आप तीनों जने एक घरमें जाकर बैठिये। इतनेमें, मुझे जरा काम है सो कर लूं।"

चक्रवर्ती हँसते हुए बोले—"जगतमें आपलोगोंको काम बना ही रहता है, इसीमें तो हमारा कल्याण है ! कामका परिचय यथासमय अवश्य ही मिलेगा, इसका मुझे पूरा भरोसा है। नलिनाक्ष बाबूको वधूके कल्याणसे ब्राह्मणके भाग्यमें मिष्टान्नकी धूम शुरू हो !"

चक्रवर्तीने शशिमुखी और कमलाके पास जाकर देखा, कमलाकी दोनों आँखें आँसुओंसे छलछला रही हैं। चक्रवर्ती शशीके पास बैठकर चुपचाप उसके मुँहकी तरफ देखने लगे। शशीने कहा—"बापूजी, कमलासे मैं कह रही थी कि नलिनाक्ष बाबूसे सब बातें खोलकर कहनेका अब समय आ गया है। बस, इसी बातपर तुम्हारी मूरख हरिदासी मुझसे झगड़ा कर रही है !"

कमला बोल उठी—"नहीं दीदी, नहीं, तुम्हारे पाँवों पड़ती हूँ, तुम ऐसी बात मुँहपर न लाओ। ऐसा हरगिज नहीं हो सकता।"

शशीने कहा—"वाह री तेरी बुद्धि ! तू चुप बनी रह, और उधर हेमसे उनका ब्याह हो जाय ! ब्याहके दूसरे ही दिनसे आज तक तो बराबर इतनी-इतनी दुर्घटनाओंमें चक्कर खाती फिरी, अब फिर एक नई आफत मोल ले ले, सो जिन्दगी-भर रोती रहे !"

कमलाने कहा—"दीदी, मेरी बात किसीसे भी कहनेकी नहीं है। मुझसे

यह नहीं सहा जायगा, शरमके मारे मर जाऊँगी मैं। मैं जैसे हूं, बहुत अच्छी हूँ; मुझे कोई दुःख नहीं। सब बात कह दोगी तो फिर मैं यहाँ कैसे किसीको मुंह दिखा सकूंगी, फिर कैसे इस घरमें रह सकूंगी? फिर मैं जीऊंगी कैसे?"

शशिमुखी उसकी बातका कुछ जवाब न दे सकी। किन्तु इससे क्या, जान-बूझकर वह कैसे हेमसे नलिनाक्षका ब्याह हो जाने दे! उसके लिए चुपचाप तमाशा देखते रहना बिलकुल असम्भव है।

चक्रवर्तीने कहा—"जिस ब्याहकी बात चल रही है, वह होकर ही रहेगा, ऐसी क्या बात है?"

शशी—"तुम क्या कह रहे हो बापूजी! नलिनाक्ष बाबूकी मा हेमको अशीर्वाद कर आई हैं उनके घर जाकर!"

चक्रवर्ती—"बाबा विश्वनाथके आशीर्वादसे उस आशीर्वादका बीचमें ही दम टूट चुका है। बेटी कमला, अब तुम्हें किसी बातका डर नहीं, धर्म तुम्हारा सहाय है।" कमला साफ-साफ समझ न सकी, और आँखें फाड़के चाचाकी तरफ देखती रही। चाचाने कहा—"हेमसे अब ब्याह नहीं होगा, सगाई छोड़ दी। नलिनाक्ष बाबूकी भी इच्छा नहीं थी, और उनकी माकी भी सुबुद्धि आ गई।"

शशिमुखी मारे खुशीके फूली न समाई, बोली—"जान बची और लाखों पाये! बाप रे बाप, कल जैसे ही मैंने सुना, मेरा तो जी उड़ गया! रात-भर नींद नहीं आई। हाँ तो, अब यह बताओ, कमला क्या अपने घरमें हमेशा इसी तरह रहा करेगी? कब सब साफ होगा?"

चक्रवर्ती—"चञ्चल मत हो री शशी, चञ्चल मत हो! जब ठीक समय आयेगा तब सब सहज हो जायगा।"

कमला—"अभी जो हुआ है, यही सहज है। इससे ज्यादा सहज और कुछ नहीं हो सकता। मैं बहुत सुखी हूं, मुझे इससे ज्यादा सुखी करनेमें कहीं ऐसा न हो जाय कि जो है उससे भी रह जाऊं! चाचाजी, मैं तुम्हारे पाँवों पड़ती हूं, तुम किसीसे भी कुछ मत कहो। मुझे इस घरके एक कोनेमें डालकर मेरी बातको बिलकुल ही भूल जाओ। मैं खूब सुखमें हूं।" कहते-कहते कमलाकी दोनों आँखोंसे झरझर आँसू झरने लगे।

चक्रवर्ती चञ्चल हो उठे, बोले—"यह क्या बेटी, रोती क्यों हो ? तुम जो कह रही हो, सो मैं खूब समझ रहा हूं। तुम्हारी इस शन्तिमें क्या हम हाथ डाल सकते हैं ! विधाता खुद ही जो धीरे-धीरे कर रहे हैं, हम मूर्खोंकी तरह उसके बीचमें पड़कर क्या उसे कभी बिगाड़ सकते हैं ? हरगिज नहीं। तुम्हें कोई डर नहीं। मेरी इतनी उमर हो गई, मैंने क्या काम पड़नेपर स्थिर रहना भी नहीं सीखा !"

इतनेमें ओठोंसे लेकर कान तक हँसता हुआ उमेश आ पहुँचा। चचाने कहा—"क्या रे उमेश, क्या खबर ?" उमेशने कहा—"रमेश बाबू नीचे खड़े हैं, डाक्टर बाबूके बारेमें पूछ रहे हैं।"

कमलाका चेहरा सफेद-फक पड़ गया। चचा जल्दीसे उठ खड़े हुए ; और बोले—"डरो मत बेटी, मैं सब ठीक किये देता हूँ।"

नीचे जाकर चचाने रमेशका हाथ पकड़कर कहा—"आइये रमेश बाबू, सड़कपर टहलते हुए आपसे कुछ बात करनी है।"

रमेश चचाको देखकर दंग रह गया, बोला—"आप यहाँ कहाँ ?"

चचाने कहा—"आपके लिए ही आना पड़ा। भेंट हो गई, बड़ा अच्छा हुआ। आइये, देर न कीजिये, कामको बात कर ली जाय।"—कहते हुए वे रमेशको कुछ दूर ले गये, और बोले—"रमेश बाबू, आप डाक्टरके पास कैसे आये ?"

रमेश—"नलिनाक्ष डाक्टरसे मुझे काम है। कमलाकी बात उन्हें शुरूसे आखीर तक कह देनेका मैंने निश्चय किया है। मुझे कभी-कभी ऐसा लगता है कि कमला अभी तक जिन्दा है।"

चचा—"अगर कमला जिन्दा ही हो और नलिनाक्षके साथ उसकी भेंट हो भी जाय, तो क्या आपके मुँहसे उसका इतिहास सुनकर नलिनाक्षको कोई खास लाभ होगा ? उनकी बूढ़ी मा हैं, उन्हें ये सब बातें मालूम हो जानेपर कमलाके लिए क्या वह अच्छा होगा ?"

रमेश—"सामाजिक दृष्टिसे क्या फल होगा, मैं नहीं कह सकता। किन्तु कमलाको किसी अपराधने छुआ तक नहीं, यह बात नलिनाक्षको मालूम हो

जाना चाहिए। कमलाकी यदि मृत्यु भी हो गई हो, तो भी नलिनाक्ष उसकी स्मृतिका तो सम्मान कर सकेंगे।"

चचा—"आपकी ये सब नये जमानेकी बातें मेरी कुछ समझमें नहीं आतीं! कमला अगर मर ही गई हो, तो उसके पतिके लिए उसकी एक रातकी स्मृतिको लेकर खींचातानी करनेकी क्या जरूरत? सुनिये, वो जो मकान दीख रहा है, वहीं मैं ठहरा हुआ हूं। कल सवेरे अगर आप आ सकें, तो आपको मैं सब बातें साफ-साफ बताऊँगा। लेकिन उसके पहले आप नलिनाक्ष बाबूसे न मिलियेगा, इतना मेरा अनुरोध है।"

रमेश "अच्छा" कहकर चला गया।

चचा वापस आकर कमलासे बोले—"बेटी, कल सवेरे तुम्हें मेरे यहाँ जाना होगा। वहाँ तुम खुद रमेशबाबूको सब बात समझा देना।" कमला सिर झुकाये खड़ी रही। चचा कहने लगे—"मैंने यही ठीक समझा। और मैं निश्चित जानता हूँ, इसके बिना काम नहीं चल सकता। इस जमानेके लड़कोंकी कर्तव्य-बुद्धि पुराने जमानेकी बात नहीं सुनती। बेटी, मनसे सङ्कोचको बिलकुल निकाल फेंको। अब तुम्हारा जहाँ अधिकार है, दूसरे किसीको वहाँ पदार्पण नहीं करने देना चाहिए। यह तो तुम्हारा ही कर्तव्य है। इस विषयमें मेरा जोर नहीं चल सकता।" कमला फिर भी चुप रही। चचा कहने लगे—"बेटी, बहुत-कुछ साफ हो गया है, अब इस बचेखुचे कूड़े-करकटको झाड़-पोंछकर बिलकुल साफ करनेमें किसी तरहका सङ्कोच मत करना।"

इतनेमें किसीके आनेकी आहट सुनकर कमलाने मुँह उठाकर दरवाजेकी तरफ देखा तो, नलिनाक्ष! एकदम उनकी आँखोंपर ही नलिनाक्षकी आँखें पड़ गईं। और, दूसरे दिन नलिनाक्ष जैसे चटसे दृष्टि फेरकर चला जाता है, आज उसने वैसी जल्दी नहीं की। यद्यपि क्षण-भरके लिए उसने कमलाके मुँहकी तरफ देखा था, किन्तु उसकी उस क्षण-भरकी दृष्टिने कमलाके मुँहसे न-जाने क्या वसूल कर लिया। और-दिनकी तरह उसने अनधिकारके सङ्कोचसे देखनेकी चीजको प्रत्याख्यान नहीं किया। दूसरे ही क्षण शशीको देखकर वह जानेको तैयार हुआ तो चचाने कहा—"नलिनाक्षबाबू, भागिये मत। आप हमारे अपने ही आदमी

हैं। यह मेरी लड़की है शशिमुखी, इसीकी लड़कीका आपने इलाज किया था।" शशीने नलिनाक्षको नमस्कार किया, और नलिनाक्षने प्रतिनमस्कार करके पूछा—"आपकी लड़की अब अच्छी तरह है?" शशीने कहा—"हाँ, अब ठीक है।"

चचाने कहा—"आपको जी भरकर देख सकूँ इतना मौका तो आप देते नहीं हैं, अब जब आ ही गये हैं तो जरा बैठिये।"

नलिनाक्षको बिठाकर चचाने पीछे मुड़कर देखा कि कमला वहाँसे गायब है। नलिनाक्षकी उस क्षणिक दृष्टिको लेकर कमला अपने पुलकित मनको सम्हालनेके लिए अपने कमरेमें चली गई है।

इतनेमें क्षेमङ्करीने आकर कहा—"चक्रवर्तीजी, अब जरा तकलीफ करनी होगी।" चक्रवर्तीने कहा—"जबसे आप कामसे गई हैं, तभीसे इस तकलीफके लिए मैं तैयार बैठा हूं।"

खा-पीकर चक्रवर्ती बैठकमें आकर बोले—"जरा बैठिये, मैं अभी आया।" इतना कहकर वे चले गये, और थोड़ी देरमें कमलाका हाथ पकड़कर उसे नलिनाक्ष और क्षेमङ्करीके सामने खड़ा कर दिया। पीछेसे शशिमुखी भी आ गई।

चक्रवर्तीने कहा—"नलिनाक्ष बाबू, आप हमारी हरिदासीको गैर समझकर सङ्कोच न किया कीजिये। इस दुःखिनीको आपके ही घर छोड़े जाता हूं, इसे आपलोग पूरी तरह अपना बना लीजिये। इसे और-कुछ नहीं चाहिए, आप लोगोंकी सेवा करनेका अधिकार-भर इसे मिल जाय, तो यह बहुत खुश रहेगी। इतना आप निश्चय समझिये कि आपलोगोंके समक्ष यह ज्ञान-पूर्वक अपराधिनी कभी न बनेगी।"

कमलाका चेहरा मारे शरमके सुर्ख हो उठा, वह सिर झुकाये चुपचाप खड़ी रही। क्षेमङ्करीने कहा—"चक्रवर्तीजी, आप जरा भी चिन्ता न करें, हरिदासी हमारे घर लड़कीसे बढ़कर रहेगी। किसी भी कामका भार इसे देना नहीं पड़ा, खुद ही इसने सारी घर-गृहस्थी सम्हाल ली है। भण्डारघरमें आज तक मेरा ही शासन चलता था, अब मैं वहाँकी कोई भी नहीं रही। नौकर-चाकर भी अब मुझे घरकी मालिकिन नहीं समझते। कैसे धीरे-धीरे मेरी ऐसी हालत हो गई, मैं कुछ जान ही न सकी! मेरी कुछ चाभियाँ थीं, उन्हें भी हरिदासीने

बड़ी चतुराईके साथ हड़प लीं। अब आप ही बताइये, चक्रवर्ती साहब, आपकी इस डाकू लड़कीके लिए आप और क्या चाहते हैं ? अब सबसे बड़ी डकैती तो यह होगी कि आप इसे अपने घर ले जानेकी सोचें !"

चक्रवर्तीने कहा—"मान लीजिये, मैंने कह भी दिया, तो क्या आप समझती हैं यह लड़की यहाँसे हिलेगी ? इसका आप खयाल ही छोड़ दीजिये। इसे आपलोगोंने ऐसा वशमें कर लिया है कि आज यह आपलोगोंके सिवा दुनियामें और-किसीको जानती ही नहीं। अपने दुःखी जीवनमें इतने दिन बाद इसे आपके घर ही शान्ति मिली है। भगवान उसकी इस शान्तिको निर्विघ्न रखें, आपलोग हमेशा इसपर प्रसन्न रहें, हम इसे यही आशीर्वाद देते हैं।" कहते-कहते चक्रवर्तीकी आँखें भर आईं। नलिनाक्ष स्तब्ध बैठा चक्रवर्तीकी बातें सुन रहा था। जब सब विदा हो गये तब धीरेसे उठकर वह अपने कमरेमें चला गया। तब शीतऋतुके सूर्यास्त-कालने अपने सम्पूर्ण शयनगृहको नवविवाहकी रक्तिम छटासे रञ्जित कर दिया था। उस रक्तिम आभाने नलिनाक्षके रोम-रोममें भिद-भिदकर उसके अन्तःकरणको रंगीन बना दिया।

आज सवेरे नलिनाक्षके एक बनारसी मित्रने गुलाबकी एक टोकनी भेजी थी। घर सजानेके लिए क्षेमङ्करीने वह टोकनी कमलाको सौंप दी। नलिनाक्षके कमरेमें कमला एक फूलदानीमें गुलाब सजाकर रख गई थी। कमरेमें घुसते ही नलिनाक्षके मस्तिष्कमें उन फूलोंकी सुगन्ध समा गई। उस निस्तब्ध शयनगृहके वातायनमें आरक्त संध्याके साथ गुलाबकी सुगन्धने मिलकर नलिनाक्षके मनको विह्वल कर दिया। आज तक नलिनाक्षकी दुनियामें चारों तरफ संयमकी शान्ति और ज्ञानकी गम्भीरता ही थी, आज वहाँ सहसा नाना सुरोंमें ऐसी नौबत कहाँसे बज उठी, और किस अदृश्य-नृत्यके पदक्षेप और नूपुर-झङ्कारसे आज आकाशतल ऐसा चञ्चल हो उठा, कौन जाने ! नलिनाक्ष खिड़कीके पाससे लौटकर कमरेके भीतर चारों तरफ देखने लगा। उसने देखा, उसके बिस्तरके सिरहानेके पास आलेमें बहुतसे गुलाबके फूल सजे हुए रखे हैं। और वे फूल न-जाने किसकी आँखोंकी तरह उसके मुँहकी तरफ देख रहे हैं और नीरव आत्मनिवेदनकी तरह उसके हृदयके द्वारपर नम्र हुए जा रहे हैं। नलिनाक्षने उनमेंसे एक फूल उठा

लिया। वह पक्के सोनेके रंगका पीला गुलाब है, अभी उसकी पँखड़ियाँ नहीं खुलीं, किन्तु उससे अपनी सुगन्ध छिपाते नहीं बनता। उस गुलाबको हाथमें लेते ही मानो किसीकी उँगलियोंने उसे छू लिया ; और उसकी नस-नसमें उसने संगीतकी एक झंकार-सी पैदा कर दी। नलिनाक्ष उस स्निग्ध कोमल फूलको अपने मुँह और आँखोंपर फेरने लगा।

देखते-देखते संध्याकाशसे सूर्यास्तकी आभा विलीन हो गई। नलिनाक्षने कमरेसे बाहर निकलनेके पहले एक बार अपने बिस्तरके पास जाकर बिछौनेके आवरणको उठाया और उस फूलको तकियेपर रख दिया। फूल रखकर वह बाहर निकलना ही चाहता था कि इतनेमें उसने देखा, पलंगके पीछे शरमके मारे सिकुड़ी हुई, आँचलसे मुँह ढके, कोई ऐसे बैठी हुई है मानो जमीनमें कहीं जरा-सी सँध मिले तो वह घुस जाय। हाय री लज्जा, कमलाके सिवा और कोई मिला ही नहीं संसारमें! थोड़ी देर पहले कमला आलेमें गुलाब सजाकर अपने हाथसे नलिनाक्षके बिस्तर करके कमरेसे बाहर निकल रही थी, इतनेमें सहसा नलिनाक्षकी पगध्वनि सुनकर तुरत वह बिस्तरके पीछे जा छुपी थी। अब उसके लिए भागना भी असम्भव हो गया और छुपना भी कठिन हो गया। आज वह अपनी ढेरकी ढेर लज्जाके साथ चोरकी तरह हाथों-हाथ पकड़ी गई!

नलिनाक्षने इस लज्जिताको मुक्ति देनेके लिए जल्दीसे बाहर निकल जाना चाहा ; किन्तु दरवाजे तक जाकर वह ठिठककर खड़ा हो गया। कुछ देर तक खड़ा-खड़ा क्या-तो सोचता रहा, फिर धीरे-धीरे लौटकर कमलाके पास जा खड़ा हुआ ; बोला—"तुम उठो! तुम्हें मुझसे शरमानेकी कोई जरूरत नहीं।"

६१

दूसरे दिन, सबके सब चचाके घर हाजिर हुए। जरा एकान्त मिलते ही कमला शशीके गले लिपट गई। शशीने उसकी ठोड़ी पकड़कर हिलाते हुए कहा—"क्यों बहन, आज इतनी खुशी किस बातकी?"

कमलाने कहा—"सो मैं नहीं जानती, दीदी, पर मुझे मालूम होता है मानो मेरे जीवनका सारा बोझ दूर हो गया है।"

शशी—"बता तो सही, सब बात मुझसे तो खुलासा कह दे ? कल तक तो कोई बात नहीं थी, आज क्या हो गया ?"

कमला—"ऐसी कोई खास बात नहीं, पर मुझे ऐसा लगता है कि मैं उन्हें पा गई हूँ, भगवानने मुझपर दया की है।"

शशी—"भगवान करें ऐसा ही हो ! पर मुझसे कोई बात छिपा मत ?"

कमला—"छिपानेको मेरे पास कुछ नहीं, बहन, पर क्या कहूँ सो समझमें नहीं आता। रात बीतते ही सवेरे उठकर ऐसा मालूम हुआ कि अब मेरा जीवन सार्थक हो गया। मेरा दिन इतना मीठा, और काम-काज इतना हलका हो गया कि मैं कुछ कह नहीं सकती। मैं इससे ज्यादा और कुछ नहीं चाहती। मुझे सिर्फ इस बातका डर लगा रहता है कि कहीं कोई विघ्न न आ जाय, कहीं कुछ बिघट न जाय। अपने भाग्यपर मेरा विश्वास नहीं होता कि रोज ऐसे ही दिन बीतते जायेंगे।"

शशी—"अरी पगली, मैं तुझसे कहती हूँ, अब भाग्य तुझे जरा भी धोखा न देगा। बल्कि तेरा जो-कुछ लेना है उसे चुका देगा, समझी !"

कमला—"नहीं नहीं, दीदी, ऐसी बात न कहो। मेरा सब पावना उसने चुका दिया। मैं विधाताको कभी दोष नहीं देती। अब मेरे किसी बातकी कमी नहीं।"

इतनेमें चचाने आकर कहा—"बेटी, तुम एक बार बाहर तो चलो। रमेश बाबू आये हैं।" चचा अब तक रमेशसे ही बात कर रहे थे। वे उससे कह रहे थे, "आपका कमलाके साथ क्या सम्बन्ध है सो मैं जानता हूँ। अब आपसे मेरी यह सलाह है कि आपके जीवनमें अब कोई 'उलझन' नहीं, आपका भविष्य बिलकुल साफ है, अब आप कमलाका प्रसङ्ग बिलकुल ही त्याग दीजिये। कमलाके बारेमें अगर कहीं कोई गाँठ बाकी रह गई हो, तो उसके खोलनेका भार विधातापर छोड़ दीजिये, आप अब उसमें हाथ न लगाइये।" रमेशने जवाबमें कहा था, "कमलाके सम्बन्धमें सारी बातें सम्पूर्णरूपसे तभी छोड़ी जा सकती हैं जब मैं नलिनाक्षसे सारी घटना कह दूँ ; इसके बिना मेरी निष्कृति हो ही नहीं सकती। इस दुनियामें कमलाकी बात छेड़नेकी जरूरत शायद अब बिलकुल ही

नहीं होगी, और हो तो हो भी सकती है। अगर हो, तो मेरा जो वक्तव्य है उसे कहके मैं छुट्टी पा जाना चाहता हूं।" इसपर चचा उसे बाहर बैठकमें बिठाकर चले आये थे।

रमेश मुड़कर खिड़कीकी तरफ मुँह करके बैठ गया; और शून्यदृष्टिसे बाहर लोक-प्रवाहकी तरफ देखता रहा। कुछ देर बाद, किसीके आनेकी आवाज सुनकर वह सावधान हो गया; और इतनेमें एक स्त्रीने जमीनसे माथा छुआकर उसे प्रणाम किया। जब वह प्रणाम करके उठी, तो रमेशसे फिर बैठा नहीं गया, वह चटसे उठ खड़ा हुआ। उसके मुँहसे निकल पड़ा—"कमला!"

कमला स्तब्ध होकर खड़ी रही।

चचाने कहा—"रमेश बाबू, कमलाके समस्त दुःखको सौभाग्यमें परिणत करके भगवानने आज इसके चारों तरफसे सारा कुहरा दूर कर दिया है। आपने परम सङ्कटके समय जैसे इसकी रक्षा की है, और इसके लिए आपको जैसा गहरा दुःख सहना पड़ रहा है, इन सब बातोंका खयाल करते हुए, आपसे सम्बन्ध तोड़ते समय कोई बात बिना कहे कमला आपसे विदा नहीं ले सकती। इसीसे आपके पास आज यह आशीर्वाद लेने आई है।"

रमेश कुछ देर तक चुप खड़ा रहा; फिर रुके हुए गलेको जबरन साफ करता हुआ बोला—"तुम सुखी होओ कमला! मैंने बिना जाने या जानकर जो भी कुछ अपराध किया हो, उसके लिए तुम मुझे माफ कर देना।"

कमला इसके उत्तरमें कुछ भी न कह सकी। वह दीवार पकड़के सिर्फ खड़ी रही। कुछ देर बाद रमेशने फिर कहा—"अगर किसीको कुछ कहनेकी जरूरत हो, कोई बाधा दूर करनेके लिए तुम्हें मेरी जरूरत हो, तो कहो?"

कमलाने हाथ जोड़कर कहा—"मेरी बात आप किसीसे न कहियेगा, यही मेरी विनती है।"

रमेशने कहा—"बहुत दिनों तक मैंने तुम्हारी बात किसीसे भी नहीं कही, बहुत ज्यादा गड़बड़ीमें फँस जानेपर भी मैं चुप ही रहा था। किन्तु, कुछ दिन हुए, जब देखा कि अब तुम्हारी बात कहनेसे तुम्हारी कोई हानि नहीं होगी, तब सिर्फ एक परिवारके समक्ष मैंने तुम्हारी बात प्रकट की है। और उससे तुम्हारा

अनिष्ट न होकर शायद भलाई ही होगी। चचा साहबको शायद पता होगा, अन्नदा बाबू, जिनकी लड़कीसे—”

चचाने कहा—“हाँ हाँ, हेमनलिनी! मैं जानता हूँ। उनलोगोंको सब बात मालूम हो गई है?”

रमेशने कहा—“हाँ। उनलोगोंसे और-कुछ कहने-सुननेकी जरूरत हो तो मैं कह सकता हूँ। पर मेरी इच्छा नहीं है। अपने जीवनका मैं काफी समय खो चुका हूँ, और भी मेरा बहुत-कुछ नष्ट हो गया है, अब मैं मुक्ति चाहता हूँ। आज तकका सब देन-लेन चुकाकर मैं अब बन्धनसे निकलकर जीना चाहता हूँ।”

चचाने रमेशका हाथ पकड़कर स्नेहके साथ कहा—“नहीं, रमेश बाबू, आपको अब कुछ भी नहीं करना होगा। आपको बहुत ज्यादा बोझ ढोना पड़ा है, अब आप भार-मुक्त होकर स्वाधीनताके साथ जीवन बिताइये, सुखी होइये, यही मेरा आशीर्वाद है।”

जाते समय रमेशने कमलाकी तरफ देखके कहा—“अब मैं चला कमला!”

कमलाने मुँहसे कुछ न कहकर फिर एक बार ढोक देकर प्रणाम किया।

रमेश सड़कपर आकर स्वप्नाविष्टकी तरह चलते-चलते सोचने लगा, ‘कमलासे भेंट हो गई, अच्छा ही हुआ। भेंट न होती तो यह नाटक ठीकसे समाप्त न होता। हालाँ कि ठीकसे जान न सका कि क्या समझकर कैसे कमला उस दिन गाजीपुरका बंगला छोड़कर चली आई, लेकिन यह स्पष्ट है कि मैं अब बिलकुल ही अनावश्यक हूँ। अब मेरी आवश्यकता है सिर्फ अपने जीवनको लेकर। अब मैं उसीको सम्पूर्णरूपसे ग्रहण करके संसारमें निकल पड़ा हूँ। अब मुझे पीछे मुड़कर देखनेकी जरूरत नहीं।’

६२

कमलाने घर लौटकर देखा, अन्नदा बाबू हेमके साथ क्षेमङ्करीके पास बैठे बातें कर रहे हैं। कमलाको देखते ही क्षेमङ्करीने कहा—“आ गईं तुम, अच्छा ही हुआ। जाओ बेटी, हेमको अपने कमरेमें ले जाकर गपशप करो। मैं अन्नदा बाबूको चाय पिलाती हूँ।”

कमरेमें घुसते ही हेम कमलाको गले लगाकर बोल उठी—"कमला !"

कमलाने बहुत ज्यादा विस्मित न होकर कहा—"तुमने कैसे जाना कि मैं कमला हूँ !"

हेमने कहा—"एक जनेसे मैंने तुम्हारे जीवनकी सारी घटना सुन ली है। ज्यों ही सुनी, त्यों ही मुझे सन्देह न रहा कि तुम्हीं कमला हो। क्यों, सो मैं नहीं बता सकती।"

कमलाने कहा—"बहन, मेरा नाम कोई जाने, यह मैं नहीं चाहती। अपने नामसे मुझे धिक्कार पदा हो गया है।"

हेमने कहा—"लेकिन, इस नामके जोरसे ही तो तुम्हें अपना अधिकार मिलेगा।"

कमलाने सिर हिलाते हुए कहा—"नहीं नहीं, मेरा जोर कुछ भी नहीं, मेरा अधिकार कुछ भी नहीं। मैं जोर लगाना ही नहीं चाहती।"

हेमने कहा—"किन्तु तुम अपने पतिको अपने परिचयसे वञ्चित कैसे रख सकती हो ? अपनी भलाई-बुराई सब-कुछ क्या उनके चरणोंमें अर्पण नहीं करोगी ? उनसे क्या कुछ छिपाया जा सकता है ?"

सहसा कमलाका चेहरा फक पड़ गया। कोई उत्तर उसे ढूंढ़े न मिला। निरुपाय-सी होकर वह हेमनलिनीके मुंहको तरफ ताकती रह गई। फिर, धीरेसे वह चटाईपर बैठ गई, और बोली—"भगवान तो जानते हैं, मैंने कोई अपराध नहीं किया, तो फिर वे मुझे क्यों ऐसी लज्जामें डालेंगे ? जो पाप मेरा नहीं है, उसकी सजा मुझे क्यों देंगे ? मैं कैसे उनसे अपनी सारी बातें कहूंगी ?"

हेमनलिनीने कमलाका हाथ पकड़कर कहा—"सजा नहीं, बहन, तुम्हारी मुक्ति होगी। जब तक तुम अपने पतिसे अपनेको छिपाती रहोगी तब तक तुम अपनेको असत्यके बन्धनमें ही उलझाती रहोगी। असत्यके बन्धनको तुम अपने तेजसे तोड़ डालो, ईश्वर तुम्हारा मङ्गल करेंगे ही करेंगे।"

कमलाने कहा—"बहन, मुझे डर लगा रहता है कि जो मिला है वह भी न जाता रहे ! इसीसे जब मैं अपनेको जाहिर करनेकी सोचती हूं तो मेरा सारा बल जाता रहता है। पर तुम जो बात कह रही हो, सो मैं समझ रही हूँ।

भाग्यमें जो कुछ लिखा होगा सो होगा, पर उनसे तो कुछ छिपाया नहीं जा सकता। उन्हें मेरा सब-कुछ मालूम होना ही चाहिए।"

हेमनलिनीने करुण-चित्तसे कहा—"तुम क्या यह चाहती हो कि और-कोई तुम्हारी बात उनसे कहे ?"

कमलाने जोरसे सिर हिलाते हुए कहा—"नहीं नहीं, और-किसीके मुंहसे वे नहीं सुनेंगे ! मेरी बात मैं ही उनसे कहूंगी, और-कोई नहीं, मैं ही कहूंगी।"

हेम—"यही अच्छा है। तुम्हारे साथ मेरी अब भेंट होगी या नहीं, मैं नहीं कह सकती। हमलोग यहाँसे चले जा रहे हैं।"

कमला—"कहाँ जाओगी ?"

हेम—"कलकत्ता। अब मैं चलती हूँ बहन, इस बहनको भूल न जाना!"

कमलाने उसका हाथ पकड़के कहा—"मुझे चिट्ठी दोगी न ?"

हेमने कहा—"दूंगी।"

कमला बोली—"मुझे कब क्या करना चाहिए, सो तुम बताती रहना। तुम्हारी चिट्ठीसे मुझे बल मिलेगा।"

हेमने जरा हँसते हुए कहा—"मुझसे अच्छी सलाह देनेवाला आदमी तुम्हें यहीं मिल जायगा बहन ! इसके लिए चिन्ता न करो।"

आज, हेमनलिनीके लिए कमला अपने मनमें एक वेदना-सी अनुभव करने लगी। हेमके प्रशान्त मुंहपर कैसा-तो एक भाव था, जिसे देखकर कमलाकी आँखोंसे आँसू आना चाहते थे, किन्तु साथ ही हेममें कैसा तो एक दूरत्व भी है ; उससे मनकी सब बातें खोलकर नहीं कही जा सकतीं, उससे कोई भीतरी बात पूछनेमें सङ्कोच होने लगता है। आज कमलाकी सब बात तो हेम जान गई, किन्तु, अपनेको उसने गभीर निस्तब्धतामें ही छिपाये रखा। सिर्फ एक कोई-चीज छोड़ गई, जो विलीयमान गोधूलिकी तरह असीम विषादके वैराग्यसे परिपूर्ण है।

आज दिन-भर, घरका काम-काज करते हुए भी कमलाके मनको हेमकी बातें और उसकी शान्त-सकरुण आँखोंकी दृष्टि चोट पहुंचाती रही। कमला हेमनलिनीके जीवनकी और-कोई घटना नहीं जानती, सिर्फ इतना ही जानती है

कि नलिनाक्षके साथ उसकी सगाई पक्की होकर छूट गई। हेमनलिनी अपने बगीचेसे आज डाली भरके फूल लाई थी। शामको नहा-धोकर कपड़े पहनके उन फूलोंसे वह माला गूंथने बैठ गई। बीचमें एक बार क्षेमङ्करी आई, और उसके पास बैठके एक गहरी साँस छोड़कर बोलीं—"बेटी, आज हेम जब मेरे पाँव छूकर चली गई, तो मेरा ऐसा जी करने लगा कि मैं कह नहीं सकती। कुछ भी कहो, लड़की अच्छी है। मुझे अब बार बार ख्याल आ रहा है कि उसे बहू बना लेती तो अच्छा होता। बाकी क्या था, होनेको तो हो ही जाता, पर मेरा लड़का ऐसा है कि उससे किसीका बस नहीं चलता। ऐन वक्तपर वह क्यों अकड़ बैठा, सो वही जाने। अन्तमें वे ही इस ब्याहसे विमुख हो गई थीं, इस बातको अब वे मानना ही नहीं चाहतीं। इतनेमें बाहर किसीके आनेकी आहट सुनकर उन्होंने पुकारा—"नलिन, जरा सुनना!"

कमलाने जल्दीसे आँचलके सब फूल और माला ढककर माथेका पल्ला खींच लिया। नलिनाक्ष भीतर आया तो क्षेमङ्करीने कहा—"हेमसे आज तेरी भेंट हुई थी क्या?" नलिनने कहा—"हाँ, अभी-अभी मैं सबको गाड़ीमें बिठाकर आ रहा हूं।" क्षेमङ्करी बोलीं—"तू कुछ भी कह बेटा, हेम सरीखी लड़की बहुत कम देखनेमें आती हैं।" यह बात उन्होंने ऐसे कही जैसे नलिनाक्ष इस बातका बराबर विरोध ही करता आया हो। माकी बात सुनकर नलिनाक्ष चुपचाप खड़ा-खड़ा हँसता रहा। क्षेमङ्करीने कहा—"हँसता है! मैंने हेमसे सगाई की, गोद तक भर आई, और तू अपनी जिदसे टससे मस न हुआ। अब तेरे मनमें क्या जरा भी पश्चात्ताप नहीं होता?"

नलिनाक्षने एक क्षणके लिए कमलाके मुंहकी तरफ देखा। देखा कि कमला उत्सुक नेत्रोंसे उसीकी तरफ देख रही है। चार आँखें होते ही कमला मिट्टी होकर मिट्टीमें मिल गई। नलिनाक्षने कहा—"मा, तुम्हारा लड़का क्या ऐसा ही सत्पात्र है कि तुमने सगाई कर दी और ब्याह हो गया! मुझ जैसे नीरस गम्भीर आदमीको क्या कोई आसानीसे पसन्द कर सकता है?"

यह बात सुनते ही फिर कमलाकी झुकी हुई आँखें ऊपरको उठीं; और उठते ही उसने देखा कि नलिनाक्षकी हास्योज्ज्वल दृष्टि उसीपर पड़ी हुई है।

अबकी बार कमलाको ऐसा लगा कि वह कमरेसे किसी तरह भागकर निकल जाय तो जी जाय। क्षेमङ्करीने कहा—"जा जा, अब ज्यादा बात न बना; तेरी बात सुनके गुस्सा आता है।"

इस सभाके खतम होनेपर कमलाने हेमनलिनीके उन फूलोंसे एक बड़ी-सी माला गूंथ डाली। और फूलोंकी डालीमें उसे रखकर, पानीके छींटे देकर, उसे नलिनाक्षके उपासना-घरमें रख आई। बार-बार उसे यही खयाल आने लगा कि विदाके दिन हेम डाली भरकर फूल लाई थी! इससे उसकी आँखें भर आई।

इसके बाद, अपने कमरेमें आकर बहुत देर तक वह नलिनाक्षकी उस दृष्टिके विषयमें सोचती-विचारती रही जो दृष्टि उसकी आँखोंमें समाकर न-जाने क्या-क्या कह रही थी। नलिनाक्ष उसे क्या समझ रहा होगा? कमलाके मनकी बात नलिनाक्षको शायद मालूम हो गई होगी। पहले जब वह उसके सामने निकलती नहीं थी तब वह एक तरहसे अच्छी थी। अब प्रतिदिन वह नलिनाक्षकी दृष्टिमें पकड़ाई देती जा रही है। अपनेको छिपा रखनेकी यही तो सजा है! कमला सोचने लगी, "जरूर वे मन-ही-मन कह रहे होंगे कि 'इस हरिदासीको मा न-जाने कहाँसे ले आईं, ऐसी निर्लज्ज लड़की तो मैंने कहीं नहीं देखी!' उन्होंने अगर ऐसी बात एक क्षणके लिए भी सोची हो, तब तो बड़ी लज्जाकी बात है।"

रातको बिस्तरपर पड़े-पड़े कमलाने मन-ही-मन हाथ जोड़कर प्रतिज्ञा की, 'जैसे भी हो, कल ही मैं अपना परिचय दे दूंगी। उसके बाद जो कुछ होगा सो होता रहेगा।'

दूसरे दिन तड़के ही उठके वह नहाने चली गई। प्रतिदिन गङ्गासे लौटनेके बाद वह गङ्गाजलसे नलिनाक्षका उपासना-घर धो-पोंछकर तब-कहीं दूसरे काममें हाथ लगाती थी। आज भी वह अपना पहला कर्तव्य पूरा करनेके लिए उपासना-घरमें पहुंची। देखा कि नलिननाक्ष आज सवेरे ही वहाँ जाकर बैठ गया है। ऐसा तो कभी नहीं हुआ। कमला अपने मनमें असमाप्त कर्तव्यका भार लिए हुए धीरे-धीरे वापस आने लगी। थोड़ी दूर चलकर सहसा वह ठिठकके खड़ी हो गई, कुछ सोचा; और फिर धीरे-धीरे उपासना-घरके द्वारके पास जाकर बै-

गई । उसे किस वेष्टनने घेर रखा था सो वही जाने । सारा संसार उसे छाया-सा दिखाई देने लगा । कितना समय बीत गया, उसे कुछ भी नहीं मालूम । सहसा उसने देखा कि नलिनाक्ष उपासन-घरसे निकलकर उसके सामने आ खड़ा हुआ है ! कमला क्षणमें उठ खड़ी हुई और उसी क्षण उसने घुटने टेकके एकदम नलिनाक्षके पाँवोंपर सिर रखके प्रणाम किया । उसके सद्यस्नानसे-भीगे बाल नलिनके पाँवोंको घेरे हुए जमीनपर फैल गये । कमला प्रणाम करके उठी, और पत्थरकी मूर्तिकी तरह स्थिर खड़ी रही । उसे कुछ होश ही न रहा कि उसके माथेका पल्ला कहाँ जा पड़ा है । मानो उसे दिखाई ही नहीं दिया कि नलिनाक्ष अनिमेष स्थिर दृष्टिसे उसके मुँहकी ओर देख रहा है । उसका बाह्यज्ञान लुप्त हो गया, उसने अपने अन्तरकी चैतन्य-आभासे अपूर्वरूपसे दीप्त होकर अविचलित कण्ठसे कहा—"मैं कमला हूं !"

इस एक बातके कहते ही, उसके अपने ही कण्ठस्वरसे मानो उसका ध्यान भङ्ग हो गया; और उसकी एकाग्र चेतना बाहर व्याप्त हो गई । तब उसका सारा शरीर काँपने लगा, सिर झुक गया, वहाँसे हिलनेकी उसमें शक्ति न रही । और खड़ा रहना भी उसके लिए असाध्य हो उठा । मानो उसने अपना सारा बल, सारा प्राण "मैं कमला हूं" के साथ नलिनाक्षके चरणोंमें उँडेल दिया हो; और अब उसके पास अपनी लज्जा रखनेका भी कोई उपाय न रह गया हो । अब सब-कुछ नलिनाक्षकी दयापर ही निर्भर है ।

नलिनाक्षने धीरेसे उसका हाथ अपने हाथमें लेते हुए कहा—"मैं जानता हूं, तुम मेरी कमला हो ! आओ, भीतर आओ ।"

और, उपासना-घरमें उसे ले जाकर उसीकी गूंथी हुई माला उसके गलेमें पहनाते हुए नलिनाक्षने कहा—"आओ, हम उन्हें प्रणाम करें ।" दोनोंने एक साथ मिलकर परमात्माको प्रणाम किया । और खिड़कीमेंसे प्रभातकी किरणें आकर दोनोंपर आशीर्वाद बरसाती रहीं । इसके बाद फिर एक बार नलिनाक्षके पाँव छूकर कमला जब खड़ी हुई, तो उसकी दुस्सह लज्जाने उसका पीड़न नहीं किया । हर्षके उल्लासने नहीं बल्कि एक विशाल मूर्तिकी अचंचल शान्तिने उसके अस्तित्वको प्रभातके अकुण्ठित उदार-निर्मल आलोकके साथ व्याप्त कर दिया । एक गहरी

भक्ति उसके हृदयमें परिपूर्ण हो उठी, उसके अन्तःकरणकी पूजाने समस्त विश्वको धूपकी पुण्य-गन्धसे वेष्टित कर लिया। देखते-देखते कब अज्ञातमें उसकी आँखें आँसुओंसे भर आईं, और कब बड़ी-बड़ी बूँदें उसके कपोलोंसे ढलकने लगीं, वह कुछ जान ही न सकी। आँसुओंकी धारा रुकना ही नहीं चाहती, मानो उसके अनाथ-जीवनके समस्त दुःखके मेघ आज आनन्दके आँसू बनकर झर जाना चाहते हैं। नलिनाक्षने उससे कोई बात न कहकर एक बार सिर्फ अपने दाहने हाथसे उसके ललाटपर पड़े हुए भीगे बालोंको हटा दिया, और बाहर चला गया।

कमला अपनी पूजा अभी तक समाप्त न कर सकी, अपने परिपूर्ण हृदयकी धारा अब भी वह ढालना चाहती है, इसलिए उसने नलिनाक्षके कमरेमें जाकर अपनी माला उन खड़ाउँओंपर चढ़ा दी और उन्हें सिरसे लगाकर बड़े प्रेमसे यथास्थान रख दिया। इसके बाद, दिन-भर घरका सारा काम-काज उसे देव-सेवाके समान मालूम होने लगा। प्रत्येक काममें मानो वह आकाश-आनन्दकी तरङ्गके समान उठती और पड़ती रही। क्षेमङ्करीने उससे कहा—"बेटी, तुम कर क्या रही हो? एक ही दिनमें क्या सारा घर-द्वार धो-पोंछकर बिलकुल नया बना दोगी?"

तीसरे पहर, फुरसतके वक्त, आज सिलाईका काम न करके कमला अपने कमरेमें जमीनपर चुपचाप स्थिर होकर बैठी थी। इतनेमें नलिनाक्ष एक टोकरीमें कुछ स्थलपद्म लिये-हुए कमरेके अन्दर आया; और बोला—"कमला, इन फूलोंको तुम पानीके छींटे देकर ताजा बनाये रखो, आज शामके बाद हम-तुम दोनों मिलकर माको प्रणाम करने चलेंगे।"

कमलाने सिर झुकाये हुए कहा—"मेरी सब बात तो तुमने सुनी ही नहीं!"

नलिनाक्षने कहा—"तुम्हें कुछ कहनेकी जरूरत नहीं, मैं सब जानता हूं।"

कमलाने हथेलियोंसे मुँह ढककर कहा—"मा-क्या—" इसके आगे वह और-कुछ कह ही न सकी। नलिनाक्षने उसके मुँहपरसे हाथ हटाते हुए कहा—"मा अपने जीवनमें बहुतोंके बहुत अपराध माफ करती आई हैं; और जो अपराध ही नहीं, उसे वे जरूर क्षमा कर सकेंगी।"

अकारादिक्रमिक सूची

[भाग १ से १० तक]

Printed by
Nibaran Ch. Das.
Prabasi Press,
120/2, Uuper Circular Road,
Calcutta.